२

घुमक्कड़

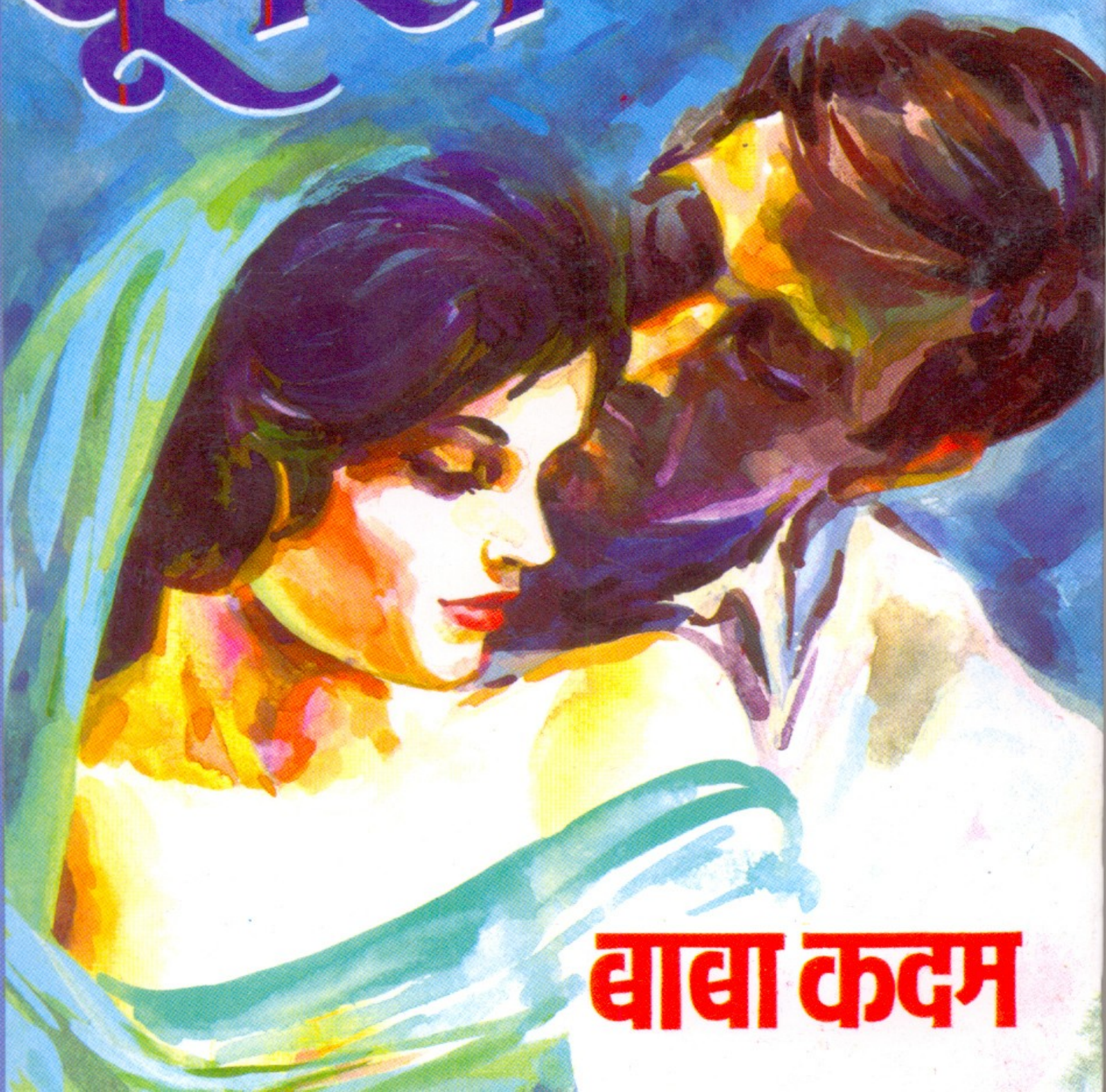

बाबा कदम

TABLE OF CONTENTS

□□□□□□
22
□□□
2
25
26
27
22
29
30
1
32
12
34
35
36
37
d
39
40
41

बूमरँग

(□□□ -□)

बाबा कदम

दिलीपराज प्रकाशन प्रा. लि.®
२५१ क, शनिवार पेठ, पुणे -४११०३०

□□□□□□□ (□□□ □)
□□□□□□□□ (□□□ - I)

□□□□□□□□
□□□□□ □□□□□□□
□□□□□□ □□□□□□,
□□□□□□□□□ □□□□□□□□□□□□ □□□□□□□□□ □□□□□□□□
□□□ □, □□□□□□□ □□□,
□□□□ 411 030.
□□□□□□□□: www.diliprajprakashan.in
□□□□: info@diliprajprakashan.in

© □□. □□□□□□□□□ □□□□□□□ □□□
'□□□□□', □□□□ □□□□□ □□ □□□,
□□□□□□□□ □□□□□,
□□□□□□□□□□

□□□ □□□□□□□□: 15 □□□□□□□, 2011
□□□□□: □□□□□ 2020
□□□□□□□□ □□□□□□□□ : □□□□

□□□□□□□ :
□□□□□ □□□□
□□□□□□□□□ □□□□□□□
1468, □□□□□□□ □□□□, □□□□ - 411003

□□□ □□□: □□□□ □□□□□□□

२२
भवानी नगर के ये जमींदार और सामंत स्वयं को उच्च जाति और कुलीन मानते थे; वे अन्य लोगों को हीन समझते थे। रोजी-रोटी के लेन-देन वे अपने परिवार के भीतर ही करते थे। शराबखोरी, जुआ और रखैल रखने में लिप्त ये जमींदार अपने पूर्वजों की वीरता की पूंजी पर मौज-मस्ती कर रहे थे। उनमें से कोई भी ऐसा नहीं था जिसके सामने सम्मान से सिर झुकाया जा सके। यद्यपि उनमें से कुछ नशा मुक्त थे, फिर भी परिवार की अपार संपत्ति को बनाए रखने में भारी धन खर्च करने के कारण वे भी कर्ज में डूबे हुए थे।
भवानी नगर के महाराजा ने मुझे फुटबॉल टीम का कप्तान बनाया। फिर उन्होंने मुझे रत्नपुर भेज दिया, जिससे महाराजा के चारों ओर मंडरा रहे सरदारों और जहांगीरदारों में बेचैनी पैदा हो गई। रत्नपुर के महाराजा की साजिश को नाकाम करके जब मैं वहां से भाग निकला, तब भी भवानी नगर के सरदारों ने मुझ पर आरोप लगाने में कोई संकोच नहीं किया। बाद में मैं सेना में भर्ती हो गया और अपनी पहली मुलाकात में महाराजा से मिलने महल गया। उस समय कई लोगों ने मुझे सैन्य अधिकारी के वेश में देखकर नाक-भौं सिकोड़ी। उन्हें अपने जाति के भाइयों के सिवा किसी की तरक्की नज़र नहीं आती थी। मुझे भी इन लोगों से द्वेष था और इसी द्वेष के कारण आज मैं इनके साथ फ्लश खेलने बैठा हूँ।
शुरुआती आठ-दस गेम मैं हार गया। लेकिन हारते हुए भी, मैं अपने नाखूनों से कार्डों पर निशान लगाता रहा। मेरी आँखों पर लगे चश्मे के 'मैग्निफाइंग' पॉइंट्स की वजह से, मुझे सभी महत्वपूर्ण कार्डों पर बने निशान साफ़ दिखाई दे रहे थे। और फिर मैंने उन्हें एक-एक करके हराना शुरू कर दिया। मैं जल्दी से पहचान लेता

था कि दूसरे के हाथ में मौजूद 'ट्रियो' या 'सीक्वेंस' भारी है या हल्का, और मैं अपनी गति बढ़ाता गया। जैसे-जैसे मैं दूसरे के हाथ के कार्डों का अंदाज़ा लगाने लगा, मुझे यह समझ आने लगा कि कौन बेकार कार्डों से खेल रहा है और किसके पास वाकई भारी कार्ड हैं, और मुझे पूरा यकीन था कि मैं उन सबको हरा दूँगा, और अंत में ऐसा ही हुआ!
एक-एक करके सारी ‘सरकारें’ दिवालिया होकर सत्ता से हटती गईं। कुछ ने हज़ार का घाटा उठाया, कुछ ने छह हज़ार का और सत्ता छोड़ दी। अंत में, मेरी सरकार और सावरदेकर की सरकार एक साथ आईं। सावरदेकर एक मशहूर शिकारी थे। उनकी गोली कभी बेकार नहीं जाती थी। वे दौड़ते हुए हिरण और उड़ते हुए पक्षी को सटीक निशाना लगा सकते थे। इन सभी ‘सरकारों’ में से वही अकेले चतुर और सधे हुए थे। उन्हें मेरी चालों पर शक होने लगा। वे मज़ाक में मुझसे कहने लगे, “समर, क्या तुम जादू-टोना कर रहे हो?”
"इसमें किस तरह का जादू-टोना शामिल हो गया है?"
"तो क्या? आप लगातार एक के बाद एक पारी जीत रहे हैं, यह कैसे संभव है?"
"प्यार!"
"जुआ खेलने में किस्मत तो ज़रूरी होती है; लेकिन मैंने अपनी ज़िंदगी में ऐसी किस्मत कभी नहीं देखी। आपने तो सबको सदमे में डाल दिया है!" सावरदेकर ने किनारे बैठे, मुँह बनाए सरकारी अधिकारियों की ओर इशारा करते हुए कहा।
मैंने कहा, "वे बदकिस्मत हैं!"
"हम इतने सालों से फ्लश खेल रहे हैं, लेकिन मैंने कभी किसी को अकेले ही सारे कार्ड जीतते हुए नहीं देखा।"

“कभी-कभी ऐसा ही होता है!” मैंने मुस्कुराते हुए सावरदेकर से एक ‘प्रदर्शन’ करने को कहा, उन्होंने मुझे अपने हाथ में सात, आठ और नौ के नोटों का ‘ढेर’ दिखाया। मैंने तीन नोटों का ‘समूह’ उनके सामने फेंक दिया और मेज पर रखे नोटों का ढेर उठाकर अपनी जेबों में भर लिया। मेरी जेबें पूरी तरह से भर गई थीं। जिस तरह मैंने दौलत खान को दिवालिया किया था, उसी तरह आज मैंने इस सरकार को भी दिवालिया कर दिया था।
जब मैंने सावरदेकर सरकार से अठारह हजार जीते, तो वह थोड़ा परेशान हो गया। उसके पास खेलने के लिए पैसे भी नहीं बचे थे; फिर उसने मुझसे कहा-
"समर, ये नवग्रह की अंगूठी ले लो। इसमें पाँच हज़ार का हीरा लगा है। मुझे खेलने के लिए पैसे दो!"
सावरदेकर ने अपनी उंगली से नवग्रह की अंगूठी उतारकर मेरे सामने रखी। उसमें जड़ा असली हीरा चमक रहा था। अंगूठी सचमुच आकर्षक और कीमती थी; लेकिन मैंने लज्जा का पर्दा ओढ़कर कहा-
सरकार, बहुत हो गया! गहने बेचना और जुआ खेलना शर्मनाक है। इसके अलावा, रात काफी हो चुकी है।
"इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि यह हल्का है या नहीं, आपको खेलना ही होगा!"
"क्या आप मुझे खेलने के लिए मजबूर कर रहे हैं?"
"हाँ, मुझे पूरा यकीन है कि तुम कोई चाल चल रहे हो। चलो इस नई 'बिल्ली' के साथ चार पारियाँ खेलते हैं। मैं देखना चाहता हूँ कि तुम पहले कितनी पारियाँ जीतते हो!"
"नई 'कैट'?"
"हाँ, और वो चश्मा उतार दो!"
‘‘ते का?’’

"ये चश्मे तुम्हें झूठ बोलने में मदद कर रहे होंगे!"
"सरकार, ये क्या कर रही है! इन चश्मों को देखो। इनसे क्या मदद मिलेगी?" मैंने अपना चश्मा उतारकर उनके सामने रख दिया। उन्होंने उसे अपनी आँखों पर लगाया और इधर-उधर देखा। लेकिन उन्हें उसमें कुछ भी नज़र नहीं आया। उन्होंने चश्मा उतारकर मुझे वापस दे दिया और कहा,-
"इसे बिना चश्मे के खेलें!"
"लेकिन अगर मैं आपकी अंगूठी के लिए पैसे नहीं देना चाहूँ तो क्या होगा?"
"आप इसे क्यों नहीं देंगे?"
"यह मेरी इच्छा का प्रश्न है!"
जुआरी पैसे हारने पर चिड़चिड़े हो जाते हैं। मुझे पता था कि वे बहुत नखरे वाले होते हैं और कभी-कभी चीजें हाथ से निकल जाती हैं, इसलिए मैंने थोड़ा धैर्य रखने का फैसला किया और कहा,
"महोदय, मुझे आपको पैसे देने में कोई आपत्ति नहीं है; लेकिन आप जैसे रईस के लिए गहने बेचकर जुआ खेलना उचित नहीं है!"
"तुम्हें इस बात की चिंता करने की ज़रूरत नहीं है कि मुझ पर क्या अच्छा लग रहा है या नहीं! चलो, ये अंगूठी लो और मुझे पैसे दे दो!" एक आदमी ने जुए में अपना सारा पैसा हारने के बाद मुझे पत्नी देने की पेशकश की थी, और आज नौ ग्रहों की यह अंगूठी, जिसमें एक असली हीरा जड़ा हुआ है, मेरे सामने प्रकट हुई। एक पल सोचने के बाद मैंने कहा, --
"आधी रात हो चुकी है। अगर आप चाहें तो मैं कल यहीं रुक सकता हूँ। आप पैसों का भी इंतजाम कर दीजिए। हम कल खेलेंगे! तो बस इतना ही?" बाकी के असमंजस में डूबे सरकारी लोग अपनी कुर्सियों पर बैठे थे। उन्हें इस बात की परवाह नहीं थी कि सावरदेकर जीते या हारे।

वे निराश थे क्योंकि वे खुद हार गए थे और किनारे हट गए थे। वे सावरदेकर का पक्ष लेकर मुझे आगे खेलने के लिए मजबूर नहीं करना चाहते थे।
सावरदेकर ने सिगरेट जलाई, अपनी मुद्रा बदली और मुझसे कहा, "समर, मैं हार गया। मैं मानता हूँ कि अब मैं और नहीं खेलना चाहता; लेकिन तुम्हें मुझे बताना होगा। तुम्हारे खेल में ऐसा क्या 'मज़ेदार' है?"
मैंने मुस्कुराते हुए कहा, "प्यार का साथ होना कितना अच्छा लगता है!"
मुझे कोई बहाना मत दो! मुझे सच बताओ!
"ऐसा कुछ नहीं है, सरकार! यह तो बस किस्मत का खेल है!"
"ठीक है। मुझे मत बताओ, लेकिन तुमने कल खेलने का वादा किया था!" “बिल्कुल!” मैंने उठते हुए कहा। सावरदेकर ने अंगूठी वापस अपनी उंगली में पहनी और सोने के लिए अंदर चले गए। उन्होंने शिष्टाचारवश ‘शुभ रात्रि’ तक नहीं कहा। भला हम उस व्यक्ति से शिष्टाचार की उम्मीद क्यों करें जिसने जुए में अपना दिमाग खो दिया हो?
मैं भी उठा और दूसरे कमरे में चला गया। मुझे लगा कि नौकरानी गहरी नींद में सो रही होगी; लेकिन वह हल्की नीली रोशनी जलाकर मेरा इंतज़ार कर रही थी। मैंने उसके सामने नोटों का ढेर लगा दिया।
"यह क्या बदतमीज़ी है?"
मैंने सबके लिए रास्ता बनाया! मेरी ही जाति के सभी लोग मुझसे ईर्ष्या करेंगे!
"तुम बहुत अच्छा कर रहे हो! लेकिन मैंने माघा को जोर से बोलते सुना और सोचा, 'क्या वे तुमसे लड़ने वाले हैं?'"

"उनमें इतनी ताकत नहीं है! वे तो तुम्हारी मूंछें घुमाकर भी तुम्हें धमकाएंगे! ठीक है, लड़कियों, हमें अभी यहाँ से निकलना होगा!"
‘‘का?’’
"ये लोग मुझे कल सुबह फिर से खेलने के लिए बुलाएंगे! शायद मुझे गुस्सा आ जाए! सावरदेकर पूरी तरह से तैयार हैं, इसलिए अब यहां इंतजार करने का कोई मतलब नहीं है।"
"अरे, लेकिन ऐसे समय में हम कैसे जा सकते हैं?"
"उसकी चिंता मत करो, तुम तैयार हो!"
लड़की झट से उठ बैठी।
"ये पैसे थैले में डालो, मैं आ गया हूँ!"
बाहर बगीचे में तीन गाड़ियाँ खड़ी थीं, दो गाड़ियों में ड्राइवर सो रहे थे, तीसरी गाड़ी में कोई ड्राइवर नहीं था। वह गाड़ी देसाई जागीरदार की थी। वो खुद गाड़ी चलाते थे। मेरी किस्मत अच्छी थी! गाड़ी के दरवाजे बंद नहीं थे। गाड़ी स्टार्ट करने की चाबी गाड़ी में नहीं थी। इसलिए मैं फँसने वाला नहीं था। मुझे पता था कि बोनट खोलकर और तार जोड़कर गाड़ी स्टार्ट कैसे करते हैं। लेकिन गाड़ी विश्राम गृह के सामने स्टार्ट नहीं हुई। दूसरे कमरे में सब कुछ ठीक-ठाक देखकर कुमारी और मैं धीरे-धीरे बाहर आए। साफ आसमान में, घटता हुआ चाँद डूबते सूरज की ओर थोड़ा झुका हुआ था। हल्की हवा चल रही थी। यह किले पर लगे सीलबंद बेर और आम के पेड़ों की खुशबू फैला रही थी।
"कुमारी, मैं गाड़ी को पीछे से धक्का देता हूँ। तुम इसे न्यूट्रल में डालो और इस गेट से नीचे ले आओ। नीचे सरकने के बाद, हम इसे स्टार्ट करेंगे!" मैंने कुमारी को निर्देश दिया। कुमारी बिना कुछ बोले अंदर बैठ गई। मैंने पूरी ताकत से गाड़ी को पीछे

से धक्का दिया। उसने 'वॉक्सहॉल' को गेट से बाहर धकेल दिया और जैसे ही वह चलने लगी, मैंने तुरंत दरवाजा खोला और अंदर बैठ गया। कुमारी एक तरफ हट गई और बोली, "समर, बम कल फटेगा!"
"चलो उड़ते हैं! हमें यह कार कहाँ से चुराकर ले जानी है? हमें बस भवानी नगर तक लिफ्ट चाहिए!"
वह हंस पड़ी और बोली, "तुम तो बहुत बहादुर हो!"
मैं क्या करूँ? हालात मुझे ऐसा बना रहे हैं!
जब गाड़ी दो फर्लांग की दूरी पर पहुँची, तो मैंने बोनट खोला, बिना इग्निशन की चाबी के इंजन चालू किया, और गाड़ी भवानी नगर की ओर तेज़ी से चल पड़ी। घाट के शीर्ष पर घुमावदार मोड़ों को पार करते हुए कुमारी ने मुझसे कहा,-
"समर, वे लोग तुम्हारे खिलाफ कार चोरी करने की शिकायत दर्ज कराएंगे!"
मैंने मुस्कुराते हुए कहा, "उसकी चिंता मत करो। मैंने उन सभी चीजों के बारे में सोच लिया है!"
"आप क्या सोच रहे हैं?"
"यह कार भवानी नगर स्थित देसाया हवेली के सामने छोड़नी थी!" "आपका क्या मतलब है?"
"जिसका सामान उसके कब्जे में है!"
"तुम कमाल हो!" लड़की ने अपना माथा छूते हुए कहा।
"अगर उनके घर में किसी ने इसे देख लिया तो क्या होगा?"
"मैं उन्हें बताना चाहता हूं कि सरकार ने गाड़ी पहले ही भेज दी है। मैंने संदेश भेज दिया है कि मैं कल सावरदेकरों के साथ आऊंगा!"
नौकरानी ने मेरे कंधे पर हाथ रखा और कहा, "मुझे बिल्कुल भी अंदाजा नहीं था कि आप इतने तैयार होंगे!"

"कुमारी, सद्गुणों पर मेरा विश्वास डगमगा रहा है! संसार में सीधे-सादे लोगों को सुखी जीवन नहीं मिलता। लेकिन झगड़ालू लोग सुखी रहते हैं!"
"लेकिन यह कब तक चलेगा?"
"जब तक जरूरत हो! कल किसने देखा है?"
"तुम्हारे मन में ऐसा विचार क्यों आएगा?"
"ऐसा सोचने के कई कारण हैं! मुझे लगता है कि मुझे बेवकूफ बनाया गया है, इसलिए मैं भी दुनिया को उसी तरह बेवकूफ बनाना चाहता हूँ!"
"तुम्हें किसने धोखा दिया?"
"मेरी पत्नी! अल्का! वह शर्मनाक थी! उसने मेरे साथ बेईमानी की!" "लेकिन उलेका तुम्हारे साथ ईमानदार है, है ना?"
"इसमें कोई शक नहीं कि उसका चरित्र बेदाग है; लेकिन वह भी असफलता से त्रस्त हो चुकी है। वह भी व्यसनी बन चुकी है। उसने भी मुझे निराश किया है। दोनों ने ही मुझे धोखा दिया है!"
कुमारी मेरी गोद में बैठी थी। घाट से उतरते ही मैंने सीधी सड़क पर एक्सीलरेटर दबा दिया। चूंकि रात का समय था, इसलिए सड़क पर कोई वाहन नहीं था। अनजाने में ही रफ्तार बढ़ती जा रही थी। आधे घंटे के भीतर कार भवानीनगर पहुंच गई। देसाई सरदार की हवेली गांव के दक्षिण में थी। उनकी हवेली जाने से पहले मैं टैक्सी स्टैंड गया और रोहिल्या अहमद को जगाया। मैंने उसे मेरे पीछे आने को कहा। हमें भवानीनगर तुरंत छोड़ना था। सावरदेकर सरकार बहुत गुस्से में थे। उन्हें पूरा यकीन था कि मैं जुए में कुछ गलत कर रहा हूं। भवानीनगर का वरिष्ठ पुलिस अधिकारी उन्हें जानता था। इसलिए मैंने मामला बढ़ने से पहले ही वहां से भागने का फैसला कर लिया था।

सौभाग्यवश, देसाई सरकार के बंगले के सामने कोई नहीं था। उन्होंने अपनी कार वहीं छोड़ दी और अहमद की टैक्सी उन्हें सीधे पुणे ले गई।
कराड रोड को थोड़ा आगे पार करते ही सूरज निकल आया। कुमारी पीछे की सीट पर गहरी नींद में सो रही थी, उसका सिर मेरे कंधे पर टिका हुआ था। मुझे हाल ही में उसमें एक बड़ा बदलाव महसूस हुआ। वह शांत और विचारशील लग रही थी। उसने फैशन से दूरी बना ली थी। वह साधारण पाउडर और लिपस्टिक भी नहीं लगाती थी। आज किसी को भी यह यकीन दिलाना मुश्किल होगा कि वह कभी एक वेश्या थी जिसने मुंबई के अमीर युवाओं को आकर्षित किया और खूब पैसा कमाया।
लगभग 9:30 बजे, अहमद पुणे के लिए एक टैक्सी लेकर आया और मुझसे पूछा,-
"समरबाबू, मुझे कार कहाँ से मिलेगी?"
"होटल हेवर्ड्स!"
"कहाँ है?"
"शिविर में। मैं तुम्हें दिखाता हूँ। चलो!"
सलीमा वाली घटना के बाद से मैं उस होटल में सभी को जानता था। मैंने अहमद को पैसे दिए और उसके हाथ में सौ रुपये अतिरिक्त देते हुए कहा, "किसी को पता नहीं चलना चाहिए कि तुम मुझे पुणे लाए और यहाँ छोड़ गए!"
"मैं हाँ क्यों कहूँ?" उसने नोट को मोड़कर अपनी जेब में रखते हुए कहा।
"मैंने कुछ भी नहीं चुराया और न ही मैं भागा, लेकिन कुछ ऐसा हुआ जिसके कारण मुझे इतनी जल्दबाजी में यहां आना पड़ा।"
अहमद ने कुमारी की ओर देखा और कहा, "मुझे जाना होगा! ऐसी चीजें होती रहती हैं, इसीलिए तो मेरे जैसे लोगों को जाना पड़ता है! कोई

अचानक बीमार पड़ जाता है, किसी को किसी से अत्यावश्यक रूप से मिलना होता है, इसीलिए लोग टैक्सी लेते हैं। भला टैक्सी कौन लेगा?"
"तुम सही कह रही हो!" मैंने कुमारी के साथ होटल में प्रवेश करते हुए कहा। बोर्ड पर नज़र डालते ही पता चला कि सबसे ऊपरी मंज़िल पर कमरा नंबर तेरह खाली था। इसी कमरे में सलीमा की हत्या हुई थी। मुझे नहीं पता था कि कुमारी को इसके बारे में पता था या नहीं; फिर भी मैं वह कमरा नहीं लेना चाहती थी।
मैंने मैनेजर से पूछा, "क्या आप मुझे कोई दूसरा कमरा नहीं दे सकते?"
"ज़रूर!" उसने मुस्कुराते हुए कहा, "लेकिन बेहतर होगा कि आप थोड़ा और इंतज़ार करें! अठारहवाँ कमरा एक-दो मिनट में खाली हो जाएगा! तब तक प्रतीक्षा कक्ष में बैठिए। क्या मैं आपके लिए चाय भेज दूँ?"
‘‘ओऽके!’’
कौन जाने इस होटल की क्या खूबियां रही होंगी! मैं यहाँ ठीक उसी समय आता था जब मैं जुए में बड़ी रकम जीतता था! मुझे यहाँ तब भी आना पड़ा जब माथेरान में फौजदार कंपनी में डकैती हो रही थी।
वह युवती दीवार पर बने जहाज के दृश्य को देख रही थी। कोने में एक बड़ा पंखा घूम रहा था। वह आज्ञाकारी सेवक की तरह अपना सिर घुमा रहा था। मैंने एक सिगरेट जलाई।
"समर, जब तुम यहाँ आई थी तो क्या तुम अपनी माँ से भी नहीं मिली थी?"
"मैं आपसे कैसे मिल सकता हूँ? क्या आप एक मिनट रुक सकते हैं? लेकिन मैंने उससे वादा किया था कि जाने से पहले मैं आपसे ज़रूर मिलूंगा। वह मेरा इंतज़ार कर रही होगी!"

"बस एक पत्र लिख दो, है ना?"
"मैं मुंबई पहुँचकर लिखूँगी।" वेटर चाय ले आया। कुमारी ने चाय बनाई थी। मुझे कप देते हुए उसने कहा,-
"जब सुबह उन्हें इस बात का पता चलेगा तो वे लोग क्या करेंगे?" "वे क्या करेंगे, आप जानते हैं? वे दुर्गावर पुलिस स्टेशन में गाड़ी चोरी होने की शिकायत करेंगे। वे यह भी कहेंगे कि मैंने गाड़ी चुराई है; लेकिन जैसे ही यह पता चलेगा कि गाड़ी उनके अपने घर के सामने खड़ी थी, उनकी शिकायत बेमानी हो जाएगी! भले ही मैं खुद वकील नहीं हूँ, लेकिन मेरे पिता वकील हैं!"
"मेरे मामले के दौरान तो यह स्पष्ट था! लेकिन इसे चोरी का अपराध क्यों नहीं बनाया गया?"
"जब कोई चोर असली मालिक के घर के पास ही कोई सामान छोड़ जाता है, तो क्या इससे यह स्पष्ट नहीं होता कि उसका इरादा उस सामान पर कब्ज़ा करने का नहीं था? क्योंकि इसमें कोई 'बेईमानी का इरादा' नहीं है, इसलिए मामला अपने आप ही खत्म हो जाता है! इसके अलावा, शिकायत दर्ज होने के बाद यह बात सार्वजनिक हो जाएगी कि उसने जुए में अपना सारा पैसा गंवा दिया!"
"लेकिन अगर तुम दोबारा उनके चंगुल में फंस गए, तो वे तुम्हें जाने नहीं देंगे!"
"कल तो कल है! आज ही कल की चिंता क्यों करें?"
जैसे ही हमारी चाय खत्म हुई, वही मैनेजर खुद चाबी लेकर आया और बोला, "कमरा खाली है!"
"साफ?"
"चादरें और तकिए के कवर भी बदल दिए गए थे!"

"हाँ, वरना जब लोग इस कमरे से निकलते हैं, तो उनके द्वारा छोड़े गए अवशेष देखने लायक होते हैं!" मैंने लड़की की ओर देखते हुए कहा।
"लेकिन ऐसे लोग हमारे होटल में नहीं आते। पचास रुपये प्रतिदिन देकर कंजूस लोग कैसे आ सकते हैं?" मैनेजर ने कहा।
"हां, हां, यह भारी होगा!" मैंने जानबूझकर उसकी बातचीत रोकने के इरादे से कहा।
जो व्यक्ति अपनी मेहनत से जीवन यापन करता है, वह इतनी महंगी जगह पर क्यों आएगा? सिर्फ मेरे जैसे लोग, जिनके पास 'आसान कमाई' या 'काला धन' है, ऐसे होटल की सीढ़ियाँ चढ़ेंगे! मैंने खुद भी खूब पैसा कमाया है; लेकिन मेरे दिल में हमेशा उन लोगों के लिए सम्मान रहा है जो सही तरीके से पैसा कमाते हैं, जो सादा जीवन जीते हैं! मुझे कभी भी किसी का उन्हें कम आंकना या उनका मजाक उड़ाना पसंद नहीं आया। एक सज्जन और सीधे-सादे इंसान की आँखों में एक अलग ही चमक होती है, एक धोखेबाज और गपशप करने वाला उनकी आँखों की बराबरी नहीं कर सकता। मैं यह अपने अनुभव से कह रहा हूँ! नौकरानी अपने कपड़े लेकर बाथरूम चली गई। मैंने उस रात की कमाई गिनना शुरू किया। अट्ठाईस हज़ार चार सौ सत्तर! उस रकम को देखकर मैं हंसने लगा। मैंने तो अपनी ही जाति के सारे लोगों को लूट लिया था! मैं उन लोगों के बारे में लंबे समय से दुविधा में था। मैंने पैसे वापस थैले में रख दिए। अचानक मुझे सलीमा की याद आ गई। मुझे वो सब याद आ गया जो मैंने उस रात उसके साथ किया था। सलीमा ने मुझे भोर से पहले निकल जाने को कहा था, और आज मैं भोर से पहले ही किले से निकल गया था। इन दोनों घटनाओं में इतनी शक्ति थी कि ऐसा लगा जैसे ये घटना पहले भी एक बार हो चुकी हो। उस समय, सलीमा जैसी एक खूबसूरत युवती मेरे सामने थी, आज वो कुंवारी है।

हालाँकि वो सलीमा जितनी खूबसूरत नहीं है, फिर भी उसकी खूबसूरती कुछ हद तक उससे मेल खाती है! मेरे साथ संबंध के बाद उसका अंत दिल दहला देने वाला था। किसी कुंवारी के साथ ऐसा कभी न हो!...
ये विचार मेरे मन में आए और मैं बाथरूम में ज़ोर से चीख पड़ी। मैं बिस्तर से उछलकर बाथरूम के दरवाजे की ओर भागी। मैंने दरवाजे पर बार-बार दस्तक दी।
"कुमारी! क्या हुआ? दरवाजा खोलो!" जब कुमारी ने दरवाजा खोला, तो उसकी कमर पर सिर्फ एक तौलिया लिपटा हुआ था। डर से उसकी छाती ज़ोर-ज़ोर से धड़क रही थी। उसके मुंह से एक शब्द भी नहीं निकला। "क्या हुआ, क्या तुम मुझे बताओगे या नहीं?"
"पाल बाएँ कंधे पर गिर गया!"
"हाथी! उसे क्या हो गया है कि वह इतना डरा हुआ है?"
"ऐसा होना तो दुर्भाग्य की बात होगी!"
"अरे! क्या सड़क पर फिसलकर गिरना कोई बुरी बात नहीं है? क्या हम इसे शुभ संकेत मानते हैं या अशुभ संकेत?"
"इंसान अलग-अलग होते हैं!" उसने मुझे उसी हालत में गले लगा लिया। मेरे स्पर्श से मैं उसकी छाती की धड़कन महसूस कर सकता था। उसने मुझे एक छोटी बच्ची की तरह कसकर गले लगाया। उसने अपने कारोबार के दौरान कई ग्राहकों के साथ ऐसा ही व्यवहार किया होगा, लेकिन आज का व्यवहार इतना स्वाभाविक था कि मैं उसके स्पर्श से समझ गया कि वह बेबस है और उसे मेरे सहारे की सख्त जरूरत है।
मुझे अकेला छोड़ दो! क्या तुमने नहाया नहीं?
"नहाने के बाद मैंने तौलिया उठाया और उसी क्षण मैं मर गया! मुझे पाली से शकुना से भी ज़्यादा घृणा होती है!"

"उस विषय को छोड़ो! तैयार हो जाओ, मैं भी नहा लेता हूँ। चलो नाश्ता करते हैं और दोपहर की ट्रेन से मुंबई के लिए निकलते हैं!"
-०-०-

२३
जब मैं मुंबई लौटा, तो शाम के आठ बज चुके थे। दरअसल, मैं उल्का जाना चाहता था; लेकिन सुबह से जब मैं पुणे में फंस गया था, कुमारी बहुत परेशान और निराश लग रही थी। इसलिए मैंने सोचा कि आज रात वर्ली में ही रुक जाऊं। मैंने दरवाज़े की घंटी बजाई। मार्था ने दरवाज़ा खोला। लेकिन हमेशा की तरह मुस्कुराने के बजाय, वह कुमारी को गंभीर भाव से देखती रही। मैंने तुरंत उसके व्यवहार में बदलाव देखा। कुमारी के अपने कमरे में जाने के बाद, मैं कोने में रखे स्टूल पर बैठ गया और मार्था के जूतों के फीते खोलते हुए उससे कहा, -
"क्या हुआ, तुम इतने डरे हुए क्यों दिख रहे हो?"
"लड़की को पकड़ो - वारंट जारी हो चुका है!"
"गिरफ्तारी वारंट?"
"किस बारे मेँ?"
"निकाल दिए गए मामले पर उच्च न्यायालय में अपील दायर की गई है। गिरफ्तारी वारंट स्वयं उच्च न्यायालय द्वारा जारी किया गया है!"
"हे भगवान! मार्था, अभी उस लड़की को कुछ मत बताना। वो सुबह से थोड़ी परेशान है। अगर उसे इसके बारे में पता चला, तो वो और भी परेशान हो जाएगी। मैं बाहर जाकर वापस आती हूँ," मैंने अपने ढीले जूते के फीते दोबारा बाँधते हुए कहा।
मुझे बिल्कुल भी अंदाजा नहीं था कि ऐसा कुछ होगा। कुमारी गडकरी के हत्या मामले में बरी होने के बाद, मैंने सोचा था कि मामला हमेशा के लिए बंद हो गया है। लेकिन इतने शक्तिशाली पुलिस अधिकारी की हत्या के बाद पुलिस विभाग चुप नहीं बैठा रहा। सरकार ने सत्र न्यायालय के फैसले के खिलाफ उच्च न्यायालय में अपील

मैं जाकर उसके बगल में बिस्तर पर बैठ गया।
उसने मेरी तरफ एक नजर डाली और पूछा, "अली, तुम कहाँ गए थे?"
मैं थोड़ी देर के लिए बाहर गया था। मैं काम कर रहा था!
"क्या तुमने पापा को फोन किया?"
लड़की ने शरारती मुस्कान के साथ कहा, "अरे, तुम्हें क्या लगता है, मैं इतनी बेवकूफ हूँ? मैं सब समझती हूँ। जब मार्था ने दरवाज़ा खोला, तो उसने हम दोनों को अजीब नज़र से देखा। फिर तुम बाहर चले गए। इससे मुझे समझ आ गया कि मुंबई में कुछ खास हुआ है! आखिरकार, मार्था को सब कुछ बताने के लिए मजबूर होना पड़ा। अलमारी से गिलास निकालो!"
एक तरह से, उसे समझ आ गया था कि यह सही है। वरना, मुझे उसे जमानत याचिका पर हस्ताक्षर करवाने के लिए ये सारे सुझाव देने पड़ते। मैं उठा और अलमारी से गिलास निकाला। मैंने मेज पर रखी बोतल से एक पिंट गिलास में डाला। मैंने जग से पानी डाला और लड़की के सामने गिलास उठाकर खड़ा हो गया। 'चीयर्स' कहना अटपटा लगता। मेरी उलझन को भांपते हुए लड़की ने सिगरेट का धुआं छोड़ते हुए कहा, "चीयर्स कहो, है ना? लड़की की अपील के लिए चीयर्स!"
"बेवकूफी भरी बातें मत कहो! इस तरह की कई अपीलें होती हैं। लेकिन एक बार निचली अदालत कोई कड़ा फैसला सुना देती है, तो आमतौर पर उच्च न्यायालय में वह नहीं बदलता!"
"आपको भर्ती कर लिया गया है, है ना? यह फिर से चर्चा का विषय बन गया है! आपको कैसे पता चलेगा कि सिर्फ भर्ती हो जाने से यह साबित नहीं होगा?"
मुझे पूरा यकीन है! मैंने उस फैसले का अच्छी तरह अध्ययन किया है! चूंकि सत्र न्यायालय ने सभी सबूतों पर गहन विचार करने के बाद

अपना फैसला सुनाया है, इसलिए मुझे पूरा विश्वास है कि उच्च न्यायालय उसमें हस्तक्षेप नहीं करेगा!
कुमारी ने एक घूंट लिया और कहा, "समर, मैं अब और यह तनाव बर्दाश्त नहीं कर सकती!"
"तुम पागल हो! अरे, अपील में डरने की कोई बात नहीं है। गवाहों की दोबारा पूछताछ नहीं होती, सुनवाई के लिए पिंजरे में खड़े होने की ज़रूरत नहीं होती। सब कुछ निचली अदालत के दस्तावेज़ों के आधार पर होता है। सरकारी वकील और आरोपी के वकील को अपना-अपना पक्ष प्रस्तुत करना होता है!"
लेकिन क्या अपील स्वीकार किए जाने का मतलब यह नहीं है कि निचली अदालत का फैसला गलत है?
बिल्कुल नहीं! एकमात्र तर्कसंगत बात यह है कि सत्ताधारी पार्टी को अपने विचार व्यक्त करने के अधिक अवसर दिए गए हैं!
लेकिन सच कहूँ तो, मुझे अब ऐसा लगने लगा है कि मैं इससे बच नहीं पाऊँगा! गडकरी का भूत मेरा पीछा नहीं छोड़ रहा है!
"अरे! मूर्खों जैसी सोच मत रखो! गडकरी कोई सज्जन या नेक इंसान नहीं था। वह मुंबई के कई व्यापारियों को परेशान करता था। वह उन्हें पीटता था और उनका फायदा उठाता था। अब, क्योंकि हत्या हो गई है, तो ऐसा होना ही था! सिर्फ इसलिए कि मामला दर्ज हुआ है या अपील दायर हुई है, आप कैसे मान सकते हैं कि आप हर तरह से दोषी हैं? हर अपराध का दो पहलुओं से विश्लेषण किया जाता है। एक नैतिक और दूसरा केवल कानूनी दृष्टिकोण से! नैतिक दृष्टिकोण से, आपका कृत्य पूरी तरह से उचित है! कानूनी दृष्टिकोण से भी, निचली अदालत ने आपको संदेह का लाभ देते हुए बरी कर दिया है, इसलिए यह सोचने का कोई कारण नहीं है कि अपीलीय अदालत इसमें ज्यादा बदलाव करेगी।"

लड़की शांत मन से मेरी हर बात सुन रही थी। बीच-बीच में वो व्हिस्की के घूंट ले रही थी। उसने पलंग के एक तरफ तकिया रखा और अपने पैर फैला लिए। मैंने अपना हाथ उसके सिर पर रखा और कहा,- "जीवन ऐसा ही है, कुमारी। हमें इसे बहुत गंभीरता से लेने की कोशिश नहीं करनी चाहिए। हमारे रास्ते में जो भी आए, हमें उससे निपटने का रास्ता ढूंढते रहना होगा।"
"आज सुबह पुणे में नहाते समय मुझे इस बात का पूर्वाभास हो गया था कि मेरे साथ क्या होने वाला है! मुझे बुरी खबर का पता तभी चला जब पाल गिर गया।"
"अरे बेवकूफ! इसका इससे कोई लेना-देना नहीं है! निचली अदालत में तुम्हारा मामला खारिज होने के तुरंत बाद सरकार ने अपील की थी, उसे स्वीकार कर लिया गया और वारंट आज ही जारी किया गया है! जो होना था वो हो चुका है। तुम्हारी गिरफ्तारी का इस वारंट से कोई संबंध नहीं है।"
लड़की भावहीन चेहरे से मेरी ओर देख रही थी। लेकिन उसके मन में विचारों का बवंडर चल रहा था। उसने उन विचारों को शांत करने के लिए बोतल खोली थी।
जब मार्था मुझे दूसरी बार रात के खाने पर आमंत्रित करने आई, तो मैंने नौकरानी से कहा, "चलो, कुछ खाते हैं!"
लड़की ने अपना वाइन का गिलास खत्म किया और खड़ी हो गई। खड़े होते ही उसे थोड़ा लड़खड़ाने का एहसास हुआ, लेकिन मैंने उसे सहारा देने के लिए हाथ बढ़ाया, इसलिए उसे ज्यादा बुरा नहीं लगा; लेकिन ऐसी बेचैनी की हालत में शराब का किसी व्यक्ति पर गहरा असर जरूर होता है।
जब मार्था खाने की मेज पर सूप की प्लेटें लेकर आई, तो नौकरानी ने पूछा, "हमारे जाने के बाद कौन-कौन आया था?"

"अभी तक कोई नहीं आया था; लेकिन जॉकी विलास ने फोन पर पूछा था कि क्या समर यहां है।"
"क्या यह विलास का फोन था?"
"हां, और मैंने तुमसे कहा था कि जब तुम पहुंचो तो मुझसे मिलना!" मार्था ने मेरी तरफ देखते हुए कहा।
‘‘अच्छा!’’
खाना खाते समय मैं सोच रही थी, विलास मुझसे मिलने क्यों आया होगा? उसका मुझसे क्या काम होगा?... मुझे कोई कारण समझ नहीं आ रहा था। मुझे पता था कि मुंबई सीज़न शुरू होने के बाद वह तीन महीने मुंबई में ही रहेगा। पिछली बार भी वह मेरे साथ कुमारी के घर आया था।
मुझे शक था कि कुमारी पेट भर खा पाएगी या नहीं; लेकिन उसने खा लिया। मार्था पहले ही उसकी पसंदीदा पूना मसाला पत्ती ला चुकी थी, जिसे वह थाली से निकालकर लाई थी। विदा को मुंह में डालने से पहले उसने मेरी तरफ देखा और बोली, "आराम से खाओ! मैं थोड़ी देर घास पर बैठूंगी!"
नौकरानी के जाने के बाद, पाउंड केक खाते हुए मैंने मार्था से कहा,-
"मार्था, कृपया उसे समझाओ कि अपील करने का मतलब यह नहीं है कि उसे सज़ा मिलेगी! महत्वपूर्ण मामलों में सरकार अपील करती है। निराश होने का कोई कारण नहीं है!"
"उस मामले में फैसले के बाद से उसे क्या हो गया है? वो एकदम अकेला हो गया है! अब, जब तुम आस-पास होते हो, तो वो तुमसे बात करती है और मुस्कुराती है, लेकिन जब तुम अकेले होते हो, तो वो बस खाली जगह को घूरती रहती है! अब मुझे उसकी आँखों में पागलपन की झलक दिखती है! अगर इस नज़रिए से देखा जाए, तो गडकरी की हत्या का कारण

मैं ही था! लेकिन उसे लगता है कि उसकी आत्मा देर-सवेर अपना बदला ज़रूर लेगी! अगर उसे लेना ही है, तो वो मेरी आत्मा लेगी या नहीं, तुम बताओ!"
"बिल्कुल! वास्तव में, पुलिस को आप पर आरोप लगाना चाहिए था!" "लेकिन अब क्या, वे मुझ पर उच्च न्यायालय में आरोप नहीं लगाएंगे, है ना?"
"बिल्कुल नहीं! उच्च न्यायालय केवल यह देखेगा कि निचली अदालत का फैसला सही है या नहीं!"
"अगर हाई कोर्ट को लगता है कि फैसला सही नहीं है तो क्या होगा?" "आखिर होने वाला क्या है? उस मामले में इतनी सारी संदिग्ध घटनाएं हैं कि उच्च न्यायालय को भी निचली अदालत के फैसले की पुष्टि करनी होगी।"
क्या तुम्हारे पापा कल आ रहे हैं?
"तार उन तक पहुँचने के बाद भी वे नहीं रुकेंगे!"
मैंने वो रात कुमारी के साथ बिताई। सुबह उठकर मैं उल्का से मिलने बांद्रा चला गया।
मुझे लग रहा था कि उत्का अभी भी बिस्तर पर होगी, उठेगी, अपनी सूजी हुई आँखें मलेगी और दरवाजा खोलेगी। लेकिन जब मैं गई, तो कमरे का दरवाजा खुला हुआ था। सफेद साड़ी, सफेद ब्लाउज पहने और पीठ पर दो चोटियाँ बनाए उत्का बाहर आने की तैयारी कर रही थी। जैसे ही उसने मुझे देखा, उसने कहा, "पता कहाँ है?"
"क्या मैंने तुम्हें नहीं बताया था कि मैं भवानी नगर जा रहा हूँ?"
"तो! यात्रा कैसी रही? क्या आप अकेले थे या आपके साथ कोई और भी था?" उसने अपने बालों में कंघी करते हुए मुझसे पूछा।

मैं आपको सब कुछ विस्तार से बता दूंगा, लेकिन पहले मुझे यह बताइए कि आप इतनी सुबह कहाँ जा रहे हैं!
"तुम्हारा मतलब कहाँ से है? स्कूल से! मुझे शेठ रतनभाई धीरजी गुजराती स्कूल में मोंटेसरी कक्षा में नौकरी मिल गई है, और मैं परसों से जाना शुरू कर दूंगी।"
"बधाई हो! कितनी अच्छी खबर है!" मैंने उल्का का हाथ पकड़कर उसे अपनी ओर खींचा, लेकिन उसने मुझे धक्का देकर दूर कर दिया क्योंकि उसके कपड़े खराब हो जाते और थोड़ा गुस्से से बोली,
आपको कभी पता नहीं चलता कि किस समय क्या करना है!
"लेकिन मैं अपनी खुशी कैसे व्यक्त करूँ?"
"तुम बहुत होशियार हो! चलो, मैं तुम्हें स्कूल दिखाता हूँ।" "क्या यह बहुत दूर है?"
"यह इतनी दूर नहीं है, महाराज!"
"बहुत बढ़िया रहा! लेकिन जैसा कि कहावत है, उल्कापिंड की तरह हर चीज़ का अंत तो होना ही है, है ना? नौकरी के लिए इतनी मेहनत करने के बाद भी कोई फायदा नहीं हुआ। लेकिन नौकरी की उम्मीद छोड़ने के बाद, आखिरकार मुझे नौकरी मिल ही गई!"
मैं उल्का के साथ 'शेठ रतनभाई धीरजी' स्कूल में पढ़ती थी। इस स्कूल की खासियत यह थी कि यहाँ मोंटेसरी से लेकर एसएससी तक की कक्षाएँ थीं। हालाँकि यह संस्था मुख्य रूप से गुजराती समुदाय के लिए थी, फिर भी अन्य जातियों के योग्य शिक्षकों को नौकरी देते समय जाति का ध्यान नहीं रखा जाता था। इसी कारण उल्का को मुंबई में नौकरी नहीं मिल पाई। यह देखकर दुख हुआ कि मुंबई जैसे 'बहुमुखी' शहर में भी कुछ जातियाँ और समुदाय केवल अपनी ही जाति के बारे में सोचते हैं। लेकिन अंततः उल्का को शेठ रतनभाई धीरजी स्कूल में नौकरी मिलते देखकर मुझे बहुत खुशी हुई। कम से कम

मुंबई में तो एक ऐसी संस्था थी जहाँ शिक्षकों की योग्यता को ही महत्व दिया जाता था।
बस स्टॉप की ओर चलते हुए मैंने पूछा, "मीटियर, वेतन पूछना असभ्य माना जाता है, इसलिए मैं नहीं पूछता, लेकिन अगर मुझे रकम पता होती, तो मेरी जिज्ञासा थोड़ी कम हो जाती।"
उल्का ने मुस्कुराते हुए कहा, "अरे, किसी अजनबी से उसकी तनख्वाह पूछना असभ्य माना जाता है। अपनी पत्नी से पूछने में क्या औपचारिकता है?"
मैं बस हंस पड़ा।
साढ़े छह सौ!
"बहुत बढ़िया! कोई सुविधाएँ हैं क्या?"
"हो सकता है, लेकिन मैंने पूछा नहीं! लोग बहुत ईमानदार और दयालु हैं। जैसे ही उन्होंने मुझे बताया कि उन्होंने मुझे चुना है, मैंने शपथ ले ली!"
"कैसे?"
"शराब को हाथ भी नहीं लगाना चाहिए?"
मैं क्या सुन रहा हूँ?
"सचमुच! मैंने उन छोटे बच्चों को देखा और सोचा, मैं इन मासूम बच्चों को पढ़ाऊँगी! फिर मेरा चरित्र बेदाग कैसे माना जा सकता है!"
"अरे! उल्कापिंड, मैं आज इतना गुस्से में हूँ कि मुझे समझ नहीं आ रहा कि क्या करूँ! पिछले एक साल में तुमने खुद को किस मुसीबत में फंसा लिया है?"
"साढ़े सात बज रहे थे! शुक्र है कि मैं उस लत से मरा नहीं!" मैंने उल्का को स्कूल के पास छोड़ा और वर्ली वापस जाने लगी, तभी मुझे मार्था की बात याद आई कि विलास ने फोन किया था। मैंने सीधे

पेडर रोड के लिए बस पकड़ी। रास्ते में मैंने बच्चों के लिए कुछ फल और चॉकलेट खरीदे और लिफ्ट में जाकर खड़ी हो गई।
विलास घर पर था। मुझे देखकर उसने मेरा हाथ मिलाया और कहा, "अरे, सज्जन! आप कब से खोज रहे हैं? आप कहाँ हैं?"
मैं भवानी नगर गया था!
‘‘का?’’
"आसान!"
"माँ, क्या आप ठीक हैं?"
"हाँ। मैं उनसे मिलने गया था। मार्था ने कहा कि आपके पास एक ज़रूरी संदेश है!" मैंने विलास की इम्पोर्टेड सिगरेट का कश लेते हुए पीछे झुकते हुए कहा, "अरे, ऐसा क्या ज़रूरी काम था जो आपने मुझे करने को कहा?"
"एक व्यक्ति पिछले दो हफ्तों से आपकी तलाश कर रहा था। पिछले रविवार शाम को वह मेरा पता लेकर यहां आई और आपके बारे में पूछने लगी। उस व्यक्ति को लगा कि आप अभी भी मेरे साथ रह रहे हैं!"
"वह व्यक्ति कौन है, अगर कोई है भी तो?"
"राजकुमारी रत्नप्रभा, महाराज!"
"हे भगवान! विलास, क्या तुम सच कह रहे हो?"
"मैं झूठ क्यों बोलूंगा, बताओ?"
"आप जो भी कहें, क्या?"
वह अपने एक दूर के रिश्तेदार के साथ यहां आई है। वह अपने पति को अंतिम विदाई देने आई है!
"मैं समझ गया। मुझे और बताओ?"
"मेरे पास जो पैसे थे, शायद खत्म हो गए थे। वे मुझसे पाँच सौ रुपये मांग रहे थे, शायद इसलिए कि वे महिला थीं या इसलिए कि उनके मन में अभी भी राजपरिवार के लिए सम्मान था। मैंने उन्हें एक-दो

सौ रुपये दिए; लेकिन सच कहूँ तो, समर, किसी को उस महिला को समय रहते बचाना होगा; वरना मुंबई में उसका बुरा हाल हो जाएगा!" "विलास, अब मुझे किसके जैसा दिखना चाहिए?"
"यह आप पर निर्भर करता है! उसने आपको इसलिए फोन किया क्योंकि वह आपका पता ढूंढ रही थी। मैंने जानबूझकर उसे उस लड़की के घर का पता नहीं बताया! लेकिन देर-सवेर वह तब तक नहीं रुकेगी जब तक आपको ढूंढ नहीं लेती!"
"विलास, मुझे समझ नहीं आ रहा कि क्या करूं! यह सच है कि राजकुमारी ने मेरी जान बचाई। लेकिन अगर मैं इस हालत में उसके साथ गई तो फिर किसी जाल में फंस जाऊंगी। मैंने अल्का, उल्का और कुमारी की संगति से बहुत कुछ सीखा है!"
विलास ने मुस्कुराते हुए कहा, "यह उन तीनों में से चौथा है!" "सचमुच, विलास, मेरा मन दुविधा में है। एक मन कहता है कि मुझे रत्नप्रभा राजे से नहीं मिलना चाहिए, जबकि दूसरा मन तुरंत कहता है कि राजे से मिलना अत्यंत आवश्यक है। आज मैं उनकी कृपा से ही आपके समक्ष उपस्थित हुआ हूँ! यदि मैं उनके बुलावे पर नहीं जाऊँगा, तो मैं कृतघ्न होऊंगा!"
"जो तुम्हें ठीक लगे, वही करो। मैं क्या कहूँ? लेकिन मुझे यह स्पष्ट है कि तुम दिन-ब-दिन महिलाओं के जाल में और भी उलझते जा रहे हो!"
"मैं ये बात समझती हूँ, पर मैं क्या करूँ? मैं खुद उनके जाल में नहीं फँसूँगी। हालात ऐसे ही चल रहे हैं! जब मैं घर छोड़कर पुणे आई, तो एक होटल में मेरी मुलाकात सलीमा से हुई। जब मैं आपके साथ रहने आई, तो बच्चों को स्कूल छोड़ते समय मेरी मुलाकात उल्का से हुई। जब मैं मुंबई आई, तो रॉबर्ट ने कुमारी से मेरा परिचय कराया। अजीब बात है, जिन महिलाओं से मैं मिलती हूँ, वे किसी न

किसी अजीब स्थिति में होती हैं, और मुझे भी ऐसा ही महसूस होता है! मुझे समझ नहीं आ रहा कि मैं क्या करूँ!"
"धीरे-धीरे तुम्हें भी इस जीवन की आदत पड़ जाएगी!" विलास ने मुझे चिढ़ाने की कोशिश करते हुए कहा।
"यह सच है! लेकिन क्या आप समझते हैं? उल्का को नौकरी मिल गई है!" "कहाँ?"
"शेठ रतनजी धीरजी विद्यालय में। छह सौ पचास शुरुआत!"
"वाह! अब तो उसमें सुधार आएगा!"
"वह कहती है कि उसने शराब पीना छोड़ दिया है; लेकिन अब आठ से पंद्रह दिन बीतने तक यह बात सच नहीं होती!"
कुंवारी क्या कहती है?
"उस बेचारी महिला की हालत तो बहुत ही अजीब हो गई है! सरकार ने गडकरी मामले में उच्च न्यायालय में अपील की है। इसीलिए वह बेहद परेशान है!"
"सच में? मुझे तो पता ही नहीं था!"
मैंने पापा को संदेश भेज दिया है, यहाँ किसी को आज या कल तक वकील हायर करके उसे जमानत दिलवानी चाहिए!
"आपकी कंपनी में आने वाली ये महिलाएं सचमुच 'असाधारण' हैं!" "विलास, तुम्हें तो सब कुछ मज़ेदार लगता है! बच्चे कहाँ हैं?" "तुम इंदु के साथ बाहर गए थे! तुम क्या लेकर आए थे?"
"उनके लिए कुछ फल और चॉकलेट ले आओ!"
"रुको! परसों की रेस में क्यों नहीं आ जाते! मेरे पास चार घोड़े हैं!"
"कुमारी की जमानत मंजूर करवाए बिना मैं कहीं नहीं जाऊंगा, अगर आ भी गया तो मुझे पता भी नहीं चलेगा!"
"तुम एक समर्पित साथी हो!" विलास ने मुस्कुराते हुए कहा।

"जो कहना है कहो! ठीक है, मैं जा रहा हूँ!"
‘‘ओ ऽ के!’’
जब मैं विलास से निकला, तो एक लड़का सड़क पर 'ईवनिंग न्यूज़' चिल्ला रहा था। ‘‘कुमारी की दोबारा गिरफ्तारी! गडकरी हत्याकांड अपील में स्वीकार किया गया!’’ मैंने एक अंक खरीदा। खबर बड़े अक्षरों में शीर्षक के ठीक ऊपर छपी थी। जैसा कुमारी ने कहा था, लोग फिर से इस विषय पर चर्चा करने लगे थे। मुझे पता ही नहीं चला और मेरे कदम वर्ली की ओर मुड़ गए। जब मैं कुमारी के फ्लैट पर पहुँचा, तो कुमारी बीच वाले हॉल में बैठकर वही ईवनिंग न्यूज़ पढ़ रही थी। मुझे अंक दिखाते हुए उसने कहा, ‘‘देखो! तुमने मेरे लिए कितना बड़ा विज्ञापन कर दिया है!’’
"मुझे करने दो! मैंने भी वो खबर पढ़ी है! उसमें गंभीरता से सोचने लायक कुछ नहीं है!"
"'तुम्हें ऐसा लगता है! तुम कहाँ से आए हो?'"
‘‘विलासकडे!’’
"ओह, आपको फोन आया था। स्कूल से शेठ रतनजी धीरजी का फोन था। मैंने आपको नंबर दे दिया है। मैंने आपसे कहा है कि पहुँचने के बाद मुझे फोन कर लेना!"
मैं उठी। मैंने नंबर लिया और कुमारी के कमरे में जाकर नंबर डायल किया। ज़रूर उल्का का फोन होगा! मैंने मन ही मन सोचा।
"हेलो, मैं समर ठाकुर बोल रहा हूं। क्या उल्का ठाकुर यहां हैं?" "जी हाँ, बस एक मिनट! कृपया प्रतीक्षा करें!" दो मिनट के भीतर ही उल्का ने फोन उठाया।
‘‘हॅल्लो, समर का?’’
"हां, हां, मैं बात कर रहा हूँ!"
‘‘बातमी वाचलीस ना?’’

"हाँ, मैं बच गया!"
"तो फिर तुम उसका घर छोड़कर सीधे बांद्रा आकर रहने लगो! मेरे पास नौकरी नहीं थी, इसलिए मैंने अनिच्छा से तुम्हें उसकी नौकरी करने की अनुमति दी। अब हमें उसकी ज़रूरत नहीं है! वह यहाँ है और उसने अपील भी की है! मैं शाम को घर पर तुम्हारा इंतज़ार करूँगी!" इतना कहकर उल्का ने रिसीवर नीचे रख दिया। मेरे होंठों पर जो शब्द थे, वे वहीं गायब हो गए। कुमारी को इस हालत में अकेला छोड़ना मुझे ठीक नहीं लगा।
जब मैंने दोबारा उस नंबर पर डायल किया, तो मुझे बताया गया कि उल्कापिंड कक्षा में जा चुका है।
निराश होकर मैंने रिसीवर को स्टैंड पर रख दिया और कुछ बेचैनी महसूस करते हुए कुमारी के कमरे में पलंग पर बैठ गया।
विलास ने कहा कि यह सच है। मैं पूरी तरह से इन महिलाओं के जाल में फंस गया था। मुझे उल्का से मिलना चाहिए था और उसे सारी स्थिति समझानी चाहिए थी और कुमारी के घर पर कुछ और दिन रुकना चाहिए था। लेकिन उल्का ने मुझ पर एकतरफा आदेश थोप दिया था। कुमारी कमरे में आई और बोली, "यह लो! तुम्हारे पापा का एक टेलीग्राम आया है। उनकी तबीयत ठीक नहीं है, इसलिए वे नहीं आ सकते। उन्होंने सुझाव दिया है कि कोई वकील यहाँ अपील संभाले!" "हे भगवान! किस्मत मुझे हर तरफ से परख रही है! मेरी बेटी, मेरा सिर चकरा रहा है!" मैंने निराशा में कहा।
"क्या मैं तुम्हें अमृत दूं?"
"नहीं, मुझे एक बड़ा गिलास व्हिस्की दो!"
वह युवती अजीब निगाहों से मुझे देखती रही।
-०-०-

२४
अगले दिन, मैं चंदोरकर के वकीलों के साथ जमानत याचिका लेकर उच्च न्यायालय गया। याचिका दाखिल करने के बाद, चंदोरकर ने जल्द से जल्द सुनवाई कराने की कोशिश की। याचिका की सुनवाई अगले ही दिन तय थी। चंदोरकर के वकील मुझे भरोसा दिला रहे थे, "जमानत ज़रूर मिलेगी! अगर ज़मानतदार उपलब्ध नहीं हुआ, तो नकद भुगतान करके भी जमानत मिल सकती है!"
मुझे लगभग कितना भुगतान करना होगा?
"पांच हजार तैयार रखो!"
"ठीक है!"
"ठीक है, आपको कल सुबह ठीक 10:30 बजे कुमारी के साथ अदालत में पेश होना चाहिए। कभी-कभी आरोपी की उपस्थिति उसके लिए फायदेमंद होती है!"
"वह कैसा है?"
"आरोपी की उम्र और व्यक्तित्व का उल्लेख न भी किया जाए, तो भी इसका कुछ प्रभाव पड़ता है। एक महिला आरोपी होने के नाते, अक्सर दया की भावना उत्पन्न होती है!"
"ठीक है, ठीक है! मैं उसे ले आऊंगा!"
मैं जा रहा हूँ, मुझे कुछ और काम है। कल वापस आना!
चंदोरकर ने मुझे विदाई दी और हाई कोर्ट के साउथ महाराष्ट्र बार एसोसिएशन हॉल के लिए रवाना हो गए। जैसे ही मैं दूसरी मंजिल पर सीढ़ियों से नीचे उतरने के लिए मुड़ा, राजकुमारी रत्नप्रभा मेरे सामने खड़ी थीं!
मैंने विनम्रतापूर्वक उनका अभिवादन किया और पूछा, "क्या आप यहां हैं?"

"जी हां, मुंबई में आप कितना पैसा कमाना चाहते हैं? आपसे एक बार मिलकर अच्छा लगा!"
"लेकिन आपने उच्च न्यायालय में क्या काम किया?"
"मैं? मैं तो अपने पतियों के भरण-पोषण के लिए काम कर रही हूँ। मेरा वकील यहाँ है। मैं उसके साथ अदालत जाना चाहती हूँ!" "बांद्रा?"
"हां, मैं वहीं रहता हूँ!"
"बांद्रा कहाँ है?"
"वे आपको दिखा देंगे कि यह कहाँ है। लेकिन आप अदालत में क्यों हैं? क्या किसी ने आपके खिलाफ मुकदमा दायर किया है?"
मैंने कुछ भी पहले से तय नहीं किया था; लेकिन मैं इसलिए आया क्योंकि मेरे एक दोस्त को काम था। आप कब तक इंतजार करेंगे? "क्या मुझे वकीलों से मिलना चाहिए या तुरंत निकल जाना चाहिए? अगर आपके पास समय हो तो आइए! वैसे, आजकल आप कहां हैं? विलास ने मुझे आपका पता देने से मना कर दिया! क्या, क्या है भांगड़?" रत्नपुर में मैंने जिस रत्नप्रभाराजे को देखा था, वह पूरी तरह बदल चुकी थी। उस समय उनके चेहरे पर एक मासूम और शिशुवत सुंदरता थी, लेकिन आज मेरे सामने खड़ी रत्नप्रभाराजे मुंबई की भागदौड़ भरी जिंदगी से थकी हुई, थोड़ी परेशान और विचलित लग रही थीं। चाहे कुछ भी हो जाए, वह मेरी जीवनरक्षक थी। रत्नप्रभाराजे ने ही मेरे जीवन को खतरे में डालने की अपने पिता की साजिश को नाकाम किया था। अगर आज उसे मुझसे किसी भी तरह की मदद की जरूरत हो, तो मैं अवश्य करूंगा। मैंने एक पल सोचा और कहा,
मैं खाली हूँ। मैं तुम्हारे साथ चलूँगा!
"ठीक है! लेकिन आपने मुझे अपना पता नहीं बताया?" मुझसे बात करते- करते वह बार एसोसिएशन हॉल में आ गईं। उनके वकील वहां नहीं थे।

वे बांद्रा कोर्ट गए थे। जाने से पहले उन्होंने रत्नप्रभाराज को अलविदा कहा था।
नीचे उतरने के बाद राजकुमारी ने एक टैक्सी रोकी। जब मैंने आगे बैठने के लिए सामने का दरवाजा खोला, तो उन्होंने कहा, "अरे, पीछे बैठो!"
मेरे पास पीछे बैठने के अलावा कोई चारा नहीं था। फिर भी, मैं चुपके से बाईं ओर बैठ गया। शाही परिवार के प्रति सम्मान तीन पीढ़ियों से खून से जुड़ा हुआ था, इसे इतनी आसानी से छोड़ना संभव नहीं था!
रत्नप्रभाजे ने मेरे शिष्टाचार को पहचाना और मुस्कुराते हुए कहा, "समर, वो दिन बीत गए! अब उन्हें भूल जाओ! अगर तुम ऐसे व्यवहार करोगे, तो मुझे सचमुच राजकुमारी जैसा महसूस होगा! मैं अपना अतीत भूलना चाहती हूँ! मैं सब कुछ भूलना चाहती हूँ! इधर आओ और बैठ जाओ!"
फिर भी, मैं वहीं बैठा रहा, और राजकुमारी स्वयं मेरी ओर बढ़ीं, मेरा हाथ अपने हाथ में लिया और बोलीं, "मेरे साथ एक इंसान की तरह व्यवहार करो!"
मैंने अपना हाथ छुड़ाने की पूरी कोशिश की। लेकिन नियमित रूप से घुड़सवारी करने और लगाम खींचने से उसकी पकड़ इतनी मजबूत हो गई थी कि मैं अपनी उंगलियों को उसकी पकड़ से छुड़ा नहीं पाई। टैक्सी ड्राइवर बड़ी कुशलता से गाड़ियों की उस विशाल भीड़ में से टैक्सी चला रहा था। मुंबई के लोगों की उस विशाल भीड़ में उसे यह देखने का भी समय नहीं था कि किस टैक्सी में कौन किसका हाथ पकड़े बैठा है! अगर इस नज़रिए से देखें तो मुंबई के टैक्सी ड्राइवरों को अंदाज़ा होगा कि पीछे बैठे युवा जोड़े कितनी और

भयानक हरकतें करते होंगे। हमारा टैक्सी ड्राइवर भी उसी सामाजिक वर्ग का था।
"समर, मैंने तुम्हें एक पत्र भेजा था, याद है?"
"हां, आपकी शादी से पहले!"
"हाँ, और उस पत्र में मैंने यह आशंका भी व्यक्त की थी कि रावेर का शाही परिवार बहुत ही दकियानूसी है। मैं वहाँ अपने किसी भी शौक को पूरा नहीं कर पाऊँगी, चाहे वह शिकार हो, नृत्य हो, गायन हो, पढ़ना हो या घुड़सवारी हो, और शादी के बाद ठीक यही हुआ! मुझे महल से बाहर निकलने की मनाही कर दी गई! अरे, रानी के नाखून भी प्रजा को दिखाई नहीं देने चाहिए! मैंने मठ में शिक्षा प्राप्त की है, और मुझे गोशा प्रणाली से गहरी नफरत है!"
"लेकिन क्या महाराज ने शादी से पहले आपकी इच्छाओं पर विचार नहीं किया था?"
"अगर वे इतने बुद्धिमान होते, तो ऐसा क्यों होता! उनकी सारी बुद्धिमत्ता साजिश रचने में बर्बाद हो गई! शादी से पहले, जब मैंने अपने पिता को सारे विचार बताए, तो उन्होंने कहा, 'रावेर के महाराजा का जमदारखाना पूरे भारत में तीसरा सबसे बड़ा है! पहला हैदराबाद के नवाब का है, दूसरा बड़ौदा का और तीसरा रावेर का! राज्य छोटा है, लेकिन पीढ़ियों से चली आ रही संपत्ति, हीरे, माणिक, मोती, सोना जैसे अनमोल रत्न अनगिनत हैं! जब आप इतने समृद्ध राज्य की रानी होंगी, तो आपको कुछ अन्य चीजों को नजरअंदाज करना पड़ेगा।'"
"तो ठीक है?"
तो क्या हुआ, शादी हो गई! पतिराज तो बिलकुल ज़ालिम है! मेरे माता-पिता के आधे-अधूरे कहने पर! मैं तो सुबह बाथरूम जाने के लिए भी अपने माता-पिता से पूछे बिना ही ये सब कर लेती थी! बाकी हर बात

पर वे मुझसे छोटी-छोटी बातें पूछते थे, जैसे 'मसाहब, मैं नीचे अपने कमरे में जाती हूँ', 'मसाहब, मैं बगीचे में टहलने जाती हूँ'। मुझे उस बेवकूफ राजकुमार से पहले ही दिन से नफरत हो गई थी! ये दूरी बढ़ती ही गई! जब मैंने अपने पिताजी को पत्र लिखकर बताया, तो उनका जवाब था, 'तुम्हें तालमेल बिठाना होगा! तुम्हें रावेर के रीति-रिवाजों का सख्ती से पालन करना होगा!' इस रीति-रिवाज का मतलब था महल से बाहर न निकलना। जेल में कैदी भी आपस में खुलकर बात कर सकते हैं, लेकिन मुझसे बात करने के लिए कोई नौकरानी नहीं थी। मेरा मन टूट गया। पिताजी मुझे रत्नपुर वापस नहीं ले जाने वाले थे, रावेर के साथ वहाँ रहना मेरे लिए असहनीय हो गया था। जैसे आप रातों-रात रत्नपुर छोड़कर चले गए, वैसे ही मैं रावेर को छोड़कर यहाँ आ गई, अपने साथ कुछ पैसे और गहने लेकर। उसी से आज तक मेरा खर्चा चला है। अब से मुझे खर्चों के लिए हर महीने कम से कम एक हजार की जरूरत होगी, इसीलिए मैं भरण-पोषण की मांग कर रहा हूँ! "हां, आपके मानकों के हिसाब से तो निश्चित रूप से पर्याप्त हैं!" "इसीलिए रावरकर परिवार के खिलाफ आपराधिक प्रक्रिया के तहत गुजारा भत्ता के लिए आवेदन दायर किया गया है! इसके बाद, मैं संपत्ति के बंटवारे के लिए दीवानी मुकदमा भी दायर करने की योजना बना रहा हूं।"
"लेकिन अगर वे गुजारा भत्ता छोड़ने को तैयार हैं तो गुजारा भत्ता पाना मुश्किल है!"
"अरे, अगर उन्हें ये नोटिस भी मिल जाए तो काफी है! अदालत में आकर खड़े होने की हिम्मत उनमें कहां से आएगी? उनके पास इतनी दौलत है कि एक हजार रुपये महीना उनके लिए 'पेड़ की एक पत्ती' जैसा है! मुझे गुजारा भत्ता तो मिल जाएगा, लेकिन वकीलों ने कहा है कि मुझे एक-दो गवाह चाहिए! अगर वो गुजारा भत्ता याचिका का विरोध

करना चाहते हैं, तो मुझे अपनी तरफ से गवाही देने के लिए एक-दो अच्छे गवाह चाहिए। मुंबई में तो आप लोग यही तो ढूंढ रहे थे!" लेकिन अब मुझे पूरी तरह से ज्ञान प्राप्त हो गया था। राजकुमारी ने मेरा हाथ छोड़ दिया, अपने बिखरे बालों को संवारा और स्नेह भरी निगाहों से मेरी ओर देखते हुए बोली, "आप मुंबई में हैं, यह सुनकर मुझे बहुत खुशी हुई! क्या हुआ? कोई कह रहा था कि आपने अपनी पहली पत्नी को तलाक देकर दूसरी से शादी कर ली है?"
"यह गलत जानकारी है! यह सच है कि उनके अपनी पहली पत्नी से संबंध अच्छे नहीं थे; लेकिन उन्होंने उसे तलाक नहीं दिया! हमारे परिवार में ऐसा रिवाज नहीं है!"
"तो आपने पहली शादी से तलाक लिए बिना ही दोबारा शादी कर ली?" विवाह और तलाक के बारे में बात करते हुए, राजकुमारी ने इतनी सहजता से बात की मानो वह भटुकली खेल रही हों। मैंने मुस्कुराते हुए उनसे कहा, "मेरा जीवन भी एक 'विफलता' रहा है। शुरू में मैं थोड़ी विचलित हुई थी। मुझे बुरा लगा था, लेकिन अब मैं दृढ़ निश्चयी हूँ!"
“बिल्कुल! मेरी भी यही समस्या है!” राजकुमारी ने ताली बजाते हुए कहा। जब गाड़ी दादर-महीम पार करके बांद्रा पहुँची, तो राजकुमारी ने अपने पर्स में लगे छोटे से दर्पण में अपनी लिपस्टिक ठीक की और बोली, “तुम्हारी और मेरी स्थिति लगभग एक जैसी है! हम दोनों एक ही नाव में सवार हैं!”
मैंने बस मुस्कुराकर सिर हिलाया और पूछा, "मेरे बारे में आपको किसने बताया?"
"अरे, खुद को मूर्ख मत समझो! आजकल तो मुंबई के गुंडे भी तुमसे डरते हैं। वैसे, गडकरी मामले में असल में क्या हुआ था?"
"तो आप भी यह समझते हैं?"

"अरे! महाराष्ट्र को तो यह बात समझ आ गई! आप अभी भी कुमारी के साथ हैं, है ना? विलास पता बताने में हिचकिचा रहा था, और तभी मुझे शक हुआ! वह कैसी दिखती है?"
अंत में, महिलाओं की ईर्ष्या अनजाने में ही हावी हो गई! एक कुंवारी लड़की की सुंदरता से कोई असहमत नहीं हो सकता था। फिर भी, मैं एक महिला की सुंदरता की प्रशंसा दूसरी महिला के सामने करने की मूर्खता नहीं कर सकता था। मैंने मुस्कुराते हुए कहा, "वह सुंदर है, लेकिन तुम्हारे जितनी सुंदर नहीं!"
राजकुमारी ने मेरे लिंग को चुटकी से दबाया और कहा, "तुम सही कह रहे हो! ओह, मैंने सुना है कि मस्तानी के बाद महाराष्ट्र में इतनी नाजुक काया वाली कोई महिला नहीं हुई है!"
"बिल्कुल नहीं! मुंबई में एक से कहीं ज्यादा खूबसूरत महिलाएं हैं, लेकिन अगर उनकी तुलना आपकी खूबसूरती से की जाए, तो वे बहुत पीछे रह जाएंगी!"
राजकुमारी ने तिरछी आँखों से मुस्कुराया। बांद्रा का दरबार आ चुका था। राजकुमारी ने अपने पर्स से पैसे निकालकर बिल का भुगतान किया, तभी मैंने कहा,-
"मुंबई में टैक्सी का किराया जितना लगता है, उतने ही पैसों में आप कार भी खरीद सकते हैं!"
टैक्सी ड्राइवर से बाकी पैसे वापस लिए बिना ही उसने मुझसे कहा, "चलो, वकील का पता लगाते हैं!"
एडवोकेट भदोचवाला मोटे थे। वे अपनी कुर्सी पर एक जगह स्थिर नहीं बैठ सकते थे। मैंने इतना बड़ा तोंद वाला आदमी पहले कभी नहीं देखा था।
"ओह, राजकुमारी! जल्दी आइए, जल्दी आइए! क्या आपको उच्च न्यायालय से कोई संदेश मिला?"

"हाँ। इसीलिए तो मैं सीधे यहीं आया हूँ!"
"देखो, तुम्हारे पति के साथ तांत्रिक जैसा बर्ताव किया गया है! अब शतरा तारिक अदालत में पेश होगा! सबूतों का क्या हुआ?"
"तुम किस तरह का गवाह लाए हो! वह तुम्हारी इच्छानुसार ही गवाही देगा!"
मेरी सहमति लिए बिना ही राजकुमारी ने भदोचवाले को बता दिया। "वाह, बहुत बढ़िया! तुम्हारा नाम क्या है, नौजवान?" भदोचवाला ने एक पल के लिए मेरी ओर देखा, फिर अपनी कलम को माथे पर रगड़ा और बोला, "क्या मैंने तुम्हें कहीं देखा है?"
मैंने कहा, "हो सकता है कि आपने मुझे गडकरी हत्याकांड के दौरान सत्र न्यायालय में देखा हो!"
"बिल्कुल सही! एकदम सही! भवानी नगर के ठाकुर वकील ने क्या शानदार तर्क दिया!"
मैंने कहा, "ये मेरे पिता हैं!"
"अरे! कितनी शर्मनाक बात है! राजकुमारी, तो यह वाकई बहुत शर्मनाक है!"
रत्नप्रभाराजे ने मुस्कुराते हुए मेरी ओर देखा। भदोचवाला के वकील द्वारा अगली तारीख बताए जाने के बाद, हम अदालत से चले गए। "जी हां, अब बताओ, हमें कहां जाना चाहिए?" राजकुमारी ने मुझसे पूछा।
‘‘तुम मुझे वहाँ बताओ!’’
"चलो बाहर डिनर करने चलते हैं!"
"रात के खाने के लिए?" मैंने अपनी घड़ी देखते हुए कहा। "मुझे तो शाम को घर जाना था!"
"अरे! घर तो हमेशा एक जैसा ही रहता है। मुझे फोन करके बताना!" घर पर फोन नहीं है!

"आस-पास?"
"बगल वाले घर में फोन है! ठीक है, लेकिन अब कहाँ जाऊं?"
"आप ही बताइए! मेरे पास बहुत कम पैसे हैं, आपको ही मेज़बानी करनी चाहिए!" राजकुमारी ने स्पष्ट रूप से कहा।
दुर्गा उत्सव में जीती हुई रकम भी मेरी जेब में थी। मैंने अनगिनत महाभागों को देखा है जो जेब में पैसे होते हुए भी दिखावा करते हैं कि उनके पास पैसे नहीं हैं। लेकिन मैं ऐसा झूठा नाटक नहीं कर सकता था! इसके अलावा, राजकुमारी का खाना मांगना और मेरा मना करना भी बेमानी था। राजकुमारी का आभार इतना प्रबल था कि अगर मैं कई दिन भी उनकी सेवा में बिता देता, तो भी कम पड़ता। मेरी एकमात्र समस्या यह थी कि उल्का ने मुझे आज शाम घर बुलाया था। अगर मैं नहीं जाता, तो बहुत संभावना थी कि वह गलत समझ लेगी। कुमारी भी अजीब मानसिक स्थिति में थी। सचमुच, मैं आज दुविधा में फंसा हुआ था। लेकिन अब मेरे पास और सोचने का समय नहीं था। मैंने एक टैक्सी रोकी। हम दोनों उसमें बैठ गए।
"होटल ड्रीमलैंड।"
"आप कहाँ से आ रहे हैं?" टैक्सी चालक सरदारजी ने पूछा। ‘‘कोलाबा!’’
‘‘हां जी! उसके सामने वो अपना डाान्सिंग स्कूल है!’’
‘‘बिल्कुल ठीक!’’
राजकुमारी ने मेरी तरफ देखा और कहा, "आप मुंबई में अच्छे से बस गए हैं! आपसे मिलकर बहुत अच्छा लगा! डांस स्कूलों में फीस कितनी होती है!"
"यहाँ के डांस स्कूल नाम मात्र के बादशाह हैं। डांस स्कूलों की आड़ में वेश्यावृत्ति बेरोकटोक चल रही है। ऐसी जगहों पर बिल्कुल मत जाना, ठीक है?"

"आप सच बोल रहे हो?"
"क्या आप इसे देखना चाहते हैं? बिलकुल नहीं! आपको उस गाँव का रास्ता भी नहीं पूछना चाहिए जहाँ आप जाना नहीं चाहते! क्या मैं आपसे एक सवाल पूछ सकता हूँ?"
‘‘जरूर विचार!’’
"रेवर छोड़ने के बाद आपने मुंबई में रहने का फैसला क्यों किया?" "उसके पास एक खास वजह है!"
"कौन सा?"
"रेवर छोड़ने के बाद, मैं ऐसी जगह रहना चाहता था जहाँ कोई किसी से सवाल न करे! देखिए, इस मुंबई में किसी के पास किसी से सवाल करने का समय ही नहीं है। सब लोग मशीन में फंसे होने की तरह इधर-उधर भागते रहते हैं! यह भागदौड़ सुबह से शाम तक चलती रहती है। मुझे यहाँ आए लगभग छह महीने हो गए हैं। इन छह महीनों में किसी ने मुझसे यह भी नहीं पूछा कि मैं कौन हूँ या कहाँ से हूँ!" "हालांकि इस दृष्टिकोण से यह शहर अच्छा है, लेकिन लागत के लिहाज से यह बहुत महंगा भी है!"
"देखो, मैं कोई भी कठिन काम करने के लिए तैयार हूँ! इसके अलावा, अगर मुझे गुजारा भत्ता के रूप में एक हजार रुपये मिल जाएं, तो मैं सब कुछ खुद ही कर लूंगा!"
"लेकिन तुम इस तरह कब तक टिक पाओगे? तुम अभी भी जवान हो!"
उसने मुस्कुराते हुए कहा, "क्या जवानी हमेशा के लिए रहती है, बस थोड़ी देर के लिए?"
मैं तब तक पूछता रहूंगा जब तक यह चलता रहेगा!
"वह सवाल बेमानी है, समर! मुझे बताओ, क्या सिनेमा कंपनी में तुम्हारा कोई परिचित है?"
"एक सिनेमा कंपनी?" मैंने हैरानी से पूछा।

"हां, मैं सचमुच सिनेमा में काम करना चाहता हूँ!"
"यह प्रांत उस नृत्य विद्यालय से कुछ खास अलग नहीं है, महाराज!" "तुम भी 'रूढ़िवादी' कैसे हो? तुम तो बिल्कुल मूर्ख और हर क्षेत्र में बदमाश की तरह बातें करते हो?"
"महाराज, मैंने इस दुनिया को बहुत करीब से देखा है। मैं आपको एक कुंवारी लड़की के अनुभव से बता रही हूँ कि जब किसी स्त्री का चरित्र उजागर हो जाता है, तो उसके लिए जीना भी मुश्किल हो जाता है! उस फ्लैट में उससे कोई बात नहीं करता! किसी को उसके सुख-दुख की परवाह नहीं। एक ज़माने में उसे मुंबई की सौंदर्य रानी माना जाता था। लेकिन आज उसने सब कुछ छोड़ दिया है, अपना कारोबार बंद कर दिया है, फिर भी कोई उसके करीब नहीं आता। एक है मार्था और दूसरी मैं!"
"आप मुझे उसका उदाहरण क्यों दे रहे हैं?"
मुझे तुम्हें बताना ही होगा! तुम भी जवान हो, खूबसूरत हो, और तुम्हें आज पैसों की जरूरत है। पैसा आएगा; लेकिन वो तुम्हारे नैतिक मूल्यों को छीन लेगा!
मुझे लगा था कि मेरी बातों से राजकुमारी गंभीर हो जाएगी; लेकिन उसने मेरी जांघ पर थप्पड़ मारा और ज़ोर से हंस पड़ी। वह इतनी ज़ोर से हंसी कि हंसते-हंसते उसकी आंखों के कोनों में पानी आ गया। हंसना बंद करते ही उसने मुझसे कहा,-
"समर, तुम्हें अपनी शालीनता किसके लिए बनाए रखने की ज़रूरत है?" मुझे बिल्कुल भी अंदाज़ा नहीं था कि वह मुझसे इतना अजीब सवाल पूछेगी।
"आपका क्या मतलब है?"
मेरे पति ने मेरे साथ अपमानजनक व्यवहार किया। आजीवन कारावास की सजा पाने वाला कैदी सजा पूरी करने के बाद रिहा हो जाता है; लेकिन

मुझे तो उस जेल में मरते दम तक सड़ना पड़ता। मेरे पास सुंदर गीतों के रिकॉर्ड थे, मेरे पिता ने शादी में मुझे शिकार के लिए दो बंदूकें दी थीं; लेकिन इस नवजात शिशु ने मेरे रिकॉर्ड कहाँ छिपा दिए! महल से बाहर निकलना मना था, तो शिकार का क्या फायदा? खैर, अगर मैं पढ़ने में समय बिताना चाहती, तो मेरे पास किताबों की कमी होती! क्या तुमने रत्नपुर में मेरी लाइब्रेरी देखी? अरे, अगर मैं जेम्स हैंडली चेज़ या अगाथा क्रिस्टी के साधारण जासूसी उपन्यास भी पढ़ पाती, तो भी काफी होता! समर, अगर मेरी जगह कोई देहाती, अनपढ़ राजकुमारी होती, तो वह अपने ससुर के जामदरखाने की शान देखकर बहुत खुश होती। लेकिन मुझ जैसी स्वतंत्र सोच वाली और विदेशी जीवन से मोहित लड़की के लिए, वह महल एक जेल जैसा लगता था। अब तो नैतिकता और चरित्र की अवधारणाएँ भी मुझे बेतुकी लगती हैं। लोग आज़ाद ज़िंदगी जीते हैं! हंसते हैं, खेलते हैं और मज़े करते हैं! जो चाहें खाते-पीते हैं! आख़िरकार, एक दिन तो उन्हें मरना ही है, है ना?
"राजा, यह उतना आसान नहीं है जितना लगता है! अगर आप पुरुष होते और ऐसा व्यवहार करते, तो शायद कोई ध्यान नहीं देता। लेकिन आप एक महिला हैं और स्त्रीत्व की सीमाओं को पार करना इतना आसान नहीं है।"
"अरे वाह! नारीत्व की सीमाएँ! समर, इसका मतलब तो यही है कि तुम्हारे विचार अभी भी सड़े हुए हैं!"
"ऐसा नहीं है, महाराज! मुझे स्वतंत्र जीवन जीने में कोई आपत्ति नहीं है; लेकिन एक स्त्री के लिए वह सब करना संभव नहीं है जो एक पुरुष करता है। प्रकृति ने स्वयं उस पर कुछ सीमाएँ लगाई हैं।"

मैं समझती हूँ आप क्या कहना चाहती हैं! लेकिन फिर भी, अगर कोई महिला थोड़ी सी भी समझदारी से काम ले, तो वह भी स्वतंत्र रूप से जी सकती है!
मुझे एहसास हुआ कि राजकुमारी के विचार इतनी प्रगति कर चुके थे कि अब उसे कोई ज्ञान सिखाने का कोई मतलब नहीं था।
टैक्सी कोलाबा की चौड़ी सड़क पर आकर रुकी और डांस स्कूल के ठीक सामने, होटल ड्रीमलैंड के सामने ठहर गई। मैंने टैक्सी का किराया चुका दिया। राजकुमारी मेरे पीछे-पीछे होटल की सीढ़ियों से ऊपर आई। होटल दूसरी मंजिल पर था। और लिफ्ट के सामने एक बोर्ड लगा था जिस पर लिखा था, 'कृपया दूसरी मंजिल के लिए लिफ्ट का इस्तेमाल न करें।'
सीढ़ियाँ चढ़ते हुए उसने कहा, "ओह, मुझे थोड़ा सहारा दो! यहाँ न तो तुम्हें और न ही मुझे कोई पहचानेगा!"
मैंने राजकुमारी का हाथ थाम लिया। साढ़े सात बज रहे थे। युवा जोड़े होटल में आने लगे थे। मैंने अपने सामने 'बार' का एक बोर्ड देखा। तभी राजकुमारी ने मेरा ध्यान उस बोर्ड की ओर दिलाया! मैंने सहज भाव से पूछा, "क्या आप कुछ पीना चाहेंगे?"
तो? क्या तुम इतनी जल्दी खाना खाना चाहते हो? अभी तो सिर्फ साढ़े सात बजे हैं!
हम दोनों अंदर गए। कोनों में और छत पर मोमबत्ती के आकार की मंद जलती हुई बिजली की बत्तियाँ लटक रही थीं। नीली दीवारों पर खजुराहो की गुफाओं की कुछ मुद्राओं के चित्र बने हुए थे। हमारे सामने एक एंग्लो-इंडियन जोड़ा एक-दूसरे के इतने करीब बैठा था कि मुझे शक हुआ।
राजकुमारी के कथन ने मेरे दिल को भी छू लिया था। मोटे गद्दी वाले सोफे पर मेरे बगल में बैठी राजकुमारी ने मेरा हाथ थाम

लिया। जब मैंने जरा भी विरोध नहीं किया, तो उन्होंने मुझे और भी कसकर गले लगा लिया!
लाल कॉलर वाला कोट और काली धारी वाली लाल पैंट पहने हुए 'वाहक' विनम्रतापूर्वक मेरे पास आया और आदेशों की प्रतीक्षा करने लगा।
"राजा, आप क्या लेंगे?"
"व्हिस्की! यह क्या है?" राजकुमारी ने पूछा।
‘‘डिंपल, जॉनी वॉकर, वॅट सिक्स्टी नाइन, व्हाइट हॉर्स, सिवास रिगल, ट्रिपल क्राउन, गोल्ड कॉइन, स्कॉटिश चीफ...’’
उन्होंने इतने सारे नाम लिए कि एक भी नाम छूटना नहीं चाहिए। राजकुमारी ने कहा,-
‘‘व्हाइट हॉर्स!’’
मैंने पूछा, "आपको यह कैसा लगा?"
मुझे उसका अंदाज़ पसंद है! और मुझे वह इसलिए भी पसंद है क्योंकि मुझे घोड़े बहुत पसंद हैं!
"क्या यह तस्वीर पहले मुंबई में ली गई थी?"
राजकुमारी ने उस सवाल पर बस हंस दिया। मैं समझ गई कि वह जवाब नहीं देना चाहती थी।
"गर्मी के मौसम में, मुझे घोड़े वाली बात याद है, क्या तुम घुड़दौड़ देखने जाते हो?"
"मैं पुणे जाने वाला था, लेकिन यहां आने के बाद से मैं वहां नहीं गया हूं। विलास हमेशा मुझसे कहता है कि आते रहो!"
बस! मैं आपको बताता हूँ कि रेसिंग का असली मतलब क्या है। बिना किसी जॉकी को अच्छी तरह जाने रेस खेलने का कोई फायदा नहीं है। ट्रेनर और मालिक कुछ अंदाजे लगा सकते हैं, लेकिन जॉकी की तरह

कोई भी 'परफेक्ट टिप्स' नहीं दे सकता! अगर विलास से आपकी इतनी अच्छी दोस्ती है, तो इसका फायदा क्यों नहीं उठाते?
मैंने मुस्कुराते हुए कहा, "जब मेरे पास पैसे कमाने के दूसरे अचूक तरीके हैं तो मैं बेभारवंश के रास्ते पर क्यों जाऊं?" "आपका क्या मतलब है?"
इसी बीच, वेटर ट्रे से व्हिस्की के गिलास और सोडा की बोतलें लेकर आया और फिर विनम्रता से पूछा, "कोई नाश्ता चाहिए, महोदय?" "जी नहीं, धन्यवाद!"
जब मैंने रत्नपुर छोड़ा था, तब मैंने कभी नहीं सोचा था कि इस जीवन में मेरी राजकुमारी से दोबारा मुलाकात होगी। उनसे मुलाकात तो हुई, लेकिन ऐसा लगा जैसे उन्होंने मेरे पहले से ही जटिल जीवन में कुछ और उलझनें बढ़ा दी हों। मैंने उन्हें समझने लायक चार बातें बताने की कोशिश की; लेकिन मेरी 'मुक्ति' हवा में उड़ गई। ऐसा प्रतीत होता था कि राजकुमारी अपने चुने हुए जीवन पथ से विचलित होने वाली नहीं थीं।
मेरी हालत भी कुछ अलग नहीं थी! मैंने गाँव इसलिए छोड़ा क्योंकि अल्का ने मुझे धोखा दिया था, या मेरे माता-पिता ने मुझे कुछ दिनों के लिए बाहर जाने का सुझाव दिया था। लेकिन घर छोड़ने के बाद मुझमें कितना बड़ा बदलाव आ गया था! मुझे भी खूबसूरत और जवान लड़कियों की संगति की चाह होने लगी थी। अल्का मेरे साथ ईमानदार थी, फिर भी मैं कुमारी से मदद मांगने गया था। कुमारी के उन हत्या के मामलों में शामिल होने के कारण मेरा आकर्षण भी बढ़ गया था। इसी तरह मेरी मुलाकात इस राजकुमारी से हुई। उसका व्यवहार इतना उद्दंड था कि मुझे उसके प्रति अपना सम्मान थोड़ा कम करना पड़ा। वरना मैं मर्द बन जाता! मैं उसका एक हद तक सम्मान करता था, लेकिन उससे आगे अगर मैं उससे दूर रहने की कोशिश करता, तो वह भी

निर्दयतापूर्ण लगता। मुझे थोड़ा अच्छा तब लगा जब मैंने उसके कान में कुछ कहने का बहाना बनाकर उसके गालों पर अपने होंठ रख दिए। विरोध का तो सवाल ही नहीं था।
"समर! क्या यह सच है कि तुम फिल्म कंपनी में किसी को नहीं जानती?" राजकुमारी ने लगभग हैरानी से मुझसे पूछा।
"क्या आप सचमुच ऐसा चाहते हैं?"
"तुम्हारी शपथ!"
"लेकिन क्या आपने कभी सोचा है कि आपके पिता और रेवर आपके ससुराल वालों के बारे में क्या सोचेंगे?"
"क्या पिताजी ने मुझे उस बूढ़े परिवार को सौंपने से पहले मेरी भावनाओं के बारे में सोचा था? और जब रावेरकरों ने मुझे अपने बाड़े में जानवर की तरह बंद कर दिया, तो क्या उन्हें एहसास हुआ कि वे क्या कर रहे थे? मुझे पढ़ने के लिए एक किताब तक नहीं मिली! मुझे किसी से बात करने की भी मनाही थी! अब मुझे उन लोगों की परवाह क्यों करनी चाहिए?"
"महाराज, क्या मैं आपसे कुछ पूछ सकता हूँ? आप नाराज़ तो नहीं होंगे?"
"बिल्कुल नहीं! शुभकामनाएँ!"
"आप और आपके पति के बीच अच्छे संबंध क्यों नहीं हैं? मैंने उनकी तस्वीर देखी। तस्वीर में वे दोनों बहुत अच्छे लग रहे हैं!" "हाँ! दिखने में तो सुंदर है! लेकिन शरीर से बिल्कुल निडर! ओह, वो मुझे ऐसी बातें बताता है जो किसी को नहीं बतानी चाहिए। पहली रात की घटना! वो मेरे लिविंग रूम में आया। मैं अपनी अंग्रेज़ी की एक किताब पढ़ रही थी। लेकिन पढ़ने में ध्यान कहाँ था? उसने कहा, अब वे मेरे शरीर को छुएँगे, फिर छुएँगे! आधा घंटा बीत गया! क्योंकि मैं किताब पढ़ रही थी, इसलिए वे मुझे परेशान नहीं करेंगे; तो

मैंने किताब बंद कर दी और एक तरफ रख दी। मुझे जम्हाई आई और मैं बिस्तर पर गिर पड़ी। फिर भी, वहाँ से कोई हलचल नहीं हुई। मुझे अजीब से संदेह होने लगे। ऐसे समय में कौन 'पहल' करना चाहेगा?" "एक आदमी!" मैंने झट से कहा।
"लेकिन ये तो भूत बनकर बैठे रहने जैसा था! इंतज़ार करते-करते मुझे नींद आने लगी और मैं सो भी गई। लेकिन जब आधी रात को मेरी नींद खुली तो देखा कि मेरे सोते समय उन्होंने कुछ कर दिया था। मुझे इस तरह की हरकत से बहुत घिन आई, मुझसे कुछ मत पूछो! पति- पत्नी के बीच जो नाज़ुक रिश्ता बनना चाहिए, एक-दूसरे के लिए जो स्नेह और आत्मीयता होनी चाहिए, वो कभी बन ही नहीं पाई।"
"तो उसके बाद भी, वे घटनाएँ तब घटीं जब आप सो रहे थे?"
"ओह! जब मैं अच्छे मूड में थी तब भी मैंने सेक्स किया, पर पता नहीं क्यों! मुझे कभी उसकी तरफ आकर्षण महसूस नहीं हुआ! कभी-कभी वह जब चाहे मुझे जबरदस्ती खींच लेता था; कभी-कभी वह मेरी इच्छा की परवाह नहीं करता था, महिलाओं को एक खास मूड में होना पड़ता है तभी उन्हें चरम सुख मिलता है, यह साधारण गणित वह कभी नहीं समझ पाया! मुझे लगा कि यह संभोग नहीं बल्कि बलात्कार था! मैं समझती हूँ कि प्यार और यौन संतुष्टि पति-पत्नी के सुखी जीवन की बुनियाद हैं। वह कभी भी उस बुनियाद को ठीक से स्थापित नहीं कर पाया। रावेरकर के जामदारखानों में अथाह धन था, लेकिन मेरी नज़र में वह तुच्छ धन और गरीबी थी! एक तो उसके माता-पिता का गलत 'दबदबा' था और दूसरा यह कि वह 'उस' विज्ञान में पूरी तरह 'बुरा' था! ओह, अगर उसने मुझे थोड़ा समझने की कोशिश की होती, तो मैं उसके दूसरे अपराधों को भी भुला देती। रावेर से छह मील दूर उसका एक जंगल था। वह एक छोटा सा जंगल था; लेकिन वहाँ जंगली मुर्गियाँ, तीतर, जंगली कबूतर जैसे पक्षी थे। जंगल के बीच में था..." रावरकर

का बंगला। मैंने सोचा कि उन दोनों को उस बंगले में जाकर रहना चाहिए। उन्हें खुलकर बातें करनी चाहिए। उन्हें एक-दूसरे के गले लगकर घूमना चाहिए, जब मन करे शिकार करना चाहिए, लेकिन रावर की माँ ने उन्हें कहीं भी बाहर जाने से मना कर दिया था! ओह, ऐसी कई घटनाएँ थीं जिनसे मुझे उन लोगों के लिए बहुत बुरा लगा! मैंने अपने मन को बहुत समझाने की कोशिश की। मैंने 'सेक्स ही सब कुछ नहीं है' नाम की एक छोटी सी किताब पढ़ी थी। लेखक ने उसमें बहुत अच्छी चर्चा की थी। उनके अनुसार, जिनकी 'यौन जीवन' में तालमेल नहीं बैठा है, उन्होंने बहुत ही रोचक तरीके से बताया था कि उन्हें अपने साथियों के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए। लेखक ने यह भी सुझाव दिया था कि जो लोग इस जीवन में 'यौन' का आनंद नहीं ले सकते, उन्हें कला, खेल, पढ़ना और प्रकृति में आनंद लेना सीखना चाहिए; लेकिन मेरे मामले में, यौन तो गड़बड़ थी ही, साथ ही उस बूढ़े परिवार के लोगों ने मेरे मन को कहीं और आनंदित करने के सारे रास्ते बंद कर दिए थे! अंत में, मेरे पास खुद को आज़ाद करने के अलावा कोई चारा नहीं बचा था!
राजकुमारी मुझे इतनी ईमानदारी से बता रही थी, और मुझे वह रहस्य समझ में आ गया कि यह सुंदर राजकुमारी, जो कभी इतनी विनम्र और सौम्य दिखती थी, इतनी मनमानी क्यों करने लगी थी। मुझे थोड़ा बुरा लगा!
न तो मुझे और न ही राजकुमारी को समझ आया कि बातचीत के दौरान हमारे सामने रखे गिलास खाली कैसे हो गए। गिलास खाली देखकर, वेटर ने धीरे से सिर हिलाया। उसे पता चल गया होगा कि आगे आने का सही समय क्या है। फिर आदेश दिया गया कि हम सभी एक-एक पेग और लाएं। -०-०-

२५
राजकुमारी की जमानत याचिका मंजूर हो गई। ऐसा लगा जैसे मेरे सिर से बहुत बड़ा बोझ उतर गया हो। लेकिन उस रात घर न जाने के कारण उल्का मुझसे नाराज हो गई। उस रात घर जाना मेरे लिए नामुमकिन था। मुझे राजकुमारी को उनके घर पर ही छोड़ना पड़ा। लेकिन उनकी हालत घर जाने लायक नहीं थी। हमने वह रात किले के एक होटल में बिताई। राजकुमारी एक रिश्तेदार के घर में रह रही थी। वे वहाँ ज़्यादा दिन नहीं रह सकते थे। एक तो उनके पास पैसे नहीं थे, और दूसरा, कई व्यावहारिक लोगों की नज़र में अपने पति को त्याग चुकी महिला को आश्रय देना गलत था। मैं अभी भी दुविधा में थी कि राजकुमारी की इस ज़िम्मेदारी को स्वीकार करूँ या नहीं। क्या मुझे उसके एक बार के एहसान के लिए जीवन भर उसका बोझ उठाना चाहिए? मुझे क्या करना चाहिए?... लेकिन अगर मैंने उसका सहारा ठुकरा दिया, तो वह मुंबई में गुज़ारा नहीं कर पाएगी!
हमने रेसकोर्स में मिलने का फैसला किया था। मैंने विलास से चार सुझाव लिए थे। राजकुमारी गुलाबी जॉर्जेट और उससे मेल खाती ब्लाउज पहनकर रेसकोर्स आई थीं। रेसकोर्स एक ऐसा मेला है जहाँ कई युवतियाँ इकट्ठा होती हैं! हर जाति और धर्म के पुरुषों और महिलाओं का जमावड़ा! ऐसा लग रहा था कि ये महिलाएं रेसकोर्स आने से पहले कम से कम एक घंटा मेकअप कर रही होंगी! लेकिन राजकुमारी जैसी खूबसूरत जाति की महिलाओं को ऐसे जमावड़ों में आसानी से पहचाना जा सकता था!
राजकुमारी अपने पर्स को हाथ में लिए हुए बताए गए स्थान पर आई। उसने मुस्कुराते हुए मुझसे कहा, "मुझे आपको एक खुशखबरी सुनानी है!"
"कैसे?"

"रावेकर मुझे प्रति माह 1,500 रुपये गुजारा भत्ता देने के लिए सहमत हो गए हैं। उन्होंने सुझाव दिया है कि मैं भरण-पोषण याचिका वापस ले लूं!"
"वह बहुत अछा था!"
"लेकिन भदोचवाला कह रहा था कि उसे अदालत में पेश होकर इसे लिखित में देना चाहिए! मान लीजिए, आज वह 1500 रुपये प्रति माह देने के लिए सहमत हो जाता है, और अगर वह बाद में भुगतान नहीं करता है तो क्या होगा? लेकिन अगर अदालत आदेश देती है, तो वह कानूनी रूप से इसके लिए उत्तरदायी होगा!"
वकीलों की बात सही है!
"इसलिए वकीलों ने उन्हें सूचित कर दिया है कि अदालत के समक्ष पेश होने पर उन्हें अदालत में वचन पत्र प्रस्तुत करना चाहिए!" "बहुत अच्छा!"
"क्या आप विलास गए थे?"
"हाँ! उसने मुझे चार घोड़े दिए हैं, लेकिन इसमें कोई खास 'निश्चितता' नहीं है! अगर वह जीतता है, तो अच्छी कीमत मिलेगी!" "आज मेरे पास खेलने के लिए ज्यादा पैसे नहीं हैं! तुम खेलो!" मैं तुम्हें थोड़ा सा दे दूंगा!
वे मेरे लिए कितने दिन बिताएंगे?
"जब तक आपको नियमित रूप से गुजारा भत्ता मिलना शुरू नहीं हो जाता!"
बातचीत करते-करते हम ‘बूथ’ तक पहुँच गए। राजकुमारी ने सूट पहने एक अधेड़ उम्र के व्यक्ति की ओर इशारा करते हुए कहा, “हे नारोन्हा! ये एक मशहूर निर्देशक हैं। अगर आप मुझे इनसे मिलवा सकें, तो देखिए!”

यह एक अजीब संयोग था कि नारोन्हा सुबह विलास आया था और विलास ने ही हम दोनों का परिचय कराया था। फिल्म उद्योग के निर्माता, निर्देशक और अभिनेता विलास आते-जाते रहते थे। मुझे फिल्म उद्योग के लोगों में कभी कोई दिलचस्पी नहीं रही। इसके विपरीत, मेरी धारणा थी कि वे लोग स्वार्थी, आत्ममुग्ध और बेहद बेईमान होते हैं। निर्माता अभिनेताओं और अभिनेत्रियों को उनकी मेहनत का कई गुना भुगतान करने को तैयार रहते थे; लेकिन जब वे तकनीशियनों या अन्य कर्मचारियों को भुगतान करते थे, तो उनके चेहरे पीले पड़ जाते थे। अब, रेसकोर्स में नारोन्हा से मिलते ही, फिल्म उद्योग के लोगों के प्रति मेरी अरुचि एक पल के लिए ही सही, भुला दी गई।
‘‘हैलो! श्रीमान नारोन्हा! आपको ढेर सारी शुभकामनाएँ!’’ मैंने कहा।
"आपको भी!" नरोन्हा ने अपने गले में लटकी दूरबीन को ठीक करते हुए, मेरे बाईं ओर खड़ी राजकुमारी की ओर देखा और मुस्कुराते हुए कहा, "शुभकामनाएं, श्रीमती ठाकुर!"
मुझे बहुत शर्मिंदगी महसूस हुई।
"अरे नहीं, नहीं! वह मेरी दोस्त है! रत्नपुर की राजकुमारी!" राजकुमारी ने हाथ जोड़ लिए। नारोन्हा को अचानक एहसास हुआ कि उसने कुछ कह दिया है, और उसने कहा, "मुझे माफ़ करना, राजकुमारी!" मैंने कहा, "श्री नारोन्हा, वह सचमुच फिल्म में काम करना चाहते हैं!"
‘‘अच्छा? मोस्ट सर्टनली!’’
हम विलास में मिलेंगे!
‘‘ओ ऽ के!’’

जब नारोन्हा ने हमें अलविदा कहा और भीड़ में शामिल हो गई, तो राजकुमारी ने कहा,-
ग्रीष्म ऋतु, क्या अद्भुत संयोग है!
मैं भी इन लोगों पर ज्यादा नजर नहीं रखता; ये लोग तो बहुत ज्यादा खाना खाते हैं!
"अगर आप विलास का दिल जीत लेते हैं, तो यह आसान हो जाएगा!"
हम इस बारे में उनसे बाद में बात करेंगे!
दरअसल, मैं राजकुमारी को फिल्म इंडस्ट्री में बिल्कुल नहीं भेजना चाहता था। जब तक वो जवान रहती है, फिल्म इंडस्ट्री में वो एक 'अदृश्य' ही बनी रहती है, और फिर कोई उसे काम नहीं देता। मैंने भवानी नगर में कई बूढ़ी अभिनेत्रियों को देखा था। आखिर में उन्हें लाइटमैन की नौकरानी या स्टूडियो में ट्रॉली चलाने वाली नौकरानियों के रूप में कड़ी मेहनत करनी पड़ती थी। जब हम सारस बाग फुटबॉल खेलने जाते थे, तो मराठी सिनेमा की 'हीरोइन' तारा मैदान के एक कोने में बैठकर चुरमुरे-फुटन बेचती थी। हर किसी का जीवन ऐसा नहीं होता; लेकिन मुझे यकीन था कि ज्यादातर अभिनेता मरने के बाद भी दूसरों पर निर्भर ही रहते हैं। मैं अच्छी महिलाओं के फिल्म इंडस्ट्री में जाने के खिलाफ एक और कारण से था। इस क्षेत्र में एक महिला का चरित्र इतना मजबूत होता है कि किसी और क्षेत्र में नहीं! कोई भी अभिनेत्री निर्देशक और निर्माता को खुश किए बिना मशहूर नहीं हो सकती। मैंने ऐसे कई उदाहरण देखे थे। मैंने एक बेहद घिनौने दिखने वाले निर्माता को एक लॉज में सत्रह साल की नई स्टार को अपनी गोद में बिठाए देखा था। उसके सामने शेविचिवाडा की एक प्लेट, बगल में रम की एक बोतल और गोद में एक युवती बैठी थी। उसकी उम्र उस लड़की के पिता के लिए उपयुक्त थी। मैं उस लॉज में अपने एक पुराने फुटबॉल खिलाड़ी

दोस्त से मिलने गया था और गलती से दूसरे कमरे का दरवाजा धक्का दे दिया, और मेरे सामने यह दृश्य था! मैंने उससे माफी मांगी और वापस मुड़ गया। तभी निर्माता ने मुझे अंदर बुलाया और कहा, "अंदर आओ! क्या मुझे थोड़ी रम मिल सकती है!" मैं चौंक गया। फिर भी, बिना दिखाए, मैंने कहा, "मैं उन्नीसवें कमरे में जाना चाहता था!"
बाद में जाकर रम ले आना! अगर तुम ज़िद करोगे तो वो मना कर देगी। अकेले शराब पीना मज़ेदार नहीं होता, है ना!
उनकी गोद में तिरछी बैठी युवती सिर झुकाए खुद ही मुस्कुरा रही थी। खैर, वो तो मराठी फिल्म निर्माता थे। सोच भी नहीं सकती कि अगर वो हिंदी फिल्म निर्माता होते तो क्या होता! मराठी फिल्म निर्माता हिंदी फिल्म निर्माताओं से ज़्यादा 'संयमित' होते हैं!
"गर्मी! ओह, दौड़ खत्म करने का समय आ गया है। चलो अस्तबल चलते हैं!" राजकुमारी के इन शब्दों ने मेरे विचारों का सिलसिला तोड़ दिया। हम दोनों अस्तबल की ओर चल पड़े। शुरुआती बिंदु के पास ही, घोड़ी को पिंजरे में डाला जा रहा था, माइक्रोफोन से कमेंट्री शुरू हो रही थी।
"सलाज़ार को अंदर लाया जा रहा है, नयनतारा अंदर है, ब्लू नाइट को अस्तबल में ले जाया जा रहा है..." सभी घोड़ियों को बंद करने के बाद घंटी बजी और दौड़ शुरू हो गई। मैंने नयनतारा पर सौ का दांव लगाया था, जबकि राजकन्या ने सलाज़ार और ब्लू नाइट पर अनुमान लगाकर दांव लगाया था! घोड़ी ने फरलॉन्ग की दूरी कम की और जीत की ओर दौड़ पड़ी और राजकन्या जोर-जोर से चिल्लाने लगी, "सलाज़ार! ब्लू नाइट! सलाज़ार! ब्लू नाइट!"
अंत में, सालज़ार जीत गया और ब्लू नाइट दूसरे स्थान पर रहा। राजकुमारी ने मेरे दिए सौ रुपये भविष्यवाणी पर दांव पर लगा दिए

थे, और कीमत गिरकर एक सौ अस्सी हो गई थी! राजकुमारी के सौ रुपये पल भर में तीन हज़ार छह सौ हो गए। अगली दौड़ में, राजकुमारी को पचास रुपये का नुकसान हुआ।
जब हम कोल्ड ड्रिंक लेने रेस्टोरेंट गए, तो वहाँ बहुत भीड़ थी। हमें थोड़ी देर बाहर इंतजार करना पड़ा। जब अंदर की भीड़ छंट गई, तो हम अंदर जाने के लिए दरवाजे पर इंतजार कर रहे थे, तभी अचानक उल्का का भाई अवि एक ब्राह्मण लड़के का हाथ पकड़े हुए अंदर से बाहर आया। मुझे देखते ही उसने कहा,-
"हेलो समर! हे भगवान! अरे, तुम कहाँ हो? उलेका कहाँ है? क्या तुमने उससे शादी कर ली?" राजकुमारी को चिंतित नज़रों से देखते हुए उसने पूछा, "वह कौन है?"
रत्नपुर की राजकुमारी!
"ओह! आपसे मिलकर खुशी हुई राजकुमारी! समर, आपसे मिलकर बहुत अच्छा लगा। चलो, अंदर बहुत भीड़ है, लॉन पर बैठते हैं। हम वहीं कुछ ऑर्डर करेंगे!"
मैं अंदर चली गई थी क्योंकि मैं बाहर बड़े रंगीन छातों के नीचे नहीं बैठना चाहती थी क्योंकि राजकुमारी मेरे साथ थी; लेकिन अवि ने बाहर बैठने का सुझाव दिया, इसलिए मुझे मजबूर होना पड़ा।
जब हम आमने-सामने बैठे थे, तो अवि ने कहा, "मैंने हमेशा सोचा था कि अगर कभी तुमसे मुलाकात हुई, तो वह रेसकोर्स में ही होगी! समर, मेरे दोस्त विन ली से मिलो, जो रंगून से है!"
वेन ली हंस पड़ी।
"समर, उल्का इस समय कहाँ है? मैं उससे मिलना चाहती हूँ। उसे देखे हुए एक साल हो गया! वह इस समय क्या कर रही होगी?"
"उसकी अभी-अभी अंतिम संस्कार की रस्म हुई है।"
"इससे पहले?"

"उसने मुझे उससे पहले ही काम पर रख लिया था!"
"आपका क्या मतलब है?"
"हम दोनों शांति से एक बार मिलेंगे, तब हम आपको सब कुछ बता सकेंगे। फिलहाल, मान लेते हैं कि वह ठीक है!"
"याद है मैंने तुमसे क्या कहा था? हमारे बीच की यह लड़की बहुत ज़िद्दी है। एक बार मन में ठान ले तो फिर टिकी ही रहती है! उसे ज़िंदगी में समझौता करना नहीं आता! अगर उसे अभी तुमसे शादी करनी थी, तो क्या उसे यह नहीं पता लगाना चाहिए था कि तुमने अपनी पहली पत्नी को तलाक़ दिया है या नहीं? मेरे माता-पिता यही कहते थे। अगर जल्दी में शादी करोगे, तो तुम्हारी हालत रखैल जैसी ही होगी! बताओ, क्या वो सलाह गलत थी? लेकिन नहीं! उसने मेरी बात नहीं मानी! जाने दो! क्या वो आज खुश है?" उसने राजकुमारी की तरफ देखते हुए मुझसे पूछा।
"इसे इस तरह समझने में कोई दिक्कत नहीं है!" मैंने हिचकिचाते हुए कहा।
"ठीक है! क्या विलास ने आज आपको कोई खास टिप्स दीं?"
"हां, राजकुमारियों को माघा वंश के लिए पूर्वानुमान मिल गया है।"
"बधाई हो!"
राजकुमारी के साथ अवि से मिलने के बाद मुझे बहुत असहज महसूस हुआ। लेकिन अवि इतना घमंडी क्यों था? वह खुद भी शादीशुदा था, फिर भी वह इस 'वेन ली' को अपने साथ क्यों रखता था? शायद यही वजह थी कि उसने मुझे और कुछ सिखाने की ज़हमत नहीं उठाई!
अवी ने हमें ठंडा कोको बनाकर दिया। जाते समय अवी ने कहा, "हमारी नाव मुंबई बंदरगाह पर खड़ी है। हम यहाँ चार दिन रुकेंगे। उसके

बाद हम यहाँ से अदन के लिए रवाना होंगे। अगर हो सके तो कल रात के खाने पर ज़रूर आइएगा!"
"दो से तुम्हारा क्या मतलब है?"
"उल्का और तुम! अगर तुम दोनों ज़रूर आ रहे हो, तो इस नंबर पर कॉल करके मुझे बता देना! मैं तुम्हारे कॉल का इंतज़ार करूँगा!" उसने खोए हुए टिकट पर नंबर लिख दिया। राजकुमारी जानबूझकर अनसुना करने का नाटक कर रही थी और दूसरी तरफ देख रही थी। मुझे वो बर्मी लड़की बहुत पसंद आई। अवि से मिलने के बाद मुझे लगा कि राजकुमारी के साथ रहते हुए मुझे उससे नहीं मिलना चाहिए था; लेकिन अवि का व्यवहार 'सभ्य' था। उसने उल्का के बारे में ज़्यादा नहीं पूछा! उल्का से शादी करने के बाद एक राजकुमारी जैसी युवती को अपने साथ ले जाना ही इस बात का सबूत था।
अवी उस बर्मी लड़की को मेले में ले गया। लेकिन मुझे थोड़ी राहत मिली। अगर उल्का को पता चलता कि मैं राजकुमारी को घुड़दौड़ के मैदान में ले जा रहा हूँ तो वो क्या सोचेगी? मैं ऐसा व्यवहार नहीं कर सकता जिससे उल्का दुखी हो जाए... यह सच है कि मैं उस कुंवारी लड़की और राजकुमारी दोनों की संगति चाहता हूँ; लेकिन उनका मुझ पर कोई अधिकार नहीं है। उल्का की कहानी अलग है। मैं ऐसा व्यवहार नहीं कर सकता जिससे उल्का खुश हो जाए!
उस दिन राजकुमारी ने पैसे जीते थे, और वह होटल में रात का खाना खाने की ज़िद कर रही थी। लेकिन मैंने उल्का के पास जाकर उससे माफ़ी मांगने का फ़ैसला किया। राजकुमारी थोड़ी निराश हुई। पर हर किसी को हर बार खुश रखना मेरे लिए नामुमकिन था!
जब मैं बांद्रा स्थित अपने घर पहुंची, तो उल्का सब्जियां साफ कर रही थी। मैंने कोने में अपने जूते उतारे और उसके सामने स्टूल पर बैठ गई। वह मेरी तरफ बिल्कुल ध्यान दिए बिना सब्जियां साफ करती

रही। मुझे पता था कि वह बहुत गुस्सा होगी! मैं थोड़ी देर वहीं बैठी रही। उसने कुछ नहीं कहा, इसलिए उसे खुश करने के लिए मैंने कहा, "आज मेरे पास तुम्हें बताने के लिए एक खुशखबरी है!" फिर भी, वह गुस्सा थी।
"आज मेरी मुलाकात अवी से हुई!"
उल्का ने झट से अपना सिर उठाया, मेरी तरफ देखा और पूछा, "कहाँ?" "रेसकोर्स पर!"
"उसने क्या कहा?"
"क्या उसने आपको नाव पर रात के खाने के लिए आमंत्रित किया था?" "कब?"
"कल रात!"
आप और क्या कह रहे थे?
"कुछ नहीं!"
"क्या वह अकेला था?"
"हूँ?" मैं थोड़ा असमंजस में था क्योंकि मुझे समझ नहीं आ रहा था कि उसे बताऊँ कि उसके साथ बर्मी लड़की भी है। उत्का ने तुरंत मेरी स्थिति भांप ली और कहा, "वह अकेला नहीं हो सकता!"
मैं बस हंस पड़ा। "तो, क्या तुम कल एवी जा रहे हो?"
"देखते हैं! कल शाम स्कूल में एक मीटिंग है, अगर वो जल्दी खत्म हो जाए तो चलो चलते हैं!"
"नहीं, तुम्हें उसे पहले बताना चाहिए था! उसने जो फोन नंबर दिया है उसे देखो!"
"चलो चलते हैं। मैं सात बजे तक यहाँ पहुँच जाऊँगा, तुम यहीं रुको।"
‘‘ओ ऽ के!’’
"तुम उस दिन क्यों नहीं आए?"

"बस थोड़ा व्यस्त हूँ!"
"क्या तुम अब भी उस कुंवारी लड़की के साथ हो?"
"सच कहूँ तो, उल्का, कुमारी को पहले से कहीं ज़्यादा मेरे समर्थन की ज़रूरत है! उसके मामले में अपील दायर की गई है। उसकी मानसिक स्थिति बहुत खराब है। मुझे लगता है कि उसे कभी भी मानसिक दौरा पड़ सकता है!"
"लेकिन आप उसके बारे में इतने चिंतित क्यों थे?"
"देखो, उल्का, तुम्हें अंदाज़ा भी नहीं है कि जब तुम शराब के नशे में बेहोश थी, तब मेरी क्या हालत थी। उस समय, वह लड़की मेरे पास आई। वह मुझे चाहती थी। उसने हर तरह से मेरी मदद की। आज उसका समय आ गया है, इसलिए मुझे उसके लिए थोड़ी और मेहनत करनी पड़ेगी!" "परेशानी उठाओ, यह मेरी नहीं है। लेकिन मैं बस इतना चाहता हूँ कि इससे कुछ भी उत्पन्न न हो। जब मैं पागल हो गया था तब तुम अपने दिमाग से काम ले रहे थे, लेकिन अब जब मैंने अपने दिमाग से काम लेने का फैसला किया है, तो मैं बस इतना चाहता हूँ कि तुम पागल न हो जाओ!"
“ऐसा नहीं होगा।” मैंने अपनी कुर्सी थोड़ी आगे खींची और उत्का के कंधे पर हाथ रख दिया। उसने कोई विरोध नहीं किया, बस सामने वाली खिड़की की तरफ देखती रही। खिड़की का पर्दा थोड़ा खुला हुआ था, जिससे रोशनी अंदर आ रही थी। हो सकता है कोई उसके आर-पार देख ले। मैं उठी और जल्दी से खिड़की पर पर्दा डाल दिया, फिर उत्का को बाहों में भरकर उसे एक लंबा चुंबन दिया। अगर आप नाराज़ या द्वेषपूर्ण महिलाओं से छुटकारा पाना चाहते हैं, तो बेवजह बहस न करें, बस उन्हें चुंबन दें! उनका चेहरा पल भर में बदल जाता है!

बांद्रा में हमारा कमरा थोड़ा अस्त-व्यस्त था। हमें उस 12 फुट गुणा 14 फुट के कमरे में खाना-पीना और सोना पड़ता था, और यहाँ तक कि बाथरूम भी कोने में था!
रॉबर्ट और उनकी पत्नी लिलियन, जिन्होंने शुरू में हमें पनाह दी थी, दोनों ने ही हमसे रिश्ता तोड़ लिया था। लेकिन जब भी मैं रॉबर्ट को देखता, मुस्कुरा देता था। गडकरी हत्याकांड के बाद से, हर कोई यह मानने लगा था कि मैं कोई बुरा इंसान हूँ। इसी बीच, उल्का को शराब की लत लग गई थी! इसी वजह से, लिलियन ने भी उल्का से बात करना बंद कर दिया! उनका आना-जाना भी बंद हो गया। लेकिन मैं उनमें से किसी को भी दोष नहीं देना चाहता था। वे ऐसे लोग थे जो बस आगे बढ़ते रहते। उनमें तनाव भरी जिंदगी जीने की हिम्मत नहीं थी। जब उन्होंने हमसे रिश्ता तोड़ा, तो मुझे कुछ दिनों तक बुरा लगा। मैं अक्सर रॉबर्ट को वर्ली नाका की एक दुकान में मैग्निफाइंग ग्लास से घड़ी ठीक करते देखता था। कभी-कभी मैं दुकान पर जाकर रॉबर्ट से पूछता, "पापा, क्या मैंने आपको मुझसे बात करना बंद करने पर मजबूर किया?" लेकिन मैं और सोचता, अगर कोई मुझसे रिश्ता नहीं रखना चाहता, तो मैं उसे क्यों मजबूर करूँ? दोस्ती कितने समय तक चलती है, यह तो हर किसी की अपनी पसंद होती है।
उस दिन जब उल्का सब्जियां साफ कर रही थी, मैंने उसे गले लगाया, चूमा और कहा, "आज मुझे सब्जियां नहीं खानी हैं। चलो किसी अच्छे होटल में चलते हैं और स्वादिष्ट खाना खाते हैं!"
पहले तो उल्कापिंड तैयार नहीं था, लेकिन थोड़ा और मनाने के बाद वह तैयार हो गया। वह कपड़े पहनने लगी, तभी दरवाजे पर दस्तक हुई, तो मैं उठकर अंदर गया। जब मैंने पर्दा हटाया, तो दरवाजे पर लिलियन खड़ी थी!

मैंने दरवाजा खोला। लिलियन अंदर आई और फूट-फूटकर रोने लगी। हालांकि उसने उल्का से बात करना बंद कर दिया था, फिर भी वह रोते हुए दरवाजे से अंदर आई। उल्का ने उससे पूछा,
"क्यों? क्या हुआ?"
रोना बंद करते हुए उसने कहा, "रॉबर्ट!" मुझे लगा कि रॉबर्ट का काम तमाम हो गया है, लेकिन उलाका ने उससे फिर पूछा, "रॉबर्ट को क्या हुआ?"
पुलिस ने उसे गिरफ्तार कर लिया और अपने साथ ले गई!
"किस बारे मेँ?"
उस पर चोरी की घड़ी रखने का आरोप है!
"ओह," मैंने कहा, "मैं ऐसा कुछ भी नहीं करना चाहता, मेरे पिताजी! आपने उसे कब पकड़ा?"
दोपहर तीन बजे!
"ठीक है। मैं उसे एक घंटे के अंदर वापस ले आऊंगा! मेरे साथ आओ, उल्कापिंड!"
उल्का ने बड़ी-बड़ी आँखों से मेरी ओर देखा और कहा, "आप किस आधार पर उसे बचाने का वादा कर रहे हैं?"
मुझे आधार कार्ड के बारे में कुछ नहीं पता, लेकिन रॉबर्ट जैसे कायर के लिए चोरी का सामान रखने जैसा अपराध करना असंभव है!
मैं उन दोनों को टैक्सी में बिठाकर पुलिस स्टेशन ले गया। अब तक मैं पुलिस और अदालत से अच्छी तरह परिचित हो चुका था। गडकरी हत्याकांड के बाद से पुलिस विभाग में कई लोगों से मेरी अच्छी जान-पहचान हो गई थी। मैं उन दोनों के साथ गया। वहाँ के सब-इंस्पेक्टर घाटपांडे मेरे परिचित निकले।
"हेलो श्री ठाकुर, आप यहाँ क्यों आए हैं?" उसने पूछा।
"तुमने मेरे एक दोस्त को पकड़ लिया है!"

‘‘कोण? प्लीज सिटडाऊन!’’
मैं आगे वाली सीट पर बैठा था। उत्का और लिलियन मेरे पीछे वाली कुर्सियों पर बैठी थीं।
"आपने खुद को कौन बताया था, श्री ठाकुर?" सिपाही ने फिर पूछा। ‘‘रॉबर्ट मार्टिन!’’
"हाँ, वही घड़ीसाज़! वर्ली नाका वाला?"
"जी हां, ये वही हैं! ये उनकी पत्नी लिलियन हैं!" लिलियन ने उनका अभिवादन किया।
"श्री ठाकुर, हमने आज उन्हें गिरफ्तार कर लिया है। उनके पास से एक चोरी की आयातित घड़ी मिली है। हमें संदेह है कि वे घड़ी तस्करी गिरोह से जुड़े हो सकते हैं!"
"असंभव! यह आदमी इतना डरपोक है कि ज़ोर से चिल्लाने पर बेहोश हो जाएगा। कुमारी के खिलाफ गडकरी हत्याकांड दर्ज किया गया था, लेकिन वह इतना डरा हुआ था कि मेरे वहाँ होने पर उसने मुझसे बात करना भी बंद कर दिया!"
"जी हां, श्री ठाकुर! लेकिन पेडलर रोड के सट्टेबाज से जो घड़ी चोरी हुई थी, वो रॉबर्ट रेमिटन की दुकान में मिली... खैर, अगर आप उनसे पूछेंगे कि उन्होंने आपको वो घड़ी कैसे दी, तो वो बता नहीं पाएंगे। उन्होंने किसी का हुलिया बताना शुरू कर दिया। उनके रजिस्टर में जो नाम लिखा है, वो तो है ही नहीं! ये मानना मुश्किल है कि उन्होंने ये झूठी एंट्री की होगी!"
"लेकिन महोदय, क्या यह संभव है कि जो व्यक्ति यह घड़ी उनके पास लाया था उसने झूठा नाम बताया हो?"
इंस्पेक्टर मुस्कुराया और बोला, “इस संभावना से इनकार नहीं किया जा सकता, श्री ठाकुर। लेकिन फिर भी, हम उन्हें आठ दिनों के

लिए पुलिस हिरासत में भेज रहे हैं ताकि यह पता चल सके कि क्या सच है और क्या झूठ!”
"जब भी आपको पूछताछ के लिए उसकी जरूरत होगी, वह आपके सामने पेश होगा, है ना?"
"यह सच है, श्री ठाकुर, लेकिन आप उससे छुटकारा पाने के लिए इतनी जल्दी में क्यों हैं?"
"उसकी पत्नी तो रात भर रोती रहेगी!"
"श्री ठाकुर, यह उन्हें जमानत पर रिहा करने का पर्याप्त कारण नहीं हो सकता!" इंस्पेक्टर घाटपांडे ने शांत भाव से कहा। "महोदय, अदालत ने कुमारी को हत्या जैसे मामले में एक बार नहीं बल्कि दो बार जमानत पर रिहा किया! एक बार सत्र न्यायालय द्वारा और अपील स्वीकार होने के अगले दिन उच्च न्यायालय ने भी जमानत देने में कोई संकोच नहीं किया! और आप घड़ी मिलने के इस साधारण मामले में उसे हिरासत में रखेंगे?"
"उनका कोई इलाज नहीं है, श्री ठाकुर!"
"ठीक है! आपने किसकी घड़ी चोरी होने की बात कही थी?"
"वीरेंद्र कुमार सतोदिया, 341.7, नौरोजी गामाडिया लेन, पेडर रोड!"
"ठीक है! मैं पंद्रह मिनट में वहाँ पहुँच जाऊँगा।"
मैंने एक टैक्सी ली। मेरी मुलाकात वीरेंद्र कुमार से हुई। मैंने उन्हें अपनी पहचान बताई। जैसे ही मैंने खुद को गडकरी हत्याकांड में शामिल लड़की का निजी सचिव बताया, वह आधे चौंक गए। मैंने उनसे कहा,-
"रॉबर्ट मार्टिन पिछले दस-बारह सालों से वहाँ अपनी दुकान चला रहे हैं। उनके खिलाफ आज तक किसी ने कोई शिकायत दर्ज नहीं कराई है। हो सकता है कि किसी ने आपकी घड़ी चुरा ली हो और उसे मरम्मत

के लिए किसी फर्जी नाम से उन्हें दे दिया हो। अगर आपको आपकी घड़ी मिल जाती है, तो मामला खत्म!"
"तो मैं अपनी माँ के लिए और क्या ले सकता हूँ?"
"यह एक आयातित घड़ी है। क्या आपके पास उस व्यक्ति की रसीद है जिससे आपने इसे खरीदा था?"
"रसीद कैसी दिखेगी?"
"तो फिर वो घड़ी आपकी क्यों है? श्री सतोदिया, अगर आप रॉबर्ट को जमानत पर रिहा करवाने में सहयोग नहीं करेंगे, तो क्या मुझे कोई दूसरा तरीका अपनाना पड़ेगा?"
"उसने क्या कहा?"
"कुछ नहीं, बाद में समझ जाओगे!"
वीरेंद्र की बहादुरी पर जरा सा भी खतरा टल गया। उसने डरते हुए कहा, --
‘‘हे पिताजी, हमें बताइए कि हमें क्या करना चाहिए!’’
"पुलिस को बता दो कि तुम्हें तुम्हारी घड़ी वापस मिल गई है। यह मेरे पड़ोसी ने चुराई थी, और उसने इसे मरम्मत के लिए रॉबर्ट को दिया होगा! रॉबर्ट का इस अपराध से कोई लेना-देना नहीं है!" ‘‘क्या हम इसे परिवार कहते हैं?’’
"तुम ये बात सीधे-सीधे नहीं कह रहे, लेकिन तुम्हारी बात पर यकीन करो तो बेचारे को आठ दिन पुलिस हिरासत में रहना पड़ेगा! उसके चेहरे पर तो जुकाम के निशान हैं! ये रॉबर्ट कड़ाके की ठंड में पुलिस हिरासत में पड़ा रहेगा! तुम खुद अपनी चीजें सुरक्षित नहीं रख सकते, और चोरी होने के बाद किसी को दोष देना क्या जायज़ समझते हो?"
"अरे, इस तरह की बातें मत करो। अगर वह जमानत पर छूट गया, तो हमारे पिता का क्या होगा?"

"तो चलिए पुलिस स्टेशन चलते हैं और उन अधिकारियों को बताते हैं कि घड़ी चोरी करने के लिए रॉबर्ट के खिलाफ मेरी कोई शिकायत नहीं है। किसी और ने इसे चुराया होगा और मरम्मत के लिए उसे भेजा होगा!"
वीरेंद्र सतोदिया अपनी कार से पुलिस स्टेशन आए। उन्होंने पुलिस से मुलाकात की और कहा, "सायेब, अगर आप इस मामले को सुलझा सकते हैं, तो शिकायत करने का क्या फायदा, अगर हमें हमारी मां के लिए घड़ी वापस मिल जाए!"
"जी हां, और उनके पास घड़ी की रसीद भी नहीं है। अगर रॉबर्ट मार्टिन कल अदालत में यह भी कह दें कि घड़ी उनकी है, तो भी कोई फायदा नहीं होगा! घड़ी तो गायब हो चुकी है, और अदालत उन पर झूठा मुकदमा दायर करने का आरोप लगाएगी! क्या यह सच है या नहीं, श्री सतोशी?"
पुलिस को यह एहसास हो गया था कि अगर उन्होंने रॉबर्ट मार्टिन को जमानत पर रिहा नहीं किया, तो वे उसे 'प्रतिष्ठा का केंद्र' बना देंगे और इस प्रक्रिया में अनावश्यक अराजकता पैदा कर देंगे! सिपाही ने मुस्कुराते हुए कहा, "श्री ठाकुर, यह तो केवल आपके हस्तक्षेप के कारण ही है कि हमें उसे रिहा करना पड़ रहा है!" "आपकी बहुत मेहरबानी! लेकिन किसी को गिरफ्तार करने से पहले, आपको उसके पिछले रिकॉर्ड की जांच करनी चाहिए। सिर्फ इसलिए कि उसे एक घड़ी मिली है, अपनी कल्पना को इतना हावी होने देना ठीक नहीं है कि आप उसे तस्करों के गिरोह का सदस्य मान लें!"
"अब आप मुझसे क्या कहना चाहते हैं? कांस्टेबल, कृपया रॉबर्ट मार्टिन को जमानत पर रिहा होने के बाद छोड़ दें। अगर आपको उनसे पूछताछ के लिए ज़रूरत हो तो क्या आप उन्हें वापस बुला सकते हैं?"

इंस्पेक्टर घाटपांडे मुस्कुराते हुए मुझसे कहते रहे, "नहीं तो तुम ज़रूर एक कुशल वकील बन जाते। तुम दूसरों को अपनी बात मनवाने में काफी माहिर लगते हो!"
"प्रशंसा के लिए धन्यवाद।"
जब पुलिस ने रॉबर्ट मार्टिन को ज़मानत पर रिहा किया, तो वह हमारे पास बाहर आ गया। उसे मेरे साथ इतना बुरा बर्ताव करने का पछतावा ज़रूर हुआ होगा। लिलियन मार्टिन की आँखों में कृतज्ञता झलक रही थी। अपनी घड़ी देखते हुए मैंने लिलियन से कहा, "अभी तो एक घंटा भी नहीं बीता है। मैंने तुमसे क्या कहा था, माघा?" "क्या?" लिलियन ने अपनी नम आंखों के कोनों को पोंछते हुए मुझसे पूछा।
"क्या आपने यह नहीं कहा था कि आप रॉबर्ट को एक घंटे के भीतर वापस ले आएंगे?"
लिलियन ने सहमति में सिर हिलाया। और उसने कहा, "बहुत-बहुत धन्यवाद! क्रिसमस के दिन उसे गिरफ्तार किया जा सकता था!"
अब क्रिसमस को खुशी से मनाओ! आओ, उल्कापिंड!
"क्या तुम रात के खाने के लिए घर नहीं आ रही हो?" लिलियन ने उला से पूछा।
"आज नहीं, क्रिसमस के दिन आना। खास गोवा स्टाइल चिकन बनाना!" मैंने कहा।
हमने एक टैक्सी रोकी, मार्टिन दंपति को अलविदा कहा और होटल की ओर चल दिए।
उल्का ने मेरा हाथ पकड़कर कहा, "तुम इतने आत्मविश्वासी कैसे हो सकते हो?"
"तुम किस बारे में बात कर रहे हो?"

"तुमने कहा था कि तुम रॉबर्ट को एक घंटे के अंदर वापस ले आओगे, और तुमने ऐसा कर दिखाया!"
"क्या बात है, उल्कापिंड! मैंने पिछले एक साल में अदालतों के बारे में बहुत कुछ सीख लिया है! मुझे समझ आने लगा है कि चाबी दबाने पर कौन सा दरवाजा खुलता है और कौन सा बंद होता है! मैंने पहले वीरेंद्र सतोदी को हाथ जोड़कर समझाने की कोशिश की; उसने बड़ी मुश्किल से कहा कि वह सुनेगा ही नहीं। फिर वह सीधे मुद्दे पर आया।"
"लेकिन पुलिस आपकी बात क्यों सुनेगी? आप उन्हें संतुष्ट नहीं कर सकते!"
"तुम्हें समझ नहीं आ रहा, उल्कापिंड! मैंने वो भी अनजाने में ही किया था! मैंने इशारा किया था कि अगर रॉबर्ट पर कोर्ट में मुकदमा हुआ तो केस टिक नहीं पाएगा, क्या वो एक तरह की चेतावनी नहीं थी? वैसे, सच कहूँ तो, मार्था और कुमारी ने गडकरी को मारा था, लेकिन फिर भी इस विभाग में कुछ लोग सोचते हैं कि इसके पीछे मेरा हाथ है! इसीलिए जब वे मुझे देखते हैं तो थोड़ा घबरा जाते हैं!"
उलकत और मैं कई दिनों से एक-दूसरे से अलग-थलग थे। उसके गले में लटके मंगलसूत्र के अलावा, हम दोनों के बीच कोई रिश्ता नहीं था। लेकिन सौभाग्य से, उसे नौकरी मिल गई और सब कुछ बदल गया। मैं कुमारी और राजकुमारी दोनों की संगति में खुश रहता था, लेकिन उस खुशी की भी एक सीमा होती थी।
लेकिन जब मैं उल्का के साथ चल रहा था, तो मुझे कोई पछतावा या गुस्सा नहीं आया। मैंने उससे शादी कर ली थी। भले ही शादी गैरकानूनी थी, लेकिन उससे शादी करने के कारण मेरे मन में उसके लिए सम्मान था। जब उसने शराब पीना शुरू किया तो मुझे बहुत दुख

हुआ। मैंने उसे शराब छोड़ने के लिए बहुत कोशिश की, लेकिन मैं सफल नहीं हो सका। आखिरकार, मुझे उसे दवाइयाँ और बेहोशी की दवा देकर उसकी शराब की हालत सुधारनी पड़ी। इसमें मेरा सारा पैसा खर्च हो गया।
लेकिन मुझे पैसे की कोई कदर नहीं थी। पैसा कमाना ही मेरा जुनून था! अगले दिन, किले को देखते-देखते मैंने हज़ारों रुपये कमा लिए। फिर भी, मुझे पैसे का लालच नहीं था। अगर मेरे पास पैसा होता, तो मैं उसे पानी की तरह लुटा देता, क्योंकि वह बिना किसी मेहनत के कमाया गया था। और बिना मेहनत के कमाया हुआ पैसा बेकार है! न तो उसके आने में खुशी है और न ही उसके जाने में दुख! मैंने बहुत सारे प्राचीन पुराण नहीं पढ़े हैं, लेकिन शायद इसी को लोभ रहित रवैया कहते हैं!
जैसे ही टैक्सी रेनबो होटल के मुख्य द्वार पर पहुँची, सामने का हरा लॉन पारे की बत्ती की रोशनी में लालिमा लिए चमक रहा था। इस होटल की खासियत यह थी कि इस हरियाली से समुद्र तट साफ़ दिखाई देता था। होटल में आने वाले ज़्यादातर लोग लॉन पर रखी कुर्सियों और मेज़ों पर ही नज़र गड़ाए रहते थे। अंदर बहुत कम लोग बैठे थे। कुछ लोग तो छुपकर खाते-पीते थे या सीधे होटल की इमारत में चले जाते थे ताकि कोई उनके साथ आए बच्चे को न देख सके! आज उल्का मेरे साथ थी। मैंने होटल जाने के बजाय बाहर बैठना बेहतर समझा। उल्का समुद्र की ओर मुंह करके बैठी थी। उसके आसपास कुछ जोड़े ड्रिंक कर रहे थे और हंस रहे थे। उल्का को अब शराब से कोई लगाव नहीं रहा था। मैंने भी तय कर लिया था कि जब भी वह मेरे साथ होगी, मैं उसका सम्मान करते हुए शराब को हाथ नहीं लगाऊंगा। "समर, इस होटल का माहौल कितना सुखद है, है ना?" उसने आकाश की ओर देखते हुए कहा।

"क्या आपको इसका कारण पता है?"
"क्या?"
पैरों के नीचे ये हरियाली, सामने समुद्र और ऊपर आसमान! समुद्र और आसमान प्रकृति के दो सबसे भव्य रूप हैं। इन्हें देखने से मन में उठने वाले सारे विचार गायब हो जाते हैं। समुद्र को देखकर मन कितना प्रसन्न होता है! जो व्यक्ति समुद्र को देखने के बाद भी अपने बारे में सोचता है, वह तो शुद्ध प्राणी है! वह भी आकाश का ही हिस्सा है! सच में, क्या आपने कभी ऐसी हरियाली पर लेटकर आसमान में चांद, ग्रहों और तारों को देखा है? तब भी आपको मानव जीवन की क्षणभंगुरता और प्रकृति की विशालता का एहसास होता है!
मेटियोर अचानक हंसने लगा।
मैंने सिगरेट जलाते हुए पूछा, "हंसने में क्या बुराई है?" "तुम्हारे अंदर एक कवि छिपा हुआ है!"
"यह सचमुच एक उल्कापिंड है! इसे मजाक मत समझो! कभी-कभी मुझे बहुत असहज महसूस होता है!"
"मुझे भी कुछ कहने दो, मुझे भी कुछ कहने दो। वो भालू आ रहा है, उसे आदेश दो! समुद्र और आकाश को देखकर शायद तुम्हारी प्यास बुझ जाए, पर मेरी भूख नहीं रुकती! अच्छा, अवि और क्या कह रहा था?" "कुछ नहीं, उसने बस इधर-उधर पूछताछ कर ली!"
आपने शादी के बारे में क्या कहा?
"हां। हमारी शादी के खिलाफ कोई नहीं था; वे बस चाहते थे कि यह शादी कानूनी हो जाए!"
"अब मुझे ये कहना चाहिए! ओह, जब मैंने पापा को तुम्हारे बारे में बताया, तो उन्होंने कहा, जो लोग दिखने में स्मार्ट होते हैं, कभी-कभी मुसीबत में पड़ जाते हैं! तुम्हारे बारे में बात करते

हुए, वो मुझे सलीमा हत्याकांड के बारे में भी कुछ ऐसा ही कहते थे। उनका मतलब ये है कि मुझे तुमसे दूर रहना चाहिए!"
"बेटियों के माता-पिता का ऐसा महसूस करना स्वाभाविक ही है, उल्का! भला माता-पिता क्यों नहीं चाहेंगे कि तुम्हारे जैसी खूबसूरत, पढ़ी-लिखी लड़की का भविष्य अच्छा हो? मुझमें तो बहुत सारी बुराइयाँ हैं! मैं जुआ खेलता हूँ, विवाहेतर संबंध रखता हूँ, और शराब पीने पर भी कोई रोक नहीं है। तो भला कौन समझदार माता-पिता ऐसे आदमी को अपना दामाद बनाना चाहेगा?"
लेकिन अगर मुझे इसका पछतावा न हो तो क्या होगा?
"अब तुम मुझे अलग नजरिए से देखते हो!"
वेटर के आते ही मैंने उसे अपना ऑर्डर दे दिया।
"मीटियर, मुझे लगने लगा है कि आने वाले दिन अच्छे हैं!"
"से क्या?"
"तुमने उस 'ऑक्टोपस' से छुटकारा पा लिया, नौकरी मिल गई। तुम्हारी पुरानी दोस्त लिलियन, जिससे तुम्हारा ब्रेकअप हो गया था, उससे तुम्हारा फिर से मिलन हो गया है। ये सभी घटनाएँ संकेत देती हैं कि अच्छे दिन आने वाले हैं!"
"जो भी हो, मुझे लगता है कि अब से तुम्हें कुमारी से मिलना बंद कर देना चाहिए!" उल्का ने गंभीरता से कहा।
"सच कहूँ तो, उल्का, कुमारी कभी हमारे बीच नहीं आ पाएगी। वह सचमुच बेबस है। उसने बहुत पैसा कमाया है, लेकिन उसका उदाहरण स्पष्ट रूप से दिखाता है कि पैसा किसी व्यक्ति को पर्याप्त सुरक्षा प्रदान करने में असमर्थ है। सुरक्षा का मतलब शारीरिक सुरक्षा नहीं है!"

मुझे इस तरह की चर्चाएँ करना पसंद नहीं है, और निश्चित रूप से इतनी रमणीय जगह पर तो बिल्कुल नहीं! मैं बस इतना जानती हूँ कि अब से आपको धीरे-धीरे उससे संबंध तोड़ लेने चाहिए!
वेटर खाना लेकर आया। टमाटर के सूप पर मलाई तैर रही थी। सूप खाते हुए उल्का ने कहा, --
मुझे कल अवि के पास जाना है, याद है ना! मुझे उससे मिलने की बहुत इच्छा हो रही है!
मैं कल सुबह उसे फोन करके बता दूंगा!
"लेकिन उन्होंने खाने के बारे में कुछ कहा ही कहाँ!"
"उसकी नाव पर! इन समुद्री यात्रियों के रसोइये तो कमाल के हैं! वे स्थानीय व्यंजन बना सकते हैं! अवि को बर्मी चिकन बहुत पसंद है, वो अब इसे हर दिन खाता है!"
सूप के बाद कटलेट परोसे गए। इस होटल की खासियत यह है कि यहाँ सबसे बढ़िया मछली के कटलेट मिलते हैं। दो कटलेट खाने के बाद, आपको और कुछ खाने की इच्छा ही नहीं होगी! उल्का को मछली बहुत पसंद थी, लेकिन आज तक उसे मछली के कटलेट के बारे में पता नहीं था। उसे ये कटलेट बहुत पसंद आए।
जब रात को उल्का मेरी बाहों में सो गई, तो मैंने उसके कान में फुसफुसाते हुए कहा, "पुणे छोड़ने के बाद आज पहला दिन है..." दरअसल, पुणे छोड़ने के बाद से उल्का ने मेरे साथ संबंध नहीं बनाए थे। उसकी यह लत! जब भी मैं घर आता, वह नम आँखों से दरवाजा खोलती! मैंने तो कभी उसे पत्नी बनाने के बारे में सोचा भी नहीं था! आज वह दिन और वह पल आ ही गया था।
-०-०-

२६
वो तीन महीने! वो मेरे जीवन के सबसे सुखद और संतोषजनक महीने थे! कुमारी की अपील को असर करने का समय मिल गया था। लेकिन अब वह अंजाम भुगतने के लिए मानसिक रूप से तैयार थी। उल्का को इस बात से तसल्ली थी कि मैं चार दिनों से उसके पास नहीं गया था। उसे लगने लगा था कि मैं धीरे-धीरे कुमारी से संबंध तोड़ रहा हूँ। राजकुमारी के जीवन में भी कुछ स्थिरता आ गई थी। रावेरकर ने उन्हें 1500 रुपये प्रति माह गुजारा भत्ता देने का वादा किया था। चूंकि उस रिश्तेदार के साथ लंबे समय तक रहना संभव नहीं था, इसलिए उन्होंने दादर की हिंदू कॉलोनी में उनके लिए दो कमरों का एक मकान किराए पर ले लिया। मैं कभी-कभार घुड़दौड़ देखने जाता था। विलास द्वारा दिए गए सुझावों में से 'पचास प्रतिशत' सही साबित होते थे; इसी वजह से मैं चाहे जितना भी पैसा लगाता, न नुकसान होता था और न ही फायदा। विलास और मैं करीबी दोस्त थे, इसलिए कई जुआरी मेरे साथ जुड़ गए। खाना-पीना और पार्टियां बाहर ही होती थीं! धीरे-धीरे मुंबई की जुआ जगत में भी मेरी पहचान बन गई। जब भी मैं आंखों के सामने 'उन' चश्मों के साथ जुआ खेलने बैठता, तो तीन-चार हजार लोगों का समूह इकट्ठा हो जाता और मैं घर लौट आता। लेकिन जब मैं मुंबई के जुआरियों के साथ खेलता, तो मुझे बहुत सावधानी से खेलना पड़ता था। मुंबई बदकिस्मत लोगों का अड्डा है! मैं सोचता था कि यहां हर कोई दूसरों को धोखा देने के लिए ही बैठा है! इसलिए मेरे मन में यह डर बैठा हुआ था कि अगर मैंने उन चश्मों का इस्तेमाल लोगों को बेवकूफ बनाने के लिए किया, तो मैं उन्हें ज़्यादा देर तक बेवकूफ नहीं बना पाऊँगा! लेकिन जब व्यापारी या बेवकूफ सरकारी अधिकारी फ्लश खेलने के लिए

सबसे पहले, विलास मुझे यहाँ लाया था। उसे कभी-कभी यौन संबंध बनाने की तीव्र इच्छा होती थी। लेकिन वह इस बात का खास ध्यान रखता था कि मुंबई में कोई भी उसे ऐसा करते हुए न देख पाए! यहाँ तक कि अगर वह होटल मिल्टन में नग्न भी हो जाता, तो बाहर किसी को पता भी नहीं चलता। विलास खास तौर पर एक लड़की के लिए यहाँ आता था। यह चीनी लड़की सिर्फ अठारह या अठारह साल की थी, लेकिन एक बार जो भी उसके संपर्क में आ जाता, वह कहीं और नहीं जाता था! वह बहुत अच्छी हिंदी बोलती थी! ग्राहक को लगता होगा कि वे दोनों बहुत पुराने परिचित हैं! उसका नाम 'चिंग यांग' था, लेकिन सब उसे 'चिंगी' कहते थे। मैंने अपने जीवन में कई ऐसी लड़कियाँ देखी हैं जो वेश्यावृत्ति करने को तैयार थीं; लेकिन कोई भी 'चिंगी' जैसी नहीं थी। मुझे लगता था कि वह इसी धंधे के लिए पैदा हुई थी। 'चिंगी' इस कला में माहिर थी।
होटल मिल्टन के तहखाने में जुआरियों के बीच कभी-कभार झगड़े होते थे; लेकिन जो झगड़ा कर रहा होता, उसे दूसरा जुआरी ऐसे उठाकर ले जाता जैसे किसी पायदान को रौंद रहा हो। जैसे किसी बिल्ली के बच्चे को सिर से उठाकर ले जाया जा रहा हो। बड़बड़ाते हुए शराबी को कोने में बने शौचालय में ले जाकर खड़ा-खड़ा भिगोकर बाहर फेंक दिया जाता। शराबी के सिर पर पानी की तेज़ धार पड़ती और पाँच मिनट में उसका नशा उतर जाता। सौभाग्य से, ऐसा मौका मुझे कभी नहीं आया और न ही कभी आएगा। मुझे शराब की इतनी लत नहीं थी। इसके अलावा, जब तक मेरे पास गिलास थे, जुआ खेलते समय किसी से झगड़ा करने का कोई कारण नहीं था! मैंने कभी हार नहीं मानी! मुझे हमेशा जीतना ही था!

उस रात, आधी रात को, जब मैंने खेलना समाप्त किया और बाहर जाने लगा, तो होटल के प्रबंधक, सालेभोन ने मुझसे कहा, "कल शाम खेलने आना!"
‘‘का?’’
"एक अरब खिलाड़ी फ्लश खेलने आ रहा है!"
तो? इसमें खास क्या है?
"वह हर बार यहाँ आता है और सबको कंगाल कर देता है। तुम समझदारी से खेलो, इसलिए मैंने कहा, तुम्हारे अलावा कोई और उसके साथ खेलने के लायक नहीं है!"
"तो क्या? लेकिन क्या हमारे नियमित सदस्य गायब हैं?"
"उन्हें गोली मार दो! वे कभी तुम्हारे बराबर नहीं होंगे! मैं उस अरब को नंगा करके यहाँ से बाहर निकालना चाहता हूँ। मैं उसकी सफेद पतलून और चोगा उतारना चाहता हूँ!"
मैंने मुस्कुराते हुए सालेभोय से कहा, "मैं आऊंगा। लेकिन मुझे अपने साथ दो-तीन और लोगों की ज़रूरत है!"
"अगर वे आ भी जाएं, तो भी तुम्हारे सामने टिक नहीं पाएंगे। जब सिर्फ एक ही प्रतिद्वंदी बचा हो, तो अंधा अरब सौ तरह की चालें चलता है!"
‘‘माय गॉड! ब्लार्इंड शंभरची चाल?’’
"हाँ! वह पिछले आठ-दस सालों से सोने की चोरी कर रहा है। उसे लगता है कि सौ रुपये के नोट टॉयलेट पेपर जैसे होते हैं!"
"तो फिर तुम क्यों खेल रहे हो?"
मैं फ्लश के रोमांच के लिए खेलता हूँ। पैसे कमाने के लिए बिल्कुल नहीं!
"यह तो किसी अजीब जानवर जैसा लग रहा है!"

"कल देखोगे! चाहे तुम पूरी स्कॉच पी लो, तुम्हारे पैर नहीं हिलेंगे!"
"क्या ऐसा कोई ताकतवर आदमी होता है?"
"वह एक बार में पूरा मुर्गा खा जाता है! वह सुबह जल्दी उठकर कसरत करता है। उसकी ताकत भी बहुत ज़्यादा है। वह हमारे चौकीदार और उस यूनुस, दोनों के लिए बहुत ताकतवर है!"
"पैसे के मामले में भी भारी और सत्ता के मामले में भी भारी?" ‘‘जबरदस्त!’’
"तो फिर मुझे उससे मिलना ही पड़ेगा!"
"अरे, उसे देखो! अगर तुम उसे एक ही झटके में खो देते हो, तो तुम्हें जीवन में फिर कभी काम नहीं करना पड़ेगा!"
मैंने अब तक क्या काम किया है? लेकिन मैं कल जरूर आऊंगा!
"थोड़े अतिरिक्त पैसे ले आओ! वह बड़ा आदमी है!"
‘‘ओ ऽ के!’’
मैनेजर सालेभोय ने उस अरब के बारे में बताया था, इसलिए मैं उसे देखने के लिए बेताब था। शराब पीकर फ्लश खेलने वाले लोग खेल आगे बढ़ने के साथ-साथ और भी मूर्ख होते जाते हैं। उनकी तर्कशक्ति और समझदारी बेकार हो जाती है। अंत में, मैंने देखा था कि वे अपना सारा पैसा हार जाते हैं। इसलिए मैं यह जानने के लिए बेचैन था कि स्कॉच फादर फ्लश खेलने वाला वह अरब कौन था। मैं घर लौटते समय यह सपना देख रहा था कि मैं अपने चश्मे की मदद से उस अरब को रेगिस्तान दिखाऊंगा।
आधी रात बीत चुकी थी, उलाका ने आधी नींद में दरवाजा खोला और थोड़ी झुंझलाहट के साथ कहा, "मैंने तुम्हें लाखों बार कहा है कि थोड़ा जल्दी घर आ जाओ!"
मैंने मुस्कुराते हुए कहा, "घर आकर बहुत अच्छा लग रहा है!"

"अगर तुम नहीं भी आओगे तो भी मुझे ज्यादा फर्क नहीं पड़ेगा! देर रात घर आने वाले आदमी को सज्जन नहीं कहा जाता!"
मुझे कुछ उम्मीद तो है!
"ठीक है, अब सो जाओ। तुम मेरी नींद खराब कर रहे हो!"
मैंने अपने कपड़े बदले और चारपाई पर उसके बगल में लेट गई। जैसे ही मैंने अपना हाथ उसके शरीर पर रखा, उसने धीरे से कहा, "प्लीज़, मुझे परेशान मत करो, समर!"
"अरे बाप रे! शुभ रात्रि!" मैंने भी पीठ फेर ली और सोने के लिए प्रार्थना करने लगी। लेकिन मुझे नींद नहीं आई। मेरे मन में तरह-तरह के विचार आने लगे, 'राजकुमारी की अपील का क्या फैसला होगा? फिल्मों में काम करने के अपने जुनून को लेकर राजकुमारी का क्या होगा? उटेका में कितना कुछ बदल गया है?...'
मैं उल्का की बहुत प्रशंसा करता था! उसमें आया बदलाव अद्भुत था। मैंने ऐसे कई उदाहरण देखे थे जहाँ लोग शराबी बन जाते हैं, लेकिन अक्सर अपनी लत से उबर नहीं पाते और अंततः उसी में फंस जाते हैं। उस दिन जब हम नाव पर खाना खाने गए, तब मुझे उल्का का दृढ़ संकल्प समझ में आया। मुझे वह घटना आज भी याद है।
अवी विशाल मालवाहक जहाज 'सतलुज' के कप्तान थे। उन्होंने उल्का और मुझे रात के खाने पर आमंत्रित किया, इसलिए हम चले गए। 'सतलुज' गोदी से लगभग एक फर्लांग दूर लंगर डाले खड़ा था। हम वहाँ जाने के लिए नाव पर सवार हुए। जब नाव जहाज के पास पहुँची, तो उसने हमसे हमारे पहचान पत्र मांगे। लेकिन अवी ने मुझे यह नहीं बताया था कि हमें ऐसे किसी पहचान पत्र की आवश्यकता होगी। इसलिए मैंने सोचा, अब हमें यहाँ से वापस लौटना होगा। इसी बीच, अवी खुद मुंह में पाइप लिए डेक पर घूमते हुए दिखाई दिए। जैसे ही उन्होंने

हमें देखा, वे नीचे उतरे और हमारे पास आ गए। उन्हें देखते ही, हमसे पहचान पत्र मांगने वाला नाविक अपने आप एक तरफ हट गया। "अगर तुम वहां नहीं होते, तो मैं पंचाई में होता," उल्का ने कहा। "ऐसा कैसे हो सकता है? मैं तो तुम लोगों का इंतज़ार कर रहा था! मैंने तुम्हें घाट पर भी बताया था!"
लेकिन हमें वहां किसी ने नहीं रोका!
हम नाव पर रुकेंगे!
एवी गोरा है, मोटा नहीं है, बहुत लंबा भी नहीं है, बस इतना ही। उसकी ठुड्डी पर लेनिन जैसी दाढ़ी है। उसकी दाहिनी कलाई पर किसी श्वेत नाविक का नाम गुदवाया हुआ है! उसने नौसेना की वर्दी पहनी है जिस पर सफेद और नीले रंग का रिबन लगा है।
मैंने पूछा, "क्या मुझे जहाज पर चढ़ने पर भी यह वर्दी पहननी पड़ेगी?"
"बिल्कुल! अब अगर आप बाहर जाना चाहते हैं, तो आप आम कपड़ों में बाहर जा सकते हैं।"
"क्या आपको दिन-रात पानी में रहते-रहते बोरियत नहीं होती?"
अवी मुस्कुराया और बोला, "एक बार जब आप इस जीवन के आदी हो जाते हैं, तो आपको कुछ भी महसूस नहीं होता! इसके अलावा, एक बार जब आप ज़मीन पर पैर जमा लेते हैं, तो आप उस जीवन का भरपूर आनंद उठाते हैं।"
हम अवि के साथ उसके केबिन तक गए। मुझे लगा कि जिस ब्रह्मा कन्या को मैंने कुछ दिन पहले उसके केबिन में देखा था, वह ज़रूर वहाँ होगी। लेकिन वहाँ कोई नहीं था। मैंने हाथ उठाकर इशारा किया, "वह कहाँ है?" इस पर अवि ने कहा,-
वह नीचे है। थोड़ी देर में ऊपर आ जाएगी!
"यह कौन है?" उल्का ने पूछा।

"नाव पर मौजूद डॉक्टर!"
"तुम्हें क्या पता है?" उल्का ने मुझसे पूछा।
"ओह, मैं उसे कुछ दिन पहले रेस देखने ले गया था, और वहीं मेरी उससे मुलाकात हुई।"
"क्या वो डॉक्टर हैं? वो तो डॉक्टर जैसी दिखती ही नहीं थीं!" मैंने चिढ़कर कहा।
"इस बारे में कुछ मत कहना, समर!" एवी ने मुझे डांटा, क्योंकि उस दिन राजकुमारी मेरे साथ रेसकोर्स पर थी।
विशाल मालवाहक जहाज लहरों पर धीरे-धीरे हिल रहा था। मुंबई की चहल-पहल यहाँ सुनाई नहीं दे रही थी। अवि और मैं पूरे जहाज पर घूमे। जहाज के निचले डेक पर एक बड़ा बॉयलर था। चूंकि जहाज बंदरगाह पर खड़ा था, इसलिए उसके नीचे ईंधन नहीं था, लेकिन फिर भी वह जगह बहुत गर्म थी!
"यहाँ इस बॉयलर में भाप बनती है; यह इस बड़ी पाइप से पिस्टन तक पहुँचती है। भाप के दबाव के कारण..." एवी ने नाव के काम करने के तरीके का संक्षिप्त विवरण दिया। बॉयलर के पास, नीली वर्दी पहने कुछ कर्मचारी इंजन में ईंधन भर रहे थे। एवी को आते देख वे तुरंत एक तरफ हट गए।
"उसके बाद, यह डेक! यहीं पर सामान रखा जाता है!"
"नाव में कितने लोग हैं?" उल्का ने पूछा।
"कोई निश्चित संख्या नहीं है, लेकिन इस नाव पर हमारे पास सौ चालक दल के सदस्य हैं!"
क्या उनकी पत्नियां और बच्चे उनसे मिलने आते हैं?
"जी हां। जब नाव बंदरगाह पर पहुंचती है, तो ये लोग छुट्टियां मनाने चले जाते हैं, वे अपने रिश्तेदारों से भी मिल सकते हैं!" उल्का ने कहा, "तुम हर बार घर क्यों नहीं आते?"

"मैं कैसे आ सकता हूँ? नाव के किनारे लगने के बाद आप एक दिन की छुट्टी ले सकते हैं, और नाव के किनारे लगने के बाद बहुत सारा काम होता है, जैसे सामान लादना और उतारना! मुझे यह सुनिश्चित करना होगा कि लादा गया माल सुरक्षित रूप से उतारा जाए!"
"हमें लगा था कि आपका काम सिर्फ नाव चलाना या उसकी देखभाल करना है!" मैं।
"लेकिन क्या, तुम्हें अंजलि याद नहीं है?" उल्का ने पूछा।
"अब जब तुम्हें याद आ गया है, तो तुम क्या कर रहे हो? यह एक जोखिम भरा काम है, है ना?" एवी ने कहा।
मैंने पूछा, "मुझे कारण बताओ, उल्कापिंड?"
"क्या?"
मैंने अवी का मज़ाक उड़ाने की कोशिश करते हुए कहा, "हर बंदरगाह पर एक नाविक की एक पत्नी होती है।" अवी ने मेरी पीठ थपथपाई और कहा, "मुझे नाविक के लिए अफ़सोस है, लेकिन क्या तुम्हारे जैसे आदमी के लिए एक साथ चार बच्चों को संभालना उचित है?"
"चार-चार?" मैंने कहा।
"जी हां, जी हां! क्या मैं आपको नाम बता दूं?"
"नहीं, पिताजी!" यह देखकर कि मेरा खेल मुझ पर ही उल्टा पड़ गया है, मैंने कहा, "मैं मुसीबत में फंसे लोगों की मदद करता हूँ। लेकिन लोग इसका अलग-अलग अर्थ निकालते हैं!"
जब हम वापस अवि के केबिन की ओर जा रहे थे, तो सफेद रेशमी साड़ी पहने एक ब्राह्मण डॉक्टर विन ली केबिन के सामने ग्रिल को पकड़े खड़ी थीं।
"शुभ संध्या, महोदय!" उसने थोड़ा झुककर अवि का अभिवादन किया। "अरे, मेरी बहन उल्का और उसके पति समर से मिलो!"

"अरे! आप मुझे दोबारा क्यों मिलवा रहे हैं? परसों तो है ही, है ना?"
"लेकिन क्या तुम परसों रेसकोर्स में थीं?" ली ने उल्का से पूछा। मैं? मैं तो कभी रेसकोर्स जाता ही नहीं!
एवी मुस्कुराया और बोला, "ली, जब भी तुम उसके साथ रहोगे, तुम्हें एक नई लड़की देखने को मिलेगी! तुम्हें यह नहीं पूछना चाहिए। तुम्हें अपनी पत्नी के सामने इस विषय को नहीं उठाना चाहिए। तुम्हें कब पता चलेगा?"
ऐसा नहीं था कि उल्का को पता नहीं था कि मैं बाहर क्या कर रही थी; लेकिन फिर भी वह नहीं चाहती थी कि मेरे व्यवहार पर सार्वजनिक रूप से चर्चा हो। मैंने ली की बात अनसुनी करने का नाटक किया और समुद्र की ओर देखने लगी।
एवी के केबिन के बाहर छोटी सफेद कुर्सियाँ रखी थीं। बीच में एक सफेद अंडाकार मेज रखी थी। एवी का सेवक उसकी आँखों के इशारे पर तेज़ी से काम कर रहा था। जैसे ही एवी ने अपने दाहिने हाथ की हथेली को अपने बाएं हाथ की मुट्ठी से छुआ, उसने अंदर से स्कॉच व्हिस्की की एक बोतल निकाल ली। एवी ने नाश्ता लाने का भी इशारा किया।
"समर, वो तो जन्म से ही गूंगा है! लेकिन उसे इतना कुछ पता है कि ये बताना मुश्किल है!"
"यह कैसा है?"
"यह तो आश्चर्य की बात है! मुझसे पहले इस नाव पर जो कप्तान था, वह उसे अपने सहायक के रूप में लाया था। लेकिन बेचारा बहुत कम उम्र में ही मर गया! वह जाने ही वाला था, लेकिन मैंने उसे यहीं रोक लिया। वह मुझे इतना भी नहीं देता!"
"उसका नाम क्या है?"

‘‘तोलाराम!’’
लेकिन जो जन्म से गूंगे होते हैं वे बहरे भी होते हैं!
"उसे थोड़ा-बहुत सुनाई देता है! जब यहाँ पीछे गोदी में धमाका हुआ, तो वह आया और मुझे जगाया और मुझसे विनती करने लगा कि नाव को थोड़ा और आगे ले जाकर रोक दूं!"
‘‘का?’’
"उस समय हमारी नाव पर काफी मात्रा में 'विस्फोटक' सामग्री थी। हमने आपातकालीन डीजल इंजन चलाकर नाव को किनारे पर ले आए, इसलिए सब ठीक रहा!"
‘‘का?’’
"घाट पर हुए विस्फोट से जलते हुए टुकड़े इधर-उधर उड़ रहे थे, क्या उस समय चार छोटी नावें जलकर राख नहीं हो गई थीं?"
"यह तोलाराम तो अद्भुत हैं! आप और क्या कह सकते हैं, हम आपको अपना गुरु मानते हैं!" मैंने कहा।
‘‘का?’’
"आपने इस शांत तोलाराम को इसलिए चुना ताकि आप जिस भी बंदरगाह पर जाएं, वहां किसी को भी आपके कारोबार के बारे में पढ़ना न पड़े!" "हाथी!" अवि ने बोतल खोली और गिलास में व्हिस्की डालने लगा। उल्का ने कहा,-
मुझे मत पहनो!
"अरे, थोड़ी सी ही लो! दिन में एक बार लेने से कोई नुकसान नहीं होगा!"
उल्का ने कहा, "क्या आप चाहते हैं कि मैं दोपहर के भोजन के लिए रुकूँ?"
एवी मुस्कुराया और तोलाराम को इशारा किया, और तोलाराम नाव की कैंटीन की ओर दौड़ा और कोका-कोला की दो बोतलें वापस ले आया।

हल्की हवा में ली की साड़ी लहरा रही थी। हम तीनों ने खुशी से अपने गिलास होठों तक उठाए, लेकिन उत्का अपनी कड़क कोका-कोला पीती रही। क्या सब्र है! मुझे आज रात वह घटना साफ-साफ याद आ गई। सुबह करीब साढ़े छह बजे, उल्का सफेद साड़ी, सफेद ब्लाउज और बालों में शेवंती गजरा लगाकर स्कूल जाने के लिए तैयार हो रही थी। बिस्तर पर लेटे-लेटे मैं उसे बड़ी-बड़ी आँखों से देख रहा था। उसकी हरकतों को देखकर मुझे भी आनंद आ रहा था। मेरी तरफ पीठ करके उसने शीशे में देखा और पाउडर लगाने लगी, तभी शीशे से ही उसने मेरी तरफ देखा। मुझे जागते देख उसने कहा, "उठो, तुम बारह बजकर बारह मिनट, रात को दो बजकर दो मिनट तक घर आते थे, फिर आलसी की तरह इधर-उधर लुढ़कते रहते थे! अपनी जिंदगी में थोड़ा अनुशासन लाओ! कहीं जाने, कभी आने का क्या फायदा?"
पाउडर लगाने के बाद, उसने आइब्रो पेंसिल से अपनी भौहों को हल्के से संवारा, होंठों पर हल्के गुलाबी रंग की लिपस्टिक लगाई और अपना पर्स उठाने के लिए नीचे झुकी। मेरी नज़र उसकी छातियों पर टिक गई। हाल ही में उसकी सेहत में वाकई काफी सुधार हुआ था!
मैं जा रहा हूँ! और अगर तुम रात को घर आना चाहते हो, तो दस बजे तक आ जाना! देर से आने से बेहतर है कि तुम बिल्कुल न आओ!
"शायद वह आज नहीं आएगा!"
"क्या कोई निमंत्रण नहीं है?"
"हां। आज मैं लक्ष्मीपुत्र के साथ फ्लश खेलने जा रहा हूं।" "फ्लश, भोजन, पार्टियों और बच्चों को रेसकोर्स ले जाने के अलावा आप और क्या सुझाव देते हैं?"
"अगर आप अध्यापन का पेशा अपनाते हैं, तो आपको सचमुच ऐसा लगता है कि आपको पूरी दुनिया को पढ़ाना है! इसमें आपकी कोई गलती नहीं है, यह वही पेशा है जिसे आपने चुना है!"

"ठीक है, ठीक है! बस करो! उठो! उस बर्तन में पोहा है, खाओ और बर्तन धो दो!"
"ठीक है, महोदया!" मैंने आह भरी और बिस्तर पर बैठ गई।
उल्का ने बड़े प्यार से कहा, "चलो, चलो।" पल भर में गुस्सा करने और पल भर में प्यार से बोलने की कला सिर्फ औरतें ही जानती हैं, और वो भी शादीशुदा ज़िंदगी में! मैं लंबे समय से कुंवारी लड़कियों और राजकुमारियों के साथ रहा हूँ, लेकिन उन्होंने कभी मेरी कमियाँ नहीं बताईं और न ही मुझे बुरा महसूस कराया। यह अधिकार सिर्फ एक पत्नी को ही प्राप्त है!
जब मैंने कुमारी को उल्कापिंड के रूपांतरण के बारे में बताया, तो उसने कहा, "ऐसा अक्सर नहीं होता, लेकिन यह आश्चर्यजनक है कि यह आपकी पत्नी के साथ हुआ!"
लेकिन अब मुझे कुछ समय के लिए तुमसे दूर जाना जरूरी है!
‘‘का?’’
"उसे लगा कि मैं नशे की लत के कारण वेश्यावृत्ति करने बाहर जाती थी, इसलिए अब जब वह नशे की लत से मुक्त हो गई है, तो स्वाभाविक रूप से वह मुझसे उम्मीद करती है कि मैं बाहर न रहूँ!"
"ऐसा मत सोचो, कुमारी! चाहे कुछ भी हो जाए, मैं तुम्हें सुखी जीवन जीने में हर संभव मदद करने में कभी संकोच नहीं करूँगा। जब तुम छोटी थीं, तुमने मुझे आश्रय दिया, खाना खिलाया। तुमने ही मुझे इस मुंबई शहर के माहौल से परिचित कराया। अब जब तुम्हारा समय बीत चुका है, तो तुमसे मुंह मोड़ना मेरे लिए कृतघ्नता होगी!"
"ये तो आप पर निर्भर करता है! लेकिन जब मुझे सहारा देने वाले पुरुष की ज़रूरत थी, तो आप लोगों की परवाह किए बिना दौड़कर आए। जब मुझ पर हत्या का मुकदमा चल रहा था, मुंबई शहर में अनगिनत

लक्ष्मीपुत्र थे, लेकिन उनमें से कोई भी मेरी मदद के लिए आगे नहीं आया। उस समय आपने मेरी छाती थामकर मेरी रक्षा की! मुझे कभी आपसे अलगाव महसूस नहीं हुआ। आपकी पहली शादी के बाद भी आपका जीवन बर्बाद हो गया, इसलिए आपने दोबारा शादी कर ली। लेकिन दुर्भाग्य से, उत्का को लत लग गई। आपकी मानसिक स्थिति भी ठीक नहीं थी। फिर भी, आपने मेरी मुश्किल घड़ी में मेरा साथ दिया! मुझे नहीं लगता कि आपको उसे छोड़ना चाहिए; लेकिन साथ ही, अगर मेरी वजह से उत्का और आपके बीच दरार आती है, तो मुझे आपके मुझसे दूर चले जाने से कोई आपत्ति नहीं होगी!"
बोलते समय युवती की आँखों में पानी आ गया। वह दिल से बोल रही थी, लेकिन भावनाओं से अभिभूत होकर उसकी आँखें आँसुओं से भर गई थीं। जब अलका की शरारतों का पता चला, तो मेरे माता-पिता ने मुझे कुछ दिनों के लिए भवानी नगर छोड़ने को कहा। मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि उसके बाद सलीमा, उल्का, कुमारी और राजकन्या जैसी अलग-अलग स्वभाव और धर्म की महिलाएं मेरे जीवन में आएंगी और उथल-पुथल मचा देंगी।
लेकिन अब मैं पूरी तरह से इस महिला के जाल में फंस चुका था। इससे निकलना आसान नहीं लग रहा था!
अपनी दाढ़ी धोने, उल्कापिंड द्वारा तैयार किया गया पोहा खाने और दरवाजा बंद करने के बाद, वह जाने के लिए मुड़ता है, तभी उसे अपने सामने रॉबर्ट मार्टिन खड़ा मिलता है!
‘‘हॅलो! गुड मोर्निंग मार्टिन!’’
चलते हुए मार्टिन ने कहा, "सुप्रभात।"
"क्या आप जल्दी दौड़े थे?"
"क्या आप आज शाम खाने पर आएंगे?"
"इसमें क्या खास है?"

"कुछ नहीं। कल पुलिस ने मेरे खिलाफ चोरी का सामान रखने का मामला दर्ज किया, और मैंने उन्हें बताया कि मैंने 179 अपराध किए हैं! मैं पहली बार पुलिस के चंगुल से बच निकला!"
"वाह! बधाई हो! मैंने भी इस मामले के तथ्यों को सुनकर यही सोचा था!"
इसके अलावा, शिकायतकर्ता के नौकर वीरेंद्र सतोदिया ने पुलिस और मजिस्ट्रेट के सामने कबूल किया कि उसने घड़ी को मरम्मत के लिए मेरे पास फर्जी नाम से भेजा था। उसे आठ दिन के कठोर कारावास और एक सौ रुपये के जुर्माने की सजा सुनाई गई।
"बहुत बढ़िया! लेकिन अब से, जब कोई अज्ञात ग्राहक मरम्मत के लिए कोई कीमती घड़ी लेकर आए, तो जब तक आप यह पहचान न कर लें कि वह कौन है, तब तक घड़ी स्वीकार न करें!"
चलते हुए रॉबर्ट ने अपने दोनों कंधों और गले में लटके क्रॉस को छुआ, कसम खाई और कहा, "पश्चाताप करो, पश्चाताप करो।"
तो आप आज रात के खाने पर नहीं आ रहे हैं?
मैं आज आ जाता, लेकिन मेरा एक कार्यक्रम तय है!
"क्या यह वाकई ज़रूरी है? लिलियन ने कहा था कि कुछ करो और ज़ोर देकर कहो कि तुम दोनों आओ!"
"देखो, रॉबर्ट, लिलियन से कह दो कि आज नहीं, बाद में आना! क्या तुम अजनबी हो? लिलियन से कह दो कि मैं आज थोड़ा व्यस्त हूँ! और कोई गलतफहमी मत पालना!"
पिछले कुछ महीनों से रॉबर्ट मार्टिन मुझसे दूरी बनाए हुए थे। हालाँकि इसके पीछे कोई ठोस वजह नहीं थी, लेकिन उनके जैसे एकतरफा स्वभाव वाले व्यक्ति के लिए यह स्वाभाविक था कि वे मेरे जैसी साहसी और ऊर्जावान महिला के साथ अच्छे संबंध न रख पाएं। लिलियन ने भी उत्का से संबंध तोड़ लिए थे, लेकिन इसके पीछे कई कारण थे।

लिलियन जैसी महिला के लिए दिन-रात शराब पीना उचित नहीं था, जबकि उन्होंने अपनी पुरानी खांसी के लिए अभी-अभी ब्रांडी पंच पीना शुरू किया था। अगर आपको किसी का रास्ता पसंद नहीं आता या आप उससे सहमत नहीं हैं, तो उन्हें ज्ञान देने के बजाय उनसे दूर रहना ही समझदारी है। अगर मार्टिन परिवार ने भी यही रास्ता अपनाया था, तो उनमें क्या गलती थी?
मैं उस हिंदू बस्ती में आया जहाँ राजकुमारी ठहरी हुई थीं। मैंने दरवाज़ा खटखटाया। जब मैंने दरारों से अंदर झाँकने की कोशिश की, तो संत की खुशबू अंदर आ रही थी। राजकुमारी आगे बढ़ीं और दरवाज़ा खोला।
"ये क्या है? ऐसा लग रहा है जैसे तुम बाहर जाने की तैयारी कर रही हो?" मैंने अपने सामने खड़ी राजकुमारी को देखते हुए कहा, जो बेहद आकर्षक ढंग से सजी हुई थी।
"हाँ, बिल्कुल! ग्रीष्म ऋतु, मेरे सपने आखिरकार सच होंगे!"
"किस तरह का सपना?"
"नारोना ने मुझे आज स्क्रीन टेस्ट के लिए बुलाया है! वे अलग-अलग एंगल से मेरी कुछ तस्वीरें लेना चाहते हैं। वे साउंड टेस्ट भी करना चाहते हैं। उनके पास इस समय एक बहुत ही दमदार कहानी है। अगर मैं आज उनके टेस्ट में शामिल हो जाती हूँ, तो मुझे हीरोइन का रोल मिल जाएगा! पहला रोल और वो भी हीरोइन का! ये कोई मज़ाक नहीं है, समर!"
यह सुनकर मुझे थोड़ी बेचैनी हुई। मैं सचमुच चाहती थी कि राजकुमारी सिनेमा के जाल में न फँसे; लेकिन वह तो घुटने बाँधकर बैठी थी! भले ही मैंने मना कर दिया हो, लेकिन मुझे शाही परिवार के प्रति सम्मान था, और इस राजकुमारी ने मेरी जान बचाई थी; मैं नहीं चाहती थी कि वह सिनेमा के शौक में खो जाए!

मैं सोफे पर बैठ गई और शांत भाव से बोली, "राजे, हो सकता है तुम्हें मेरी बात पसंद न आए; लेकिन मुझे अब भी लगता है कि तुम्हें सिनेमा की इस मोहक दुनिया से दूर रहना चाहिए। तीन घंटे की फिल्म देखने के लिए पैसे देना एक बात है और सिनेमा में काम करने की इच्छा रखना दूसरी बात! मुझे लगता है कि खासकर महिलाओं के लिए इस क्षेत्र में कदम रखने से पहले थोड़ा गहराई से सोचना बहुत ज़रूरी है!"
"किसी वेश्या के घर में रहकर, उसके पैसों पर जीने से तो फिल्म में काम करना हमेशा बेहतर होगा!"
मुझे बिल्कुल भी अंदाजा नहीं था कि राजकुमारी ऐसा मूर्खतापूर्ण बयान देकर मुझे चुप करा देगी। मैं उससे नजरें हटाकर, अवाक रह गई और बोली,--
ठीक है! मैं तुम्हें सिखाने वाला कौन होता हूँ? मुझे पता है कि तुमने एक बार अपना जीवन बलिदान कर दिया है; इसलिए, मुझे बार-बार तुम्हें यह कहने का मन करता है कि इस क्षेत्र में मत पड़ो। मैं भविष्य में ऐसी मूर्खतापूर्ण हरकतें नहीं करूँगा! अगर तुम्हें मेरी ज़रूरत हो, तो मुझे कभी भी फ़ोन कर लेना, मुझे बोलने का कोई पछतावा नहीं होगा!
मैं उठी और दरवाजे की तरफ गई, तभी राजकुमारी आगे आईं। उन्होंने मेरा हाथ कसकर पकड़ लिया और कहा, ''समर, मुझे माफ करना! मैंने अनजाने में कुछ कह दिया, लेकिन कृपया इसे भूल जाइए!''
मैंने उसका हाथ छोड़ते हुए कहा, "तुम तो पहले ही अपनी जान दे चुके हो! तो सिर्फ तुम्हारे ऐसे कहने से हमें सारे रिश्ते तोड़ देने चाहिए? मुझे ऐसा बिलकुल नहीं लगता। मैं आ रही हूँ!" मैंने राजकुमारी को अलविदा कहा और चली गई।
-०-०-

२७
होटल मिल्टन! रात के साढ़े नौ बज रहे हैं। मैं, सालेभॉय, यूसुफ और जोसेफ मेज पर बैठे अरब दाऊद मोहम्मद करबू का इंतजार कर रहे हैं। अरब दाऊद मोहम्मद करबू ठीक पौने दस बजे पहुंचे। उनके आते ही सालेभॉय, यूसुफ और जोसेफ उठकर उनसे मिलने चले गए।
यूसुफ ने उन्हें 'सलाम अलैकुम' कहकर अभिवादन किया।
उस अरब व्यक्ति ने सभी से हाथ मिलाया।
अरब के आते ही होटल में मौजूद सभी लोग उस पर ध्यान देने लगे।
यहाँ तक कि ग्राहक के बगल में बैठकर व्हिस्की पी रही महिला व्यवसायी भी अरब पर ही टकटकी लगाए बैठी थीं। जो लोग व्यस्त नहीं थे, वे भी अरब को फ्लश खेलते देखने आ गए, यहाँ तक कि चीनी लड़की चिंगी भी अरब को देखकर मुस्कुरा रही थी।
दाऊद मोहम्मद करबू छह फुट लंबा था। गोरा रंग। उसकी नाक भौंहों से पिरामिड की तरह उठी हुई थी। उसकी दाढ़ी या मूंछ नहीं थी। उसकी आंखें बहुत भेदक और चमकदार थीं।
चिंगी को देखते ही दाऊद मोहम्मद ने उसे अपने पास बुलाया। वह चली गई। खूबसूरत चेहरे वाली चिंगी दाऊद मोहम्मद के सामने गुड़िया जैसी लग रही थी। उसके चेहरे पर मोहक भाव देखकर दाऊद मोहम्मद खुद को रोक नहीं पाया, उसने उसे गले लगाया और कहा, "आज मैं तुम्हारे साथ व्हिस्की का खेल खेलना चाहता हूँ और तुम्हारे हाथों से पीना चाहता हूँ!" चिंगी के घुंघराले बालों को सहलाते हुए उसने उसे अपनी ओर खींचा और उसके सिर पर चुंबन किया। होटल मिल्टन की दूसरी लड़कियाँ चिंगी से जल रही थीं; क्योंकि दाऊद मोहम्मद ने उस पर इतनी दया दिखाई थी कि उसे अगले छह महीने या एक साल तक गुजारा करने के लिए पर्याप्त पैसे मिल गए थे! उसकी नज़र में पैसा कुछ भी नहीं था!

सालेभोय ने जॉनी वॉकर की पूरी बोतल, सोडा और आलू के बिस्कुट मंगवाए। वेटर ट्रे लेकर आते ही दाऊद मोहम्मद ने चिंगी से कहा, "हनी! तुम इसे खोलो!" चिंगी का गाल सहलाते हुए उसने मुस्कुराते हुए कहा, "देखते हैं तुम्हारा हाथ कितना अच्छा है!"
दाऊद मोहम्मद ने यूसुफ, जोसेफ और मुझसे पेय पदार्थों के बारे में पूछा; लेकिन हमने तय किया था कि हम उसके साथ बिना शराब पिए ही खेलेंगे। जैसे हम कहते हैं कि एक ‘समृद्ध’ व्यक्ति हर गाँव का पानी पी चुका होता है, वैसे ही इस दाऊद मोहम्मद ने वास्तव में हर देश का पानी पी लिया था। अपने तस्करी के धंधे के कारण उसे अदन से एंडबोरो और बंबई से बोर्नियो तक यात्रा करनी पड़ी थी। इसलिए, दाऊद मोहम्मद दुनिया के सबसे बड़े शहरों में रह चुका था, जहाँ रात दिन जैसी लगती है। यहाँ, होटल मिल्टन के व्यापारी उसे हवस भरी निगाहों से देखते होंगे; लेकिन पेरिस के मशहूर नाइटक्लब ‘एफिल कैफे’ में भी फ्रांसीसी लड़कियाँ उसके साथ नाचने के लिए बेताब रहती थीं!
दाऊद मोहम्मद दिखने में आकर्षक था। वह मुझसे दुगुना खाता था; फिर भी मुझे उसकी चाल-ढाल कुछ धीमी लगती थी। मैंने सुना था कि उसने तस्करी से करोड़ों रुपये कमाए थे। उसके पास अपना खुद का विमान था। वह इसी 'मोनोप्लेन' में यूरोप की यात्रा करता था। भला इतनी सक्रिय जीवनशैली जीने वाला व्यक्ति नाव या ट्रेन से यात्रा करने के बारे में क्यों सोचेगा?
दाऊद मोहम्मद हमारे साथ फ्लश खेल रहा था, बीच-बीच में चिंगी के शरीर पर हाथ फेरता और मुंह में सिगरेट पीता रहता। उसके पास आसानी से एक लाख रुपये होते। चिंगी खेल देखने में मग्न थी, हाथ में व्हिस्की का गिलास लिए। बीच-बीच में दाऊद मोहम्मद चिंगी को अपने पत्ते दिखाता और उसके कान के पास होंठ लाकर पूछता कि क्या

करना है। लेकिन वह कोई सलाह नहीं देती। जैसे कुछ अमीर घरों में लोग दूसरों से बात करते हुए अपने पोमेरेनियन कुत्तों के बारे में बातें करते हैं, वैसे ही दाऊद मोहम्मद व्हिस्की का एक घूंट लेता और ब्लाइंड गेम खेलता, खेलते हुए सौ-सौ रुपये के नोट आगे बढ़ाता। यूसुफ और जोसेफ उसका मुकाबला नहीं कर पाए। दोनों ने चार से छह हजार रुपये गंवा दिए और बुरी तरह हार गए। अंत में दाऊद और मेरी शादी हो गई। जब तक मेरी आंखों पर वो चश्मा लगा था, अगर मैं दाऊद मोहम्मद का 'वलीद' खेलने भी आती, तो थोड़ा डर तो लगता ही, है ना?
खेलते-खेलते मैं अपने नाखून से कार्डों के डिज़ाइन पर निशान बना रहा था। अपने चश्मे के उस छोटे से बिंदु से मैं ठीक-ठीक बता सकता था कि दाऊद मोहम्मद के हाथ में कौन से कार्ड हैं। दाऊद मोहम्मद इधर-उधर घूमता रहता था और बेकार कार्ड होने पर भी 'त्रयी' या 'रन' होने का नाटक करता था। 'दांव की रकम' का ढेर बढ़ता जाता और अचानक वह अपने कार्ड नीचे रख देता और मुझसे 'खोलने' के लिए कहता!
यह देखकर कि मैं हार नहीं रहा था, उन्होंने कहा, "बच्चमजी! याद है ना, आप मेरे साथ खेल रहे हैं!"
मैंने मुस्कुराते हुए कहा, "हाँ! मुझे पता है कि मैं एक मशहूर फ्लश खिलाड़ी के खिलाफ खेल रहा हूँ।"
जब दाऊद मोहम्मद को लगभग पचास हजार रुपये का नुकसान हुआ, तो उसने व्हिस्की का एक घूंट लिया, सिगरेट जलाई और मुझसे कहा- "ज़रा ठहरिये!"
मैंने मुस्कुराते हुए पूछा, "क्यों?"
"चलिए थोड़ा आराम कर लेते हैं!"
‘‘ओ ऽ के?’’

"आप ड्रिंक करना चाहते हैं?"
"बाय बाय!" मैंने खुशी से कहा। चिंगी ने मेरे लिए एक गिलास मंगवाया और उसमें एक पाइंट जॉनी वॉकर बियर डाली।
मैंने दाऊद मोहम्मद के समर्थन में अपना गिलास उठाया, जबकि यूसुफ, जोसेफ और सालेभोय, जिन्हें पूरा यकीन था कि मैं खेल के दूसरे दौर में दाऊद मोहम्मद को हरा दूंगा, अपनी आंखों से मेरा हौसला बढ़ा रहे थे।
जब मेरा गिलास खाली हो गया, तो दाऊद मोहम्मद ने अपनी जेब से एक चमकदार सोने का सिगरेट केस निकाला और मुझे एक सिगरेट 'पेश' की। मैं उसे लेने के लिए आगे बढ़ा, और पलक झपकने से पहले ही दाऊद मोहम्मद ने मेरा चश्मा उतार दिया।
"यह ठीक नहीं है, मुझे वो चश्मा दो!"
मुझे गुस्सा आया और मैं खड़ा होकर अपने हाथ हिलाने लगा। दाऊद मोहम्मद अजीब सी मुस्कान के साथ चिंगी को एक तरफ धकेलते हुए मेरी ओर आया और बोला-
"बहन, तुम कितनी झूठी हो!...." इससे पहले कि वह अपना वाक्य पूरा कर पाता, मैंने उसके चेहरे पर एक घूंसा मार दिया। दाऊद ने अपना सिर हिलाया और फिर हँसा, "समर! इस घूंसे की तुम्हें भारी कीमत चुकानी पड़ेगी!" उसने मेरी गर्दन पकड़ने की कोशिश की। शराब के नशे में उसकी हरकतें कुछ धीमी थीं। लेकिन, मैं दाऊद मोहम्मद पर टूट पड़ी, जिसने मेरा झूठ उजागर कर दिया था। मैंने उसे लगातार घूंसे मारकर अधमरा कर दिया। वह छह फुट लंबा दानव ज़मीन पर गिर पड़ा। अपने होंठों और माथे से टपकते खून को पोंछते हुए, उसने उठने की कोशिश की। फिर, जैसे अपने बाएं पैर से 'पेनल्टी कॉर्नर' किक मार रही हो, मैंने अपने बूट से उसकी छाती पर लात मारी। वह एक तरफ गिर पड़ा। वह बेसुध पड़ा रहा।

मैंने मेज पर रखे पैसे अपनी पतलून की जेब में रख लिए। मैं सारे पैसे जेब में नहीं रखना चाहता था, इसलिए मैंने उन्हें एक रुमाल में बांध लिया। बचे हुए थोड़े से पैसे मैंने उठाए और चिंगी पर फेंक दिए। चिंगी, जिसने जुए और द्वंद्वयुद्ध में इतने बड़े और ताकतवर आदमी को हराया था, मुस्कुराते हुए मेरी तरफ देख रही थी। लेकिन मेरे पास उसे देखने का समय नहीं था। मैंने दाऊद मोहम्मद को तिरस्कार भरी नजरों से देखा, जो एक बार गिर चुका था, और होटल मिल्टन से बाहर निकलने के लिए लिफ्ट में खड़ा हो गया।
यूसुफ, जोसेफ और सालेभोय ने एक-दूसरे को सवालिया निगाहों से देखा, उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि दाऊद ने मेरा चश्मा क्यों उतारा और तोड़ दिया।
उस हाथापाई में दाऊद मोहम्मद ने मुझे तीन बार थप्पड़ भी मारा था, और मैंने लिफ्ट के शीशे में देखा कि उसके भयानक उंगलियों के निशान मेरे गाल पर दिखाई दे रहे थे।
अंततः, वो ऐतिहासिक रूप से प्रसिद्ध शीशे गायब हो गए। इन्हीं शीशों की बदौलत मैंने सलीमा का आनंद लिया, इन्हीं शीशों की बदौलत मैंने भवानी नगर के जागीरदारों की आँखों में धूल झोंकी, इन्हीं शीशों के बल पर मैंने कई लोगों को बनाया, हजारों रुपये कमाए, वो शीशे अचानक मेरी आँखों के सामने नष्ट हो गए।
दरअसल, मुझे गुस्सा इसलिए आया क्योंकि दाऊद ने बिना किसी वजह के मेरे नंबर वाले गिलास तोड़ दिए थे; लेकिन अगर दाऊद ने मेरे सामने उन गिलासों का राज़ सबको बता दिया होता, तो होटल मिल्टन में जिन लोगों को मैंने लूटा था, वे सब मुझ पर टूट पड़ते। वे मुझे पचास हज़ार रुपये तक भी नहीं लेने देते। इसीलिए मैंने कायरता दिखाई और दाऊद को कुचल दिया! अब मेरे लिए फ्लश खेलना नामुमकिन था। पुणे में बहराम ईरानी के गिलास चोरी होने की घटना

ने मेरी ज़िंदगी में जो असर डाला था, वो गिलास अब मेरे पास नहीं हैं। उनकी वजह से मैं कई यादगार लोगों से मिला था। उस भयानक आदमी ने उन्हें टुकड़े-टुकड़े कर दिया। उसने मेरे पंख काट दिए। अब से मैं फ्लश खेलूंगा, लेकिन मेरे वो गिलास, जो मुझे चिंतामणि की तरह बताते थे कि सामने वाले के हाथ में कौन से पत्ते हैं, अब मेरे पास नहीं हैं! दाऊद मोहम्मद सचमुच देश भर में शराब पीने वाला था। उसने मेरी सफलता का रहस्य सही-सही जान लिया और बिना किसी को शक हुए, उसने मेरे चश्मे छीन लिए और उन्हें चकनाचूर कर दिया, तो उसने भविष्य में मेरे द्वारा ठगे जा सकने वाले जुआरियों को सुरक्षा क्यों नहीं प्रदान की?
‘दाऊद, तुमने मेरे झूठ को पूरी तरह से पहचान लिया, तुमने मुझे चुप करा दिया, सच तो यह है कि मुझे तुम पर हाथ नहीं उठाना चाहिए था, लेकिन मुझे गुस्से का नाटक करना पड़ा। कम से कम अब तक बोले गए झूठों को छुपाने के लिए... मुझे माफ कर दो, दाऊद! अगर भविष्य में कभी तुमसे मुलाकात हुई, तो मैं तुमसे माफी मांग लूंगी!...’ जब हम सुबह 3:30 बजे बांद्रा पहुंचे, तब तक दूधवाले आने-जाने लगे थे। मैं रुक गया और दरवाजे को घूरने लगा।
उल्का गहरी नींद में सो रही थी। मुझे पता था कि उसे इतनी सुबह उठना पसंद नहीं था। लेकिन मैं कब तक जेब में सौ रुपये का नोट और रुमाल लिए दरवाजे पर ऐसे ही बैठा रहूँ? जब मैंने दोबारा दरवाजा खटखटाया, तो उल्का जाग उठी। उसने हमेशा की तरह बड़बड़ाते हुए दरवाजा खोला। उसने दीपक की रोशनी में डर से मेरा चेहरा देखा और बोली,-
"ये क्या है? माथे से खून आ रहा है? गाल पर ये चोट का निशान कैसा है?"

मैंने अपने जूते उतारकर कोने में रख दिए, नोटों का बंडल दिखाते हुए कहा, "मुझे इस पैसे का भुगतान करना ही था। अब बस, मैं अब कभी कार्ड हाथ में नहीं लूंगा!"
"लेकिन अगर ऐसा हो जाए तो क्या होगा?"
"छोड़ो, उस विषय को छोड़ो! मुझे थोड़ी देर आराम करने दो!" मैं नहाने के लिए बाथरूम में गया, ठंडे पानी से चेहरा धोया और बिस्तर पर लेट गया। दाऊद के थप्पड़ से मेरा बायां कान सुन्न हो गया था। गाल और कान का दर्द तो रुक गया था, लेकिन बाएं कान में 'सिफ़िक' की आवाज़ सुनाई दे रही थी। मुझे नींद नहीं आ रही थी। होटल मिल्टन की घटना मेरी आंखों के सामने साफ-साफ दिखाई दे रही थी। मैंने दाऊद मोहम्मद पर हमला किया, उसे ज़मीन पर पटक दिया; लेकिन हार मेरी ही थी!
जब मैं भोर के समय उठा, तब तक उल्कापिंड स्कूल जा चुका था। मैं साढ़े नौ या दस बजे तक सोता रहा।
लगभग दस बजे, दरवाजे का ताला खड़कने लगा। हालाँकि मैं घर पर थी, फिर भी वो आदमी बाहर जाते समय ताला लगा देता था। उस ताले की दूसरी चाबी मेरे पास थी। जागने के बाद, मैं खिड़की से किसी लड़के को बुलाकर ताला खोलने के लिए कहती थी, और मेरे जान-पहचान वाले इस बात को जानते थे। बर्तन धोने आने वाली नौकरानी, रॉबर्ट और लिलियन, सभी को इसके बारे में पता था।
दरवाजे के ताले की खड़खड़ाहट की आवाज आने लगी, इसलिए मैं उठकर खिड़की के पास गया। मैंने पर्दा हटाया तो देखा कि रॉबर्ट दरवाजे पर खड़ा है।
‘‘हॅल्लो! गुड मोर्निंग, रॉबर्ट!’’
"सुप्रभात समर! आपको सुबह ग्यारह बजे तक बुलाया गया है!"
"कौन?"

कुमारी! उसकी अपील पर आज सुनवाई होने वाली है!
"आप क्या कह रहे हैं?"
"हां, मुझे कल रात वकीलों का फोन आया था। उनके वकीलों ने उन्हें आज अदालत में पेश होने के लिए कहा है!"
"वकील ने मुझे इस बारे में कोई जानकारी क्यों नहीं दी?"
मुझे नहीं पता, लेकिन अब आपको जाना चाहिए, वह आपका इंतजार कर रही होगी!
"देख रहे हो? तुम मेरी राह देख रहे होगे! मुझे जाना होगा!" रॉबर्ट ने अलविदा कहा और दरवाजे से बाहर निकल गया।
मैंने अपनी दाढ़ी की किट उठाई और दाढ़ी बनाई। काम चाहे कितना भी ज़रूरी हो, समय चाहे कितना भी कम हो, मैं बिना शेव किए कभी घर से बाहर नहीं निकलता था! यह आदत मेरे फौजी दिनों से चली आ रही है। मुझे एक टाइम का खाना छूट जाने से कोई फर्क नहीं पड़ता था; लेकिन मैं सुबह की शेव कभी नहीं छोड़ता था। अगर कभी-कभार मैं शेव नहीं करता था, तो मुझे लगता था जैसे पूरा दिन ही बर्बाद हो गया हो! बिना शेव और नहाने के मुझे अच्छा नहीं लगता था!
कल मेरे चश्मे टूट गए। कैसे टूटे? दाऊद ने तोड़े! खेल खत्म! अब मैं इन्हें अपने हाथों में ताश के पत्तों की तरह नहीं रखना चाहता। उस खेल का आकर्षण खत्म हो गया। अगर कुमारी यह समझ जाए तो अच्छा होगा! वह भी मेरे फ्लश खेलने पर नाराज़गी जताती थी! मैं कहता था, अगर हफ्ते में एक दिन रेस खेलना ठीक है, तो दिन-रात ताश खेलते रहना मुझे पसंद नहीं! मैं उसकी बातों पर हँसता था। अब मुझे बिना किसी झिझक के ताश छोड़ना पड़ेगा।
जब हम वर्ली पहुँचे, कुमारी मेरा इंतज़ार कर रही थी। जैसे ही मैंने दरवाज़े से अंदर प्रवेश किया, उसने मुझसे कहा,--

"अरे, तुम्हारा पता कहाँ है? वकीलों का संदेश कल आया था। आज हाई कोर्ट में अपील की सुनवाई है!"
"आगे बढ़ो! इतना डरने की कोई वजह नहीं है, नीचे से जो फैसला आएगा, ऊपर से भी वही होगा! तुम्हारे बाल भी नहीं हिलेंगे!"
"इस मामले की चिंता में मैं पिछले चार दिनों से सो नहीं पाया हूँ। चार मैंड्रेक खाने के बाद भी मुझे नींद नहीं आती!"
"अगर तुम नींद की गोलियां ले लो तो क्या होगा? तुम तो बड़ी होशियार हो! लड़की, इस अपील में तुम्हारा कुछ नहीं बिगड़ेगा। मेरी बात मानो!"
"लेकिन अगर आपके पिताजी अपील को संभालने आए होते, तो कोई सवाल ही नहीं उठता। आपने एक और वकील नियुक्त किया है, कौन जाने वह अपना मामला कैसे पेश करेगा!"
"चिंता मत करो! वकील का काम अभी खत्म नहीं हुआ है, कुमारी! उच्च न्यायालय के न्यायाधीश निचली अदालत का फैसला पढ़ चुके हैं। अगर उन्हें कोई संदेह होता है, तो वे सरकारी अभियोजक या आरोपी के वकील से पूछ लेते हैं! लेकिन मैं आपको बता दूं, निचली अदालत का फैसला शत प्रतिशत अंतिम है!"
सोफे पर पालथी मारकर बैठे हुए मैंने एक सिगरेट जलाई और कहा, "मुझे नहीं लगा था कि तुम इतने कायर होगे!"
डर का तो सवाल ही नहीं उठता!
"तो फिर तुम सो क्यों गए?"
"कौन जानता है!"
"अगर मामला साबित हो गया तो हम सुप्रीम कोर्ट में अपील करेंगे! आप क्यों डर रहे हैं?"
मैं और आठ साल जीना चाहता हूँ!
"आठ साल? यह किसलिए है?"

“ये किसलिए है? ये किसलिए है?” युवती पागलों की तरह खुद से बुदबुदाती रही। थोड़ी देर बाद उसने कहा, “चलो, चलते हैं, मैं तुम्हें रास्ते में बता दूंगी!”
कार में मेरे बगल में एक युवती बैठी थी। उसने हल्के नीले रंग की रेशमी साड़ी पहनी थी। उसके बाल सीधे थे, भौंहों पर पेंसिल से निशान बने हुए थे और होंठों के रंग जैसी ही लिपस्टिक लगी थी। कुमारी ने मेरा हाथ पकड़ते हुए कहा, "समर, मैंने तुमसे अब तक एक राज़ छिपा रखा था। लेकिन मुझे तुम्हें बताना ही होगा, इससे पहले कि मेरे साथ कुछ बुरा हो जाए!"
"तुम्हारे साथ क्या गलत है?"
"अगर अपील सफल हो जाती है, तो जीने के लिए कुछ भी नहीं बचेगा!" "लेकिन आपने उस रहस्य के बारे में क्या कहा?"
"मेरी एक बेटी है। वह अभी आठ साल की है। आठ साल बाद वह सोलह साल की हो जाएगी; तब मैं उसकी शादी कर दूंगा और फिर मैं मरने के लिए स्वतंत्र हो जाऊंगा!"
''वह कहाँ है?''
"बैंगलोर के लिए! उसे मेरे बचपन के एक दोस्त के पास रखा गया है।" "लेकिन उसका जन्म कब हुआ था? उसके पिता कौन हैं?"
‘‘दाऊद मोहंमद अरब.’’
जैसे ही मैंने वह नाम सुना, मैं चौंक गया और जोर से बोला, "तुम क्या कह रहे हो, कुंवारी?"
"गोल्डाशपथ!"
"गोल्डा कौन है?"
"मेरी बेटी!"
"तो फिर उसका जन्म कहाँ हुआ था?"

"मेरे जन्म के बाद दाऊद मुझे फ्रांस ले गया था। उसका जन्म भी वहीं हुआ था! जब वह तीन महीने की थी, तो उसने उसे बैंगलोर में एक दोस्त के पास छोड़ दिया था। वह उसे हर महीने पैसे भेजता है!" "आपने मुझे अब तक इसके बारे में कोई सुराग नहीं दिया!"
"यह कहानी किसी को भी सुनाने के लिए नहीं थी!"
"उसके बाद आप बैंगलोर नहीं गए?"
"वह दो साल पहले एक बार आई थी। लेकिन वह मुझे पहचानती तक नहीं है। वह मीनाक्षी को अपनी माँ कहती है!"
"सच में, क्या तुमने इसे डेविड से लिया?"
"क्या आपने कभी डेविड को देखा है?"
"कल रात मेरा और उसका झगड़ा हुआ था। तुम क्यों पूछ रहे हो कि क्या तुमने उसे देखा था?"
"ऐसा लग रहा है जैसे गोल्डा उसके मुंह से गिर गई हो!"
"उसके बाद डेविड आपके पास नहीं आया?"
"वह एक-दो बार आया था। लेकिन मुंबई पुलिस और आबकारी विभाग उसके पीछे पड़े थे। दाऊद को पकड़ने के लिए गडकर परिवार ने मेरे घर के चारों ओर गुप्त पुलिस का जाल बिछा रखा था। और तो और, उसने मुझसे कभी प्यार नहीं किया! वह हर दिन अपनी गोद में एक नवजात शिशु लेकर सोता है!"
कुमारी, सच तो अजीब होता ही है, है ना?
"बेतुका! लेकिन मुझे गोल्डा के लिए और आठ साल जीना होगा!"
"तुम अस्सी साल जिओगी, आठ साल नहीं!" मैंने उसे दिलासा देते हुए कहा, लेकिन उसकी आँखों में अभी भी पानी भरा हुआ था।
-०-०-

२८
चंदोरकर के वकीलों ने मामले की अच्छी तैयारी कर ली थी; लेकिन किसी कारणवश, उस दिन पीठ पर बैठे न्यायाधीशों ने चंदोरकर से सवाल पूछना शुरू कर दिया।
"जी हां, जब इस गडकरी इंस्पेक्टर का पोस्टमार्टम किया गया, तो उसके आंतरिक अंगों की जांच की गई, जिसमें बहुत कम मात्रा में अल्कोहल पाया गया, तो यह कहना कैसे सही हो सकता है कि उसका संतुलन बिगड़ गया और वह गिर गया? इसके अलावा, आपने निचली अदालत में इस बात का कोई स्पष्टीकरण नहीं दिया कि गडकरी की गर्दन के आसपास खरोंचें थीं!"
चंदोरकर ने इस प्रश्न का उत्तर देते हुए कहा, “माननीय न्यायाधीश, गडकरी के भोजन में शराब का पाया जाना इस बात का निर्विवाद प्रमाण है कि उन्होंने शराब पी थी, और जब शव की जांच की गई तो पेट में भी कुछ शराब पाई गई; लेकिन मृत्यु से पहले पी गई शराब रक्त में अवशोषित क्यों नहीं हुई, और इसलिए उनका मस्तिष्क निष्क्रिय क्यों नहीं हुआ? इन खरोंचों के संबंध में चिकित्सा प्रमाण अपर्याप्त हैं। प्रमाण पत्र में यह उल्लेख नहीं है कि खरोंचें कितने समय पहले लगी थीं। इसके अलावा, आरोपी द्वारा गवाही दिए गए बचाव पक्ष के गवाह, मिली ने शपथ पर बयान दिया है कि गडकरी उस शाम उसके पास आए थे और उनका उससे झगड़ा हुआ था। आरोपी ने स्वयं बताया है कि खरोंचें कैसे लगीं।”
जज ने आरोपी द्वारा पेश किए गए सबूत देखे तक नहीं थे। क्योंकि आम तौर पर - खासकर हत्या के मामले में - आरोपी की तरफ से सबूत पेश करने की जिम्मेदारी कोई नहीं लेता। कभी-कभी आरोपी द्वारा पेश किए गए सबूत ही सामने आ जाते हैं। इस मामले में, डैडी ने मिली की गवाही का हवाला देते हुए बताया था कि नाखूनों के निशान कैसे बने

थे, जिसे निचली अदालत ने स्वीकार कर लिया था। जज संतुष्ट तो दिखे, लेकिन फिर भी उन्होंने चंदोरकर से सवाल किया, "गडकरी वेश्याओं को परेशान करता था, उन पर अत्याचार करता था और उन्हें पीटता था; इसलिए, आपके मुवक्किल द्वारा उसे छत से धक्का देने की संभावना को पूरी तरह से खारिज नहीं किया जा सकता!"
उस दिन अपील की कार्यवाही समाप्त हो गई। बाहर आने के बाद कुमारी बहुत घबराई हुई लग रही थी। उसने चंदोरकर से कहा,--
मुझे लगता है कि जज मुझे दंडित करना चाहते हैं!
"अरे! मुझे ऐसा बिलकुल नहीं लगता! कुछ न्यायाधीशों की यह आदत होती है कि वे ऐसा जताते हैं कि उन्होंने मामले का बहुत गहन अध्ययन किया है। लेकिन सच कहूँ तो, उनके संदेह में कोई सच्चाई नहीं थी। मैं विश्वासपूर्वक कह सकता हूँ कि इस मामले में अपीलीय न्यायालय के लिए निचली अदालत के फैसले को पलटना संभव नहीं है।"
"क्यों?" लड़की ने पूछा।
"निचली अदालत ने सबूतों पर इतनी अच्छी तरह से विचार किया है कि इस अपीलीय अदालत के लिए निचली अदालत के फैसले को पलटना आसान नहीं होगा।"
"तो फिर उनके मन में ऐसे संदेह क्यों उत्पन्न होने चाहिए?" "क्या मैंने तुम्हें नहीं बताया था? कुछ लोगों को यह आदत होती है!"
मैंने पूछा, "परिणाम कब घोषित किए जाएंगे?"
"अगले दिन ग्यारह बजे! आप आना। आपको परिणाम के समय उपस्थित रहना होगा!"
"अगर मुझे सजा मिली तो क्या होगा?" कुमारी ने पूछा।

"हम आपको तुरंत जमानत दिलवाएंगे और सुप्रीम कोर्ट में अपील करने की अनुमति मांगेंगे! लेकिन मुझे पूरा विश्वास है कि हाई कोर्ट को आपको बरी करना ही पड़ेगा!"
जब हम वर्ली लौटने के लिए चंदोरकर के घर से निकल रहे थे, कुमारी ने मेरा हाथ पकड़कर कहा, "समर, मुझे डर लग रहा है! अगर मुझे कुछ हो गया, तो मेरी छोटी बेटी लालची औरत कहलाएगी! अगर उसे पता चल गया कि तुम्हारी माँ हत्यारी थी तो क्या होगा?"
"अगर आपको पता चले कि वह एक वेश्या है तो क्या यह शर्मनाक नहीं होगा? किसी भी बात को हल्के में मत लो!"
"लेकिन कुछ तो कहो, तुम्हारे पिताजी ने इस अपील को संभालकर सही किया। चंदोरकर परिवार ने इस मामले का उतना गहन अध्ययन नहीं किया जितना उन्होंने किया!"
"देखो, तुम्हें इनमें से कुछ भी समझ नहीं आ रहा है। चुप रहो," मैंने थोड़ी झुंझलाहट के साथ कहा।
फ्लैट में वापस आकर मैंने कहा, "कुमारी, अब चुप रहो!"
"यहां से मत जाओ, फैसला आने तक यहीं मेरे साथ रहो!"
मैं वहीं रुक जाता; लेकिन तुम जानती हो कि क्या होगा, तुम्हें भले ही अच्छा लगे, पर उल्कापिंड मुझे टुकड़े-टुकड़े कर देगा। अब वो मेरे साथ अच्छा व्यवहार करने लगी है!
"नतीजे आने तक मुझे आपके समर्थन की जरूरत है!" लड़की ने होश में आते हुए कहा।
"मैं भी यह जानती हूँ, कुमारी, लेकिन मुझे क्या करना चाहिए? उसे बताए बिना यहाँ रहना मेरे लिए ठीक नहीं है!"
"आप जो चाहे करें!"
"इतना गुस्सा मत करो। उल्का अपनी लत से उबर चुकी है और काम कर रही है, उसकी मानसिक स्थिति अभी भी नाजुक है, और अगर मैं ऐसे समय

में उसकी इच्छा के विरुद्ध कुछ करता हूँ, तो मुझे इसके परिणाम भुगतने पड़ेंगे!"
"ठीक है!"
मैं ये कर देता हूँ, कल सुबह यहाँ आना, फिर काम हो जाएगा?
‘‘ये!’’
कुमारी को विदा करने के बाद मैं बांद्रा आया। उल्का अभी-अभी स्कूल से लौटी थी। रास्ते में वह मारवत से एक पापलेट लाई थी। यह देखकर मैंने कहा, "क्या तुम्हें नहीं पता कि गुजराती स्कूलों में पढ़ाने वालों को मछली और मटन खाना मना है?"
"चुप रहो, बेवकूफ! कौन सा संगठन खाने पर पाबंदी नहीं लगाता? तुम कहाँ चले गए थे?"
"जी हां, मुझे कुछ कहना ही होगा! आज कुमारी की अपील पर सुनवाई हुई। नतीजा कल आएगा!"
"क्या हो जाएगा?"
"क्या मामला है? इस केस में क्या चल रहा है?"
"तो एक आदमी की मौत व्यर्थ ही हुई!"
"यह सच नहीं है! हम यह नहीं मान सकते कि गडकरी की मृत्यु के कारण कुमारी दोषी है! क्या यह साबित नहीं होना चाहिए कि वह उनकी मृत्यु के लिए जिम्मेदार थी?"
"जब उसके पास आप जैसा वकील है तो इसे कैसे साबित किया जा सकता है?"
"मजाक मत करो, उल्का, सच कहूं तो, इस मामले को संभालने वाले वकीलों और मुझे लगता है कि कुमारी इस मामले से बरी हो जाएगी; लेकिन कुमारी ने अपने दिमाग पर इतना तनाव ले लिया है कि उसे आज और कल किसी के साथ की जरूरत है!"
"ग्राहक ही इससे भुगतान कर रहे होंगे!"

"कुछ मत कहो, उल्कापिंड! उसका कारोबार बंद हुए लगभग एक साल हो गया है! उस बाल की घटना के बाद से वह किसी अजनबी के सामने भी नहीं निकली है!"
"तो तुम कौन हो, घर से हो या कहीं और से?"
"मूर्ख मत बनो, मेटियोर! उस जैसे सुधारक को कम मत समझो!"
लेकिन उसके प्रति आपका क्या कर्तव्य है?
"जब तुम दिन-रात नशे में धुत रहते थे, तब उसने मेरी देखभाल की, मैं एहसान फरामोश नहीं होना चाहता!"
"तुम्हारी देखभाल करने के बदले उसने तुम्हें कितना भुगतान किया?"
"आज तुम्हारे साथ कुछ गड़बड़ है, मेटियोर, वरना तुम इस तरह बात नहीं कर रहे होते!"
"कुछ भी गलत नहीं है! तुम्हें उसके घर में दोबारा कदम नहीं रखना चाहिए!"
"उल्का, मुझे आज और कल उसके घर पर रहने दो, उसका मूड बहुत खराब है! अगर तुमने परसों ऐसा कहा, तो मैं उसके पास भी नहीं जाऊंगी!" मैं तुम्हें आज या कल वहाँ नहीं जाने दूँगा। तुम परसों जा सकते हो!
"आज तुम इतने जिद्दी क्यों हो?"
मैं आपका टेस्ट देना चाहता हूँ!
"लेकिन आप चरित्र की इस परीक्षा को आज ही क्यों देख रहे हैं?" "कल मेरी छुट्टी है। मैं कल सुबह पुणे जा रहा हूँ! स्कूल के पते पर एक चिट्ठी आई है जिसमें लिखा है कि तुम्हारी माँ की तबीयत ठीक नहीं है! हम दोनों को बुलाया गया है, अवि भी वहीं है। उसने तुम्हें लाने के लिए लिखा है!"

"तो मैं ऐसा करूँगा, मैं आज रात कुंवारी के पास जाऊँगा। मैं कल सुबह भोर में वापस आ जाऊँगा!"
"अगर तुम आज यहाँ से चली गई, तो तुम्हारा मुझसे रिश्ता खत्म हो जाएगा! मुझे तलाक का पत्र लिख दो और जहाँ चाहो वहाँ चली जाओ! इस मामले में मेरा कोई दखल नहीं है!"
"मीटियोर, तुमने वाकई आज मेरा अंत देखने का फैसला कर लिया है!" "कुछ कहो, लेकिन मैं तुम्हें आज वहां नहीं जाने दूंगी। कल सुबह हम साथ में पुणे जा रहे हैं!"
मैं हताशा में पलंग पर बैठ गई। मानो उलाका ने मुझसे बात ही न की हो, वह एक गीत गुनगुनाने लगी और पपलेट बजाने लगी। लेकिन मेरा दिल बुरी तरह छटपटा रहा था। मुझे डर था कि अगर मैं चली गई तो यह उलाका मेरी तरफ देखेगी तक नहीं, और अगर मैं नहीं गई तो मुझे चिंता थी कि वहाँ वह लड़की क्या करेगी! आखिरकार, मैंने कहा, "मैं खाना खाकर थोड़ी देर के लिए बाहर जा रही हूँ!"
"देखो, समर, मुझे डरपोक मत समझो! मुझे सब पता है कि तुम क्या करने वाले हो, कहाँ जा रहे हो; लेकिन याद रखना, अगर तुमने आज मेरी बात नहीं मानी, तो तुम्हारा मुझसे रिश्ता खत्म! तुम जानते हो ना कि मैं कितना जिद्दी हूँ? इसलिए दोबारा जाने की बात भी मत करना!" एक बार फिर, उल्का ने मुझे 'अल्टीमेटम' दिया।
उल्का मेरी पत्नी थी, चाहे कुछ भी हो जाए! जब उल्का ने मुझे मौत के मुंह से वापस लाया था, तब उसने मेरा साथ दिया था। वह झगड़ालू और ज़ालिम थी, उसने विलास की पत्नी और इंदु की बहनों से बेवजह झगड़े करवाकर मुझे पुणे छोड़ने पर मजबूर कर दिया था, यह सच था, लेकिन फिर भी मैं उससे प्यार करता था। मेरे लिए उसने अपने परिवार, अपने माता-पिता, अपने रिश्तेदारों को छोड़ने में ज़रा भी संकोच नहीं किया! मैं उससे प्यार करता था, भले ही मुझे पता था

कि वह मुझ पर हावी रहती है। इसका सिर्फ़ एक ही कारण था - वह मेरे प्रति बेहद वफ़ादार थी! सपने में भी उसके मन में किसी और पुरुष का ख्याल नहीं आ सकता था। फिर ऐसी पत्नी के लिए अपने पति को एक वेश्या के घर में रक्षक के रूप में रहने देना भला भला क्या था! इस बीच, जब उसे लत लग गई थी, मैं बिना किसी डर के कुमारी के पास जाया करता था, लेकिन जब वह आधी बेहोश होती थी, तब भी मैं उसे कुमारी के पास जाने से मना करता था। अब वह लत से मुक्त हो गई है! मैं उसकी इच्छा के अनुसार कुमारी के पास जाने से बच रहा था; लेकिन आज मुझे जाना ही पड़ा, और आज उत्का मुझे वहाँ जाने नहीं दे रही थी! मुझे समझ नहीं आ रहा कि क्या करूँ!...
मैंने जैसे-तैसे खाना खाया। मुझे इस बात का ध्यान नहीं था कि मैं क्या खा रहा हूँ। मेरी आँखों के सामने वो बेजान लड़की दिख रही थी!
"तुम्हें क्या चाहिए? कब तक तुम ऐसी सूखी चपाती खाते रहोगे?" मैंने थाली की तरफ देखा, और उस पर मछली का टुकड़ा होने के बावजूद, मैं सूखी चपाती खा रहा था।
"समर, तुम खाना खाओ और उसे बुला लाओ। वह आज नहीं आ सकती!"
"मुझे फोन क्यों करना चाहिए?" मैंने पन्ने से उठते हुए कहा। मैंने हाथ धोए और बिस्तर पर चली गई।
"तुम ये इसलिए कह रही हो क्योंकि तुम्हें उसकी चिंता है! अरे, वो औरत जिसने गडकरी जैसे सम्मानित पुलिस अधिकारी की हत्या की, क्या वो ज़रा भी भावुक होगी?" उल्का ने मेरे पीछे आते हुए और सोफे की ओर बढ़ते हुए कहा।
"देखो, उल्का, मैं तो फोन भी नहीं करने वाली, तो क्या हुआ?" मैंने गुस्से से कहा।

"हाँ! चलो, चलो! और उस चावल के डिब्बे में पैसा क्या है? क्या वह कहीं छिपा हुआ है?"
वे जुआ खेल रहे हैं!
"वाह! जुआ अभी भी चल रहा है!"
"ऐसा था; लेकिन अब यह खत्म हो गया है; मैंने कसम खाई है कि अब से मैं अपने हाथों में पत्ते नहीं रखूंगा!"
"अरे वाह! इस अचानक बदलाव का कारण क्या था?"
मैं खेलते-खेलते ऊब गया हूँ!
बोलते-बोलते उल्का ने मेरे शरीर पर हाथ फेरना शुरू कर दिया, मानो उसे कोई बड़ी जीत मिल गई हो। वह बहुत खुश थी कि मैंने उसे बाहर जाने से रोक दिया था।
मेरे पास आपके लिए कुछ अच्छी खबर है!
मैंने उसका हाथ कसकर पकड़ते हुए पूछा, "कैसे?"
क्या आप गर्भवती हैं?
मैंने बिस्तर पर उठते हुए पूछा, "तुमने क्या कहा?"
"मैं कसम खाता हूँ! दो महीने हो गए हैं!"
"तो आप यह बात आज कह रहे हैं?"
"हाँ! वापस आते समय मैं चोक्सीबाई के पास गई। उन्होंने मेरी जाँच की और बताया कि मैं निश्चित रूप से गर्भवती हूँ!"
‘‘माय गॉड!’’
"क्यों? क्या आप नहीं चाहते थे?"
"सच में नहीं, लेकिन मुझे नहीं लगा था कि ऐसा इतनी जल्दी हो जाएगा!"
"यह सुनकर मुझे बहुत खुशी हुई। इसलिए मैं अपने साथ एक पर्चा लेकर आई थी। मुझे घर से एक पत्र मिला! मैं तय नहीं कर पा रही थी कि जाऊं या नहीं; लेकिन डॉक्टर के कहने पर मैंने जाने का फैसला

किया। मैंने आपको यह बताने के लिए फोन किया था कि कल स्कूल से मेरी छुट्टी रहेगी। आप अभी-अभी पहुंचे हैं! तो बताइए, क्या आप ऐसी स्थिति में कुमारी के घर जाना चाहेंगे?"
अल्का की खुशी का राज जानने के बाद मुझे अच्छा लगा। लेकिन कुमारी की अकेली अवस्था मुझे समय-समय पर बेचैन कर देती थी। उलेका माँ बनने वाली है! मैं पिता बनने वाला हूँ!... पिता? ओह पिता! मैंने अब तक कई बार पिता शब्द का उच्चारण किया था, लेकिन यह एहसास कि मैं 'पिता' बनने वाला हूँ, अचानक मुझे एक गंभीर ज़िम्मेदारी का एहसास दिला गया। खुशी के इस क्षण में, मैं बच्ची की दयनीय स्थिति को भी भूल गया।
उलेका मेरी गोद में थी। उसके बालों की खुशबू मेरे मन में बसी हुई थी। जो कभी शराब की आदी होकर आत्महत्या करने की हद तक पहुँच गई थी, वही अचानक उलेका में बदल गई। वो कहती थी कि जब तक साढ़े साती है, मुझमें कुछ नहीं बदलेगा। मैं ज्योतिष में ज़्यादा विश्वास नहीं करती; लेकिन जब मैं किसी व्यक्ति के जीवन में एक निश्चित समय पर होने वाले इस बदलाव को देखती हूँ, तो मुझे लगता है कि ग्रहों का किसी व्यक्ति के जीवन की अच्छी और बुरी घटनाओं पर ज़रूर प्रभाव पड़ता होगा!
सुबह के करीब पांच बजे होंगे, किसी ने मेरे दरवाजे पर दस्तक दी और मुझे जगा दिया। मैं तुरंत बाहर आ गई। मेटियोरा भी मेरे पीछे आई। मार्था रॉबर्ट के साथ मेरा घर ढूंढते हुए आई थी। उसका चेहरा ऐसा लग रहा था जैसे टूट गया हो, इसलिए मैंने पूछा,--
"मार्था किस तरह की इंसान है?"
"क्या कुमारी को अस्पताल में भर्ती कराया गया है?"
‘‘का?’’

"वह सुबह 1:30 बजे तक आपका इंतजार करती रही, 1:30 बजे ढाई पाइंट व्हिस्की पी ली और सोने के लिए नींद की गोलियां खा लीं, जो बहुत ज्यादा हो गईं।"
"हे भगवान! कौन सा अस्पताल?" मैंने कपड़े पहनते हुए पूछा। ‘‘वाडियात!’’
डॉक्टर क्या कहते हैं?
"वे कहते हैं कि दोपहर तक कुछ नहीं बोल सकते!"
"अरे बाप रे! ये तो पूरी तरह से गड़बड़ हो गया!"
यह सुनकर उल्का ने कुछ नहीं कहा। जाते समय उसने मुझे रोका भी नहीं। अस्पताल जाते समय टैक्सी में मार्था ने मुझसे कहा, "मुझे तुम्हारा पता नहीं पता, रॉबर्ट ने मुझे एक बार अपने घर का पता बताया था, तो कोई बात नहीं!"
"लेकिन मार्था, तुम घर पर थी ना?"
‘‘हो.’’
"तो फिर तुमने मुझे वो नींद की गोलियां क्यों लेने दीं?"
"अरे, उन्होंने तो मुझे पता भी नहीं दिया!"
"क्या तुमने खाना नहीं खाया?"
"बिल्कुल नहीं!"
आपको कैसे समझ आया?
"जब मैंने व्हिस्की ली, तो मैंने कहा, 'दो निवाले खा लो,' लेकिन उसने कहा कि उसे भूख नहीं है! फिर मैं खाने के लिए उठा, और इस तरह मैंने मामला सुलझाया। जब मैं खाना खाकर वापस आया, तो वह बिस्तर के पास बेहोश पड़ी थी!"
"तो आप क्या करते हो?"
मैंने बगल वाली इमारत से डॉ. कनेकर को फोन किया। उन्होंने कहा, 'मुझे तुरंत अस्पताल ले चलो।' वे मेरे साथ भी आए!

मैंने पूछा, "तुम अस्पताल में क्या कर रहे थे?"
मैंने तुम्हारा पेट साफ किया, तुम्हें इंजेक्शन लगाए। मैंने कहा कि मुझे तुम्हें फोन करना चाहिए, इसलिए तुम सीधे अस्पताल से यहाँ आ गए!
मेरे मन में एक ख्याल आया, "अगर उलेका ने आज लापरवाही न बरती होती, तो शायद यह भयानक घटना टल जाती... कौन जाने? लेकिन आज मुझे उससे किया वादा निभाना बहुत ज़रूरी था... उसकी मानसिक स्थिति बेहद नाज़ुक थी। कौन जाने आगे क्या होने वाला था?..."
जब मैं अस्पताल पहुंचा, तो डॉक्टर और नर्सें उसके चारों ओर घेरा बनाकर खड़े थे। लड़की का भावहीन चेहरा देखकर मैं दंग रह गया... मैंने उसके माथे पर हाथ रखकर उसकी नब्ज़ देख रहे डॉक्टर से पूछा, "क्या उसे कोई खतरा है?"
डॉक्टर ने मेरी तरफ देखा और सहानुभूति भरी मुस्कान के साथ कहा, "बहुत देर हो चुकी है! वह लगभग मर चुकी है!"
मुझे जोर से चीखने का मन कर रहा था। कुमारी की नब्ज़ जाँच रहे डॉक्टर ने अन्य डॉक्टरों और नर्सों की ओर देखा और कहा,-
"सब खत्म! मुझे थोड़ी उम्मीद जगी थी! लेकिन अब तो धड़कन भी नहीं चल रही!"
कुमारी की नाक में ऑक्सीजन ट्यूब फंसी हुई थी। उनकी कलाई में सलाइन का इंजेक्शन लगाया जा रहा था, लेकिन वह रुक गया! नर्स ने नीचे से सफेद चादर खींची और कुमारी के चेहरे पर डाल दी। मेरे साथ आई मार्था फूट-फूटकर रोने लगी। जब मैंने उसे समझाया, तो मेरी आँखों में भी आंसू आ गए।
कुछ ही देर में पुलिस आ गई। उन्होंने मुझसे पूछा, "तुम कौन हो?" मुझे क्या जवाब देना चाहिए? मेरा और उसका कोई रिश्ता नहीं था; फिर भी वह मेरे करीब थी।

"मैं उसके लिए काम करती थी!" मैंने आंखें घुमाते हुए कहा। "नौकरी? किस तरह की नौकरी?"
"ये तो पागलपन है। खरीदारी करना, बिलों का भुगतान करना, वगैरह!" "तो, आप उसकी मनी लॉन्ड्रिंग पर नजर रख रहे थे?"
"हां, कुछ छोटे-मोटे वित्तीय लेन-देन हुए!"
"हमें इस बात की गहन जांच करनी होगी कि यह आत्महत्या है या हत्या! अगर इसमें किसी तरह की गड़बड़ी पाई जाती है, तो मामला दर्ज किया जाएगा! यह भी संभव है कि यह हत्या हो!"
"उसकी हत्या कौन करेगा?"
"कोई भी ऐसा कर सकता है! मुंबई में धनी, खूबसूरत वेश्याओं की हत्या के अनगिनत उदाहरण हैं, महोदय!"
"लेकिन यह न तो हत्या है, न ही आत्महत्या, यह महज एक दुर्घटना है। गलती से बहुत अधिक नींद की गोलियां लेने से हुई मौत!"
"देखिए, हमारे वरिष्ठ अधिकारी तय करेंगे कि यह मौत किस मामले के अंतर्गत आती है! तब तक, हमें हर चीज की जांच करनी होगी!"
तभी एक इंस्पेक्टर आ गया। वो भावे था! भावे जानता था कि मैंने गडकरी मामले में कुमारी की मदद की थी। मुझे देखते ही उसने कहा, "क्या कल उसकी अपील मंजूर नहीं हुई?"
"जी हां, नतीजे कल आएंगे!"
"तो परिणाम पता चलने से पहले यह सब कैसे हो गया?"
"मैं उस समय बांद्रा में अपने घर पर था। मुझे तभी पता चला जब मार्था मुझे फोन करने आई!"
"वाह! ये मार्था क्या है?"
‘‘हो.’’
"बाहर आओ!"

इंस्पेक्टर भावे मार्था को पूछताछ के लिए बाहर ले गए। मैं उस कुंवारी लड़की के शव के पास अकेला था! उसकी आँखों पर से सफेद चादर हटाते हुए मैंने कहा, "तुमने क्या किया है, कुंवारी?" लेकिन उसके सफेद, फटे होंठ खुल गए और वह जवाब देने ही वाली थी। मैंने अपना चेहरा फिर से चादर से ढक लिया और अपनी सूजी हुई आँखों को पोंछने लगा।
शव की जांच और पुलिस की पूछताछ शाम तक चलती रही। जांच के बाद शव को हिरासत में ले लिया गया। जब रॉबर्ट, लिलियन, मार्था और मैं बिजली के चूल्हे के पास जा रहे थे, तभी एक टैक्सी से पांच वेश्याएं उतरीं। उनमें मिली भी थी, जिसने लड़की के पक्ष में गवाही दी थी। वह फूट-फूटकर रो रही थी। "अगर आप यही करना चाहते थे, तो आपने मुझसे गवाही देने के लिए क्यों कहा?" उसने लड़की के शव पर सिर रखकर रोते हुए कहा।
जो लड़की अचानक मेरी ज़िंदगी में आई, उतनी ही अचानक चली भी गई। कम से कम मैं गोल्डा के लिए जीना चाहता था।
पुलिस की जांच में यह निष्कर्ष निकला कि यह न तो हत्या थी और न ही आत्महत्या, बल्कि महज एक दुर्घटना थी। रात के ग्यारह बजे थे जब मैं मार्था के साथ परवीन विला लौटा।
कुंवारी कन्या की मृत्यु से आठवीं मंजिल से लेकर भूतल तक के निवासियों ने राहत की सांस ली। उनकी नजरों में, उनकी इमारत पर लगा दाग धुल गया था। मुझे और मार्था को देखकर कुछ लोग फुसफुसाए,

--

"मालकिन चली गई, अब वह सोच रहा है कि वह मालकिन की नौकरानी को मालकिन बना देगा!"
मैंने मूर्खों से बात न करने का बुद्धिमानी भरा मार्ग अपनाया था।

फ्लैट में सन्नाटा पसरा हुआ था। मार्था बीच वाले हॉल में मेरे सामने बैठी थी। सड़क मार्ग से फ्लैट तक पहुँचने तक उसने किसी तरह अपने दुख को काबू में रखा था, लेकिन फ्लैट पहुँचते ही वह फूट-फूट कर रोने लगी। दुख का तीव्र उफान शांत होने के बाद मैंने उससे पूछा, "अब आगे क्या?"
मैं गोवा जा रहा हूँ!
"क्या यह फर्नीचर यहाँ है?"
मुझे इनमें से कुछ नहीं चाहिए। अगर आपको चाहिए तो ले लीजिए! "मैं इसे कहाँ रखूँ? यह तो पंचायत में है! क्या आपको याद है जब कुमारी ने अपनी वसीयत बनाई थी?"
"अरे हाँ! मुझे इसके बारे में कुछ नहीं पता! वैसे भी, वह यह कैसे सोच सकती थी कि हमारी मौत इतनी अचानक हो जाएगी!"
"मुझे थोड़ा पता लगाना चाहिए!" मैंने उठते हुए कहा। मैं लड़की के कमरे में आया। मैंने अपनी आँखों से बिजली के भस्मक में उसके शरीर को राख होते देखा था; लेकिन इस कमरे में आने के बाद मुझे ऐसा लगने लगा कि वह कहीं घूम रही है।
मैंने उसकी अलमारी का दरवाजा खोला। अंदर, मैंने हैंगरों पर टंगी लंबी साड़ियों की एक कतार देखी। मैंने कई तरह के पंजाबी कपड़े और इत्र की बोतलें भी देखीं। मैंने अलमारी का दराज खोला और उसमें सात-आठ साल की एक बच्ची की तस्वीर देखी। ये है गोल्डा! उसकी नाक बिल्कुल दाऊद जैसी है, माथे से पिरामिड की तरह उभरी हुई! नुकीली। उसके होंठ और ठोड़ी की बनावट भी बिल्कुल दाऊद जैसी है!
उस दराज में रखे दस्तावेजों की छानबीन करते समय मुझे दो लाख रुपये के प्रमाण पत्र मिले, जो कुमारी ने गोल्डा के नाम पर दस साल की सावधि जमा में जमा कराए थे। इसमें यह प्रावधान था कि उस

दो लाख रुपये पर मिलने वाला मासिक ब्याज मीनाक्षी सुंदरम को दिया जाएगा। यह व्यवस्था गोल्डा के बालिग होने तक जारी रहनी थी।
मुझे कुमारी की नीति बहुत पसंद आई। और तभी मेरे मन में एक विचार आया, 'इस फ्लैट का फर्नीचर, ये ऊंचे कालीन, ये अलमारियां किसी की जायदाद नहीं हैं। इनका वारिस तो गोल्डा है। मुझे इस संपत्ति की कोई चाहत नहीं है, न ही मार्था को; असली वारिस तो गोल्डा है!' "मार्था!" मैंने मार्था को पुकारा।
हाल ही में कारोबार बंद होने के बाद से कोई आमदनी नहीं थी। मुझे पता था कि कुमारी ज़मीन खरीदना चाहती थी। इसका मतलब था कि उसके पास और पैसे होने चाहिए। मैंने पूरे घर में तलाशी ली, लेकिन मुझे ढाई हज़ार से ज़्यादा की कोई चीज़ नहीं मिली।
मैं उस दिन वहीं रुका था। रॉबर्ट और लिलियन रात में आए। लड़की के परिवार के इतने करीब कोई और नहीं था।
मैंने रॉबर्ट से कहा, "क्या आपको पता है कि कुमारी की एक बेटी है?"
"लड़की? कौन सी लड़की?"
जब मैंने उसे पूरी सच्चाई बताई, तो उसने अपनी भौहें ऊपर उठाईं और कहा, "यह सब तो कमाल है!"
जब हम बात कर रहे थे, तभी इमारत की मालकिन चोरिडिया आ गईं। ‘‘देखो भाई, आठ दिनके अंदर यह जगह खाली करो!’’
‘‘क्यूँ?’’
‘‘अब वो मर गई ना!’’
‘‘वो मर गई, लेकीन उसकी रिश्तेदार है ना!’’ ‘‘रिश्तेदार-फिश्तेदार मैं नही जानता! जगह खाली करनीही पडेगी!’’

मुझे आश्चर्य हुआ कि लड़की की मृत्यु के तुरंत बाद भी मालिक वहाँ कैसे रह रहा था। लेकिन जल्द ही सच्चाई सामने आ गई। कई किरायेदारों को चिंता थी कि वहाँ एक वेश्या रह रही है, इसलिए उन्होंने तुरंत मालिक को फोन किया और लड़की के साथ उसके संबंध के बारे में बता दिया ताकि कोई और उस तरह से वहाँ न आ सके। मैंने उसे सबक सिखाने का सोचा था; लेकिन मार्था गोवा जा रही थी, और बांद्रा में मेरा घर था। तो उस चोर को क्यों परेशान करूं? सवाल फर्नीचर के बारे में था, और मार्टिन ने कहा, “यहां कई एजेंट हैं जो पुराना फर्नीचर खरीदते हैं। इसे बेच दो, और पैसे गोल्डा के नाम पर छोड़ दो।”
मैंने उनसे कहा, "गोल्डा के लिए तो कुमारी ने ही इंतज़ाम किया था। सवाल मार्था का है! इस मार्था ने कुमारी की वफ़ादारी से सेवा की थी। इस फर्नीचर की बिक्री से मिलने वाली आधी रकम मार्था को दी जानी चाहिए।"
तीसरे दिन कुमारी की अपील पर फैसला आ गया। हाई कोर्ट ने उन्हें बरी कर दिया। उनकी रिहाई और मौत की खबर उसी दिन फैल गई।
अगर कुमारी को अपील पर दोषी ठहराया गया होता, तो शायद हमें उसकी असमय मृत्यु पर इतना दुख नहीं होता; लेकिन यह पढ़ने के बाद कि उसे अपील पर बरी कर दिया गया है, मेरा और मार्था का दुख अवर्णनीय था।
-०-०-

२९
कुमारी की मृत्यु ने मेरे जीवन में एक नया मोड़ ला दिया। यह सर्वविदित था कि वह एक वेश्या थी, लेकिन किसी ने भी उसे 'इंसान' के रूप में नहीं देखा था। मैंने यह देखा था। मेरा उससे एक रिश्ता भी बन गया था। फिर भी, मैं उसे कम आंकने को तैयार नहीं था। गडकरी हत्याकांड के कारण मैं भी उसके साथ सुर्खियों में आ गया था। लोग अब भी मानते हैं कि उस हत्या में मेरा हाथ था। लेकिन सच बोलने से मैं कौन डरता हूँ? अब मैं मृत्यु के कगार पर हूँ। मेरा शरीर, जो लकवाग्रस्त हो चुका है, इतना कमजोर हो गया है कि मैं किसी के सहारे के बिना एक इंच भी नहीं हिल सकता। मैंने दवाइयाँ लेना बंद कर दिया है। क्योंकि मैं जानता हूँ कि अब मैं बस कुछ हफ़्तों का साथी हूँ। जब मृत्यु मेरे सामने खड़ी है, तो मुझे किससे और किस बात से डरना चाहिए?
मरते हुए व्यक्ति के होंठों पर सच्चाई होती है। एक कहावत है कि मरते हुए व्यक्ति के होंठों पर सच्चाई होती है। इसलिए मैं आपको सब कुछ सच-सच बताना चाहता हूँ। अगर मैं आपको यह बताए बिना मर गया, तो मेरी आत्मा व्यर्थ ही भटकती रहेगी! अब मुझे किसी चीज से डर नहीं लगता! लोग मृत्यु को सामने देखकर डर जाते हैं, लेकिन इस तरह डरने का कोई फायदा नहीं। एक चीता हिरण का पीछा करते हुए तब तक नहीं रुकता जब तक वह उसे मार न डाले। मृत्यु के साथ भी ऐसा ही है। एक बार पीछा करने के बाद, कोई बच निकलने का रास्ता नहीं। चाहे वह कोई महान सम्राट हो या सड़क पर भीख मांगने वाला!
मैंने आत्मनिरीक्षण को छोड़ दिया और सीधे गहराई में उतर गया। तो तुम क्या कह रहे थे? ओह, मुझे याद आ गया!
कुमारी के फर्नीचर से चालीस हज़ार रुपये आए। उसमें से बीस हज़ार रुपये मार्था को दे दिए और बीस हज़ार रुपये से मैंने खुद

बैंगलोर जाने की तैयारी की। एक-दो दिन में मुझे निकलना था। कुमारी के घर गए तेरह दिन हो चुके थे।
मार्टिन ने एक आवर्धक लेंस से नीचे देखा और अपनी घड़ी को ठीक करते हुए कहा, "कुंवारी की सारी संपत्ति हटा दी गई थी, लेकिन एक चीज बची रही!"
"कौन सा?"
"वह घड़ी जो वह फ्रांस से लाई थी! उसे मुझे वापस भेजनी पड़ी क्योंकि वह तीन हफ्ते पहले टूट गई थी!"
"आप क्या कह रहे हैं?"
"देखो तो ज़रा! ये तो परसों चालू थी! अब मैं इस घड़ी का क्या करूँ?"
"इसे अपने तक ही रखो!" मैंने कहा।
"इसे अपने पास रखना मेरे पास रखने से बेहतर है, क्योंकि यह कुंवारी कन्या की याद दिलाता रहेगा!"
"ठीक है। मैं बैंगलोर से वापस आने के बाद इसे ले लूंगी; लेकिन उल्का को पता नहीं चलना चाहिए कि यह घड़ी उस लड़की की है!" ‘‘का?’’
"इतने लंबे समय तक करीब रहने के बाद भी, तुम उसका स्वभाव नहीं समझ पाए? चलो, उसे जाने दो। मेरे पास और कौन आया था?"
"ओह हाँ!" मार्टिन ने अपनी घड़ी देखते हुए कहा। "तुम यहीं इंतज़ार करो। राजकुमारी ने कहा है कि वह ग्यारह बजकर साढ़े ग्यारह बजे आ रही हैं!"
आपने कब अलविदा कहा?
"वह सुबह दुकान खुलते ही आ गई थी!" मैं उसकी संगति से बच रही थी क्योंकि वह राजकुमारी की फिल्म के प्रति इतनी दीवानी थी। मुझे

पक्का पता था कि अगर वह उस धंधे में पड़ गई तो उसका सारा पैसा बर्बाद हो जाएगा!
साढ़े दस बज चुके थे। हमें एक घंटा और इंतज़ार करना पड़ा। मन में एक आवाज़ आई, “तुम्हें उसकी इतनी चिंता क्यों है? अगर वो चली जाए तो जाने दो गड्ढे में! तुम इतना समझा रहे हो, पर वो सुनने को तैयार नहीं है।” लेकिन तुरंत ही दूसरा मन बोला, “भले ही आज वो बदतमीज़ी कर रही हो, उसने एक बार तुम्हारी जान बचाई है। भले ही तुम उसे गड्ढे में गिरते हुए देखो, अगर तुम उसे बचाने की कोशिश नहीं करोगे तो एहसानफरामोशी करोगे!”
मैं रॉबर्ट के बोर्ड पर बैठा सिगरेट का कश ले रहा था। रॉबर्ट ने अपना काम करते हुए कहा,-
"कल चोर ने दस्तक दी!"
‘‘का?’’
"किसी ने उसे जगा दिया है, उसकी मौत फ्लैट में हुई थी और वह आधी रात को वहां आती है। लोग तो यह भी सोच रहे हैं कि गडकरी जैसा मोटा आदमी पागल हो गया है! उस फ्लैट में रहने की हिम्मत किसी की नहीं! भूतिया आवाजें तेज हो गई हैं!"
"बेतुकी बातें! ये सब बकवास विचार हैं!"
"गायक कह रहा था, 'लोगों के मन से इस भय को दूर करने के लिए आपको कुछ दिनों तक वहीं रहना चाहिए!'"
"मैं?" मैंने अपना हाथ अपनी छाती पर रखते हुए कहा।
"हां, और वह इसके लिए आपको हर महीने सौ रुपये देने को तैयार है!" "किराया नहीं, सौ रुपये? हमें इस बारे में सोचना चाहिए! लेकिन वह हमें वहां कब तक रहने देगा!"
"मैंने इस बारे में कुछ नहीं कहा, अगर आप डेट पर जाना चाहते हैं तो!"

"चलिए देखते हैं, पहले बैंगलोर चलते हैं, फिर इस बारे में सोचेंगे! लेकिन मुझे नहीं लगता कि उलाका वहां रहने आएगी!"
जब मैं अपनी कुर्सी पर बैठकर सोच रहा था, तभी रॉबर्ट ने कहा, "तुम्हें ऐसी जगह पर नहीं रहना चाहिए! यहाँ एक हत्या होती है, फिर आत्महत्या!"
"नहीं, यह एक दुर्घटना थी!" मैंने कहा।
"जो भी हो, यह उस जगह के निवासियों के लिए परेशानी का सबब है, यह सच है!"
"मार्टिन, तुम इस पर कैसे विश्वास कर सकते हो?"
"जो घटनाएँ घटित हुई हैं, उन्हें देखते हुए विश्वास क्यों न करें?"
‘‘फर्गेट इट!’’
तभी राजकुमारी रत्नप्रभा टैक्सी में आईं। उन्होंने दरवाजा खोला, आगे बढ़ीं और बोलीं-
"मुझे बहुत खेद है, समर! यह बहुत बुरा हुआ! मुझे लगा था कि तुम कुंवारी हो!"
मैं वहाँ बिना कुछ बोले खड़ा रहा।
"वह कैसे हुआ?"
मैं कुमारी की मौत की पूरी कहानी हर किसी को नहीं बताना चाहता था। सीधे शब्दों में कहूँ तो, मैंने कहा, "उसने गलती से गलत गोलियाँ खा लीं!"
"ओह! दुर्भाग्य! खैर, बाद में मिलते हैं; क्या आप आज व्यस्त हैं?" "क्यों नहीं?"
"क्या आप मेरे साथ आना चाहते है?"
"कहाँ?"

"फेमस में मेरी एक छोटी सी भूमिका है। शूटिंग एक या दो घंटे की है!"
मेरे पास भी करने को कुछ नहीं था; वैसे भी, मैं यूं ही बैठे-बैठे ऊब गया था; इसलिए मैं उठा और टैक्सी में बैठ गया। राजकुमारी फिल्मों में काम करने के खिलाफ थी, लेकिन वह सुनने को तैयार नहीं थी। उसे जो करना है करने दो, इसलिए मैंने उसे आगे कुछ भी सिखाने का विचार छोड़ दिया। यह सब जानते हुए भी, जब उसने मुझे शूटिंग देखने के लिए आमंत्रित करने की बात कही, तो मुझे उसकी लगन देखकर थोड़ी प्रशंसा हुई!
चलो देखते हैं गोलीबारी कैसी होती है!
"समर, उसका क्या हुआ? नारोन्हा जिस फिल्म में काम करने जा रहा है, उसमें कुछ दिक्कत आ गई है। उसका फाइनेंसर परेशान हो गया है। हमें उसके आने तक इंतजार करना होगा। इस बीच, मुझे भी एक छोटा सा रोल ऑफर किया गया है।"
"बहुत अच्छा!"
"क्या आप ये बात दिल से कह रहे हैं?"
"फिर भी!"
"नहीं, मैं इस क्षेत्र में अपना नाम बनाना चाहता हूं।"
"आप कमाना शुरू कर देंगे! लेकिन एक बार जब आप कमाना शुरू कर देंगे, तो गुजारा भत्ता बंद हो जाएगा या कम से कम कम हो जाएगा।" ‘‘ते का?’’
"जो महिलाएं पैसा कमा सकती हैं, उनके लिए गुजारा भत्ता की क्या जरूरत है?"
लेकिन उन्होंने अदालत में अपना जुर्म कबूल कर लिया!

"यह सच हो सकता है, लेकिन कानून कहता है कि गुजारा भत्ता राशि स्वीकृत होने के बाद, पैसा प्राप्त करने वाली महिला को भुगतान की जाने वाली गुजारा भत्ता राशि भी कम की जानी चाहिए!"
"लेकिन अगर मैं इस क्षेत्र में अपना नाम कमा लेता हूं, तो मैं उनके पैसे पर क्यों निर्भर रहूंगा?"
"नाम? पैसा? आप इसे हासिल कर सकते हैं! कोई मुझे बताए! लेकिन इसके लिए आपको बहुत भारी कीमत चुकानी पड़ेगी!"
"तुम्हारे पास अपनी एक अलग पहचान है!" राहुनारा की राजकुमारी में आए बदलाव को देखकर मैं दंग रह गई। उनमें इतना बड़ा परिवर्तन हुआ था कि मुझे आश्चर्य हुआ कि क्या वह वही बहादुर, विचारशील और संयमित राजकुमारी थी जिसे मैंने रत्नपुर में देखा था।
टैक्सी स्टूडियो परिसर के सामने रुकी। मैं राजकुमारी के पीछे- पीछे उतर गया।
"नमस्कार राजकुमारी!" नारोन्हा की सहायक ने आगे बढ़ते हुए कहा। "क्या मैं समय पर पहुंचा?"
"बिल्कुल! चलो मेकअप करते हैं!"
"समर, तुम सेट पर इंतज़ार करो, मैं यहाँ हूँ। मिस्टर रोबोट, ये समर ठाकुर है, मेरा दोस्त! चलो इसे सेट पर ले चलते हैं।"
रोबो ने मुझसे हाथ मिलाया और मुझे स्टूडियो ले गया जहाँ सेट तैयार था। मेरे जैसे लगभग पंद्रह लोग पहले ही वहाँ पहुँच चुके थे और बैठे हुए थे। स्टूडियो में एक बड़ा सा लिविंग रूम सेट तैयार किया गया था। लाइटिंग की व्यवस्था पूरी हो चुकी थी। मेकअप किया हुआ एक युवक मुँह में सिगरेट लिए बातें कर रहा था। कुछ ही देर में राजकुमारी मेकअप करके वहाँ आ गईं। राजकुमारी ने इतने कम कपड़े पहने थे कि उन्हें देखकर ही मुझे चक्कर आने लगा।
मैं कोई बहुत धार्मिक संत तो नहीं था, लेकिन राजकुमारी के आधे

से ज़्यादा शरीर को कैमरे के सामने खुला छोड़ने और फिल्म बनने पर हज़ारों-सैकड़ों लोगों के उस दृश्य को देखने के विचार से ही मैं बेचैन हो गया। लेकिन अब मेरे पास चुप रहने के अलावा कोई चारा नहीं था।
गोलीबारी शुरू हुई। दृश्य में एक गुंडा एक नर्तकी का अपहरण कर उसे अपने बंगले में नाचने के लिए मजबूर करता है। नर्तकी नाचने से इनकार कर देती है; फिर वह उसे जंबिया दिखाकर नाचने के लिए मजबूर करता है!
शूटिंग के दौरान, एक बार लाइटिंग में गड़बड़ी हुई, दूसरी बार साउंड केबिन में साउंड ठीक से काम नहीं कर रहा था, और तीसरी बार, लाइटिंग और साउंड ठीक होने के बावजूद, विलेन ने ज़ोर से छींका! सहायक निर्देशक हर बार 'कट-कट' चिल्लाता रहा।
मुझे उस राजकुमारी से जलन हो रही थी जो हर बार नए जोश के साथ उस खलनायक के साथ इश्कबाजी कर रही थी। वह खुलकर अपने शरीर का प्रदर्शन कर रही थी, मानो वह कोई फिल्म स्टार हो। मैं यह सब नहीं देखना चाहती थी, इसलिए मैं उठकर बाहर खड़ी हो गई। असल में, मैं वहां से जाना चाहती थी।
लगभग तीन घंटे की शूटिंग खत्म होने के बाद, राजकन्या मुस्कुराते हुए बाहर आई। उसने मुझसे पूछा, "अभिनय कैसा था?" मैंने कुछ नहीं कहा।
"नारोन्हा बहुत खुश है! जब नारोन्हा सेट पर आई थी तब आप वहां नहीं थे!"
"मेरे राजा, मेरा सिर चकरा रहा है! मुझे घर जाना है!"
"इसका मतलब है कि आपको मेरी एक्टिंग पसंद नहीं आई! अरे, अगले शॉट में मैं ऐसा डांस करने वाली हूँ कि दर्शक पागल हो जाएँगे!"
"ऐसा होगा ही!" मैंने व्यंग्यपूर्वक कहा।

"समर, मुझे बचपन से ही नृत्य का बहुत शौक रहा है, क्या तुम यह जानती हो?"
"हां, लेकिन मुझे इससे पहले इस तरह शरीर को खुला रखकर नाचने की आदत नहीं है!"
"तुम पहेली नहीं सुलझा रही हो, समर! अपना जीवन जीने का एक ही मापदंड है! और दूसरों के लिए अलग-अलग 'मापदंड' रखना ठीक नहीं है!" "तुम भूल गए कि मैं एक पुरुष हूँ!"
तो आपका तरीका आदर्श है?
बिल्कुल नहीं! अगर कोई पुरुष हंगामा भी करे तो उसे ज्यादा नुकसान नहीं होता; लेकिन अगर कोई महिला मूर्खतापूर्ण हरकत करे तो उसे जीवन भर पछतावा होगा!
"इसका मतलब है कि आप अभी भी सौ साल पहले के समय में जी रहे हैं! पश्चिम में क्या हो रहा है, इसके बारे में थोड़ा पढ़ लीजिए!" "इसकी कोई जरूरत नहीं है। यहां काम करने वालों के व्यवहार से मैं अंदाजा लगा सकता हूं कि वहां क्या चल रहा है।"
"यह गलत है! वहां पुरुषों और महिलाओं को समान माना जाता है!" "लाखों रुपये दे दो, फिर भी कोई पुरुष माँ नहीं बन सकता! प्रकृति द्वारा निर्धारित सीमाओं का पालन करना ही होगा! कल्पना कीजिए, महाराज, यदि कोई युवती इस जीवन से ऊब जाए, निराश हो जाए और सभी तीर्थ स्थलों की यात्रा करना चाहे, तो क्या वह वास्तव में ऐसा कर पाएगी?"
"क्यों नहीं?"
क्या वह सड़क पर अकेले दस मील सुरक्षित रूप से चल सकती है? यह तो केवल पुरुष ही कर सकते हैं! ऐसा क्यों है? प्रकृति ने स्वयं महिलाओं पर कुछ सीमाएँ लगा रखी हैं! हमारे भवानी नगर में एक पागल औरत रहती थी, उसका नाम अमीना था। वह हर साल बच्चे को जन्म

देती थी! मानव जाति कितनी भयानक है! उसे यह भी समझ नहीं आता कि स्त्री पागल है या बुद्धिमान। वह केवल एक ही बात समझता है! अपनी यौन इच्छा को संतुष्ट करना, और ऐसा करते समय पुरुष किसी और बात के बारे में नहीं सोचता। 'वासना में कोई भय या शर्म नहीं!' तो फिर यह सोचना सही नहीं है कि पुरुष और स्त्री समान हैं! अब, अगर हम अधिकारों की बात करें, तो मैं समझ सकती हूँ कि महिलाओं को शिक्षा प्राप्त करने, कार्यालयों में काम करने, कचरा डंपों में काम करने जैसी बातें समझ सकती हूँ; लेकिन अगर महिलाएं उन जगहों पर समान अधिकारों के लिए लड़ना शुरू कर दें जहाँ वे मौजूद ही नहीं हैं, तो यह एक आपदा होगी!
"यूरोप और अमेरिका में महिला पायलट हैं, सेना में अधिकारी हैं। पुलिस में भी महिलाएं हैं! तो हम यहां भी ऐसी ही उम्मीद क्यों नहीं कर सकते?"
"बिल्कुल, लेकिन ईमानदारी से कहूँ तो मेरा मानना है कि महिलाओं को पहले अपने घर की देखभाल करनी चाहिए, और जब यह कर्तव्य पूरा हो जाए, तो अगर उनके पास समय हो, तो उन्हें किसी अन्य क्षेत्र में जाना चाहिए। मैं कभी भी ऐसी विचारधारा में दिलचस्पी नहीं रखूँगी जो पारिवारिक व्यवस्था को नष्ट कर दे!"
"वाह! जब घर पर आपकी पत्नी थी, तब आपने पुणे में सलीमा के साथ समय बिताया, उल्का से शादी की, कुमारी को परेशान किया, और अब आप मुझे सिखा रहे हैं कि महिलाओं को ऐसा व्यवहार नहीं करना चाहिए जिससे परिवार व्यवस्था नष्ट हो जाए! आप बहुत निष्पक्ष हैं! आपके अतीत के बारे में किसी को नहीं पता। आपकी ये शिक्षाएं मुझ जैसी महिला पर अच्छा प्रभाव डालेंगी!"
"महाराज, मैंने आपसे कहा था, मैं खुद को धुले हुए चावल की तरह साफ-सुथरा होने का दावा नहीं करती। लेकिन मुझे आप जैसी शिक्षित,

कुलीन राजकुमारी में कभी दिलचस्पी नहीं होगी जो मेकअप लगाकर सार्वजनिक रूप से अपने शरीर का प्रदर्शन करती है!"
"अभिजात वर्ग? राजपरिवार? ये सब अतीत के जाल हैं जो महिलाओं को गुलामी में रखने के लिए बनाए गए हैं! लेकिन समय बदल गया है, समर! हम इससे बाहर निकलेंगे! अमेरिका में भी महिला मुक्ति आंदोलन जड़ पकड़ रहा है!"
"यह अमेरिका नहीं है, वहां आप जो भी करें, कोई आपसे सवाल नहीं करेगा!"
"मैं भी वहाँ जाना चाहती हूँ! अगर मैं यहाँ एक-दो फिल्मों में अच्छा प्रदर्शन करूँ, तो सीधे हॉलीवुड चली जाऊँगी! हॉलीवुड फिल्म में भारतीय राजकुमारी!"
मैंने अपना माथा पीट लिया, मुझे पूरा यकीन था कि यह पागल लड़की मेरी बात नहीं सुनेगी।
जैसे ही टैक्सी हिंदू कॉलोनी में उसके घर के पास रुकी, मैंने कहा, "बाय बाय!"
‘‘ये क्या है? अब तुम नहीं आ रहे हो?’’
"हाँ, हमें जाना ही होगा! उत्का की तबीयत आजकल ठीक नहीं है," मैंने टैक्सी में बैठते हुए कहा।
"क्या चल रहा है?"
"खुदरा।"
"अगर आपने खाना खा लिया हो तो क्या होगा? मेरे पास आधा जॉनी वॉकर बचा है!"
"माफ़ कीजिए!" मैंने टैक्सी ड्राइवर की पीठ पर अपनी तर्जनी उंगली से धक्का देते हुए कहा, "चलिए भाई, बांद्रा चलते हैं।"

मुझे राजकुमारी पर गुस्सा भी आया और साथ ही उस पर दया भी आई। वह अभी भी कल्पना की दुनिया में जी रही थी। उसने अभी तक वास्तविक दुनिया का प्रकाश नहीं देखा था।
जब मैं घर लौटा, तो घर के सामने भीड़ लगी हुई थी। उस भीड़ में एक-दो पुलिसवाले और सिपाही भी थे। मेरा दिल बैठ गया। पहले तो मुझे लगा कि मेटियोर के साथ कुछ अच्छा या बुरा हुआ है क्या? लेकिन मेटियोर ठीक था। मेटियोर के ताला लगाकर स्कूल जाने के बाद, किसी चोर ने नकली चाबी से घर में सेंध लगाई थी। बर्तन तो वैसे ही थे; लेकिन जो चावल मैंने एक दिन पहले होटल मिल्टन से खरीदे थे, वो सारे चावल के डिब्बे से गायब थे! उसमें मेरे कुछ और पैसे भी थे; लेकिन मुझे ठीक-ठीक कैसे पता चला कि कितने थे?...
“तुम्हारे पास कितने पैसे थे?” सैनिकों ने उल्का से पूछा। उल्का ने मेरी ओर इशारा किया। मैं दुविधा में पड़ गया, क्या मैं उन्हें बताऊँ कि कितने थे? अगर मैं पचास या साठ हज़ार बता देता, तो वे मुझसे पूछते, “तुम किस तरह का काम करते हो, घर में इतना पैसा क्यों रखते हो?” मैंने उन्हें बताया,--
"ज्यादा लोग नहीं थे। लगभग चार सौ ही रहे होंगे!"
"क्या हम इसे इसी तरह लिख लें?"
‘‘हो.’’
बिना मेहनत के कमाया हुआ पैसा न तो सुख देता है और न ही दुःख। उल्का ने सवालिया निगाहों से मेरी तरफ देखना शुरू कर दिया। उसने अभी-अभी पैसा देखा था। लेकिन मैंने उसे चुप रहने का इशारा किया।
चश्मा तो गायब हो गया था, लेकिन उसके साथ ही उसकी सारी कमाई भी चली गई थी।

पुलिस ने पंचनामा किया, हमारे बयान लिए और चली गई। दुकान से लौटने पर रॉबर्ट को पता चला कि चोरी हुई है, इसलिए वह लिलियन के साथ हमसे मिलने आया।
"तुम कहाँ थे?" उसने मुझसे पूछा। इससे पहले कि मैं जवाब दे पाती, उल्का ने कहा,-
"क्या उसका कोई एक ठिकाना है? वह तो पूरे गाँव में घूमता रहता है!"
"मुझे बस एक शब्द बोलना था! लगता है तुम 'गाओभर' और 'भटकट' के बीच का एक शब्द बोलना भूल गए हो?" मैंने गुस्से से कहा।
"देखो, क्या तुम्हें शर्म आती है?"
"अरे, क्या किसी आदमी को इस बात पर शर्म आनी चाहिए कि ऐसा है? ये क्या बकवास है, रॉबर्ट?"
"मैं क्या कहूँ, गड्या! तुम्हारा जीवन कितना अनोखा है! क्या तुम भी हम सब की तरह हो?"
"क्या मेरे चार पैर हैं?"
उल्कापिंड ने कहा, "इसके चार पैर भले ही न हों, लेकिन इसके कान बड़े हैं!"
"सावधान रहो! सावधान रहो, बैसाहेब, तुम मुझे गधा कह सकते हो; लेकिन सोचो कि इसके कारण तुम्हारा क्या हाल होगा।"
अगर किसी का एक पैसा खो जाता, तो उसे चिंता होती, लेकिन यहाँ, किसी ने मेरे चालीस-पचास हजार ऐसे ले लिए जैसे उन्हें इसकी भनक लग गई हो, लेकिन मैं एक मजाक के बारे में सोच रहा था।
यह दौर मेरे चरित्र में बदलाव का समय था। मेरे अंदर का दयालु और भावुक स्वभाव धीरे-धीरे लुप्त हो रहा था। अगर मैं कहूँ तो, मेरे चरित्र में यह बदलाव बहराम ईरानी का चश्मा चुराने के बाद से ही शुरू हो गया था। उस चश्मे की मदद से मैंने लोगों को धोखा दिया और

सैकड़ों रुपये कमाए। मैंने उन्हें बिना हिसाब-किताब के खर्च भी कर दिया। मुझे कोई तकलीफ नहीं हुई। कुमारी मुझे अंदर से मार रही थी। जब मैं उसके घर पर होता, तो रसोई में जाकर हाथों से खाना खाता। उसके जाने के बाद भी मैंने उसकी शराब पीना नहीं छोड़ा। मैं मनचाहे कपड़े खरीदता। मैं बेफिक्र जिंदगी जी रहा था। लेकिन वो चश्मा टूट गया - नहीं, दाऊद ने उसे छीनकर तोड़ दिया... कुमारी की मृत्यु हो गई... घर में चोरी हो गई। जितना पैसा था, सब चोरी हो गया... इन घटनाओं ने मेरे जीवन में एक अनोखा मोड़ ला दिया। वो कुंवारी लड़की जो अपनी मर्जी से कुछ भी कर सकती थी, गायब हो गई, और वो जादुई चश्मा भी गायब हो गया जो लोगों की जेब से पैसे ऐसे निकाल लेता था जैसे उन्हें धोखा दिया जा रहा हो।
इसमें कोई शक नहीं था कि उल्का ने काम शुरू कर दिया था और उसने कई दिन मना करने में बिताए थे, ये दोनों बातें सुकून देने वाली थीं।
-०-०-

३०
मैंने पिछले चार महीनों से राजकुमारी से मुलाकात नहीं की थी। उन्होंने मुझसे दो-तीन बार मिलने की कोशिश की थी; लेकिन मैं जानबूझकर उनसे बच रहा था।
हमारी पारिवारिक डॉक्टर चोक्सीबाई थीं। बांद्रा टॉकीज के पास उनका एक छोटा सा क्लिनिक और अस्पताल था। वे उस इलाके की मशहूर स्त्री रोग विशेषज्ञ थीं। उनके पति वकील थे। उनका नाम परदीवाला था। लेकिन लोग चोक्सीबाई को उनके विवाह से पहले वाले उपनाम से जानते थे। डॉली चोक्सी!
उला का चौथा महीना शुरू हो रहा था; लेकिन इसी समय उसे कुछ परेशानी होने लगी। शुरू में मामूली रक्तस्राव हुआ, इसलिए मैंने चोक्सिबेन से उसका इलाज शुरू किया। उसकी सेहत में थोड़ा सुधार हुआ; लेकिन दवा बंद करने के बाद परेशानी फिर से शुरू हो गई। मुझे लक्षणों में कोई सुधार नहीं दिखा। उस दिन तो वह बिस्तर से उठ भी नहीं पा रही थी।
"समर, छुट्टी के लिए आवेदन लिखो, और जब तुम आओ तो चोक्सिबेन को भी साथ ले आना!"
"मुझे लगता है कि आपको अस्पताल में भर्ती होना चाहिए। वहां बेहतर देखभाल मिलेगी!"
मुझे अस्पताल में रहना पसंद नहीं है!
"यह नखरे करने का समय नहीं है, उल्का। अगर इससे कोई दिक्कत होती है, तो हमें इसे खुद ही सुलझाना होगा!"
"नहीं! मैं अस्पताल में नहीं रुकूँगी। अगर तुम बैरिन को फोन नहीं करना चाहते, तो चले जाओ!"
अप्रैल का महीना था। सूरज चमक रहा था। सड़क पर डामर की परत पतली थी और उस पर गुजरने वाले वाहनों के निशान दिखाई देने लगे थे।

मेरी आर्थिक स्थिति पूरी तरह से बिगड़ चुकी थी। मुझे उलाका की तनख्वाह पर निर्भर रहना पड़ता था। मुझे मेहनत करने की आदत नहीं थी, बल्कि सच कहूँ तो, मेहनत करने का मौका मुझे कभी मिला ही नहीं था। लेकिन अब मुझे तंगी महसूस होने लगी थी। उलाका की तनख्वाह में से साढ़े तीन सौ रुपये दवाइयों पर खर्च हो जाते थे। बचे हुए ढाई सौ रुपये से एक महीने का गुजारा करना पड़ता था। जब मेरे पास खूब पैसा होता था, तो मैं उसे मनचाहे तरीके से खर्च करने का आदी हो गया था, लेकिन अब तकलीफ होने लगी थी।
चोकसिबेन के क्लिनिक में पहले लंबी-लंबी कतारें लगती थीं। लेकिन उस दिन वहाँ सिर्फ तीन-चार महिलाएँ थीं। मैं 'केवल पुरुषों के लिए' लिखी बेंच पर बैठ गई। मुझे यह विचार अच्छा लगा। यह पुरुष डॉक्टरों के क्लिनिकों में 'केवल महिलाओं के लिए' बनी बेंचों के बिल्कुल विपरीत था।
जैसे ही मैंने तीनों महिलाओं की जांच पूरी की, मैं डॉक्टर के पास जाने के लिए उठा, और तभी डॉक्टर खुद हाथ में स्टेथोस्कोप लिए बाहर आईं।
‘‘हेलो, श्री ठाकुर? मेटियोर कैसा है?’’
"उसकी तबीयत अभी ठीक नहीं है; इसीलिए मैंने आपको फोन किया!"
सच कहूँ तो, वो समय पर दवा नहीं लेती; इसीलिए ऐसा होता है। उसे दो हफ्ते तक अस्पताल में रखना पड़ेगा! क्या बात है?
मैं भी यही कह रहा हूँ। लेकिन वो थोड़ी ज़िद्दी है। चलो आज घर चलते हैं। जाकर देख लेते हैं और उसे बता देते हैं! पर ऐसा बार-बार क्यों होता है!
डॉक्टर मुझसे बात करते हुए कार के पास आए और मुझसे कहा,
"श्री ठाकुर, अत्यधिक शराब पीने के कारण उसकी सारी मांसपेशियां शिथिल हो गई हैं। संभावना है कि गर्भाशय भी प्रभावित हो सकता

है। चलिए देखते हैं, आप उसे दो सप्ताह तक यहीं रखिए, मैं विस्तृत निरीक्षण कर सकता हूँ!"
क्या आपके पास समय है?
अपनी घड़ी देखते हुए डॉक्टर ने कहा, "मैं अभी आ जाती; लेकिन मुझे एक मरीज को देखने जाना है! चलिए, आप मेरे साथ आइए, हम उस मरीज को देखेंगे और फिर आपके घर वापस चलेंगे, ठीक है?"
‘‘ओ ऽ के!’’
डॉक्टरिनबाई उल्का को तब से जानती थीं जब वह शराब की आदी हो गई थी। शराब की लत छुड़ाने में मदद करने के लिए, डॉक्टरिनबाई ने पहले उल्का को मॉर्फिन के इंजेक्शन दिए। धीरे-धीरे उन्होंने मात्रा कम कर दी और इंजेक्शन बंद कर दिए। इतना ही नहीं, जब उल्का अस्पताल आई, तो चोक्सीबाई उसे बहलाने-फुसलाने की कोशिश कर रही थीं, जो अजीब बात थी! अस्पताल में कई ऐसी महिलाओं को देखकर जो संतान प्राप्ति के लिए उत्सुक थीं, उल्का के विचार धीरे-धीरे बदलने लगे। चोक्सीबाई ही वह कारण थीं जिनकी वजह से उसे एहसास हुआ कि संतान प्राप्ति का सुख शराब के नशे से कई गुना बेहतर है। मैं उस महिला के बगल में बैठ गया। वह खुद गाड़ी चला रही थी। माहिम के पास सड़क अवरुद्ध थी। एक हाथगाड़ी का पहिया फिएट कार में फंस गया था। चौराहे पर खड़ा पुलिसकर्मी हमलावर को कोस रहा था और फिएट कार के चालक को पहिया निकालने का निर्देश दे रहा था। “Sala rastepe marneko ata hai!” पुलिसकर्मी ने हाथगाड़ी का पहिया हटाने के बाद हमाला से कहा।
‘‘फिर कहाँ जाऊ भाई?’’
‘‘जाव कबरस्तान में!’’
चोक्सीबाई ने मुस्कुराते हुए मुझसे कहा, "देखिए श्री ठाकुर, यह पुलिसवाला तो सरकार है, जो उस बेचारे आदमी को कब्रिस्तान जाने

को कह रहा है। असल में, गलती उस फिएट कार चालक की थी। उसने बिना सिग्नल दिए गाड़ी मोड़ दी थी। लेकिन कार चालक तो हमेशा सही होता है, हाथगाड़ी चालक तो मूर्ख होता है!"
मैंने कहा, "यही तो हर जगह देखने को मिलता है! और सबसे बढ़कर, यह सरकार गरीबों के लिए है! गरीबी खत्म करो!"
"सरकारी लोग केवल गरीबों का ही विनाश करते हैं!"
माहिम पार करके तिलक ब्रिज की ओर बढ़ते हुए डॉक्टरिनबाई ने मुझसे कहा, "मेरा मानना है कि समाज में यह असमानता कुछ हद तक बनी रहेगी; लेकिन एक व्यक्ति का झुग्गी बस्ती में रहना और दूसरे का पेद्दार रोड पर बने आलीशान बंगले में रहना, यह बहुत ज़्यादा है! ऐसी असमानता ज़्यादा समय तक नहीं टिक सकती!"
ऐसा लगता है कि आपने चिकित्सा पेशे के साथ-साथ समाजवाद का भी अध्ययन किया है!
‘क्या अध्ययन करने की कोई आवश्यकता है? मैं वही बोल रहा हूँ जो मैंने अपनी आँखों से देखा है। क्या यह झूठ है?’
हम दोनों तिलक ब्रिज से बाईं ओर मुड़े और हिंदू कॉलोनी में उस इमारत के सामने कार खड़ी कर दी जहाँ राजकुमारी रहती थीं। मैं पिछले चार महीनों से जानबूझकर राजकुमारी से बच रहा था और आज मैं ठीक उनके घर के सामने रुक गया।
दरवाजा खोलने से पहले उस महिला ने मुझसे कहा, "यहां एक मरीज है। वह जांच के बाद दस मिनट में वापस आ जाएगा!"
"अरे बाप रे!" मैं कार में बैठ गया।
पांच मिनट बीत गए, फिर दस। महिला के आने का कोई आसार नहीं था।
लेकिन मैं वहाँ बैठे रहने के अलावा कुछ नहीं कर सकता था। इमारत बहुत बड़ी थी। यह पता लगाना असंभव था कि चोक्सीबाई किसके पास गई

थीं। लेकिन मैं वहाँ बैठा रहा, डॉक्टर का कागज़ आँखों के सामने पकड़े हुए, इस उम्मीद में कि राजकुमारी मुझे देख लेंगी। पंद्रह-बीस मिनट बाद, चोक्सीबाई नीचे आईं और मुझसे बोलीं, "माफ़ कीजिए, श्री ठाकुर! उस महिला ने मेरा बहुत समय ले लिया। दुनिया में इतने सारे अनुकरणीय लोग हैं, मुझे नहीं पता कि किसी के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए!"
गाड़ी स्टार्ट होने के बाद मैंने पूछा, "क्या हुआ?"
"एक महिला मरीज है। उसे दो बार क्वारंटाइन किया गया। अब वे ट्यूबेक्टॉमी करने को कह रहे हैं!"
"कौन है भाई?"
"एक राजकुमारी है! उसने अपने पति को छोड़ दिया और मुंबई में रहने आ गई। एक साल हो गया है!"
"हे भगवान! डॉक्टर, क्या आपको यकीन है कि वह राजकुमारी है?" "हां, बिल्कुल शुरुआत से ही!"
मैंने अपना माथा छुआ। मुझे बिल्कुल भी अंदाजा नहीं था कि राजकुमारी ने इतनी हद तक कर लिया है। दो बार गर्भवती होने के बाद, उन्होंने 'क्युरेटिना' (गर्भनिरोधक सर्जरी) करवाई थी और यह सुनकर मैं दंग रह गई कि उन्होंने इस तरह की स्थायी गर्भनिरोधक सर्जरी करवाने की इच्छा जताई ताकि उन्हें दोबारा यह न करवाना पड़े। चोक्सीबाई मुझे अपना माथा छूते देख थोड़ी हैरान रह गईं! उस महिला ने मुझसे पूछा-
"इसमें आश्चर्य की क्या बात है? इस व्यवसाय में ऐसे कितने सारे विक्रेता हैं!"
"वे लोग ज़रूर मिल रहे होंगे! अजनबियों के बारे में कुछ भी महसूस करने का कोई कारण नहीं है; लेकिन जब हम अपने जान-पहचान के

लोगों के बारे में ऐसी कोई बात सुनते हैं, तो यह चौंकाने वाला होता है!"
"क्या? क्या आप उन्हें जानते हैं?"
मैं उसे अच्छी तरह जानता हूँ।
"फिर उन्हें समझाएं कि एक बार ऑपरेशन हो जाने के बाद बच्चे पैदा करना असंभव है। यह केवल दोबारा ऑपरेशन कराने पर ही संभव है; लेकिन वह ऑपरेशन थोड़ा जटिल होता है। ऐसे ऑपरेशनों में से केवल पचास प्रतिशत ही सफल होते हैं! मुझे उन महिलाओं से ईर्ष्या होती है जो इतनी कम उम्र में मातृत्व के द्वार बंद कर देती हैं!" "डॉक्टर साहब, एक बार गलती हो गई तो सब खत्म! मुझे बताने का क्या फायदा? मैंने उसे कितनी बार समझाया है कि सिनेमा आपका क्षेत्र नहीं है; लेकिन उसने नहीं सुना। अब इन सब बातों की ज़िम्मेदारी उसी पर है!"
लेकिन श्री ठाकुर, यदि आप और वह अच्छी तरह से परिचित हैं, तो बेहतर होगा कि आप उन्हें ऐसा करने से रोकें!
"यह संभव नहीं होगा!"
मैंने उन्हें समझाने की कोशिश की, लेकिन वे अड़े रहे। अगर मैंने ऑपरेशन करवाने से इनकार कर दिया, तो उन्हें किसी और से करवाना पड़ेगा! मुझे बहुत बुरा लगा। जब मैं पहली बार आपसे मिलने आई थी, तब आप कैसी दिखती थीं? और आज, जब मैं आपको देखती हूँ, तो आप बहुत कमजोर दिखती हैं, आँखों के नीचे काले घेरे हैं, चेहरा पीला पड़ गया है, होंठ और आँखें बेजान लग रही हैं! लेकिन क्या हुआ, आपने अपने पति को क्यों छोड़ा?
"महोदया, इन शाही लोगों में कुछ अजीबोगरीब बातें हैं। आप और मेरे जैसे आम लोग उनके व्यवहार की कल्पना भी नहीं कर सकते। राजकुमारी रत्नप्रभा मुझे कभी बहादुर, बहुत बुद्धिमान और

रणनीतिक व्यक्तित्व वाली लगती थीं; लेकिन उनकी शादी एक रूढ़िवादी राजकुमार से हो गई और उनकी त्रासदी शुरू हो गई।" "क्या आप दोनों की मुलाकात मुंबई में हुई थी?"
"कहने का तात्पर्य यह है कि मैंने उसे सिनेमा जगत से दूर रखने की पूरी कोशिश की; लेकिन यह चकाचौंध भरी दुनिया इतनी मोहक है कि अच्छे और बुरे दोनों के विचार और विवेक विकृत हो जाते हैं!"
हम बातें कर रहे थे, मुझे पता ही नहीं चला कि कब गाड़ी हमारे दरवाजे पर आकर रुक गई। मैं उस महिला का बैग लेकर गाड़ी से उतरी। उल्का हमारा इंतजार कर रही थी।
"हेलो उल्काताई, कैसी हो? ठीक हो?" चोक्सीबाई का स्वभाव बहुत हंसमुख था। वह कभी-कभी मरीज़ से मीठी-मीठी बातें कह देती थी, मानो मरीज़ का आधा दर्द गायब हो जाएगा!
जब चोक्सीबाई उल्का की जांच कर रही थीं, मैं खिड़की से बाहर देखती रही। जांच के बाद, महिला ने कहा, “चिंता की कोई बात नहीं है; लेकिन उल्काताई, अगर आप आठ से पंद्रह दिन अस्पताल में रहेंगी, तो मैं बेहतर ढंग से स्थिति का जायजा ले पाऊंगी! श्री ठाकुर के बारे में क्या?”
मैंने पीछे मुड़ते हुए कहा, "मुझे कुछ नहीं कहना!"
"छुट्टी लेना बहुत मुश्किल है!" उल्का ने समस्या समझाई।
"चिंता मत करो, मैं तुम्हें एक प्रमाण पत्र दूंगा जिसे तुम अपने स्कूल को दे सकते हो!"
"लेकिन मुझे प्रसव के दौरान फिर से छुट्टी लेनी पड़ी, इसलिए अगर मैं अभी छुट्टी लेती हूं, तो निदेशक मंडल नाखुश हो जाएगा!" "उसकी चिंता मत करो, मेटियोर। वे तुम्हारे साथ क्या करेंगे? क्या वे तुम्हें नौकरी से निकाल देंगे? देखते हैं! पहले देखते हैं कि तुम्हारी सेहत सुधरती है या नहीं!" मैंने कहा।

बहुत सोच-विचार के बाद आखिरकार उल्का चोक्सीबाई को अस्पताल में भर्ती कराया गया। मैं घर आ गई। अब मैं पहले की तरह खुश नहीं रह सकती थी। ज़िम्मेदारी बढ़ गई थी और लोगों को नीचा दिखाकर पैसे कमाना भी मुश्किल हो गया था। अब मेरे लिए मनचाहा पैसा कमाना मुमकिन नहीं था, और मैं सिर्फ उल्का की तनख्वाह पर निर्भर नहीं रह सकती थी!
मैं कमरे में बिस्तर पर अकेला लेटा सोच रहा था। तभी डाकिया खिड़की से एक पैकेट अंदर फेंककर ' ' कहते हुए चला गया। मैं बिस्तर से उठा, पैकेट उठाया और उसे खोला। मेरी माँ ने इसे भवानी नगर से भेजा था।
‘‘प्रिय चि. समर,
कुछ समय पहले आपको उनका टेलीग्राम मिला था, उस समय उनकी तबीयत ठीक नहीं थी, अब ठीक हैं। लेकिन बहुत कमजोर हो गए हैं। पिछले दो महीनों से कोर्ट नहीं गए हैं। इस साल सूखे के कारण फसल खराब हो गई है, इसलिए कुशप्पा से अनाज भी नहीं आया है। अमर की फीस अभी तक नहीं दी गई है। अगर आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी है, तो हमें डेढ़ हजार रुपये भेज दीजिए! उसाना ने अभी तक यहां किसी से पैसे नहीं लिए हैं। अलका में बहुत बदलाव आया है, मुझे लगता है कि आपको उसे अभी वहां ले जाना चाहिए। उसने मास्टर डिग्री भी हासिल कर ली है, वह इस सरकार से तंग आ चुकी है। मैं आपके मनी ऑर्डर का इंतजार कर रही हूं!
आपका,
आई.’’
मैंने चिट्ठी पढ़ी और मेरा सिर एक पल के लिए सुन्न हो गया। मैं इतना घबराया हुआ कभी नहीं था और अपनी माँ से पैसे माँगना चाहता था। अगर चोरी न हुई होती तो पाँच सौ रुपये होते। लेकिन मैं पाँच

हज़ार रुपये घर भेज देता। पर अब मैं क्या करूँ? मेरी माँ मुझसे कभी पैसे नहीं माँगतीं जब तक कि बहुत ज़रूरी न हो! मैं क्या करूँ? किससे पैसे माँगूँ?...
मैं उठा। मैंने कपड़े पहने और बस स्टॉप पर पहुंचा। लूटपाट के बाद टैक्सी मिलना मुमकिन नहीं था। मैं वर्ली नाका पहुंचा। रॉबर्ट दुकान में था। लेकिन उससे पैसे मांगने से पहले, मैं यह अंदाज़ा लगाना चाहता था कि उसके पास पैसे हैं या नहीं। ‘‘रॉबर्ट, तुमने एक मुश्किल खड़ी कर दी है!’’
‘‘बोल!’’
मेरे एक दोस्त को पांच सौ रुपये चाहिए!
"किसकी दोस्त? क्या वह राजकुमारी नहीं है? हाँ! नहीं तो वह दोस्त की बजाय प्रेमिका होती!"
"ऐसा महसूस करना स्वाभाविक है; लेकिन भगवान की कसम, यह वास्तव में बेहद जरूरी है!"
"देखो, समर, मैंने अपनी ज़िंदगी में कभी किसी से पैसे उधार नहीं लिए और न ही कभी किसी को दिए हैं। मेरा मानना है कि पैसे उधार देना हमारे रिश्ते को तोड़ना है। इसके अलावा, तुम्हें पैसों की ज़रूरत नहीं है, बल्कि तुम्हारे दोस्त को है, जिसे मैं जानता भी नहीं। अगर तुम्हें ज़रूरत होती, तो मैं तुम्हें कम से कम 1200 रुपये ज़रूर दे देता, अगर 500 नहीं तो कम से कम, लेकिन मैं उसे उपहार के रूप में देता, न कि उधार के रूप में। लेकिन तुम्हें खुद ज़रूरत नहीं दिखती!"
"रॉबर्ट! बस यही बात है! मैं समझ गया। मान लो कि मुझे इसकी ज़रूरत है और मुझे तीन सौ रुपये दे दो! अगर चाहो तो इसे ऋण समझ लो, अगर चाहो तो इसे उपहार समझ लो!"
"ओह, एक घंटे में वापस आना!"

आज तक मैंने किसी से चार आने तक उधार नहीं लिए थे। ऐसा समय कभी आया ही नहीं था। मुझे शर्म आ रही थी। सच तो यह था कि मैंने रॉबर्ट पर एहसान किया था; लेकिन इसका मतलब यह नहीं था कि मेरे मांगते ही वह मुझे पैसे दे देता! रॉबर्ट ने उधार देने के अपने अनुभव के बारे में जो बताया था, उसमें कुछ भी झूठ नहीं था! एक जाति ऐसी होती है जो पैसे मांगती है और फिर उसे खो देती है। यह जाति जीवन में कभी न कभी सबको धोखा देती है। जब हमारे सबसे सम्मानित लोग भी, जो जीवन में कभी पैसे नहीं मांगेंगे, बेबस होकर हमारे दरवाजे पर हाथ फैलाए खड़े होते हैं, तो मना करना बहुत मुश्किल होता है। ऐसे समय में हम इंसानियत के नाते मदद करते हैं और बाद में पछताते हैं। पैसे लेने वालों में से 99 प्रतिशत ठग होते हैं। एक प्रतिशत ईमानदारी से लौटाते हैं। अगर हम पैसे वापस मांगते हैं, तो भी बहुत से लोग धोखा देते हैं। क्या हम गांव से भाग गए? जब वे इस तरह की बातें करते हैं, तो हम आंखें कैसे खोलें! लेकिन समय बीत चुका है। बेईमानी घर कर चुकी है!... मैं सोच रही थी। मुझे लगने लगा कि रॉबर्ट से पैसे न लेना ही बेहतर होगा। उसके साथ मेरा रिश्ता, जो एक बार टूट चुका था, अब सुधर चुका था, और मैं नहीं चाहती थी कि पैसों के इस लेन-देन से और कोई नुकसान हो।
सोचते-सोचते मैं लालबाग की ओर चल पड़ा। बायकुला पुल पार करने के बाद मुझे उस राजकुमारी की याद आ गई!
चोक्सीबाई ने मुझे अपनी हालत के बारे में बताया था। दो बार 'क्यूरेटिना' सर्जरी करवाने के बाद, अब वह 'ट्यूबेक्टॉमी' करवाना चाहती थीं! इसका मतलब साफ था, वह मुंबई में एक स्वतंत्र जीवन जीना चाहती थीं!

मुझे रत्नपुर के मंडप में महाराजा के दाहिने हाथ पर बैठी राजकुमारी याद आ गई! उनका रूप कितना अद्भुत था! उनके चेहरे पर राजसी भाव, उनकी वाणी में कोमलता, उनकी आँखों में मिठास! जब राजकुमारी भोजन करने के लिए छत से नीचे आईं, तो उनकी चाल इतनी सुंदर थी कि मैंने सोचा, "मुझसे कुछ मत पूछो!" कुछ लड़कियों के चेहरे तो सुंदर होते हैं, लेकिन उनकी चाल बिल्कुल भी आकर्षक नहीं होती। कुछ लड़कियाँ सुंदर ढंग से चलती हैं, लेकिन उनकी सुंदरता और शालीनता जन्म से ही खोई होती है। लेकिन राजकुमारी की सुंदरता और चाल दोनों ही मनमोहक थीं। इससे भी बढ़कर, मेरे मन में राजकुमारी के लिए आदर और स्नेह था क्योंकि उन्होंने मेरी जान बचाई थी। हालाँकि उन्होंने मेरी सलाह को कई बार ठुकरा दिया था, लेकिन जैसे ही डॉक्टर ने मुझे उनकी हालत के बारे में बताया, मुझे उनके पास जाने का मन हुआ। बिना ज्यादा सोचे-समझे, मैं बस में बैठ गया।
राजकुमारी पलंग पर लेटी हुई थी। दूसरी ओर, लंबे बालों वाली एक महिला आग जलाकर खाना बना रही थी।
"समर! आप कितने अच्छे हैं! अरे भले इंसान, आपका पता क्या है?" "यह मुंबई में है! लेकिन आपने इस स्थिति में क्या किया है?" राजकुमारी मुस्कुराई, अपनी आंखों के नीचे काले घेरे को झपकाते हुए बोली,
"आखिरकार, तुम्हारी कही बात सच हो गई!"
"क्या?"
"नारहोना, रोबो और शीतलकुमार, तीनों ने मुझसे सफाई करवाई! उन्होंने मुझे फिल्म में रोल देने का नाटक करके मुझे गोली मारने का नाटक किया। चार महीने तक वे बारी-बारी से..." राजकुमारी अपना वाक्य पूरा नहीं कर पाईं! थोड़ी देर बाद उन्होंने कहा,

"बाद में उन्होंने मुझे बताया कि कुछ तकनीकी दिक्कतों के कारण फिल्म पूरी नहीं हो सकी!"
मैं हँसा और बोला, "महाराज, इसीलिए तो मैं आपको चेतावनी दे रहा था, यह आपका अधिकार क्षेत्र नहीं है!"
"अरे, ज़रा बताइए, क्या आपको ज़रा भी शक है कि वे मुझे स्टूडियो ले जाएँगे, लाइटें ठीक करेंगे और बिना फिल्म के खाली कैमरा मेरी तरफ़ कर देंगे? बदमाश! क्या मैं उनके खिलाफ़ कोई कानूनी कार्रवाई कर सकता हूँ? मैं इसलिए पूछ रहा हूँ क्योंकि आपको अदालतों के बारे में बहुत कुछ पता है!"
"इसके बारे में सोचना भी मत! तुम्हारी बची-खुची इज्जत भी मिट्टी में मिल जाएगी! अगर रावेर के महाराजा को पता चल गया कि तुम उन लोगों के साथ बुरा बर्ताव कर रहे हो, तो तुम्हारा गुजारा भत्ता भी बंद हो जाएगा! उन्हें पर्याप्त सबूत मिल जाएंगे!"
"आप यह कहते हैं?"
"इसके बजाय, हमें रेवर के पास वापस जाना चाहिए और रेवर के लोगों के साथ समझौता करना चाहिए!"
"यह नामुमकिन है, समर! अगर मैं मर भी जाऊं, तो भी मैं रेवर वापस नहीं जाऊंगी! मेरे दिमाग में एक नया विचार है!"
"कैसे?"
"मैं रावेरकर के खिलाफ बंटवारे का दीवानी मुकदमा दायर करना चाहती थी और अपना हिस्सा मांगना चाहती थी! सिर्फ इसलिए कि मुझे आपराधिक अदालत से गुजारा भत्ता मिला है, क्या इससे दीवानी अदालत में मेरे अधिकारों पर कोई असर नहीं पड़ता?"
"ठीक है, लेकिन अगर आपने इसकी शुरुआत की तो क्या होगा?"
"किसी ने मुझे सलाह दी है कि मुझे उनकी संपत्ति में हिस्सा मिल सकता है; तो मुझे उन्हें क्यों छोड़ना चाहिए?"

"ठीक है; लेकिन आपकी हालत देखकर मुझे लगता है कि आपको पहले ठीक हो जाना चाहिए!"
"क्या मानसिक रूप से परेशान होने पर किसी का स्वास्थ्य कभी सुधरता है?"
"हमने खुद ही इस मानसिक विकार को जन्म दिया है!"
‘‘क्या तुमने कबूल नहीं किया? तो अब उस विषय को छोड़ दो। उल्कापिंड कैसा है?’’
वह अस्पताल में है।
‘‘का?’’
मुझे थोड़ी बेचैनी होने लगी है। मेरी गर्भावस्था के चार महीने बीत चुके हैं!
"आई. सी. बधाई हो! कौन से डॉक्टर?"
"आपके डॉक्टर और हमारे डॉक्टर एक ही हैं, चोक्सीबाई।"
‘‘व्हॉट आर यू टेलिंग मी?’’
मैं भी बिल्कुल यही कह रहा हूँ!
"तो क्या उस महिला ने मेरे बारे में आपको कुछ बताया?"
"कुछ नहीं!" मैंने झल्लाकर कहा, "यह गोपनीय बातचीत है! डॉक्टर को मरीज के बारे में गोपनीयता बनाए रखनी होती है!"
"नहीं, अगर उसने तुम्हें कुछ बताया होता, तो मुझे उसमें कुछ भी गलत नहीं लगता! तुम्हारे और मेरे बीच ऐसा कोई अलगाव नहीं है!" "न तो अलगाव है और न ही आत्मीयता!" मैंने कुछ देर सोचने के बाद कहा।
"आप क्यों कहते हो कि?"
"अगर उनमें इतनी आत्मीयता होती, तो मेरे बताने के बाद वे रोना शुरू नहीं करते!"

"हाँ, तुम्हारा यही मतलब है? लेकिन अब मैं तुम्हारी सलाह के बिना कोई फैसला नहीं लूंगी। वादा!" राजकुमारी ने मेरा हाथ अपने हाथ में लेकर ताली बजाते हुए कहा।
मैं इस शाही परिवार के लोगों के व्यवहार की पहेली को कभी सुलझा नहीं पाया। अंग्रेजी में जिसे 'विरोधाभासी चरित्र' कहते हैं, उनके स्वभाव में विरोधाभासी गुणों का ऐसा मिश्रण मौजूद है। कभी वे दयालु प्रतीत होते हैं, कभी जंगली जानवर की तरह क्रूर! कभी वे विचारशील और संयमित प्रतीत होते हैं, कभी लापरवाह और तर्कहीन! वे एक पल शांत होते हैं और दूसरे पल उग्र!
"राधा काकू, चाय बनाओ!" राजकुमारी ने उस महिला से कहा और मेरा हाथ अपने हाथ में लेकर बोली, "समर, तुम जो भी कहो, एक स्त्री को हमेशा किसी न किसी पुरुष के सहारे की ज़रूरत होती है। अब मुझे समझ आया कि उस लड़की ने तुम्हें घर पर क्यों रखा था! चाहे वो कितनी भी शोहरत, शक्ति और धन कमा ले, एक स्त्री को हमेशा पुरुष के सहारे की ज़रूरत होती है!"
"सिर्फ़ मज़ाक करने के लिए?"
"'चे! मुझे बताओ, क्योंकि तुम उस लड़की के पक्ष में खड़े थे, इसलिए उसे निचली और ऊपरी दोनों अदालतों में पूरी तरह से बरी कर दिया गया। अब, दुर्भाग्य से, उसने आत्महत्या कर ली है, इसे छोड़ दो!"
"दुर्भाग्यवश, राजे! मेरी बेबसी के कारण उसकी मृत्यु हो गई। उस रात वह मुझे बाहर नहीं जाने देना चाहती थी, लेकिन उस रात उल्कापिंड ने मुझे घर में ही कैद कर रखा था। वह आग की तरह जल रहा था। वह पछतावा आज भी मुझे सताता है! सोचो, राजे, अगर उसे पता होता कि अपील पर उसे बरी कर दिया गया है, तो वह ऐसा नासमझी भरा काम कब करती? देखो भाग्य कितना क्रूर हो सकता है!"

आंटी थाली में दो कप चाय लेकर आईं। इन संस्थानों की यह दूसरी विशेषता मुझे अक्सर आश्चर्यचकित कर देती है! चाहे स्थिति कितनी भी दयनीय क्यों न हो, संस्थान के रीति-रिवाज नहीं बदलते। आंटी हाथ से चाय नहीं लाईं, बल्कि थाली में लाईं!
‘‘अब यहीं खाओ, समर!’’
"क्या हम खाना खाएं? राजे, मुझे भवानी नगर जाना है। मुझे मेरी माँ का पत्र मिला है। पापा की तबीयत ठीक नहीं है। वो पिछले ढाई महीने से कोर्ट भी नहीं गए हैं!"
"तो फिर आपको जाना ही पड़ेगा! समस्या क्या है?"
मैं बिना कुछ बोले छत को घूरता रहा।
"अगर कोई समस्या हो तो मुझे बताना, मेरी गुजारा भत्ता की रकम कल ही आई है। क्या आपको पैसों की जरूरत है?"
"महाराज, मुझे पाँच सौ रुपये की ज़रूरत थी; लेकिन मैं गारंटी नहीं दे सकता कि मैं आपको यह लौटा पाऊँगा!"
"मैं एक महीने तक मितव्ययी रहूंगी। क्या बस इतना ही है? बिल्कुल, आप इसे ले सकते हैं!" यह कहते हुए राजकुमारी बिस्तर से उठीं। तकिए से चाबी निकालकर उन्होंने बिस्तर के नीचे रखे संदूक का ताला खोला और मेरे सामने पाँच सौ रुपये के नोट बढ़ा दिए। "हाँ, ले लो!"
"रॉबर्ट मुझे तीन सौ रुपये देने वाला है, मैं उससे ढाई सौ रुपये ले लूंगा, तुम मुझे बस ढाई सौ रुपये दे दो!"
"अरे, सत्रह राजाओं से लेने के बजाय, एक ही व्यक्ति से लेना बेहतर है, देने वाले को भी संतुष्टि मिलती है। ऐसा लगता है जैसे हमने किसी जरूरतमंद की मदद की हो!"
"महाराज, इन हाथों ने एक ही रात में पचास हजार कमा लिए हैं; लेकिन आज मुझे पाँच सौ रुपये लेने हैं!"

"लक्ष्मी कितनी चंचल है!"
आंटी ने पोलिबाजी बनाई। वह दो अतिरिक्त प्लेटें भी लाईं। राजकुमारी ने मुझसे कहा, "मैं चार दिन और तुम्हारा इंतजार करने वाली थी और फिर पता लेकर घर आने वाली थी!"
मुंह में फंसी घास को निगलते हुए और पानी का एक घूंट लेते हुए मैंने कहा, "अगर मैं यहां नहीं भी आया होता, तो भी एक भी दिन ऐसा नहीं गुजरा जब मैंने तुम्हारे बारे में न सोचा हो।"
"लेकिन अब मैंने तय कर लिया है कि मैं आपकी सलाह के बिना कोई फैसला नहीं लूंगी! भवानीनगर जाने के बाद, अपने पिताजी से पूछ लेना कि क्या मुझे रावेरकर की संपत्ति में हिस्सा मिल सकता है या नहीं!"
क्या उसे पापा की सलाह की ज़रूरत है? मुझे पता है!
"तो आपके वापस आने के बाद हम वह काम शुरू कर देंगे!"
मैं अस्पताल गया और उल्का को उसकी माँ का पत्र दिखाया। उसने मुझे चार-छह दिन के लिए जाने की अनुमति भी दे दी। राजकुमारी ने मुझे पैसे दिए। उल्का ने मुझे अनुमति दी। मैंने भवानी नगर का टिकट लिया।
-०-०-

३१
पिताजी का स्वास्थ्य बिगड़ गया था। पहले से ही खराब स्वास्थ्य वाले पिताजी की हालत इस बीमारी ने उन्हें इतना कमजोर कर दिया था कि दोनों में पहचान से परे अंतर आ गया था।
मैंने अपनी मां से पूछा, जो एक तरफ खड़ी रो रही थी, "आपने मुझे अब तक क्यों नहीं बताया?"
"उन्होंने इसे इसलिए छिपाकर रखा क्योंकि वे इसे सुनना नहीं चाहते थे!"
‘‘का?’’
"तुम मुझे क्या बताना चाहती हो, समर? मैं तो कहती थी, उसके पास बहुत काम है, उसे फोन मत करो! उस औरत के बालों को क्या हुआ?"
"वह महिला हमेशा के लिए स्वतंत्र है!"
"आपका क्या मतलब है?"
"उसने अपनी मृत्यु से एक दिन पहले इस धरती पर अपनी यात्रा समाप्त कर दी! वह हमेशा के लिए चली गई! लेकिन माँ और पिताजी के स्वास्थ्य में इस तरह की गिरावट का कारण क्या है?"
"शराब! मैंने फिर से दिन-रात शराब पीना शुरू कर दिया था! खाना नहीं, कुछ नहीं, बस शराब!"
"क्या औषधीय जल का उपयोग किया जा रहा है?"
"दवा का क्या फायदा? डॉक्टर ने मुझे शराब की एक बूंद भी न पीने की चेतावनी दी थी, लेकिन फिर भी मैं शराब पीना नहीं छोड़ पाया! डॉक्टर ने कहा, 'मैं तुम्हें कोई दवा नहीं दूंगा!'"
पिताजी ने आँखें खोलीं और मेरी तरफ देखा। उनकी आँखें पीली थीं! यह स्पष्ट था कि उन्हें पीलिया हो गया था। अमर उदास चेहरे के साथ एक तरफ खड़ा था। लेकिन अल्का कहीं नज़र नहीं आ रही थी।

मैंने अपनी माँ के चेहरे की तरफ देखा, उन्होंने मेरी आँखों के भाव पहचान लिए।
"वह हाई स्कूल जाती है, एक महीना हो गया है!"
‘‘एक बार अगर आप शिक्षक बन जाएं तो!’’
"अब तुम्हें वापस नहीं जाना चाहिए। वह बहुत बदल गई है। वह घर के सारे काम संभालती है और काम पर भी जाती है।"
"माँ, मैं अब यहाँ नहीं आ सकता। मैं इतनी दूर आ चुका हूँ, अब वापस लौटना नामुमकिन है!"
"अरे, लेकिन क्या हमने तुम्हें यहाँ से हमेशा के लिए बाहर नहीं निकाल दिया था! हमने तो तुम्हें मौसम बदलने तक बाहर ही रहने का सुझाव दिया था!"
"हाँ, लेकिन मैं अब यहाँ नहीं रह सकता!"
हमारे सामने पलंग पर लेटे पापा ने हाथों से इशारे करके पानी मांगना शुरू कर दिया। मैंने तकिये पर रखे गिलास से पापा को पानी दिया और कहा, "पापा, मैं यहाँ हूँ, क्या आप मुझे पहचान नहीं रहे?" पिताजी ने अपनी पीली आँखें खोलीं और मेरी तरफ देखा, फिर तुरंत बंद कर लीं। उनके लिए आँखें खुली रखना मुश्किल हो रहा था। मैं समझ गई थी कि पिताजी की हालत ठीक नहीं है। मुझे डॉक्टर के पास जाने की जल्दी नहीं थी, क्योंकि मैं यह भूल गई थी कि पिताजी अब बस कुछ दिनों के लिए ही मेरे साथी हैं। वे मेरे जैविक पिता थे। उन्होंने मेरा पालन-पोषण किया, मुझे सहारा दिया, हालाँकि यह सब सच था, लेकिन उनकी हालत देखकर, जब उनका एक पैर मौत के कगार पर था और दूसरा ज़मीन पर, मुझे लगा कि इलाज का कोई फायदा नहीं है। मैंने सोचा कि अगर उन्हें जल्द छुट्टी मिल जाए तो अच्छा होगा। मैं ऊपर आई। तीसरी मंज़िल। ये रहा मेरा कमरा! अल्का ने इसे बहुत करीने से सजाया था। खिड़कियों पर रेशमी पर्दे, गद्दे पर

परिघड़ी की चादर, उसी रंग के तकिए के कवर, कोने में तीन-चार तरह की चप्पलें कतार में लगी थीं। अलमारी में साड़ियाँ कतार में सजी थीं! मैं कुर्सी पर बैठ गई और वहाँ रखी चीज़ों को देखने लगी। जब मैं सबसे ऊपरी मंजिल पर पहुँच गया, तो मेरी माँ धीरे-धीरे रेलिंग पकड़कर ऊपर आईं। वे आमतौर पर तीसरी मंजिल पर नहीं आती थीं क्योंकि उन्हें उच्च रक्तचाप की समस्या थी। जब मैंने उन्हें बताया कि मैं आ रहा हूँ, तो वे मेरे पीछे आईं और बिस्तर पर बैठ गईं।
“समर, पास आओ,” मेरी माँ ने मुझे पास बुलाया। मैं पास गया। मेरी माँ ने मेरा सिर अपनी गोद में लिया और ज़ोर-ज़ोर से रोने लगीं। "चुप रहो माँ, रोना मत। रोने से क्या होगा?"
"मुझे पूरे माथे के साथ पहले ही चले जाना चाहिए था!"
"यह सब सच है; लेकिन ये चीजें आपके हाथों में क्यों हैं?"
"अभी यहाँ से मत जाओ। मैं कसम खाता हूँ। अल्का पूरी तरह बदल गई है!"
"माँ, सवाल अल्का के बारे में नहीं है। सवाल उल्का के बारे में है, वो औरत जिससे मैंने दोबारा शादी की थी! उसका देहांत हो गया है। वो अस्पताल में है! मुझे चार दिन में वापस जाना है! मुझे कुछ काम करना है!"
"तुम्हारा मतलब क्या है? तुमने अभी तक कोई काम नहीं किया है?" "कुछ नहीं!"
"उसे भी यहाँ ले आओ और यहाँ कोई नौकरी ढूँढ़ो। अगर चाहो तो खेत देख लो। कुसप्पा ज़मीन छोड़ने को तैयार है, अगर तुम इतनी बड़ी ज़मीन देख लो तो अच्छा रहेगा!"
मेरी माँ की बहुत पुरानी इच्छा थी कि मैं खेत देखूँ! खेत में एक कुआँ था। कई सालों से उसका पानी नहीं निकाला गया था। अगर उसमें

जमा गाद निकाल दी जाती, तो पाँच एकड़ ज़मीन गर्मियों के अंत तक सिंचित रहती। खेत में एक दो मंज़िला मकान था। वह थोड़ा जर्जर था, लेकिन अगर वहाँ लोग नहीं रहते तो किसी भी इमारत की यही हालत होती है!
चाहे जो भी हो, अब भवानी नगर में मेरा मन शांत नहीं रह सकता था। भले ही अलका ने अच्छे से पेश आने का वादा किया हो, मुझे यकीन था कि अलका और उल्का मुझे एक गाँव में चैन से नहीं रहने देंगी। मैं मुंबई की तेज़ रफ़्तार ज़िंदगी का आदी हो चुका था। बसें, टैक्सियाँ, हर सड़क पर दिन-रात दौड़ती अनगिनत गाड़ियाँ, खचाखच भरी लोकल ट्रेनें और हर जगह लोग, इन दृश्यों को देखते-देखते भवानी नगर मुझे एक वीरान गाँव जैसा लगने लगा था। मैं मुंबई की तेज़ रफ़्तार ज़िंदगी का हिस्सा बन चुका था। मेरे लिए अचानक उस तेज़ रफ़्तार ज़िंदगी को रोकना नामुमकिन था। चलती लोकल ट्रेन से प्लेटफॉर्म पर उतरने के लिए भी मुझे ट्रेन की दिशा में दस-पाँच कदम दौड़ना पड़ता था, वरना मैं मुँह के बल गिर जाता। मेरी हालत बिल्कुल लोकल ट्रेन के यात्री जैसी थी। जब ट्रेन चल रही होती है, तो ऐसा लगता है जैसे हम डिब्बे में स्थिर हैं, लेकिन यह गलत है। हमारा शरीर भी गति में होता है। मुंबई में रहते-रहते मैं गतिशील हो गया था।
मेरे लिए अपने जीवन में आई गति को अचानक रोकना असंभव था।
"माँ, यहाँ से जाने के बाद से मेरी ज़िंदगी इतनी बदल गई है कि मेरे लिए यहाँ वापस आकर सामान्य जीवन जीना नामुमकिन है!"
तो इस लड़की के जीवन का क्या अंजाम होगा?
"क्या अब वह मुझ पर थोड़ी निर्भर हो गई है? वह बी.ए.बी.टी. बन गई है। वह शायद पचपन सौ रुपये कमा रही हो, तो उसे अब मेरी क्या ज़रूरत है?"

"तुम पागल हो! चाहे वो वेश्या हो या न हो, वो तुम्हारी पत्नी है!" "आपने पिछली बार भी कुछ ऐसा ही कहा था, इसलिए मैंने उससे बात करने की कोशिश की; लेकिन वह अब भी अड़ियल थी। जब वह कमा नहीं रही थी तब भी वह इतनी अड़ियल थी, अब जब वह कमा रही है, तो उससे बात करने का सवाल ही मत करो!"
नहीं! तुम किसी स्त्री की अंतर्मन की भावनाओं को नहीं समझना चाहते। भले ही वह बाहर से तुम्हें कठोर लगे, लेकिन अंदर ही अंदर वह हमेशा क्षमा मांग रही होती है! सिर्फ एक बार गलती करने के लिए जीवन भर मन में बैर रखना ठीक नहीं है!
"माँ, मैं फिसलने को ज़्यादा महत्व नहीं देता। लेकिन आपको बिना किसी शर्त के मुझसे यह स्वीकार करना चाहिए था कि मुझसे गलती हो गई थी!"
"ओह, इसका क्या मतलब है कि उसने अपने व्यवहार में सुधार किया, सीखा और निपुण हो गई? क्या इसका मतलब यह नहीं है कि वह अपनी गलती से उबर गई है?"
"लेकिन मुझसे अपने मुंह से कबूल करने में क्या दिक्कत है?" मुझे नहीं लगता कि आपको इतना जिद्दी होना चाहिए!
इसी बीच, अलका स्कूल से लौट आई। उसे बिल्कुल भी अंदाजा नहीं था कि मैं जाग रही हूँ। अपनी माँ और मुझे देखकर उसने अपने जूते कोने में रख दिए। उसने अपने हाथ में रखी किताबें और बच्चों का होमवर्क चेक करने के लिए लाई गई नोटबुक मेज पर रख दीं और मेरी मौजूदगी को अनसुना करते हुए अपनी माँ से पूछा,-
"क्या चाचाजी ने कुछ लिया?"
"कुछ नहीं!"
"वो गोलियां?"

"वे इसे लेने को तैयार नहीं हैं! अल्का, गर्मी आ गई है, क्या तुम नहीं देख रही हो? हमारे यहाँ गाँव से आए पतियों के पैर छूने की परंपरा है, क्या तुम भूल गई हो?"
अल्का मेरी कुर्सी के पास आई, मुझे प्रणाम किया और नीचे उतर गई। "अरे! देखो माँ! इसे कहते हैं अत्याचार का अंत! तुमने कहा था, यह होना ही था, इतना कुछ हुआ!"
"बस करो, बस करो! इस तरह अकेले उसके साथ मत आओ!" माँ उठी और नीचे चली गई।
मैं तीसरी मंजिल पर बने छोटे से बरामदे पर आया। भवानी देवालय मंदिर का जगमगाता शिखर दिखाई दे रहा था। महाविद्यालय परिसर में लगे नारियल के पेड़ों की चोटियाँ हिल रही थीं। उसके आगे, गाँव के पश्चिम में स्थित विशाल जलाशय सूर्य की रोशनी में चमक रहा था। सामने वाले किसान के घर पर तोरण बना हुआ था। शायद किसान की बेटी बिंदी की शादी हो गई थी! जब मुझे समझ में आया, तो मुझे पता चला कि किसान की बेटी, जो मेरी तरफ मुस्कुरा रही थी, कई सालों से अविवाहित थी। लेकिन मैंने गली में कभी किसी को उसके बारे में कुछ बुरा कहते नहीं सुना था। मुझे अपने बचपन के कोई दोस्त नज़र नहीं आए। सब अपने पेट के पीछे पड़े थे। नए लोग मुझे नहीं जानते थे।
मैंने कपड़े बदले और धोंडू मास्टर से मिलने गया। धोंडू मास्टर की धनोरी नाका पर एक सोडा की दुकान थी। जब मैं दुकान पर पहुँचा, तो उनके सामने धोंडू मास्टर की एक बड़ी सी तस्वीर टंगी हुई थी। उन्होंने फूलों की माला पहनी हुई थी। तस्वीर पर अष्टगंध चिन्ह बना हुआ था।
चक्की मालिक का बेटा मुंह पर जाली लगाकर सोडा की बोतलें भर रहा था। मुझे देखकर उसने जाली हटाई और आगे आकर बोला,-

"एक महीना हो गया! अचानक रात में मेरी नींद सीने में दर्द से खुली। मैंने डॉक्टर को फोन किया और सब ठीक हो गया!"
अरे बाप रे! किसी ने मुझे एक साधारण सा कार्ड तक नहीं भेजा! ये तो बहुत बुरा हुआ!
मालिक के बेटे ने आइसक्रीम सोडा बनाया और कहा,--
"दादाजी को मरने से ठीक आठ दिन पहले ही तुम्हारी याद आई थी!" मैंने एक घूंट लेते हुए पूछा, "क्यों?"
"आपसे मिले हुए काफी समय हो गया है, इसलिए मैं मुंबई जा रहा हूँ! लेकिन मुझे आपका पता नहीं मिल रहा था!"
"रंगा, तुम्हारे पिता ने मुझ पर बहुत बड़ा उपकार किया है। उन्हीं की कृपा से मैंने फुटबॉल खेलना सीखा!"
धोंडू मास्टर के साथ बिताए अनगिनत पल मेरी आंखों के सामने कौंध गए। रत्नपुर से नाटकीय ढंग से भाग निकलने और धोंडू मास्टर को सारी सच्चाई बताने के बाद उन्होंने मुझसे कहा था, "समरा, राजाओं की यह पीढ़ी कलंक है! अपने पूर्वजों के शौर्य पर जीने वाली यह जाति कलंक है!"
चले गए! वो गुरु जिन्होंने मेरा हाथ थामकर मुझे पेनल्टी कॉर्नर किक मारना सिखाया था, चले गए। मैं उदास मन से घर लौटा। शाम हो चुकी थी। मैं बाहर से उदास होकर आया था और घर पर पिताजी अपनी मृत्यु शैया पर लेटे थे! कितने बुद्धिमान और समझदार इंसान थे वो; लेकिन इस लत ने उन्हें खाई में धकेल दिया! मैंने बीच में कुछ दिनों के लिए शराब पीना छोड़ दिया था, तब मुझे लगा था कि अच्छे दिन फिर लौटेंगे; लेकिन कितना अफसोस!
किसी तरह मैंने रात में चार बार का खाना ठूंस-ठूंस कर खाया और तीसरी मंजिल पर पहुँच गया। मुझे अंदाज़ा लगाना था कि क्या अल्का सच में बदल गई थी। वह रात करीब 9:30 बजे सज-धज कर ऊपर आई।

ऊपर दो पलंग थे। मैं एक पलंग की रेलिंग से अल्का की हरकतों को देख रहा था। मैंने पानी की बोतल अपने तकिए के पास मेज पर रख दी।
उसने एक छोटा सा दीपक जलाया और कोई किताब पढ़ने लगी।
‘‘अलका!’’
इसका उत्तर है नहीं।
‘‘अलका ऽ!’’
अब भी कोई उत्तर नहीं।
"क्या तुम अब भी मुझसे नाराज़ हो?"
इस सवाल पर वह मेरी तरफ पीठ करके सो गई।
"ठीक है, अगर तुम मुझसे बात नहीं करना चाहतीं, तो मुझे गुस्सा नहीं आएगा!" मैंने पीठ फेरी और सोने चली गई। दरअसल, मैं पूरी तरह बदल चुकी थी। मुंबई में रहने के बाद नैतिकता के बारे में मेरे विचार भी बदल गए थे। मेरा मानना था कि यह सोचना गलत है कि एक लड़की एक निश्चित उम्र में थोड़ी शरारती होती है, तो वह जीवन भर शरारती ही रहेगी। अब अल्का पर यह आरोप लगाना संभव नहीं था। बी.टी. की पढ़ाई पूरी करने के बाद उसने काम करना शुरू कर दिया था। उसके व्यवहार में थोड़ी परिपक्वता झलकने लगी थी। चटख रंग की साड़ियाँ और ब्लाउज़ कहीं नज़र नहीं आते थे। यहाँ तक कि मेज़ पर रखे टॉयलेटरीज़ भी काफ़ी कम हो गए थे। क्या यह शिक्षा का असर था या बढ़ती उम्र का?...
अगर आप इस नज़रिए से देखें तो आज मेरा मन अल्का के बारे में सोचने का बिल्कुल नहीं था। मेरे दिमाग में बस पापा और मम्मी के ही ख्याल थे! मुझे साफ दिख रहा था कि पापा का जीवन समाप्त हो चुका है। मैं नीचे आई। मम्मी रात भर पापा के पलंग के पास बैठी रहेंगी। उन्हें बीच-बीच में प्यास लगती थी, लेकिन उनमें पानी शब्द तक बोलने की हिम्मत नहीं थी। उन्हें बड़ी मुश्किल से

अंगूठा होठों तक लाना पड़ता था। यह देखकर मुझे बहुत बुरा लगा। मैं भी आधी रात तक वहीं बैठी रही।
लगभग 12:30 या 1:00 बजे मैं सोने के लिए ऊपर चली गई। बिस्तर पर लेटते ही मुझे माँ के कराहने की आवाज़ सुनाई दी। मैं दौड़कर नीचे गई। पापा पानी का एक घूंट पीते-पीते ही चल बसे थे कि उनका निधन हो गया। अमर और मैंने माँ की मदद की। ऊपर से आई अलका ने अपनी आँखों को साड़ी से ढक लिया।
भवानी नगर में हमारे अनगिनत रिश्तेदार थे, हमने उन्हें अंतिम विदाई दी। पड़ोसी इकट्ठा हुए। हमारी गली में हर धर्म और संप्रदाय के लोग रहते थे। परित समुदाय बहुसंख्यक था। कुछ मुसलमान थे, कुछ हिंदू। हमारे भवानी नगर की एक और विशेषता यह थी कि पड़ोसी जीवन भर आपस में लड़ते रहते थे; लेकिन जब उनमें से किसी की मृत्यु हो जाती थी, तो वे सबसे पहले उसकी कब्र पर जाते थे! हर गाँव की यही विशेषता होती है! मुंबई में, अगर किसी की मृत्यु हो जाती थी, तो वहाँ चार लोग भी शोक व्यक्त करने के लिए मुश्किल से मिलते थे! अगर कोई जीवित भी होता था, तो वहाँ कोई उसकी परवाह नहीं करता था, और अगर उसकी मृत्यु हो जाती थी, तो कोई उसकी तरफ देखना भी नहीं चाहता था। मुंबई में, जिसने एक महानगरीय संस्कृति को विरासत में पाया है, एक-दूसरे के प्रति यह उदासीनता कभी-कभी मुझे यह महसूस कराती है कि शहर की गरिमा खोखली है। डैडी भवानी नगर के एक जाने-माने आपराधिक वकील थे, उन्होंने कई लोगों को गुमनामी में रखा था। डैडी की मृत्यु की खबर भवानी नगर में हर जगह फैल गई। हमारे घर के सामने वाली सड़क वाहनों के लिए बंद कर दी गई थी। सुबह करीब 11 बजे भगवा रंग की एक कार उस सड़क से भीड़ हटाने के लिए आई। भवानी नगर के महाराज डैडी को पुष्पांजलि अर्पित करने आए थे। पास के पुलिस स्टेशन का एक पुलिसकर्मी दस

पुलिसकर्मियों के साथ सुबह से ही पहरा दे रहा था। लोग आपस में डैडी के बारे में फुसफुसा रहे थे।
"अब ऐसा निर्लज्ज वकील दोबारा नहीं होगा!"
"ऐसा वकील पहले कभी नहीं हुआ जिसने किसी को पसीना छुड़वा दिया हो!"
"इतना बुद्धिमान व्यक्ति शराब में डूबकर मर गया!"
"इस आदमी की आवाज़ में जादू था। जब भी वह किसी को अपने दृष्टिकोण से सहमत कराने की कोशिश करता, तो सामने वाला व्यक्ति चुपचाप सुनता रहता। वह हर शब्द समझता था!"
पापा की शवयात्रा दोपहर करीब चार बजे निकली। अंतिम संस्कार शाम सात बजे हुआ। जब मैंने चिता को अग्नि दी, तब तक सूरज क्षितिज पर डूब चुका था। मुंबई से आने के बाद से मेरी आँखों से एक भी आँसू नहीं बहा था; लेकिन चिता को अग्नि देते ही मेरा सारा साहस टूट गया। मैं फूट-फूट कर रोने लगी। लोगों ने मुझे एक तरफ खींच लिया, चिता पहले से ही तेज़ जल रही थी। पापा का कमज़ोर शरीर पल भर में राख हो गया।
-०-०-

३२
समारोह समाप्त हो चुका था। जो लोग आए थे, वे चले गए। हमारी रायाई कुशाबा एक तरफ लकड़ी के खंभे से टेक लगाकर बैठी थीं। माँ मंदिर के पास एक अंधेरे कमरे में बैठी थीं ताकि उनका सफेद, झुर्रीदार माथा दिखाई न दे। अमर कोई किताब पढ़ रहा था; पर उसका ध्यान कहीं नहीं था। ऐसा नहीं था कि मैं पढ़ाई नहीं करता था, कम से कम अमर को तो मन लगाकर पढ़ाई करनी चाहिए थी, पापा की इच्छा पूरी होने का तो कोई सवाल ही नहीं था। अमर पिछले साल चार विषयों में फेल हो गया था, वो भी इतने महत्वपूर्ण विषय - अंग्रेजी, गणित, विज्ञान और भाषा! वो स्कूल जाता था और मावली के लड़कों के साथ घूमता रहता था। मैं उसके जैसा सज्जन कैसे बन सकता था! पर मुझे सच में लगता था कि अमर को उस रास्ते पर नहीं चलना चाहिए जिस पर मैं चला था! "तो मुझे बताओ तुम्हारे मन में क्या चल रहा है!" मैंने अमर से कहा।
मैं स्कूल नहीं संभाल सकता!
"तो मैं कहता हूँ, उस छोटे अमीर आदमी को मैदान में उतार दो!" कुशाब ने बीच में खड़े होकर कहा।
माँ ने अंधेरे कमरे से कहा,--
"कम से कम घर के लिए आवश्यक अनाज की मात्रा तो घर आ जाएगी!"
"माँ, क्या मैं कुछ सुझाव दे सकती हूँ?" लेकिन इससे पहले कि वह जवाब दे पातीं, मैंने कहा, "चलो उसकी शादी करवा देते हैं, नहीं तो वह खेत में मजे नहीं कर पाएगा!"
"आप भी ऐसा ही करें, स्वामी! यदि आपके पैर फंस गए तो आप मुसीबत में पड़ जाएंगे!" कुशाबा ने कहा।
अमर को तेईस साल का होने के बाद चौबीस साल का होना था। दूसरे शब्दों में, वह शादी के लिए तैयार था। चूंकि मेरा जीवन पूरी तरह

से अस्त-व्यस्त रहा था, इसलिए मैंने मन ही मन तय कर लिया था कि पत्नी चुनते समय मुझे अमर को विशेष तवज्जो देनी चाहिए।
पिताजी के निधन के बाद कई परिचितों ने पत्र भेजे। भवानी नगर से प्रकाशित होने वाले दैनिक 'नेता' ने पिताजी पर एक संपादकीय लिखा था। उसमें पिताजी के विधि ज्ञान और अंग्रेजी भाषा पर उनकी असाधारण पकड़ की प्रशंसा की गई थी। उस समय अंग्रेजी भाषा पर महारत हासिल करना प्रतिष्ठा और सम्मान की बात मानी जाती थी। जो लोग यह सोचते थे कि ब्रिटिश शासन समाप्त होने के बाद अंग्रेजी को महत्व नहीं दिया जाना चाहिए, वे वास्तव में मूर्ख थे। कुछ ही लोग समझते थे कि अंग्रेजी केवल अंग्रेजों की भाषा नहीं है, बल्कि यह एक ऐसी भाषा है जो पूरी दुनिया को जोड़ती है! मुझे लगता है कि अंग्रेजी के खिलाफ आवाज उठाने वाले केवल वही लोग थे जो अंग्रेजी नहीं जानते थे... खैर, मुझे इस भाषा के बारे में आधिकारिक रूप से बोलने का कोई अधिकार नहीं है; लेकिन मेरा मानना है कि इस 'अंतर्राष्ट्रीय भाषा' को अधिकांश भारतीयों द्वारा बोला और लिखा जाना चाहिए। यदि कोई भाषा को अच्छी तरह समझता है, तो कोई समस्या नहीं है, लेकिन यदि कोई इसे नहीं जानता है, तो केवल यात्रा के शौकीन ही समझ पाएंगे कि यह कितना कठिन है!
नेता द्वारा डैडी के बारे में संपादकीय लिखने के बाद, पुणे और मुंबई के समाचार पत्रों में भी डैडी की मृत्यु की खबर प्रकाशित हुई। डैडी को जानने वाले कई लोग थे, जिससे उनके लिए इस खबर को समझना आसान हो गया।
घर का माहौल शांत था। अमर ने खेत में जाकर रहने की इच्छा ज़ाहिर कर दी थी। दूर के रिश्तेदारों को उसकी शादी के बारे में चिट्ठियाँ भेज दी गई थीं। अब, पिताजी के निधन के बाद, घर के सारे काम-काज की ज़िम्मेदारी मुझ पर आ गई थी।

अल्का का हठ कम नहीं हो रहा था। उसके चेहरे पर मुस्कान का नामोनिशान भी नहीं था। अगर मेरे लिए उसके मन में कोई नफ़रत थी भी, तो वो भी नहीं। वो मुझसे ऐसे पेश आती थी जैसे मैं कोई अजनबी हूँ। ऐसा दिखावा करती थी जैसे मुझे देख ही नहीं रही हो, जहाँ भी मैं होता, मुझसे बचती रहती! उसका ऐसा बर्ताव देखकर जैसे वो मुझे जानती ही नहीं, मुझे हैरानी होती थी कि क्या उसके पास कोई अक्ल, कोई भावना, कुछ भी है? घर छोड़े डेढ़ साल हो गया था, और उसके मन में अब भी मेरे लिए इतना लगाव था?... अल्का से भी ज़्यादा ईर्ष्यालु; लेकिन जब वो मुझे देखती थी, तो उसकी आँखों में कितनी कोमलता झलकती थी? उस समय को छोड़कर जब वो नशे की आदी हो गई थी, अल्का ने सचमुच मेरी ज़िंदगी की रफ़्तार धीमी कर दी थी। वो मेरे बेलगाम रवैये की आलोचना करती, गुस्सा करती; लेकिन क्या मैं रात को उसके पास जाता? वो मुझे बाहों में भर लेती और कहती, "समर, मैं कब तक ऐसे जीऊँगी? मुझे ज़िंदगी में कुछ चाहिए, क्या मैं भी नहीं बदल गया?" अब से आपको अपने ऊपर कुछ नियम और अनुशासन लागू करने होंगे!’’ मैं कहता, ‘‘यह काम कर रहा है! जब तक यह काम कर रहा है, इसे जारी रखें। कल तो कल है!’’
मैं पहले बड़े ही आडंबरपूर्ण, लेकिन लगभग अर्थहीन जवाब देता था, क्योंकि मुझे पैसों की चिंता ही नहीं थी! चार बार फ्लश करने के बाद मैं अपनी जेब में एक-दो हजार लेकर लौटता था! लेकिन वो दिन अब चले गए! मेरे चश्मे खो गए! चोरी हो गए! यहाँ तक पहुँचने के रास्ते में मुझे कितनी मुश्किलों का सामना करना पड़ा! मुझे पैसों के लिए दूसरों से मदद माँगनी पड़ी! राजकुमारी ने मेरी हालत समझ ली और मुझे अपने पैसे दे दिए, जिससे मैं आ सका!...

मैं वहीं बैठकर यही सोच रहा था, तभी मुझे नीचे सीढ़ी के रुकने की आवाज़ सुनाई दी। मैं गैलरी में आया और अंदर झाँका। मैं हैरान रह गया! रॉबर्ट और लिलियन सीढ़ी से उतर गए!
मैं नीचे आया। रॉबर्ट ने कैशियर को पैसे दिए और अंदर आ गया। समर, मुझे बहुत अफ़सोस है! कल अखबार पढ़कर मुझे समझ आ गया। उस दिन मैं सारा दिन तुम्हारे आने और पैसे लाने की उम्मीद में इंतज़ार करती रही। शाम को मैं घर गई, लेकिन घर बंद था! फिर मैंने इधर-उधर पूछा। वहाँ कोयला खदान में काम करने वाली महिला ने बताया कि परशा की डॉक्टर आई थी और उल्का उसके साथ गई थी! बांद्रा में परशा की डॉक्टर का नाम सुनकर मुझे चोक्सीबाई की याद आ गई। मैं उनके अस्पताल गई और वहाँ उल्का से मिली। उसने बताया कि तुम्हारे पापा की तबीयत ठीक नहीं है, इसीलिए तुम यहाँ आई हो! कल अखबार में पढ़कर लिलियन ने कहा, "मैं तुमसे मिलने ज़रूर आऊँगी!" "आपका बहुत-बहुत धन्यवाद रॉबर्ट! लिलियन, अंदर आइए, मैं आपको अपनी माँ से मिलवाती हूँ!" लिलियन ने अपनी चप्पलें उतारीं और अंदर आ गई। मैंने अपनी माँ से कहा, "माँ, मैं बांद्रा में यहीं रहती हूँ! उनके पति की वर्ली नाका के पास घड़ी ठीक करने की दुकान है!"
मार्टिन और उनकी पत्नी ईसाई थे, लेकिन हमारे घर में जातिगत भेदभाव का कोई नामोनिशान नहीं था। पिताजी उच्च जाति के वकीलों को भी उसी प्याले में चाय पिलाते थे, हरिजन पार्टी के सदस्य को भी उसी प्याले में चाय मिलती थी। पिताजी मज़ाक में कहते थे कि जो लोग भेदभाव करते हैं, उनके दिमाग में कुछ गड़बड़ है। माँ भी जातिगत भेदभाव को कभी गंभीरता से नहीं लेती थीं। गली की कई मुस्लिम महिलाएं माँ के पास आती थीं। वे उनसे घरेलू समस्याओं पर सलाह मांगती थीं। अगर सलाह देना उनके बस में नहीं होता या

मामला थोड़ा पेचीदा होता, तो माँ कहतीं, 'अरे, वकील से पूछो!' और उन्हें खुद पिताजी के पास ले जातीं! ऐसी माताओं के ज़रिए सलाह लेने आने वाली महिलाओं से कोई शुल्क नहीं लिया जाता था, लेकिन कुछ पिता इस बात की कभी शिकायत नहीं करते थे!
इसी वजह से पापा की अंतिम यात्रा में इतने सारे हरिजन और मुसलमान दिखाई दिए!
अल्का ने लिलियन को देखा। मुझे उम्मीद थी कि वह लिलियन से खुलकर बात करेगी। उसे तीसरी मंजिल पर ले जाएगी। लेकिन व्यर्थ! वह ऐसे व्यवहार कर रही थी मानो इस घर में आने-जाने वाले लोगों के प्रति उसका कोई कर्तव्य ही न हो।
मां ने लिलियन से उल्कापिंडों के बारे में बहुत कुछ सीखा होगा। अल्का के हाई स्कूल जाने के बाद, वे दोनों काफी देर तक अकेले में बातें किया करती थीं। रॉबर्ट और मैं भवानी मंदिर से घूमकर आए। आते समय रॉबर्ट ने कहा,-
"समर, तुम्हारे जीवन में यह उथल-पुथल कब खत्म होगी?"
"किस तरह की मुसीबत?"
"ये हैं अल्का, तुम्हारी दुल्हन। मुंबई में रहने वाली उल्का, तुमने उससे भी शादी कर ली! वो युवती तो मर चुकी है, लेकिन वो राजकुमारी अब भी तुम्हारा साथ नहीं छोड़ रही! अगर ये त्रासदी नहीं है, तो फिर क्या है?"
"आगे बढ़ो! रॉबर्ट, मैंने अब तक किसी भी चीज़ के बारे में गंभीरता से नहीं सोचा है! यह मेरे स्वभाव में नहीं है। लेकिन मुझे एक बात महसूस होती है, जिन पत्नियों से मेरी शादी होती है, उनके अलावा मुझे दूसरी महिलाओं की संगति में खुशी मिलती है, मैं उनके साथ खुले मन से पेश आ सकता हूँ! अगर उल्का ने शादी पर ज़ोर न दिया होता, तो मैं उसके साथ भी ऐसा ही करता...!"

"तुम पागल हो! अरे, वो चार-पाँच महीने में बच्चे को जन्म देगी। क्या तुम पिता बनोगे? तुम कहाँ हो?"
"गद्य, तुम बहुत बड़ी जिम्मेदारी अपने कंधों पर ले रहे हो!"
"है ना? ओह! ओह, बच्चा होने से इंसान की किस्मत बदल जाती है! देखो, तुम्हारी जिंदगी कैसे एक नया मोड़ लेगी!"
लेकिन मुझे वो नहीं चाहिए!
"क्या अब यह तुम्हारे हाथ में है? मुझे बताओ तुम्हारे साथ क्या हुआ!"
"क्या?"
"तुम औरतों को रिझाने की कला में माहिर हो! किसी को दीदी और किसी को ताई कहकर सीधे रसोई में चले जाते हो! इतना ही नहीं, तुम्हें हर औरत की 'कमजोरी' का भी ठीक-ठीक पता है। तुम उनके प्रति हमदर्दी दिखाते हो और उन्हें जीत लेते हो! फिर वे तुम्हारे सामने अपना दिल खोल देती हैं, और कभी-कभी तो सब कुछ तुम्हारे सामने खोल देती हैं। तुम्हें इस तरह की आज़ाद ज़िंदगी की लत लग गई है! इसीलिए तुम्हें लगता है कि शादी और बच्चे बंधन हैं। लेकिन जीवन के उत्तरार्ध में, केवल पत्नी और बच्चे ही तुम्हारा सहारा बनते हैं! जो हवा में मिलते हैं, हवा में ही उड़ जाते हैं!" रॉबर्ट ने मेरे बारे में जो कहा था, वो बिलकुल भी बढ़ा-चढ़ाकर नहीं था! पुणे में विलास के घर में रहने के कारण मेरी कई उच्च वर्ग की महिलाओं से मुलाकात हुई थी। उनमें छोटी बच्चियों से लेकर पचास साल की उम्र तक की महिलाएं थीं। एक बार जब वे मुझे जान लेती थीं, तो मेरी संगति में सहज महसूस करती थीं! उन्हें लगता था कि मैं बहुत खुले विचारों वाला और दयालु व्यक्ति हूँ! और यहीं से वे मुझ पर मोहित हो गईं! लेकिन मैंने कभी किसी महिला को पैसों के मामले में धोखा नहीं दिया! अगर मैंने कुमारी को कैंची चलाने

के लिए उकसाया होता, तो मैं आसानी से एक लाख रुपये कमा सकता था! अब राजकुमारी मेरे आधे वादे के जाल में फंस गई है, उसे बिगाड़ने के लिए कुछ बचा ही नहीं है; लेकिन मुझे ऐसा नहीं लगता! कम से कम अभी तक तो नहीं लगता! आगे क्या होगा, मैं कुछ नहीं कह सकता। किसी व्यक्ति का भाग्य एक अजीब जादूगर होता है। यह अनुमान लगाना असंभव है कि वह अपने थैले से क्या निकालेगा!...
रॉबर्ट और लिलियन दो दिन रुके और मुंबई लौट गए। जाते समय मैंने उनसे उल्कापिंड का ध्यान रखने के लिए कहना नहीं भूला। लेकिन अगर मैंने उनसे नहीं भी कहा होता, तो भी वे ऐसा कर देते! उन्होंने अब मुझे मेरी सारी अच्छाइयों और बुराइयों के साथ स्वीकार कर लिया था! कहते हैं कि बहस से बनी दोस्ती हमेशा बनी रहती है! हमारी दोस्ती के साथ भी यही हुआ।
अमर की शादी अभी तुरंत नहीं होने वाली थी। और मैं तब तक यहाँ नहीं रह सकती थी! मैं अब भी उस लड़की की तरफ आकर्षित थी। मैंने अपनी माँ से कहा, "लड़की से मिलने जाने से पहले तस्वीरें मांग लेना। मुझे बहुत सारे विचार आते हैं। जब मुझे तस्वीरें पसंद आ जाएँगी, तब मैं उससे व्यक्तिगत रूप से मिलने जाऊँगी। मुझे किसी के कहने पर लड़की से मिलने जाना पसंद नहीं है।"
"क्या आप ऐसा कर रहे हैं?"
"कैसे?"
"यहाँ से कुछ ही दूरी पर राजपूतवाड़ी है। वहाँ रामनारायण भालेकर रहते हैं। उनकी एक बेटी है जिसकी शादी होने वाली है। मैंने उसे एक बार देखा था, आप और अमर आकर उसे देख लीजिए। अगर आपको वो पसंद आई तो हम फैसला करेंगे! आप मुंबई जा रहे थे, मैं अपनी पत्नी का क्या करूँगा?"
"ठीक है, हम कल अमर को ले जाएंगे!"

अमर मेरी तरह लंबा और चौड़े सीने वाला था। उसका चेहरा मुझसे ज़्यादा आकर्षक था। भाई होने के नाते मैं उसके व्यक्तित्व की तारीफ़ तो नहीं करता, लेकिन जब वह पंजाबी स्टाइल के मलमल के कुर्ते और लुंगी में घर के दरवाज़े पर खड़ा होता था, तो स्कूल जाने वाले लड़के-लड़कियाँ उसे देखे बिना आगे नहीं बढ़ते थे। गोरे हाथों-पैरों और दाढ़ी वाला वह किसी रोहिली जैसा दिखता था! राजपूतवाड़ी भवानी नगर से दस मील दूर था। भवानी नगर के महान महाराजा को सतमारी का बहुत शौक था। यह सतमारी ज़मीन में गहरी बनी एक विशाल दीवार थी। यह एक फर्लांग लंबी और डेढ़ फर्लांग चौड़ी थी। जगह-जगह ठोस काले पत्थरों से छोटी-छोटी मीनारें बनी हुई थीं। घायल हाथी को इस सतमारी में छोड़ दिया जाता था और पीछे से भालों से उसे चिढ़ाया जाता था। जब आदमी पीछे से भाले मारते थे, तो हाथी पहले से ही घायल होता था, फिर वह चीखता हुआ आदमी की ओर दौड़ता था, और उसी समय भालाधारी फुर्ती से मीनार में बने छोटे से छेद से अंदर घुस जाता था! पाँच या छह भालाधारी होते थे और वे इस तरह से बेकाबू हाथी को चिढ़ाते रहते थे, जब तक कि अंत में आदमी अंदर नहीं घुस जाता, लेकिन हाथी टस से मस नहीं होता था। इस बिंदु पर, यह माना जाता था कि 'खेल' समाप्त हो गया है। लड़ाई का यह खेल जितना रोमांचक था, उतना ही खतरनाक भी था। यदि भालाधारी जल्दी से मीनार की चोटी पर नहीं पहुँच पाता, तो क्रोधित गजराज उसे धड़ से पकड़कर नीचे पटक देता और अपने विशाल, पेड़ के ठूंठ जैसे पैर से उसे कुचल देता। ये भालाधारी विशेष रूप से बहादुर थे। भवानी नगर के महाराजा ने उन्हें भूमि प्रदान की थी। रामनारायण उन्हीं भालाधारियों में से एक था! चूंकि वह हमारे ज्ञान को भंग कर रहा था, इसलिए मैं अमर के लिए उसकी पुत्री से मिलने गया।

वह लड़की वाकई बेहद खूबसूरत थी। अच्छी बात यह थी कि वह ज्यादा पढ़ी-लिखी नहीं थी! मुझे लड़कियों की शिक्षा से कोई आपत्ति नहीं थी, लेकिन अल्का का इतना पढ़ा-लिखा और खूबसूरत होना और उसका रवैया देखकर मेरे मन में पढ़ी-लिखी लड़कियों के लिए एक तरह की नफरत पैदा हो गई थी! यह ऐसा था जैसे मुंह जलने के बाद छाछ पीना! उस लड़की का नाम शरावती था! मुझे शरावती बहुत पसंद आई। अमर की शर्म से मुझे पता चल गया था कि वह भी उसे पसंद करता है। इतने लंबे समय तक उस लड़की को अपने दिल में संजोकर रखने के लिए मैं अपनी माँ की बुद्धिमत्ता की सराहना करती हूँ।
मैंने रामनारायण से कहा, "आप भवानी नगर कब आएंगे?"
मैं आऊंगा, लेकिन मुझे आपसे अकेले में कुछ बातें करनी हैं!
उस बूढ़े आदमी ने कुछ और चुटकुले सुनाए, इसलिए मैं उठकर बाहर आ गया। मेरा हाथ पकड़कर रामनारायण ने कहा,-
"समर बाबू, आपका परिवार बड़ा है। आपके पिता वकील थे, और झील के पास आपकी बहुत ज़मीन है। आपके मुकाबले मैं तो बहुत गरीब हूँ! पहले जब राजशाही थी, तब हमें राजकोष में बड़े-बड़े इनाम मिलते थे। महाराजा जब किसी भालाधारी सैनिक से प्रसन्न होते थे, तो उसके शरीर पर सोने की अंगूठी पहना देते थे! वो दिन अब बीत गए। हमें जो चार-दो एकड़ ज़मीन मिली है, उसी में जैसे-तैसे गुज़ारा करते हैं। अगर आप जैसे बड़े लोग मुझसे कुछ बड़ी उम्मीद रखते हैं, तो वो पूरी नहीं होगी! जी हाँ! मैंने आपको ये पहले भी बताया है!"
मैंने मुस्कुराते हुए उनका हाथ दबाते हुए कहा, "अंकल भालेकर, चिंता मत कीजिए। अमर और मुझे दोनों को ही वो लड़की पसंद है। और तो और, हमने किसी बिचौलिए के ज़रिए शादी नहीं करवाई। ये बिचौलिए शादियाँ तो करवाते हैं, लेकिन करवाते समय ऐसी शर्तें लगा देते

हैं कि ज़्यादातर शादियाँ टूट जाती हैं, होने की नहीं! मुझे ऐसे बिचौलियों से नफ़रत है, इसलिए हम सीधे आपके पास आए हैं। अभी सुन लीजिए, आप मुझे लड़की और नारियल दे दीजिए! मुझे शादी को लेकर ज़्यादा तामझाम पसंद नहीं है। और तो और, हमारे पिता जी अब इस दुनिया में नहीं हैं। शादी बहुत ही सादे तरीके से होगी! मैं ज़्यादा रिश्तेदारों को नहीं बुलाऊँगा! हाँ, अगर आपको लगता है कि हम बहुत आराम से हैं, तो भूल जाइए!"
"ये कैसे हो सकता है, समरबाबू! हम वकील साहब को इतने सालों से जानते हैं! आपराधिक मामलों को ठाकुर वकीलों को संभालना चाहिए! इसके विपरीत, जब उन पर मुकदमा चलता है, तो वे गवाहों से सवालों की बौछार करके उन्हें डरा देते हैं और उन्हें परेशान करते हैं!" "चिमटी? ये किस तरह की चीज है?"
"जब कोई कुचला हुआ हाथी किसी वकील से हार जाता था, तो वकील उसके पिछले पैर में कांटेदार 'चिमटा' लगा देता था, और फिर हाथी हिल नहीं पाता था! आपराधिक अदालतों में कई गवाह भी वकील के सामने एक कुचले हुए हाथी की तरह आत्मसमर्पण कर देते थे।"
रामनारायण काका ने पिताजी के बारे में जो बताया, वह बिलकुल सच था। लेकिन उन्हें हमारी आर्थिक स्थिति के बारे में एक छोटी सी गलतफहमी थी। मैंने चाहे कितनी भी ईमानदारी से समझाने की कोशिश की, वह गलतफहमी दूर नहीं हुई।
मुझे बिल्कुल भी अंदाजा नहीं था कि अमर की शादी इतनी जल्दी पक्की हो जाएगी। लेकिन जहां एक तरफ किसी की शादी करवाने में अनगिनत मुश्किलें आती हैं, वहीं दूसरी तरफ किसी और की शादी सफल हो जाती है। बिल्कुल यही हुआ!
अमर की शादी उतनी ही सादी थी जितनी मैं चाहती थी!

मैं मुंबई जाने के लिए स्वतंत्र था। लेकिन जब मैं जा रहा था, तो मेरी माँ ने हमेशा की तरह आँखों में आँसू लिए कहा, "तुमने अपने भाई को तो कतार में खड़ा कर दिया, लेकिन तुम्हारा क्या? क्या मैं मरने से पहले तुम्हें सलीके से तैयार देख सकती हूँ?"
"माँ, मेरे बारे में चिंता मत करो! मैं बहुत खुश हूँ!"
"कैसी खुशी, बेटा? अगर इस अल्का ने थोड़ी सी भी समझदारी दिखाई होती, तो मेरा पोता अब तक मेरी गोद में खेल रहा होता!"
"भले ही वो अपना दृढ़ संकल्प दिखाए, लेकिन योगा जल्द ही शुरू हो जाएगा, माँ! पर उस समय मैं आपको मुंबई बुलाऊँगी! मैं देखना चाहती हूँ कि क्या मुझे उस समय कोई बड़ी जगह मिल सकती है!"
"देखो, चाहे खोपड़ी ही क्यों न हो, मैं आऊंगा!"
मैंने मां को अलविदा कहकर भवानीनगर छोड़ दिया। मुंबई की भागदौड़ भरी जिंदगी में खो जाने के लिए!
-०-०-

३३
हम दादर स्टेशन पर उतरे और बांद्रा जाने के लिए टैक्सी पकड़ने की कोशिश की, लेकिन टैक्सी ड्राइवर इतने व्यस्त थे कि वे आस-पास की दुकानों पर नहीं जाना चाहते थे। दादर और बांद्रा के बीच की दूरी ज़्यादा नहीं है, लेकिन फिर भी वे दूर की दुकानों पर ही जाना चाहते थे! शिवाजी पार्क, माहिम और परेल जाने वालों को आधे घंटे तक टैक्सी नहीं मिली। सफेद वर्दी वाले पुलिसकर्मी टैक्सी ड्राइवरों पर नज़र रख रहे थे, लेकिन टैक्सी ड्राइवर पुलिस की हर चुनौती का सामना कर रहे थे!
आखिरकार टैक्सी मिल ही गई! मैं पहले बांद्रा स्थित चोक्सीबाई के अस्पताल गई। उल्का वहां नहीं थी। वहां की नर्स ने बताया कि उसे दो दिन पहले ही अस्पताल से छुट्टी मिली थी। उल्का की हालत में सुधार देखकर मैं खुश होकर घर पहुंची।
वह उल्कापिंड बिस्तर पर लेटी हुई थी। उसका चेहरा पीला पड़ गया था। मुझे देखते ही उसकी आँखों में आँसू भर आए। उसने कहा,- "गर्मी के मौसम में, जिस बात से मैं डर रही थी वही हो गया!" "क्या - क्या हुआ?"
"गर्भपात! लड़का था!" वह अब और बात नहीं करना चाहती थी। "बदकिस्मती!" मैं उसके बगल में बैठ गई और उसका हाथ पकड़ लिया। मुझे भी बहुत बुरा लग रहा था। जैसा मेरी माँ ने कहा था, शायद बेटा होने के बाद मेरी ज़िंदगी बदल जाती! लेकिन वो संभावना भी खत्म हो गई! मैं अंधविश्वासों में विश्वास नहीं करती। फिर भी, उल्का बच्चा चाहती थी! मेरा दिल उससे जुड़ा रहा।
तभी लिलियन लंच बॉक्स लेकर आई।
"तुम कब आए?" लिलियन ने पूछा।
"अभी!"

"क्या आपको समझ में आया कि यहां क्या हुआ?"
"हाँ! यह कैसे हुआ?"
"ऐसा क्यों? आपने इतनी देर क्यों कर दी?"
मैंने अभी-अभी अमर की शादी पूरी की है। माँ अब चिंतित नहीं हैं! "इतनी तेजी!"
"हाँ! अगर आप इसे इस तरह से देखें तो पिता की मृत्यु के एक साल के भीतर शादी करना एक प्रथा है!"
"ठीक है!"
"रॉबर्ट कहाँ है?"
"मैं दुकान गई थी! अरे हाँ, बताना भूल गई थी, वो राजकुमारी रोज़ दुकान आती है और तुम्हारे बारे में पूछती है! पुणे से विलास का एक पत्र आया है, वो घर पर है!"
"अच्छा! लेकिन क्या आप यह विदाई बाद में नहीं कह सकते थे?" उल्कापिंड को देखते हुए मैंने लिलियन से कहा। उसे तुरंत एहसास हो गया कि उसने वाकई गलती कर दी है। उसे उल्कापिंड के सामने राजकुमारी का नाम नहीं लेना चाहिए था। इसके अलावा, उल्कापिंड को विलास और इंदु नाम पसंद नहीं थे। लेकिन लिलियन ने अनजाने में ही बोल दिया था। चूंकि विषय बदलना जरूरी था, इसलिए मैंने कहा, "तुम उल्कापिंड को घर कब लाईं?"
"परसों। चोक्सीबाई ने मुझे उसे ले जाने को कहा है! ठीक है समर, मैं थोड़ी देर के लिए बाहर जा रही हूँ, तुम उसे खाना खिला दो! उसने कल एक निवाला भी नहीं खाया। वह हर समय रोती रहती है!"
रोने से क्या फायदा? क्या तुम खुद को ही चोट नहीं पहुंचाओगे? लिलियन से बात करते-करते मैंने अचानक उससे पूछा, "क्या तुमने चोक्सीबाई से पूछा कि ऐसा क्यों हुआ?"

"हां, मैंने पूछा था! उसने बताया कि जब उसे लत लगी, तो उसके गर्भाशय पर असर पड़ा। उसकी बच्चे को जन्म देने की क्षमता कमजोर हो गई है!"
इसका कोई हल है क्या?
"इसका एक समाधान है, लेकिन यह दूसरी गर्भावस्था के दौरान ही संभव है। अभी कुछ नहीं किया जा सकता!"
"तो यह एक जटिल मामला है!"
"क्या करना है मुझे बताओ?"
अपने दोनों कंधों और गले में लटके क्रॉस को छूते हुए लिलियन ने कहा, "अगर तुम्हारा जन्म हुआ होता, तो तुम कितनी 'स्वस्थ' दिखतीं, जैसा कि तुम कहती हो, बच्ची!"
"क्या आप उस समय वहां मौजूद थे?"
"तो क्या हुआ? रॉबर्ट सुबह गया था और वापस आकर बोला, चोक्सीबाई कहती हैं कि उन्हें आज किसी करीबी की जरूरत है, मानस जैसी महिला की, जो उनकी साथी बन सके! फिर वह चली गईं!"
"शाबाश, ऐसे समय में तुम उसके साथ थे!"
"हां, मैं अब जा रही हूं। मैं उसके लिए गरमा गरम चावल और टमाटर का सूप लाई हूं, उसे इतना तो खिला ही देना!"
"ओह! धन्यवाद लिलियन! मैं रॉबर्ट के यहाँ जाऊँगी, लेकिन अगर मैं नहीं जा पाई, तो उसे कह देना कि वह मुझसे शाम को मिले!"
"जब उसे पता चलेगा कि तुम आ गए हो, तो वह आ जाएगा!"
लिलियन के जाने के बाद, मैंने उत्का को खाना खिलाया। खाना खाते समय उसकी आँखों में आंसू आ गए।
"उन चीजों के बारे में चिंता करने का क्या फायदा जो आपके नियंत्रण से बाहर हैं?"
"समर, मुझे बहुत बड़ा शासन सौंपा गया है!"

"किस तरह की सरकार?"
"ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि मुझे लत लग गई थी!"
"जाने दो! जो हो गया उस पर अब मत सोचो। पापा के जाने पर माँ बहुत दुखी थीं। लेकिन कुछ दिनों बाद ही उन्होंने अमर के लिए शादी का प्रस्ताव रखा। सौभाग्य से, सब कुछ ठीक हो गया! तुम्हें दर्द को भूलकर आगे बढ़ना होगा, उल्का!"
मुझे सिर्फ एक ही बच्चा चाहिए!
"ऐसा होगा! आपकी उम्र कितनी है? अब आपको इस बात पर संदेह करने का कोई कारण नहीं है कि आपको दूसरा बच्चा होगा या नहीं!"
"कौन जानता है!"
जिन महिलाओं के बच्चे नहीं होते, वे बेशक दुखी होती हैं; लेकिन जिन्हें संतान प्राप्ति की संभावना से वंचित कर दिया जाता है, वे और भी अधिक दुखी होती हैं! मैं उल्का के प्रसव के दौरान भवानी नगर से अपनी माँ को फोन करने के इस सपने के साथ मुंबई आई थी; लेकिन यह सपना ही रह गया!
मुझे दोपहर में वर्ली में रॉबर्ट के यहाँ जाना था; उससे पहले मुझे राजकुमारी के यहाँ से होकर जाना था। लेकिन मेरी जेब में पैसे नहीं थे। मैंने पहले कभी उल्का से पैसे नहीं मांगे थे; लेकिन आज मुझे पैसे मांगने ही पड़े!
"क्या आपके पास दस रुपये हैं?"
"अपने पर्स में देखो! और स्कूल जाओ। तुम्हें अपनी छुट्टी बढ़ाने के लिए आवेदन करना होगा! देखो, यह दराज में लिखा हुआ है!" मैं दस रुपये और उल्का की छुट्टी का आवेदन अपनी जेब में लेकर घर से निकला। मैंने उल्का का छुट्टी का आवेदन शेठ रतनभाई धीरजी विद्यालय में जमा कराया, जहाँ उल्का कार्यरत थी।

प्रधानाचार्य कार्यालय में थे। मैंने उन्हें नमस्कार किया और आवेदन पत्र सौंप दिया। उन्होंने मुझे गौर से देखा और पूछा, "आप कौन हैं?"
"मैं समर ठाकुर हूँ! उल्का मेरी पत्नी है!"
"बैठ जाओ! इन्हें क्या हो रहा है?"
"गर्भपात हो गया!"
"माफ़ कीजिए! लेकिन क्या करें, उन बारह लोगों को बच्चों को पढ़ाने में कोई दिलचस्पी नहीं दिखती!"
"ऐसा नहीं होगा! वह बहुत ईमानदार है!"
"लेकिन उनके बारे में खबरें अच्छी नहीं हैं! आप जानते हैं, शिक्षण संस्थानों में काम करने वालों का चरित्र संदेह से परे होना चाहिए। उनके परिवार के सदस्यों के बारे में भी कोई शिकायत नहीं होनी चाहिए!"
"मुझे समझ नहीं आया कि आपका क्या मतलब है!"
"तो फिर मैं स्पष्ट कर दूं! बैठ जाइए! हमारे स्कूल में कुछ पुलिस अधिकारियों के बच्चे हैं, और हमें उनके माता-पिता से पता चला है कि आप एक पुलिस इंस्पेक्टर की हत्या के मामले में शामिल थे!" "सर! क्या आप उल्का को छुट्टी देना चाहते हैं या नहीं?" मैंने कुछ चिढ़कर कहा।
बोर्ड ने उन्हें स्थायी छुट्टी देने का फैसला किया है! हमने तो कल ही एक और शिक्षक की नियुक्ति भी कर दी!... एक-दो दिन में श्रीमती ठाकुर को एक महीने का वेतन और एक आदेश डाक द्वारा भेज दिया जाएगा जिसमें लिखा होगा कि उन्हें सेवा से बर्खास्त कर दिया गया है!
"यह अन्याय है!"

"यह न्याय या अन्याय का फैसला करने वाली अदालत नहीं है! आप जा सकते हैं!"
मेरा दिमाग बुरी तरह गर्म हो गया था। उस शिक्षण संस्थान द्वारा उल्का को बिना किसी ठोस कारण के नौकरी से निकालना अन्यायपूर्ण था। मैं जल्दी से वहाँ से निकलकर दादर पहुँच गई। लिलियन ने मुझे बताया था कि राजकुमारी रॉबर्ट के पास गई हैं। भवानी नगर जाने के बाद मुझे उन्हें पत्र लिखना था; लेकिन पिताजी की मृत्यु और फिर अमर के विवाह की बातचीत में इतना समय लग गया कि मुझे समय ही नहीं मिला!
हिंदू कॉलोनी में जिस इमारत में राजकुमारी ठहरी हुई थीं, उसके सामने एक आलीशान कार खड़ी थी। उस इमारत में चार-छह और लोग रहते थे, इसलिए यह अंदाज़ा लगाना नामुमकिन था कि यह कार किसकी है। जब मैं गोलाकार सीढ़ियों से ऊपर चढ़ रहा था और सोच रहा था, तभी मैंने राजकुमारी को खाना परोसने वाली चाची को कमरे के सामने खड़े देखा।
राजा कहाँ हैं?
"वे अंदर हैं! लेकिन...."
"और कौन है वहाँ?"
‘‘शिदोजी राजे!’’
‘‘शिदोजी राजे?’’
"जी हाँ! वह एक मंत्री हैं!"
"मैं तुम्हें पहचानता हूँ! वही शिंदोजी राजा? हाँ!"
मैंने राज्य मंत्री शिदोजी राजे का नाम तो सुना था; लेकिन एक अलग संदर्भ में! महिलाओं के बड़े आशिक! लेकिन वो यहाँ कैसे पहुँचे? उनका यहाँ आना तो बस एक ही बात साबित करता है, कि वो राजकुमारी को रिझाए बिना नहीं रुकेंगे!

इन शाही लोगों की एक विशेषता यह है कि वे खुद को एक अलग जाति मानते हैं। उनके बीच चाहे कितना भी मतभेद क्यों न हो, वे उसे खुलकर सामने नहीं आने देते। उनके रीति-रिवाज और परंपराएं भी आम लोगों से बिल्कुल अलग हैं! वे धन-दौलत के लिए आपस में लड़ेंगे, कोर्ट केस लड़ेंगे और यहां तक कि एक-दूसरे को जहर देकर मारने की साजिश भी रचेंगे। लेकिन जब समाज में उनका आमना-सामना होगा, तो वे एक-दूसरे को गले लगाएंगे और अभिवादन करेंगे! दिल से भी एक और असलियत में भी एक!... मेरा उनके प्रति क्या कर्तव्य है? अगर यह राजकुमारी इस अय्याश मंत्री के प्यार में पड़ गई, तो फिल्म में काम करने से उसे कोई फायदा नहीं होगा, मुझे तो डर था कि वह पूरी तरह बर्बाद हो जाएगी।
अपनी चाची की बात अनसुनी करते हुए, मैंने दरवाज़ा धक्का देकर खोला और सीधे अंदर चला गया। चालीस-बयालीस साल का राजकुमार शिदोजी राजे, मुँह में पाइप लिए राजकुमारी से बातें कर रहा था। दोनों के बीच काफी दूरी थी। मुझे पता था कि राजकुमारी के कमरे में अचानक घुसकर मैंने शिष्टाचार तोड़ा है, लेकिन मुझे लगा कि शिष्टाचार का पालन करना अनावश्यक है, क्योंकि मुझे पता था कि वहाँ आया हुआ व्यक्ति बेहद षड्यंत्रकारी और झगड़ालू था। राजकुमारी ने मुझे देखते ही मुस्कुराते हुए कहा, "अरे! देखो! शैतान का नाम सुनते ही वो यहाँ आ गया! ग्रीष्म ऋतु, तुम्हारा नाम तो आया और चला गया, पर तुम आ गई!"
शिदोजी राजे बनावटी मुस्कान के साथ मुझे देखते रहे। अब तक मैंने उनका नाम ही सुना था। उन्हें व्यक्तिगत रूप से देखने का अवसर कभी नहीं मिला था। शाही परिवार के लोगों को आशीर्वाद प्राप्त होता है। उनका व्यक्तित्व बहुत प्रभावशाली होता है या लोग उनके व्यक्तित्व के चारों ओर ऐसा रहस्यमय आभामंडल बना लेते

हैं कि उनका व्यक्तित्व प्रभावशाली प्रतीत होता है। लेकिन शिदोजी राजे को देखते ही मुझे उस सज्जन से घृणा होने लगी। चपटी नाक, धूम्रपान से काले पड़े होंठ, उभरी हुई आँखें और सिर पर कम बाल, कोई भी यह विश्वास नहीं कर सकता था कि वह शाही परिवार के सदस्य हैं!
"समर, क्या तुम राजा को जानते हो या नहीं?" मैंने इनकार कर दिया और शिंदोजी राजे को प्रणाम किया।
उन्होंने हाथ तक नहीं उठाया। उनके प्रति मेरी नफरत थोड़ी और बढ़ गई।
"ये हैं समर ठाकुर! ये कभी भवानी नगर के मशहूर फुटबॉल खिलाड़ी थे। उन्होंने सेना में भर्ती होकर हॉकी खेलते समय अपने पैर में चोट लगवा ली और तब से खेल से बाहर हैं!"
शिदोजी राजे बीच-बीच में मेरी तरफ मुस्कुरा रहे थे, मानो ध्यान से सुन रहे हों।
"अरे, मुझे पूछना ही पड़ा! आपके पिताजी के साथ ऐसा कैसे हुआ?" मैं काफी समय से बीमार था!
"बहुत खेद है! राजे, उनके पिता एक प्रसिद्ध वकील थे।"
"उसका क्या नाम था?"
धीरजलाल ठाकुर!
‘‘ओह हं! आय सी! ही डाइड?’’
"जी हां," राजकुमारी ने थोड़ा गंभीर होते हुए कहा। शिंदोजी बिना किसी भाव के खड़े हो गए। उन्होंने मुंह में पाइप लिया और कहा,- "ठीक है रत्नाप्रभा। मैं जा रहा हूँ। आपने जो काम मांगा है, वो हो जाएगा! चिंता मत कीजिए! अगर आपको और कुछ चाहिए तो मुझे फोन कर दीजिएगा। मैं अपने पर्सनल असिस्टेंट को बता दूंगा! आपका फोन मिलते ही वो आपको तुरंत कनेक्ट कर देंगे। क्या बात है, रोज़

हज़ारों बेकार लोग मुझे फोन करके परेशान करते हैं, फिर पर्सनल असिस्टेंट उन्हें कहता है कि वो ईमानदार नहीं हैं। लेकिन आपका फोन मिलते ही वो मुझे तुरंत कनेक्ट कर देंगे! हे भगवान!"
जब राजा शिदोजी उठे, तो राजकुमारी भी खड़ी हो गईं। मंत्री के पास से गुजरते समय, राजकुमारी ने झुककर उनका अभिवादन किया। मुझे भी उठकर हाथ जोड़ने पड़े! राजकुमारी उन्हें विदा करने के लिए गलियारे में गईं और वहीं बातचीत जारी रखी। हालांकि, मैं कुर्सी पर बैठा रहा और अपनी दोनों हथेलियों की उंगलियों को आपस में फंसाकर अपनी बेचैनी को शांत करने की कोशिश करता रहा।
बाहर खड़ी गाड़ी के चले जाने के बाद, राजकुमारी अंदर आई और बोली, "अब मेरी इच्छा पूरी हो गई!"
"क्या?"
"वो कमीना, रोबोट मेरे पैरों पर आकर गिरेंगे!"
‘‘का?’’
"जब मैंने शिंदोजी राजे को बताया कि उन लोगों ने मुझे कैसे धोखा दिया, तो उन्होंने उनके खिलाफ कार्रवाई करने का फैसला किया! अरे, वो तो राज्य मंत्री हैं!"
"वे नारोन्हा के साथ क्या करने वाले हैं?"
"वे उसकी फिल्मों का कोटा बंद कर देंगे, या सेंसर बोर्ड द्वारा उसकी नई फिल्मों को आधा कर दिया जाएगा! क्या तुम मुझे बेवकूफ बना रहे हो, नारोन्हा!"
राजकुमारी इस विचार से प्रसन्न थी कि अब पश्चाताप करने की बारी नारोन्हा की होगी।
"समर, शिदोजिराजे बहुत दयालु व्यक्ति हैं!"

मैंने मन ही मन सोचा, "मुझे कहना चाहिए, 'सज्जन' शब्द का इतना अपमान कभी नहीं हुआ!" लेकिन मैंने अपने होठों पर आए शब्दों को निगल लिया और कहा, "-
"राजा, अगर आपको सिनेमा में काम करने की इच्छा ही नहीं है!"
"अब क्या होगा? आज शिदोजी राजे ने कहा कि वो कई निर्माताओं और निर्देशकों को जानते हैं। शिदोजी राजे के पास बोलने का ही समय है, मुझे निर्माताओं से ही बात करनी पड़ेगी! नायिका का किरदार निभाए बिना मेरा दिल कभी नहीं भरेगा, समर!"
"अगर ऐसा हो जाए तो कितना अच्छा होगा!" मैंने कुछ कहना चाहकर कहा।
"अच्छा, आज आपकी क्या योजना है?"
"मुझे किस तरह का प्रोग्राम मिला है? मुझे कहीं न कहीं नौकरी ढूंढनी है। उल्का को नौकरी से निकाल दिया गया है। वह बीमार है। आपको उधार लिया हुआ पैसा भी चुकाना होगा!"
"कितना नासमझ लड़का है!" राजकुमारी ने कहा, मेरे गाल पर एक चुंबन दिया और फिर बोली, "छोड़ो! अब मुझे पैसों की कमी नहीं होगी!" ‘‘का?’’
"मैं रावेरकर परिवार से हिस्सेदारी का दावा करने जा रहा हूँ। उनकी संपत्ति में मेरा हिस्सा है, और जब तक मैं दावा नहीं करूँगा, वे मुझे वह हिस्सा नहीं देंगे," शिदोजी राजे ने कहा! "क्या उन्होंने ऐसा कहा था?"
"हाँ! इसमें आश्चर्य की क्या बात है?"
मुझे वाकई आश्चर्य हुआ!
और मैं तुम्हें बता दूं, समर, असली काम तब तक नहीं हो सकता जब तक तुम्हारे पीछे कोई इतना शक्तिशाली व्यक्ति खड़ा न हो!

"सच है, लेकिन उस व्यक्ति को ईमानदारी से पीछे हट जाना चाहिए। पीछे हटकर उसे 'पीठ में छुरा घोंपने' की प्रवृत्ति नहीं रखनी चाहिए, बस इतना ही!"
"तुम तो बिल्कुल पागल हो, समर! अरे, शिदोजी राजे न सिर्फ शाही परिवार से हैं, बल्कि आज की सरकार में उनका काफी दबदबा भी है! बिना किसी योग्यता के उन्हें इतना सम्माननीय पद कैसे मिल गया?" ‘‘पॉलिटिक्स इज द् लास्ट रेझॉर्ट ऑफ द स्काँड्रल्स!’’
"अपना स्वभाव बदलो, समर! क्या तुम्हें हर किसी के बारे में बुरा- भला बोलना अच्छा लगता है?"
"मुझे क्षमा करें, महाराज, मैंने इस दुनिया को आपसे कहीं अधिक करीब से देखा है, और मैं अभी भी इसे देख रहा हूँ!"
"अरे, अगर ऐसा होता तो तुम उस व्यक्ति के बारे में ऐसे अपमानजनक बयान नहीं देते जिसके बारे में तुम्हें कुछ पता ही नहीं! क्या तुम देखना चाहते हो कि राजा शिदोजी के शब्द कितने महत्वपूर्ण हैं?"
मुझे कुछ नहीं चाहिए!
"अगर आपको नौकरी चाहिए, तो मुझे बताइए, उन्हें बस एक फोन करना होगा। क्या आप देखना चाहेंगे?"
"नहीं धन्यवाद! राजा, मैं आ रहा हूँ। पैसे मिलते ही मैं आपको दे दूंगा। बस थोड़ा समय लगेगा!"
"तुम बार-बार पैसे क्यों निकाल रहे हो? क्या मैं पैसों का लालची हूँ? देखो, शिदोजी राजा ने जाते समय मुझे एक हजार रुपये दिए थे। मैंने बस इतना कहा कि मुंबई में महंगाई बहुत बढ़ गई है, और उन्होंने ये पैसे निकाल लिए!"
"कल मैं लगभग बीस ऐसे लोगों को उनके पास ले जाऊंगा जो कहते हैं कि महंगाई बढ़ गई है, देखते हैं कि वे कितनों को पैसे देते हैं!"

"तुम्हारे पास कुछ तो जरूर होगा! अरे, वे मुझसे उतना ही जुड़ाव कैसे महसूस करते हैं जितना वे सड़क पर चलने वाले लोगों से करते हैं?"
"आप सही कह रहे हैं! लेकिन मंत्री के रूप में उस कुर्सी पर बैठे व्यक्ति को सबसे पहले आम लोगों के करीब महसूस करना चाहिए, और फिर रिश्तेदारों और परिचितों के!"
"छोड़ो, उस विषय को छोड़ दो! तुम्हारी पत्नी का स्वास्थ्य कैसा है?"
"जो लोग?"
"अरे, उल्कापिंड! मुझे भवानी नगर की आपकी पत्नी के बारे में क्यों पूछना चाहिए?"
"उल्का घर पर है। जब मैं शहर में थी, तब उसने यहीं गर्भपात करवाया था!"
"बदकिस्मती! समर, मुझे लगता है कि तुम भी मेरी ही तरह पीछे हो!" "कौन जाने! लेकिन अब वो समय आ गया है जब नौकरी के बिना कोई रास्ता नहीं बचा है!"
"अरे, मेरी बात सुनो! मैं शिदोजी राजा की कसम खाता हूँ। आपको मुझे किसी अच्छी कंपनी में कम से कम एक हजार रुपये की नौकरी दिलवानी ही होगी! मेरी बात सुनो!"
"महाराज, मैं आपको अपवाद मानता हूँ। शाही परिवार के बाकी सदस्यों के बारे में मेरी राय अच्छी नहीं है। मुझे पूरा विश्वास है कि वे कपटी, स्वार्थी, आत्म-केंद्रित और षड्यंत्रकारी हैं!"
क्या मैं इस नियम का अपवाद हूँ?
"हां, इसीलिए तो मैंने शुरुआत में ही ऐसा कहा था!"

"अच्छा, समर, मुझे कभी न कभी रत्नापुर जाना ही पड़ेगा। मुझे एक पत्र मिला है जिसमें लिखा है कि पापा की तबीयत ठीक नहीं है!" "मुझे शक है! मुझे शक है! आप मुंबई में आज़ाद ज़िंदगी जी रहे हैं, तो आपको वहाँ बुलाकर गिरफ्तार करने की कोई योजना क्यों नहीं होगी? शायद रावेरकरों ने उनसे ऐसा करने का अनुरोध किया हो क्योंकि उनके शाही परिवार की प्रतिष्ठा दांव पर लगी है?"
"उस संभावना को भी नकारा नहीं जा सकता! लेकिन फिर हमें क्या करना चाहिए?"
आपको सुनिश्चित करना होगा!
"लेकिन अंदाज़ा लगाइए, अगर वे चले गए और यह एक नाटक है, तो वे क्या करेंगे?"
"परिवार की इज्जत दांव पर लगी हो तो वे अपनी जान लेने से भी नहीं हिचकिचाएंगे!"
"बस यही बात है! आप जो कह रहे हैं वह झूठ नहीं है!"
"मुझे जाना है?"
"आओ। तुम कब वापस आओगे?"
"मुझे लगता है कि जब मेरी ज़रूरत न हो तब आकर आपको सलाह देना उचित नहीं है। इसके बजाय, जब आपको मेरी ज़रूरत हो तब रॉबर्ट को अलविदा कह दीजिएगा!"
"ये क्या है? लगता है तुमने मुझसे दूर रहने का फैसला कर लिया है! दूर रहो, बापदा! मैं तुम्हारा कौन होता हूँ?"
"राजा, आपने एक बार मेरी जान बचाई थी, यही एक एहसास मुझे आज तक आपकी ओर खींचता है। आपने मेरा अपमान किया, मेरे व्यवहार की आलोचना की और मेरी सलाह को अनसुना किया, फिर भी मैं यह एहसास नहीं भूल सकता कि आप ही मेरे जीवनदाता हैं। मैं आपको ज्ञान या व्यवसाय सिखाने के योग्य नहीं हूँ। लेकिन मुझे लगता है कि मैं

यहाँ तक इसलिए आया हूँ क्योंकि मेरे भीतर आपके लिए प्रेम का कुछ अंश बाकी है!"
राजकुमारी मेरे करीब आईं और मेरा हाथ अपने हाथ में लेकर बोलीं, "मैं भी तुम्हारे बारे में ऐसा ही महसूस करती हूँ। मुझे कभी-कभी उन लोगों पर बहुत गुस्सा आता है जो सामान्य ज्ञान का उपदेश देते हैं!"
मैंने राजकुमारी को विदाई दी और दादर से निकल गया। मेरे दिमाग में इतने तीव्र विचार उमड़ रहे थे कि तिलक पुल के नीचे से तेज़ी से गुज़र रही फ्रंटियर मेल भी मुझे धीमी गति से चलती हुई प्रतीत हो रही थी।
जब संकट आते हैं, तो एक के बाद एक आते हैं - बारिश के बादलों की तरह! और अंतरात्मा और विचारों का सूरज ढक जाता है। मैं भी यही अनुभव कर रही थी। उटाका ने गर्भपात कराया, नौकरी खो दी, उसके साथ लूटपाट हुई, उसका सारा पैसा चला गया। यहाँ तक कि वो चश्मा भी चला गया जिससे वो पैसे कमाती थी। अब वो क्या करे? अगर वो जीना चाहती है?... खैर, उटाका को अकेले ही इस जिम्मेदारी का बोझ उठाना होगा!...
सोच-विचार करते हुए मैं बांद्रा वापस जाने वाली बस में बैठ गया। मुझे बस से यात्रा करना पसंद नहीं था, लेकिन अब यह अपरिहार्य था। मुझे सुबह उल्का से दस रुपये उधार लेने थे। उसकी नौकरी भी छूट गई थी। अब मैं क्या करूँ, अपना जीवन कैसे चलाऊँ?
जब मैं बांद्रा पहुँचा, तो दरवाज़े पर लोग खड़े थे! एक और ज़ोरदार साँस! मैं भीड़ में घुस गया, सोच रहा था कि क्या हुआ है। इस बार मुझे एहसास हुआ कि मकान मालिक ने उल्का से कहा था कि वह किराया नहीं देना चाहता क्योंकि उसने दो महीने का किराया नहीं दिया था। कपड़े धोने और वाशिंग मशीन के बिल भी नहीं भरे गए थे।

मैं अंदर गया, इस उलझन में कि क्या मैं उसे बताऊँ कि उल्का की नौकरी चली गई है। वह उठ बैठी थी। लिलियन उसे समझाना चाहती थी। जब मैं वहाँ माथे पर हाथ रखकर बैठी थी, तभी उल्का ने कहा, "इस मालिक में ज़रा भी इंसानियत नहीं है। मैंने उसे अगली तनख्वाह तक सारा कर्ज़ चुकाने को कहा था, फिर भी वह कमीना जल्दी में आ गया!"
मैंने धीरे से कहा, "'उल्कापिंड!' उनका नाम मत लो। हमारा समय बुरे दौर से गुजरा है। जब हमारे हाथों में हजारों रुपये थे, तब हमें पैसे की कीमत का एहसास नहीं था!"
"अरे, लेकिन अब तारीख बस एक कदम दूर क्यों है? मैंने कहा था कि जब मुझे वेतन मिलेगा तब मैं भुगतान कर दूंगा!"
"तुम वो भी नहीं दे पाओगे, उल्कापिंड!"
"क्यों नहीं?"
आपको नौकरी से निकाल दिया गया है। आपको बर्खास्तगी का नोटिस और एक महीने का वेतन मिलेगा!
"क्या, क्या कह रहे हो तुम?"
‘‘माय गॉड!’’
"लेकिन किसलिए?"
"उन्होंने यह फैसला इस संदेह के आधार पर लिया है कि मेरा गडकरी हत्याकांड से संबंध हो सकता है!"
"बकवास! मैं उनसे पूछूंगा!"
"यह तो मूर्खता होगी, मेटियोर! एक बार जब वे मना कर देते हैं, तो उनसे लड़ने और वहाँ रहने का कोई मतलब नहीं है! मुझे लगा कि हमें कहीं और देखना चाहिए!"
"लेकिन यह तो अन्याय है!"

वे कहते हैं कि न्याय और अन्याय अदालतों में होते हैं! शिक्षण संस्थानों में नहीं!
लिलियन सब कुछ सुन रही थी। उसने उल्का से कहा, "हमारी गली के पचपन बच्चे हर दिन मोंटेसरी स्कूल जाते हैं, अगर आप उन्हें यहाँ पढ़ाएँ तो कैसा रहेगा?"
"मैं जाने के लिए तैयार हूँ! लेकिन लिलियन, क्या इस तरह से होमस्कूलिंग काम करेगी?"
"काम न करने में क्या बुराई है? बिल्कुल काम करेगा! बस कोशिश करो!"
लिलियन द्वारा सुझाए गए मार्ग की जाँच करने में कोई समस्या नहीं थी। लेकिन जगह की कमी महसूस होने वाली थी।
दो महीने इसी तरह बीत गए। बारिश शुरू हो गई थी। उल्का की हालत में कुछ सुधार हुआ था। उसे कोई दूसरी नौकरी नहीं मिली थी। और मिलने की कोई उम्मीद भी नहीं थी। घर पर बच्चों का मंदिर चलाने का लिलियन का विचार अच्छा था। लेकिन इसे चलाने के लिए जगह की समस्या थी। बांद्रा में जहाँ हम रह रहे थे, उसके पीछे मछुआरों और दुकानदारों के घर थे। ईसाई समुदाय अलग था। अगर उल्का ने बच्चों का मंदिर चलाने का फैसला भी किया होता, तो यह संभव हो सकता था, लेकिन ऐसा लगता नहीं था कि यह जल्द ही हो पाएगा। घर का पैसा लगभग खत्म हो चुका था। कर्जदारों ने दरवाज़ों के हैंडल निकालने शुरू कर दिए थे। घर में बैठना भी मुश्किल हो गया था। उस सुबह, घर में चाय बनाने के लिए चीनी तक नहीं थी। उल्का ने मुझसे कहा,-
"ये सब कब तक ऐसे ही चलता रहेगा? मुझे कोई काम नहीं मिल रहा। कम से कम थोड़ा तो काम करो? लोगों ने मुझे 1200 रुपये दिए हैं!"

"वह दिन-रात इसी के बारे में सोचता रहता है! उसे पैसों की ज़रूरत है! जब पैसा उसके पास था, तब उसे उसकी कीमत का एहसास नहीं था! अब उसे एहसास हो गया है!"
मैं उठी, कपड़े बदले और दादर पहुँच गई। एक महीने से मैंने राजकुमारी से मुलाकात नहीं की थी। जब से मैंने शिदोजी राजे को उनके घर पर देखा था, तब से मेरा उनके पास जाने का मन ही नहीं कर रहा था!
उसने दरवाजे पर दस्तक दी। राजकुमारी ने दरवाजा खोला।
‘‘हेलो समर! ओह, आपका पता कहाँ है?’’
"यहीं!"
"तुम यहाँ आसपास नहीं रहे हो?"
"मैं वापस क्यों जाऊं? यहाँ तो बड़े लोग आते हैं!"
‘‘मुझे पता है, मुझे पता है! लेकिन समर, मैं तुम्हें सच बता दूं, अब से सारे मर्द नाजायज हैं!’’
"ऐसा क्यों? मुझे शिदोजी राजेन जैसा सज्जन व्यक्ति कब मिलेगा!" समर, मैं तुम्हें कैसे बताऊँ? मैं निराश हूँ! शिदोजी राजा के सारे वादे और आश्वासन झूठे निकले। उस सज्जन को आसानी से बेवकूफ बनाया जा सकता है! पिछली बार तुम्हारी मीठी बातें मुझे पसंद नहीं आईं। लेकिन एक बात बताओ, मानव स्वभाव के बारे में तुम्हारी समझ बिल्कुल सटीक है!
"राजा, मुझे भी हाल ही में ऐसा लगने लगा है कि मुझे ऐसे बड़े लोगों से निपटना कम कर देना चाहिए! उन्हें मुसीबत में पकड़ो और उनसे हर्जाना वसूलो!"
"अगर आपको ऐसा प्रयोग करना ही है, तो देखिए, यह शिदोजी राजे तो कमाल का आदमी है! उसने उस आदमी को यहाँ बुलाया और मुझसे माफ़ी मंगवाई, और मेरा भरोसा जीत लिया। तब से वह मेरे साथ रखैल जैसा

बर्ताव करता है! जब उसका मन करता है, आता है, ठहरता है और चला जाता है, ऐसा जताते हुए जैसे उसने मुझ पर कोई एहसान किया हो!" "सच में? तो फिर ठीक है! पहले की तरह ही उनके साथ व्यवहार करते रहो। मैं देखूंगा कि उन्हें मुसीबत में कैसे डालूं!"
शिदोजी राजे मूल रूप से राजपरिवार से थे, लेकिन मैंने राजपरिवार में पैदा हुए ऐसे घिनौने व्यक्ति को कभी नहीं देखा! उन्हें मंत्री का पद मिल गया! तो आप क्या पूछ रहे हैं! वे बाजार की तरह शराब पीते थे, उनकी हालत इतनी खराब हो गई थी।
सच कहूँ तो, शिदोजिराज पर दोष लगाने या उसकी आलोचना करने का मुझे कोई हक नहीं था। आखिर मैंने औरतों की गपशप कम करने के लिए क्या किया था? लेकिन मुझमें और उनमें एक बुनियादी फर्क था। मैंने औरतों को धोखा नहीं दिया। मैंने उनकी बेबसी का फायदा उठाकर उनसे कोई संबंध नहीं बनाया। जो औरतें मेरे पास आती थीं, वे बेसब्री से मेरी संगति चाहती थीं! सलीमा ने क्या किया? कुमारी को क्या हुआ? उल्का मुझसे ऐसे प्यार करने लगी जैसे वो मेरी ही हो। काश, मैंने उस राजकुमारी को अपने मन में बसाया होता, तो कोलाबा के उस होटल में उसके साथ मजे किए होते! लेकिन उस रात मैं अलग पलंग पर सोया। मेरे पास बस पास आने की जगह थी! उसके बाद, जब भी मैं राजकुमारी के पास जाता, वो मेरा हाथ थाम लेती, कभी-कभी तो शरारत से मेरे गाल पर चुंबन भी कर देता। लेकिन मैंने कभी उसकी खुलेपन का फायदा उठाने के बारे में नहीं सोचा! इसका सिर्फ एक ही कारण था। राजकुमारी ने मुझे जीवन दिया था, और मेरे मन में उसके लिए कुछ आदर था। उसके अहंकार या लापरवाह फैसलों से मेरा वो आदर डगमगाया नहीं था! कम से कम आज तक तो नहीं! आगे क्या होगा, इसका आज अनुमान नहीं लगाया जा सकता!
"राजा, राजा शिदोजी यहाँ कब आ रहे हैं?"

"यह निश्चित नहीं है! वे ज्वार उतरने पर पत्र भेजते हैं और फिर आते हैं!"
आपके पास इस तरह के कितने टिकट हैं?
"ये तो बहुत सारे हैं! कम से कम दस या पंद्रह तो हैं ही!"
"दो महीने में दस या पंद्रह?"
"ओह, जब वे अपने निर्वाचन क्षेत्र के दौरे पर गए थे, तो उन्होंने मुझे पत्र भी भेजे थे!"
"ऐसे कितने पत्र हैं?"
मैंने कम से कम चार या छह तो रखे ही हैं!
"देखना!"
राजकुमारी द्वारा दिए गए पत्रों को पढ़ते हुए, मुझे लगा कि शिदोजी राजे एक बेहद बेशर्म आदमी का उदाहरण है। पत्र में राजकुमारी रत्नप्रभा के साथ उनके यौन संबंध का वर्णन था और यह भी उल्लेख था कि वह यात्रा के दौरान उन पलों को याद कर रहे थे! मैंने पत्रों को बड़े करीने से मोड़कर राजकुमारी से पूछा,
"इन पत्रों को पढ़कर आपने क्या सोचा?"
राजकुमारी की आँखों में जल्दी ही आँसू भर आए। "समर, मैंने तुमसे कहा था, मुझे बिल्कुल भी अंदाजा नहीं था कि पुरुष इतने भ्रष्ट हो सकते हैं! उन्होंने मुझे एक बार एक हजार रुपये दिए थे, लेकिन मैंने उस आदमी पर चार हजार खर्च कर दिए! मैंने तो उस आदमी के आराम के लिए अपने गहने तक बेच दिए!"
मैंने कहा, "मैं उन पर खर्च किया हुआ एक-एक पैसा वसूल कर लूंगा, लेकिन साथ ही उन्हें बीस हजार रुपये और भी दूंगा! बस मेरी मदद कीजिए!"
राजकुमारी के कमरे के दरवाजे पर एक वेंटिलेटर लगा था, उसमें एक छोटा सा छेद करके कैमरा लगाया गया था। रॉबर्ट के पास 35 मेगावाट

का एक बहुत शक्तिशाली कैमरा था। उसने चुपके से उसे लगा दिया और मैंने शिदोजी राजे और राजकुमारी के प्रेम प्रसंग की तस्वीरें खींचीं। उनमें से एक तस्वीर में राजकुमारी पूरी तरह नग्न थीं। उस दिन, राजकुमारी रत्नप्रभा और मैं छत पर खड़े थे। हल्की बारिश हो रही थी। इसी बीच मंत्री शिदोजी राजे आए। मुझे राजकुमारी के पास खड़ा देखकर उन्होंने कहा,-
"लगता है तुम्हारे पास करने के लिए कोई काम नहीं है! जब मैं देखता हूँ, तो तुम यहाँ किसी अल्सेशियन कुत्ते की तरह लेटे हुए हो! रत्नप्रभा, क्या तुम इसे कोई काम करने दोगी या नहीं?"
मुझे बहुत गुस्सा आया क्योंकि मुझे कुत्ता कहा गया था। मैंने अपनी मूंछों पर हाथ फेरा और दरवाजे से बाहर आकर बोला, "श्री शिदोजिराओ, आपने मुझे कुत्ता कहा, ठीक है, लेकिन आपके जैसा बेवकूफ कोई और नहीं होगा!"
यह सुनकर राजकुमारी जोर से हंस पड़ी।
"अरे हरामखोर! मैं तुम्हें क्या समझता हूँ? मैं तुझे अभी गिरफ्तार करूँगा! मैं तुझे पत्थर मारकर जेल में डाल दूँगा! मैं तेरे घर में गधे का हल चला दूँगा!"
"क्या तुमने ऐसा कहा?" मैंने अपनी जेब से उसकी नग्न तस्वीर निकाली और उसे दिखाते हुए कहा, "यह तस्वीर तुम्हारी कुर्सी को पल भर में हिला देने की ताकत रखती है! मेरी इस कामुक तस्वीर को देखो!"
"रत्नप्रभा! चंदलानी, तुमने क्या किया?" जब शिदोजी राजे रत्नप्रभा राजे को मारने के लिए दौड़े, तो मैंने उन्हें कॉलर से पकड़कर पीछे खींच लिया और कहा,-
"श्री शिदोजिराओ, यह आपकी रखैल नहीं है जिसके पीछे आप भागें! आपने अब तक उसके भोलेपन का पूरा फायदा उठाया है, आपने उसे धोखा

दिया है! आपने उसे फिल्म में नौकरी दिलाने का लालच देकर फंसाया है। अब आपको अपने सारे बुरे कामों की पूरी कहानी मेरे सामने पढ़नी होगी! मैं कल आपके महल में जाकर यह तस्वीर और सारे पत्र और नोट्स अपनी लिखावट में आपकी रानी को दिखाऊंगा! एक अल्सेशियन कुत्ता भी अपराधी की गर्दन पकड़ सकता है, समझे?"
शिदोजी राजा का नक्शा एक मिनट में पूरा हो गया। पास की कुर्सी पर बैठे हुए वे पसीने से तरबतर थे और अपने माथे से पसीना पोंछ रहे थे। बाहर बारिश हो रही थी, फिर भी शिदोजी राव को पसीना बहाते देख मुझे हंसी आ रही थी। रत्नप्रभा भी मुस्कुरा रही थीं और उन्होंने अपने चेहरे को रुमाल से ढक रखा था।
"उन पत्रों और तस्वीरों को वापस लाने के लिए आप क्या करेंगे?" शिदोजी राजा ने मुश्किल से सांस लेते हुए पूछा।
"पांच साल के लिए दो हजार रुपये प्रति माह! या फिर एक लाख बीस हजार रुपये नकद!"
"ऐसा बहुत बार हो रहा है!"
"यह तो बहुत कम है। सोचिए अगर ये पत्र और तस्वीरें कल 'मराठा' या 'सकाल' में छप जाएं तो क्या होगा!"
"मैं हाथ जोड़ता हूँ, समर! रत्नप्रभा, उसे कहो कि वह ऐसा कुछ न करे!"
"वह मेरा नौकर नहीं है, सुनो! तुम हो और वह है! तुम अपने-अपने नौकरों का ख्याल रखो!"
"लेकिन क्या आप भी मेरे साथ सार्वजनिक रूप से अपमानित नहीं होंगे?"
"तुम और कहाँ जाओगे? तुम्हारे साथ एक बार फिर! मेरा मन नहीं है!" जब राजा शिदोजी उठे और जाने लगे, तो मैंने कहा,

"वे मेरे मंत्री पद का फायदा उठाकर मेरी हत्या कर देंगे; लेकिन अगर मेरी जान को कोई खतरा हुआ, तो मैंने ऐसी व्यवस्था कर रखी है कि ये सभी तस्वीरें और पत्र अगले ही दिन प्रकाशित हो जाएंगे! याद रखना!"
-०-०-

३४
जब मैं उल्का को एक हजार रुपये लेकर आई, तो उसने आश्चर्य से मेरी ओर देखा और कहा,—
"ये क्या है? ये सारा पैसा तुम्हें किसने दिया? क्या तुमने इसे चुराया है या कुछ और?"
"चोरी नहीं, सिरजोरी! उल्कापिंड, इस दुनिया में ईमानदारी से जीना पाप है! मुझे पानी भरने की भी योग्यता चाहिए, जहाँ मैं लात मार सकूँ! मैं पिछले चार महीनों से नौकरी की तलाश में भटक रहा हूँ। किसी ने मुझे दो या ढाई सौ रुपये की भी नौकरी नहीं दी। तभी मैंने फैसला किया कि अब से मैं अपना तरीका बदलूँगा! मैं किसी से हाथ जोड़कर भीख नहीं माँगूँगा, बल्कि हाथ उठाकर अपनी मनचाही चीज़ ले लूँगा!"
उल्का ने अपने हाथ में नोट पलटते हुए कहा, "क्या तुम पागल हो, समर? अरे, ये पैसे तुम्हें कहाँ से मिले? किसने दिए?"
"ये दिए नहीं जाते, बल्कि लिए जाते हैं!"
"जिस से?"
"यह एक ऐसे गैंगस्टर से बरामद किया गया है जो अपनी ताकत और परिवार का इस्तेमाल दादागिरी करने के लिए करता है!"
मुझे आपकी कोई बात समझ नहीं आ रही!
"ऐसा न करना ही बेहतर है! जिसके पास पैसे हों, उसे चुका दो। चिंता मत करो। अब से मैं तुम्हें हर महीने एक हजार दूंगा और तुम मुझे एक हजार दोगे—"
"कौन?"
"इसी तरह कोई व्यक्ति लगातार पांच साल तक सत्ता में बना रहेगा!"

समर, उन दिनों को याद करो जब तुम जुए से पैसे कमाते थे, मुफ्त का पैसा ज्यादा दिन नहीं टिकता। और तो और, इस तरह आसानी से कमाया गया पैसा तुम्हें बाद में परेशान करेगा!
क्या स्कूल में पढ़ाने से मिलने वाली कमाई से आपको खुशी मिलती थी? पैसा न तो खुशी देता है और न ही दुख! सुख और दुख में कोई सच्चाई नहीं है! सब कुछ नजरिए पर निर्भर करता है। 'अच्छा या बुरा कुछ नहीं होता--'
यहां न तो कुछ खुशी की बात है और न ही कुछ दुख की बात है--
"क्या आपको वह कहावत याद है, 'लेकिन सोचने से ही बात सच हो जाती है'?"
"लेकिन मुझे बताओ, तुम्हें हर महीने एक हजार रुपये कौन देगा? राजकुमारी?"
मैं जोर से हँस पड़ा और बोला, "उसे उसके पति से हर महीने एक हजार रुपये गुजारा भत्ता मिलता है। अगर मैं उसे एक हजार रुपये दे दूं तो क्या वह भूख से मर जाएगी?"
"तो यह क्या है?"
"मीटियर," मैंने अचानक गंभीर होते हुए कहा, "क्या तुम जानते हो कि मैं किसी गरीब को नहीं लूटता? मैं जुआ खेलते समय चालबाज़ी करता था; लेकिन एक सज्जन और नेक इंसान भला उन बड़े ज़मींदारों के साथ जुआ कैसे खेल सकता है जिनके पास अथाह काला धन है? यही बात इस पैसे पर भी लागू होती है। मैंने एक मछली पकड़ी है। यह कम से कम पाँच साल तक मेरे गले से नहीं निकलेगी! कृपया इस पैसे के बारे में मुझसे ज़्यादा सवाल न पूछें।"
सचमुच, उस दिन के बाद उल्का ने मुझसे कभी पैसों के बारे में नहीं पूछा। उसे भी बहुत मुश्किल दिन झेलने पड़े; उसे कर्जदारों से अपमानजनक बातें सुननी पड़ीं। जब उसे बिना किसी वाजिब कारण के

स्कूल से निकाल दिया गया, तो जब वह खुद स्कूल गई, तो सेठ रतनजीभाई ने उससे मिलने तक से इनकार कर दिया। सत्य और न्याय की भी अपनी सीमाएँ होती हैं। जो लोग कुछ दिन जीना चाहते हैं और दूसरों को जीने में मदद करना चाहते हैं, उन्हें इन दोनों सिद्धांतों को थोड़ा-बहुत तोड़-मरोड़ कर पेश करना पड़ता है। जैसे किसी गाय का पीछा कर रहे कसाई से झूठ बोलना पाप नहीं माना जाता कि वह दूसरी दिशा में चली गई, उसी तरह कुमारी जैसी महिला पर हत्या का आरोप लगने पर, उसे झूठे सबूत पेश करके न्याय को थोड़ा- बहुत तोड़-मरोड़ कर पेश करना पड़ता है!
जब मैं कुछ हद तक 'आरामदायक' मूड में था, तभी रॉबर्ट मार्टिन अपना बड़ा तोंद हिलाते हुए अंदर आया और बोला, "कल शाम एक मद्रासी बारमेड आपसे मिलने आई थी। वह पूछ रही थी कि आप उससे कब मिलेंगे!" "'मद्रासी महिला? ये कौन हैं, महोदय?'" मैंने कुर्सी से उठकर खिड़की के पास आते हुए कहा।
"पता नहीं; लेकिन वह आज दोपहर तीन बजे वापस आ रही है।"
उल्का मुझे सवालिया निगाहों से देख रही थी। लेकिन मैं समझ नहीं पा रही थी कि वह मद्रासी महिला कौन थी!
मैं तीन बजे वापस आऊंगा, और आप और लिलियन आज रात खाने पर आ सकते हैं!
‘‘का?’’
"आसान!"
"चलो ना।" रॉबर्ट मुस्कुराते हुए चला गया। जब पापा का निधन हुआ, तो मार्टिन और उनकी पत्नी मुझे सांत्वना देने भवानी नगर आए थे। लिलियन ने उल्का की देखभाल की थी जब वह यहाँ बीमार थी। अगर हम ऐसा कहें तो मुंबई में कोई और ऐसा नहीं था जो हमसे इतना जुड़ाव महसूस करता हो!

"शाबाश, तुमने उन दोनों को डिनर पर बुलाया! मैं भी काफी समय से यही सोच रहा था; लेकिन मेरे पास पैसे नहीं थे, इसलिए मैं चुप रहा!"
"मेटियोर, अब से तुम्हें कोई कारोबार करने की जरूरत नहीं पड़ेगी!"
"अरे, परसों उस मिशनरी ने चर्च के पीछे वाला हॉल मुझे बच्चों के मंदिर के लिए देने पर सहमति जताई! मैंने किराए के लिए 'गरीब सहायता कोष' में नाममात्र पचास रुपये देने का भी वादा कर दिया है! लिलियन मेरी मदद करेगी। उसी के प्रयासों से मुझे चर्च के पीछे वाला हॉल मिला!"
"अच्छा तब!"
"चलो, कम से कम इतना समय तो बीत जाएगा!"
‘‘ओ ऽ के! गो अहेड! बरं, आज रात्री काय बनवतेस!’’
‘‘तू सांग!’’
"चिकन, करी, तली हुई मछली और सादा चावल!"
"ओह, मुझे चोक्सीबाई और उनके पति को भी फोन करना होगा! जब उन्हें पता चला कि मेरी नौकरी चली गई है, तो उन्होंने मुझसे एक पैसा भी नहीं लिया!"
अरे बाप रे! दोनों! मैं बाजार लेकर वर्ली जाऊंगी। देखूंगी मद्रास में मेरा इंतजार कौन कर रहा है!
दोपहर के तीन बज रहे थे। बारिश अभी-अभी रुकी थी। लेकिन सड़क गीली थी। किनारे की नालियाँ उफान पर थीं। मुंबई में गर्मी जितनी परेशान करने वाली होती है, मानसून भी उतना ही परेशान करने वाला होता है। ग्रांट रोड जैसे निचले इलाकों में मुझे कई बार कमर तक पानी में चलना पड़ा था। अगर मुझे दूर-दराज जाना होता, तो टैक्सी ड्राइवर बहुत ज़्यादा किराया वसूलते! कभी-कभी मुझे इन

टैक्सी ड्राइवरों पर इतना गुस्सा आता है जो फंसे हुए लोगों को देखकर उनसे ज़्यादा किराया वसूलते हैं कि मैं कह देती हूँ, 'मत पूछो!'
ठीक तीन बजकर दस मिनट पर, लगभग पैंतीस वर्ष की एक दक्षिण भारतीय महिला, जिसने गहरे नीले और चमकीले लाल रंग की साड़ी पहनी हुई थी, टैक्सी से उतरी। वह रॉबर्ट के पास गई और बोली, "सर, क्या आपने ठाकुरों को अलविदा कह दिया?"
"तुम्हारे सामने यह क्या है?" रॉबर्ट ने मेरी ओर इशारा करते हुए कहा।
"अरे! माफ कीजिए! श्री ठाकुर, आपने मुझे पहचाना नहीं होगा!" "मैंने तुम्हें पहले कभी नहीं देखा!" मैंने दुकान से बाहर आते हुए कहा।
मैं मीनाक्षी सुंदरम हूँ!
"मीनाक्षी सुंदरम! जी हाँ। मुझे याद है! कुमारी की दोस्त। आपके पास कुमारी की बेटी गोल्डा है, है ना?"
"जी हां, उसे इलाज के लिए लाया गया है!"
"किस तरह का इलाज?"
"उसकी आँखों से हर समय पानी बहता रहता है! मैसूर और बैंगलोर के सभी डॉक्टर उसे ठीक कर चुके हैं, अब मैं उसे दिखाने के लिए डॉक्टर को यहाँ लाया हूँ! इसके अलावा, मैं आपसे भी बहुत समय से मिलना चाहता था!"
"श्रीमती सुंदरम, मैं मिलने लायक व्यक्ति नहीं हूँ!"
"आप मना कैसे कर सकते हैं? आपने फर्नीचर बेचकर जो बीस हजार रुपये कमाए, वो ड्राफ्ट के जरिए मुझे भेजे थे। श्री ठाकुर, आजकल दुनिया में ऐसे ईमानदार लोग मिलना दुर्लभ है!"

सच कहूँ तो, मेरा व्यक्तित्व विरोधाभासी गुणों से भरा है! कुछ लोग मुझे ईमानदार समझते हैं, जबकि कुछ लोग मुझे जिद्दी समझते हैं। मुंबई में आपको बहुत कम लोग मिलेंगे जो मेरी तारीफ करते हों!
मीनाक्षी मुस्कुराई और बोली, "मुझे उस चर्चा में नहीं पड़ना है। मुझे आपकी मदद चाहिए!"
बताइए, आपको किस प्रकार की सहायता चाहिए?
"मैं गोल्डा को डॉक्टर के पास लेकर आई हूँ। मेरे पति परसों आने वाले हैं, इसलिए मैं गोल्डा की शुरुआती जाँच आज ही करवाना चाहती हूँ। आप यहाँ हैं, आपको सब पता होगा! अगर कल शाम तक उसकी रक्त जाँच, आँखों की तस्वीरें आदि पूरी हो जाएँ तो बहुत अच्छा होगा!" "चलो चलें!" मैं टैक्सी में बैठ गया। सच तो यह है कि मैं नौकरानी की बेटी गोल्डा से मिलने के लिए बेताब था।
मीनाक्षी सुंदरम बड़े होटल, होटल वेस्ट एंड में पहुँची थीं। जब हम उस कमरे में गए, तो हमने आठ साल की गोल्डा को देखा। वह बिल्कुल कुमारी की हमशक्ल थी, लेकिन उसकी आँखों और नाक पर दाऊद की परछाई थी। मैंने बच्ची को गले लगाया और अनजाने में मेरी आँखें नम हो गईं। मैंने अपनी जेब से एक रुमाल निकाला, अपनी आँखें पोंछीं और मीनाक्षी से कहा,-
"कई विद्वान कहते हैं कि मानवता का अंत हो गया है; लेकिन जब मैं आप जैसे लोगों को देखता हूँ, तो मुझे लगता है कि उनकी बातों में कोई सच्चाई नहीं है! श्रीमती सुंदरम, चलिए अस्पताल चलते हैं।" गोल्डा को ज़रा भी अंदाज़ा नहीं था कि मैं कौन हूँ, कहाँ से हूँ, या मेरी आँखों में पानी क्यों आ रहा है। वह मुझे उलझन भरी नज़रों से देख रही थी। टैक्सी में बैठने के बाद मीनाक्षी ने मुझसे पूछा, "मार्था अब कहाँ है?"

"वह गोवा गई थी! जाते समय वह बहुत रोई! वह उन लोगों में से एक थी जो कुमारी से बिना शर्त प्यार करती थी।"
"हाँ!" मीनाक्षी ने गहरी आह भरते हुए कहा, "उसे कुछ और दिन जीना चाहिए था। वह मरने के लिए इतनी बूढ़ी नहीं थी!"
"इसके अलावा, मरने का कोई अच्छा कारण नहीं था। श्रीमती सुंदरम, हम इस लड़की के सामने बात कर रहे हैं, इसलिए हम उसके दिमाग पर असर नहीं डालना चाहते, है ना?"
"चिंता मत करो! उसे मराठी समझ नहीं आती। वह सिर्फ कन्नड़ और अंग्रेजी बोलती है!"
"आप क्या कहते हैं?"
"बिल्कुल यही तो वो कहती है। वैसे भी, उसे कुमारी के बारे में ज्यादा जानकारी नहीं है। वो मुझे 'मां' कहकर बुलाती है!" ‘‘वंडरफुल!’’
"दो साल पहले कुमारी बैंगलोर आई और घर लौट आई। मैंने उसे गले लगाया और खूब रोई। लेकिन वह मुझसे पूछती है, 'मम्मी, आंटी क्यों रो रही हैं!'"
"तो?" मैंने पूछा।
"तब मैंने उसे बताया, चाची की बेटी खो गई है!"
"किसी की किस्मत कैसी होती है?" यह सुनकर मेरा गला सूख गया। "श्री ठाकुर, मैं और यह लड़की रत्नागिरी के एक स्कूल में पढ़ते थे। मेरे पिता डिप्टी कलेक्टर थे। डिप्टी कलेक्टर सुदानराम का नाम रत्नागिरी के बुजुर्गों को आज भी याद है। बाद में हमारा तबादला यवतमाल हो गया। लेकिन उस लड़की को आना-जाना लगा रहता था। बाद में उस बेचारी लड़की को एक अजीबोगरीब जिंदगी जीनी पड़ी! लेकिन मुझे वैसी दोस्त फिर कभी नहीं मिली!"
"क्या आपके पति को पता था कि वह कौन थी?"

"हाँ! यह सब समझने के बाद भी उन्होंने उसे अपने घर में पनाह दी! वे उसे अपनी बेटी से भी ज़्यादा प्यार करते हैं! अब देखिए, दक्षिण के सभी प्रसिद्ध नेत्र विशेषज्ञ उसकी आँखों से पानी आने की शिकायत लेकर आए थे। जब उनसे कोई फायदा नहीं हुआ, तो उन्होंने उसे यहाँ लाने का फैसला किया! उन्हें कुछ काम था, इसलिए मैं आगे आई!"
"गोल्डा की आँखों से गिरते आँसू उसके गालों पर बह रहे थे। वह उन्हें रुमाल से पोंछ रही थी। मुझे ऐसा लगने लगा जैसे वह एक दुर्भाग्यशाली माँ की संतान होने के कारण आँसू बहा रही हो..." "श्रीमती सुंदरम, इस गोल्डा को क्या हुआ है?"
"उसकी आंखों से पानी बह रहा है; और उसे रात में दिखाई नहीं देता, इसलिए मेरे पति ने कहा कि मुंबई में विशेषज्ञ डॉक्टर हैं, चलो उन्हें दिखाते हैं!"
वाडिया नाम के एक मशहूर नेत्र विशेषज्ञ थे। वे रविवार को रेस देखने आते थे। एक बार विलास की आंख में धूल का कण चला गया था और उसकी आंख सूज गई थी और खून बहने लगा था, तो डॉक्टर वाडिया ने उसका इलाज किया था। मैंने गोल्डा को भी उसी डॉक्टर के पास ले जाने का फैसला किया। चूंकि मैंने कुमारी के फर्नीचर की बिक्री से मिले बीस हजार रुपये मीनाक्षी सुंदरम को भेज दिए थे, इसलिए उनकी नजर में गोल्डा के लिए मुझसे ज्यादा स्नेह का पात्र कोई नहीं था, और इसमें क्या बुराई थी?
डॉ. वाडिया ने गोल्डा की बहुत सावधानीपूर्वक जांच की और कहा, "आँखों से पानी आना तो रोका जा सकता है; लेकिन रात में उसकी दृष्टि कम होने का मतलब है कि उसे 'रौघौगे ज़गुसाहुर्दाई' नामक एक गंभीर नेत्र रोग के लक्षण हैं!"
मैंने चिंता से पूछा, "क्या इसका कोई समाधान है?"

"इसका ऑपरेशन करना जरूरी है; लेकिन भारत में कोई ऐसा डॉक्टर नहीं है जो यह ऑपरेशन कर सके!"
"तो फिर वे कहाँ हैं?"
"इस तरह की आंखों की बीमारी का इलाज जर्मनी में होता है! बर्लिन और हिंडेनबर्ग में प्रसिद्ध नेत्र अस्पताल हैं!"
"हे भगवान! श्रीमती सुंदरम, अब मुझे क्या करना चाहिए?"
"वे कल आएंगे। चलिए सब बैठकर चर्चा करते हैं! अगर उम्र बढ़ने के साथ-साथ यह विकार और बिगड़ता है, तो भविष्य में उसका क्या होगा?" "ठीक है डॉक्टर साहब, उसके पापा कल आएंगे; फिर हम तय करेंगे कि क्या करना है!" मैंने कहा।
"एक मिनट रुकिए, श्री ठाकुर! रेटिनाइटिस पिगमेंटोसा नामक यह बीमारी आनुवंशिक हो सकती है! कभी-कभी सर्जरी से अस्थायी राहत मिल जाती है। साथ ही, ध्यान रखें कि जर्मनी जाकर इलाज कराना बहुत महंगा होगा!"
"इसका कितना मूल्य होगा?"
"देखिए, इस लड़की को वहाँ ले जाने के लिए हमें एक सहायक की ज़रूरत है। यानी लगभग दो लोग, या कम से कम डेढ़, मान लीजिए दो। फिर जर्मनी जाने के लिए वीज़ा, पासपोर्ट और विदेशी मुद्रा प्राप्त करने की भी कई दिक्कतें हैं! इसके अलावा, ऑपरेशन, दवाइयों और रहने-खाने का खर्च भी है! कुल मिलाकर पचास हज़ार तक खर्च हो जाएगा!"
"बस इतना ही?" मेरे मुंह से बस यही सरल सा विस्मयबोधक शब्द निकला। ऐसा लगा जैसे मैं अपनी जेब में कुछ लाख रुपये लेकर डॉक्टर वाडिया के पास गया था।
लेकिन मीनाक्षी सुंदरम डॉक्टर की बातों से परेशान लग रही थीं। कुमारी ने गोल्डा के नाम पर पैसे रखे थे। जो बीस हजार मैंने एक

दिन पहले भेजे थे, वे भी वहीं थे। लेकिन पचास हजार एक साथ खर्च करना उनके जैसी मध्यमवर्गीय महिला के लिए मुश्किल था, और यह स्वाभाविक था।
बेचारी गोल्डा! वह आठ साल की मासूम बच्ची! माँ शब्द बोलने से पहले ही वह अपनी माँ से बिछड़ गई!
जब मीनाक्षी सुंदरम होटल पहुंचीं और गोल्डा को गले लगाकर रोने लगीं, तो मैंने कहा, "श्रीमती सुंदरम, रोने का कोई फायदा नहीं! हमें इससे निकलने का रास्ता ढूंढना होगा!"
मुझे कोई रास्ता नजर नहीं आ रहा। अगर मेरी बच्ची अंधी हो गई तो उसका क्या होगा!
यह बच्चा किसका था और इस दुःख का कारण कौन था?
मैंने होटल वेस्ट एंड से यह वादा करके प्रस्थान किया कि मैं अगले दिन मीनाक्षी सुंदरम से मिलूंगा।
शाम ढल चुकी थी। गाड़ियाँ अभी भी आ-जा रही थीं। मैं होटल की इमारत से बाहर निकला और लगभग एक फर्लांग चला। मेरा दिमाग विचारों से भरा हुआ था। गोल्डा के हल्के सुनहरे बाल, नीली आँखें और माथे से निकली पिरामिड जैसी नाक, ये सब मेरी आँखों के सामने आ गए। दाऊद मोहम्मद की गहरी छाया इस लड़की के चेहरे पर होने के बावजूद, वह एक कुंवारी लड़की के कोमल शरीर के साथ पैदा हुई थी। गोल्डा के बारे में सोचते हुए, मैं वेस्ट एंड सिनेमा की ओर बढ़ा। यहाँ की बड़ी-बड़ी कपड़ों की दुकानें, सिनेमाघर और होटल 'वेस्ट एंड' कहलाते थे। वहाँ के एक बार में विदेशी शराब भी मिलती थी! रॉबर्ट मार्टिन आज घर पर डिनर के लिए आ रहे थे, इसलिए मुझे भी आधी स्कॉच खरीदने का मन हुआ।

मैंने आधा 'वॉट' लेते हुए दो पेग लिए और एक सिगरेट जलाई। जैसे ही मैं जाने वाला था, जोसेफ मेरे सामने आ गया। यह जोसेफ होटल मिल्टन का आजीवन सदस्य था! मुझे देखते ही वह चौंक गया।
"हेलो समर! अरे, तुम्हारा पता कहाँ है?"
"यह यहीं है!"
"उस दिन के बाद तुम कभी मिल्टन नहीं आए! लेकिन तुमने उस दिन दाऊद मोहम्मद की बुरी तरह पिटाई की थी! वह आठ दिनों तक बिस्तर पर पड़ा रहा। उसे तुम्हारा चश्मा नहीं तोड़ना चाहिए था और तुम्हारा अपमान नहीं करना चाहिए था!"
"तुम्हारा क्या मतलब है? क्या तुम्हें लगता है कि मैंने जो किया वह सही था?"
"मेरा मतलब है! सिर्फ इसलिए कि आपको नुकसान हुआ है, आप अपने प्रतिद्वंदी पर गुस्सा नहीं करना चाहेंगे!"
"तो दाऊद मोहम्मद ने आप लोगों को यह नहीं बताया कि उसने अपना चश्मा क्यों तोड़ा?"
"नहीं, आप क्यों पूछ रहे हैं?"
"जोसेफ, चलो हम सब एक-एक पेग स्कॉच पीते हैं!"
शराबबंदी के दौरान मुंबई में शराब का कारोबार खूब फला-फूला। गांधीवादी विचारधारा के बड़े-बड़े नेता शराब के खिलाफ आवाज उठा रहे थे। वे पूरे भारत में शराबबंदी के नारे लगा रहे थे। लेकिन उनका व्यावहारिक दृष्टिकोण अलग था। यह एक निर्विवाद तथ्य था कि शराबबंदी के बाद शराब पीने वालों की संख्या बढ़ गई। 'वेस्ट एंड' बार इसका प्रमाण था।
‘‘चीअर्स जोसेफ!’’
‘‘चीअर्स, समर!’’
मैंने पूछा, "क्या दाऊद वहां आया था?"

"हाँ! वह आज मिल्टन भी आ रहा है। आज उसकी पार्टी है!"
"किस बारे मेँ?"
"उसकी शादी हो चुकी है!"
"किसके साथ?"
"रीटा के साथ!"
हे भगवान! क्या वह लड़की इतनी खूबसूरत है?
‘‘हा हा! दॅट टॉल स्लीम लेडी, वुइथ कम टु बेड आइज! यु रिमेंबर हर?’’
"बिल्कुल! लेकिन उस चीनी लड़की का क्या हुआ?"
वह भाग गई!
"भाग निकलना, और वो भी मिल्टन की कड़ी सुरक्षा से?"
"हाँ! वह चीनी थी!"
"जोसेफ, मुझे दाऊद मोहम्मद से थोड़ी देर बात करनी है।"
"तो मुझे बताओ, ठीक है? चलो ना, वो आज ज़रूर आएगा।"
"नहीं! अगर मैं आऊँगी तो उसे अतीत का गुस्सा याद आ जाएगा और वह मुझे डांटेगा! इसके बजाय, मैं उससे फोन पर बात करूँगी; लेकिन मुझे उसका नंबर नहीं पता।"
"डबल चार-छह-नौ-चार-तीन। लेकिन यह नंबर तो एक निजी व्यक्ति के नाम पर है! आपको डायरेक्टरी में मिल्टन होटल का नाम भी नहीं मिलेगा।"
"मैंने ध्यान दिया।"
मैंने घड़ी देखी, साढ़े सात बज रहे थे। जोसेफ आराम से बैठा सिगरेट पी रहा था और कश लगा रहा था। मिल्टन जाने से पहले मैं उससे बात करना चाहता था और दाऊद को कुछ सुझाव देना चाहता था। मैंने जोसेफ को एक और पेग दिया और उसी 'गुप्त' बार से चार-छह-नौ- चार-तीन नंबर पर फोन किया।

‘‘हॅल्लोऽ! सॉलेभाय स्पीकिंग.’’
"सोलभाई? मैं समर ठाकुर बोल रहा हूँ।"
‘‘अरे व्वा! क्या बात है समरभाई?’’
"मुझे दाऊद से बात करनी है! मुझे लगा कि वह आ रहा है, इसलिए मैंने उसे अंगूठी दे दी।"
"अरे भाई, बस हो गया भाई! दाऊद, तुम्हारा फोन बज रहा है!" मुझे साफ-साफ सोलेभाई की फोन पर चिल्लाने की आवाज सुनाई दी। एक मिनट के अंदर ही रिसीवर से आवाज आई।
‘‘हॅल्लो! कौन बात कर रहा है?’’
"मैं समर ठाकुर हूँ! दाऊद, सबसे पहले मैं तुमसे माफी मांगता हूँ! मैंने उस दिन तुम्हारे साथ दुर्व्यवहार किया था।"
‘‘अरे भाई, छोड़ो! क्या मैंने तुम्हें कम नुकसान पहुंचाया? मैंने गुस्से में तुम्हारे कीमती चश्मे तोड़ दिए हैं। "तुम्हारे द्वारा तोड़े गए उन चश्मों की वजह से मैं अंधा नहीं हुआ; लेकिन आज तुम्हारा एक निर्दोष बच्चा अंधा होने की कगार पर है।"
"आपने क्या कहा? मुझे कुछ समझ नहीं आया।"
मैं आपसे आधे घंटे बात करना चाहता हूँ।
"तो मिल्टन आ जाओ। लेकिन क्या तुम्हें आने से डर लग रहा है? रुको, मैं तुम्हारे पास आऊंगा। तुम कहाँ से बात कर रहे हो?" "वेस्ट एंड बार से। देखिए, यह वेस्ट एंड टॉकीज के पीछे लॉबी में है।"
"क्या आप मुझे मुंबई में किसी बार का पता बता सकते हैं? अरे, वेस्ट एंड का वो बारमैन मुझसे स्कॉच खरीद रहा था। रुकिए, मैं अभी वापस आता हूँ! लगता है आप जोसेफ से मिल चुके हैं।"
"आपको कैसे मालूम?"

"तुम्हें तो उससे ही पता चल गया था कि मैं आज मिल्टन के साथ हूँ! तुमने उस दिन मजाक में कहा था कि मैं हर देश का पानी पीता हूँ।" ‘‘हो.’’
''ओऽ के. आय अॅम कमिंग.''
मुझे पता था कि दाऊद के आने पर हमारी बातचीत एक-दो घंटे तक चलेगी। मुझे यकीन था कि उल्का, मार्टिन लिलियन, चोक्सीबाई और उनके पति वहाँ मेरा इंतज़ार कर रहे होंगे। तभी मेरे मन में एक विचार आया। मैंने चोक्सीबाई को फोन किया।
‘‘हॅलो, डॉक्टर चोक्सी स्पीकिंग!’’
"मैडम, मैं समर ठाकुर बोल रहा हूँ!"
"अरे! श्री ठाकुर, फोन करने की कोई जरूरत नहीं थी। हम साढ़े आठ बजे निकल रहे हैं!"
चोक्सीबाई को एहसास हो गया था कि मैं उन्हें रात के खाने पर आने की याद दिलाने के लिए फोन कर रहा हूँ, इसलिए उन्हें सब कुछ बताना पड़ा।
"महोदया, मैं वेस्ट एंड सिनेमा से बोल रहा हूँ। कई सालों बाद मेरी मुलाकात अपने बचपन के एक दोस्त से हुई। वो बेरूत में है। वो रात को हवाई जहाज से वापस आ रहा है। मैंने आप लोगों को रात के खाने पर बुलाया था; लेकिन मैं नहीं आ सकता, इसलिए मुझे माफ़ कर दीजिए, और आप उला को समझा दीजिए! मैं आपसे हाथ जोड़कर विनती कर रहा हूँ। और अगर मैं आपको बता दूँ कि मैं आज क्यों नहीं आ सकता, तो आप मुझे माफ़ कर देंगी! लेकिन उला को समझाना मुश्किल है! कृपया, आप रात के खाने पर जाइए और उला को समझा दीजिए!"
"अरे, चिंता मत करो। मैं और रूसी जा रहे हैं। मैं लिलियन मार्टिन और रॉबर्ट मार्टिन को तुम्हारी 'अक्षमता' के बारे में बता दूँगा। तो क्या बात है?"

मैंने राहत की सांस ली। जोसेफ ने बचा हुआ गिलास एक ही घूंट में संतुष्टि के साथ खत्म कर दिया!
दाऊद ने हमेशा की तरह कपड़े नहीं पहने थे। उसने क्रीम रंग का फलालैन सूट पहना हुआ था। उसके हाथ में 555 सिगरेट का एक गोल डिब्बा था। आते ही उसने मुझसे हाथ मिलाया। यह देखकर कि मैं दाऊद से कुछ निजी बात करना चाहता हूँ, जोसेफ एक तरफ हट गया। दाऊद और मैं वेस्ट एंड बार के निजी कमरे में चले गए।
"बोलो! क्या कह रहे हो?" दाऊद ने अपनी टाई की गांठ ढीली करते हुए पूछा।
"दाऊद, तुम्हारी कुंवारी मां से जन्मी बेटी आज मुंबई पहुंच गई है।"
"क्या?" दाऊद ने मेरा हाथ कसकर पकड़ते हुए और ऐसा चेहरा बनाते हुए कहा मानो मैंने कोई चमत्कारिक बात कह दी हो।
क्या उस कुंवारी ने तुमसे कोई बेटी पैदा की थी?
"जी हां! पेरिस में जन्मी।"
"उसके बाद क्या आपको उसके ठिकाने के बारे में पता था?"
"सच में नहीं। नौकरानी को डर था कि मैं बच्ची को अपने साथ ले जाऊँगा; इसलिए उसने मुझे बताया कि बच्ची चार महीने की उम्र में ही चली गई थी। मैंने भी कोई खास 'दिलचस्पी' नहीं दिखाई! लेकिन आप कह रहे हैं कि बच्ची ज़िंदा है?"
‘‘हो.’’
"लेकिन वह मुझसे क्यों पैदा हुई?"
"जब आप उसे व्यक्तिगत रूप से देखेंगे तभी आपको समझ आएगा।"
"'तुम ऐसा कहते हो? तो चलो चलते हैं!'"
हम दोनों उस होटल में पहुँचे जहाँ मीनाक्षी सुंदरम ठहरी हुई थीं। खाना खाने के बाद वह सोने की तैयारी कर रही थीं। जब मैंने

श्रीमती सुंदरम को एक तरफ ले जाकर बताया कि मेरे साथ आए सज्जन कौन हैं, तो उनके चेहरे से शंका और भय गायब हो गया।
दाऊद गोल्डा को घूरता रहा। उसका खूबसूरत सुनहरा माथा, माथे से उभरती पिरामिड जैसी नाक। उसके बालों की हल्की सुनहरी आभा और जिवानी से उसकी समानता देखकर दाऊद धीरे-धीरे आगे बढ़ा और गोल्डा को उठाकर अपने सीने से लगा लिया। गोल्डा अपनी जन्म देने वाली माँ को देखकर भयभीत हो गई, जिसे उसने पहले कभी नहीं देखा था।
दाऊद की आँखों में आँसू भर आए थे। वह एक स्वर में बुदबुदा रहा था, "मेरा बच्चा! यह सब मेरा है।"
गोल्डा को नीचे उतारने के बाद, वह मेरी ओर मुड़ा और बोला, "समर, बोलो, क्या समस्या है?"
मैंने उन्हें सब कुछ बताया और कहा, “श्रीमती सुंदरम और उनके पति ने उन्हें अपने बच्चे की तरह पाला-पोसा। लेकिन पिछले छह महीनों से उन्हें ‘रेटिनाइटिस पिगमेंटोसा’ नामक आँखों की बीमारी है। आज हमने उन्हें यहाँ डॉक्टर वाडिया को दिखाया। उन्होंने कहा कि इस बीमारी के लिए उनका ऑपरेशन करना पड़ेगा, और जर्मनी में केवल दो ही जगहें हैं जहाँ यह ऑपरेशन हो सकता है। एक बर्लिन में और दूसरी हिंडेनबर्ग में।”
"अच्छा। बताओ मुझे क्या करना चाहिए? मैं सामने आ जाता; लेकिन पिछले महीने मेरे एक माल को जर्मन पुलिस ने ज़ब्त कर लिया। वे मेरे पीछे पड़े हैं। अगर मैं गया, तो मुझे गिरफ़्तार समझ लेना। तुम जाओ। मैं तुम्हारे खर्चों का इंतज़ाम कर दूंगा। मैं तुम्हारे वहाँ के खर्चों के लिए जर्मन मुद्रा का भी इंतज़ाम कर दूंगा। बर्लिन में मेरा एक दोस्त है। 'एडॉल्फ गेराल्ड, उनतीस, नाज़ी चैंबर्स, यह पता याद रखना।'"

मैंने झटपट नाम और पता कागज पर लिख लिया।
"समर, मैं आज रात ही आपके यात्रा खर्च का इंतजाम कर दूंगी। आपको बस जल्दी से अपना पासपोर्ट और वीजा बनवाना होगा। अगर आपके पास पहचान पत्र है, तो ये सब काम जल्दी हो जाएंगे।"
मैंने कहा, "दाऊद, मैं कल सुबह इस पर काम शुरू कर दूंगा।"
दाऊद ने जाते समय गोल्डा के गाल पर चुंबन किया और अपनी जेब से जितने भी नोट उसके पास थे, निकालकर गोल्डा को खाने के लिए दे दिए। जब मैं उसे लिफ्ट में छोड़ने नीचे आया, तो उसने मेरा हाथ कसकर पकड़ लिया और कहा, "समर, बच्चे की आंखें ठीक होनी चाहिए, पैसों की चिंता मत करो।"
"डेविड, मैंने बहुत बड़ा पाप किया है। मुझे तुम पर हमला नहीं करना चाहिए था।"
"अरे छोड़ो यार। क्या मैंने तुम्हारा 'फ्लश' हमेशा के लिए बंद नहीं कर दिया था? ये चश्मा तुमने कहाँ से लिया?"
"एक दोस्त ने मुझे यह ऐसे ही दे दिया।"
दुनिया का कोई भी आदमी अपने दोस्त को ऐसी चीज नहीं देगा। इसके लिए या तो उसे मारना पड़ेगा या चुराना पड़ेगा।
"लेकिन क्या तुमने होटल मिल्टन में उन गिलासों का रहस्य नहीं बताया था?"
"मुझे इसके बारे में क्यों बात करनी चाहिए? अगर मुझे उस समय वो चश्मा मिल जाता, तो मैं मिल्टन में खेल ही नहीं पाता," दाऊद ने मुस्कुराते हुए कहा।
"लेकिन सच कहूँ तो, उस दिन के बाद से मैं होटल मिल्टन गया ही नहीं। मुझे लगा कि अगर मैंने उन्हें उन चश्मों का राज बता दिया, तो वे मुझे धोखा देने के लिए पीट देंगे।"

दाऊद जोर से हँसा और बोला, "लोगों को धोखा देने वाले हमेशा कायरों की तरह व्यवहार करते हैं, मुझमें क्या कमी है? हम हर साल करोड़ों रुपये का कारोबार करते हैं; लेकिन हम लगातार डरते रहते हैं। हम दिखावा करते हैं कि हम कायर नहीं हैं!"
जैसे ही हम कार तक पहुँचे, दाऊद ने मेरी पीठ पर हाथ रखा और कहा, "मैं कल ठीक ग्यारह बजे यहाँ आ जाऊँगा। तब तक तुम अपने पासपोर्ट की तैयारी शुरू कर सकते हो।"
दाऊद के जाने के बाद, मैं वेस्ट एंड होटल लौट आया। मीनाक्षी सुंदरम ने मुझे देखा और कहा, "तुमने इस आदमी को बिलकुल सही समय पर ढूंढ लिया है!"
"क्या बात है, श्रीमती सुंदरम, यह लड़की तो बहुत भाग्यशाली है! हम दोनों तो यहाँ उसका इलाज कर सकते थे; लेकिन जहाँ इलाज की ज़रूरत है, वहाँ ऐसा करना थोड़ा मुश्किल होता!"
"लगभग नामुमकिन! मुश्किल कैसे कह सकते हैं? कुमारी ने अपने नाम पर जो पैसा जमा कराया है, वह अठारह साल की होने तक निकाला नहीं जा सकता। आपने जो बीस हज़ार भेजे हैं, उनका क्या होगा? खैर, एक बार उसकी आँखें हमेशा के लिए चली गईं, तो उसका पूरा जीवन बर्बाद हो जाएगा!"
मैं कल आऊंगा। ठीक ग्यारह बजे!
जब हम बांद्रा स्थित अपने घर पहुंचे तो रात के 1:30 बज रहे थे। दरवाजा खोलने आई उत्का को मेरी सांसों की गंध आई।
"तुम गोबर खाने कहाँ गए थे?"
मैंने कुछ नहीं खाया है। काम खत्म करके मैं सीधे यहाँ आ गया।
अगर कुछ बचा है तो उसे बढ़ा दीजिए!

"□□□ □□□ □□ □□□□ □□□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□ □□ □□ □□□□ □□□□ □□□ □□□ □□□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□, □□□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□□□?"

□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□ □□□□ □□□□ □□□ □□□ □□, □□□□□ □□ □□□ □□□ □□ □□□□ □□□□ □□□ □□□ □□□ □□□

-□-□-

३५
पासपोर्ट, वीजा-विदेशी मुद्रा! सुबह उठते ही मुझे एहसास हो गया कि वीजा के बिना ये काम जल्दी नहीं हो पाएंगे। लेकिन आज ग्यारह बजे मुझे तय करना था कि गोल्डा के साथ जर्मनी कौन जाएगा। अगर मुझे दाऊद के पैसों से गोल्डा के इलाज के लिए मुफ्त में जाने की इजाजत मिल जाती, तो यह स्वार्थी और परोपकारी दोनों होता, लेकिन मैं नहीं जा सकता था। यह जरूरी था कि सुंदरम या मीनाक्षी गोल्डा के साथ जाएं।
सुंदरम सुबह पहुंचे। जब मैं होटल पहुंचा, तब तक उन दोनों की बातचीत पूरी हो चुकी थी। सुंदरम ने मुझसे कहा, "श्री ठाकुर, आपने हमारी बहुत मदद की है!"
"मुझे कितना बड़ा उपकार मिला है!" मैंने उसका हाथ अपने हाथ में लेते हुए कहा।
"अरे, ये किसकी बेटी है? बचपन में इसकी परवरिश किसने की? और इसका इलाज कौन करवा रहा है? आपको क्या चाहिए था?"
"महोदय, मैंने उसकी माँ का खाना खाया था और अगर आप चाहें तो मैं उस दिन उसके घर पर नहीं था; इसीलिए मुझे लगता है कि उसने आत्महत्या की। मुझे इस बात का अफ़सोस ज़िंदगी भर रहेगा! अगर दाऊद ने आर्थिक मदद न की होती, तो मैं पूरी दुनिया घूमकर उसे जर्मनी लाने का इंतज़ाम करता।"
सुंदरम का चेहरा कृतज्ञता से चमक उठा। दाऊद ग्यारहवें समूह में आया। उसके हाथ में एक ब्रीफकेस था, जैसा कि वह ताश खेलने आते समय अक्सर करता था। मैंने उसका और श्री सुंदरम का परिचय कराया। गोल्डा नीले रंग की फूलों वाली फ्रॉक पहने वहाँ बैठी थी। उसे नहीं पता था कि यह लंबा आदमी कौन है जो बिल्कुल उसी की तरह दिखता था। वह मुझे भी अजीब नज़रों से देख रही थी।

दाऊद ने वादा के मुताबिक सुंदरम को पचास हजार रुपये दिए और कहा, "शायद आप लोग सोचेंगे कि यह आदमी बेवकूफ है। अगर वह एक वेश्या से पली-बढ़ी लड़की पर इतना पैसा खर्च करता है तो वह पागल ही होगा।" "लेकिन मुझे पूरा यकीन है कि यह वही लड़की है जो पेरिस में एक कुंवारी माँ से पैदा हुई थी। अगर आपने उसे हज़ार लड़कियों में से चुना होता, तो मैं उसे पहचान लेती! मैं बचपन में कितनी अलग दिखती थी!"
दाऊद एक तस्कर था; एक अंतरराष्ट्रीय अपराधी। वह उन वस्तुओं का निर्यात करता था जिन पर फ्रांस, इंग्लैंड और जर्मनी में आयात प्रतिबंधित था। भारत में सोना और शराब प्रतिबंधित होने के बावजूद, वह हर दो महीने में शराब और सोना भारत में आयात करता था। वह खूब पैसा कमा रहा था। उसके पास खूबसूरत बच्चे थे। वह मिल्टन जैसे होटलों में जुआ खेलता और शराब पीता था; लेकिन इन सबके बावजूद, उसके अंदर का 'पुरुष' जागृत था। एक युवा वेश्या, कुछ दिनों की अनुपस्थिति के बाद, वह उसे फ्रांस ले जाता, जहाँ उसकी डिलीवरी होती, और वह भारत लौट आती, और फिर उनका रिश्ता टूट जाता। मुंबई पुलिस विभाग और गडकरी जैसे कठोर पुलिस अधिकारी दाऊद को पकड़ने के लिए पूरी तरह तैयार थे। लेकिन दुर्भाग्य से, उसी की हत्या कर दी गई। किसी को भी यह विश्वास दिलाना आसान नहीं था कि ये सभी घटनाएँ सच थीं। लेकिन यह सच था। इसमें जरा भी अतिशयोक्ति नहीं थी। मैं इस असाधारण मानवीय जीवन के नाटक को करीब से देखता रहा, और मैं अक्सर सोचता था कि यह सब कैसे हो सकता है।
दाऊद के जाते समय उसने मुझसे पूछा, "क्या मुझे वीजा के लिए आपकी आईडी या पासपोर्ट की जरूरत है?"
"जी हां। मैं अभी सुंदरम को ले जाऊंगा!"

"वहाँ पहुँचने के बाद एडॉल्फ गेराल्ड से मिलना, वो बहुत अच्छे इंसान हैं। शायद वो तुम्हारी मदद करेंगे! और अगर मुझे पता चला कि जर्मन पुलिस ने गश्त थोड़ी कम कर दी है, तो मैं भी तुमसे मिलने आऊँगा! लेकिन मैं आज जैसा नहीं दिखूँगा! मैं पूरी तरह सज-धज कर और मेकअप लगाकर आऊँगा!"
जाते समय दाऊद ने गोल्डा को गले लगाया और कहा, "तुम्हारी यात्रा मंगलमय हो और तुम जल्दी स्वस्थ हो जाओ, मेरी प्यारी बच्ची! श्रीमान और श्रीमती सुंदरम, आपका धन्यवाद! फिर मिलेंगे, गर्मियों में!"
दाऊद के जाने के बाद हम तीनों काफी देर तक एक दूसरे को देखते रहे।
"यह तो वाकई अद्भुत है, श्री ठाकुर! मुझे अभी भी ऐसा लग रहा है जैसे मैं सपने में हूँ!" सुंदरम ने कहा।
मैं हँस पड़ा और बोला, "यह सब मुझे भी सपने जैसा लग रहा है; लेकिन मुझे एक बहुत ही मिलती-जुलती वास्तविक घटना याद है!"
"कौन सी?" सुंदरम ने सिगरेट जलाई।
आठ-दस साल पहले मुंबई के कोलाबा में एक चर्च के प्रांगण में एक युवती मृत पाई गई। एक छोटी बच्ची मृत महिला का दूध पी रही थी। चर्च के पीछे रहने वाले रेवरेंड सैमुअल टहलते हुए निकले और उन्होंने यह दृश्य देखा। उन्होंने पुलिस को सूचना दी। पुलिस मौके पर पहुंची। शव का पोस्टमार्टम किया गया। बच्ची केवल एक वर्ष की थी; लेकिन वह बहुत प्यारी थी। गोरी त्वचा, हरी आंखें, गुलाबी गाल, सुनहरे बाल! पुलिस को लगा कि मृत महिला किसी एंग्लो- इंडियन व्यक्ति के घर में दाई या नौकरानी का काम करती होगी। बच्ची को अनाथालय भेज दिया गया और महिला का पोस्टमार्टम किया गया। महिला सांवली रंगत, चमकदार नाक और घुंघराले बालों वाली एक

आम दक्षिण भारतीय महिला जैसी दिखती थी। शव और बच्ची की तस्वीरें ली गईं और सभी समाचार पत्रों में प्रकाशित की गईं और लोगों से अनुरोध किया गया कि यदि उनके पास तस्वीर में दिख रही महिला के बारे में कोई जानकारी हो तो वे पुलिस से संपर्क करें। लेकिन छह महीने बीत जाने के बाद भी, उस महिला या उस छोटी बच्ची के बारे में कोई जानकारी देने के लिए कोई आगे नहीं आया है।
"तो क्या हुआ?" मीनाक्षी ने बेसब्री से पूछा।
पुलिस ने सोचा, "तो क्या हुआ, इस जांच से कुछ नहीं निकलेगा!"
"इस महिला की मृत्यु का कारण क्या था?" सुंदरमणि ने पूछा।
"जी हां, मैं यह बताना भूल गया था।" डॉक्टर ने मृत्यु का कारण बताया, "मृत्यु निमोनिया और कुपोषण के कारण हुई।"
"मैं समझ गया! अच्छा, आगे क्या हुआ?"
"जांच अधिकारी शिकायत की पड़ताल करने कोलाबा के एक वेश्यालय में गए। उस समय कोलाबा में कई आलीशान वेश्यालय थे। वहां शांति नाम की एक बहुत ही बुद्धिमान और मिलनसार वेश्या थी। अधिकारियों ने उससे पूछा, 'शांति, वह दक्षिणी महिला जिसका शव गिरजाघर परिसर में मिला था, उसका कोई सुराग नहीं मिल रहा है।'"
शांति ने पूछा कि उसके शरीर पर क्या-क्या मिला था।
शरीर पर एक भी मोती नहीं था। लेकिन मुझे कमर के चारों ओर लिपटी साड़ी में दस-बीस नोट मिले, जिन पर 100 का नोट, 400 का नोट, 350 का नोट लिखा हुआ था। कुल मिलाकर ऐसे दस-पंद्रह छोटे नोट मिले! ‘बिल्कुल सही!’ शांति ने मुस्कुराते हुए कहा, ‘‘अब बात समझ में आ गई! देखिए फौजदार साहब, जब ये अमेरिकी नाविक इन नावों से भारत आते हैं, तो खूब मौज-मस्ती करते हैं। उन्हें खासकर काले बच्चे बहुत पसंद आते हैं। ऐसे समय में, जब उनके पास पैसे खत्म हो जाते हैं, तब भी वे बच्चों के साथ खेलते हैं और उन्हें प्यार का संदेश

देते हैं और उन पर हस्ताक्षर करते हैं। कुछ बच्चों के नाम जेम्स होते हैं, कुछ के नाम विलियम्स और कुछ के नाम बॉब!’’
"लेकिन इन नोटों का क्या उपयोग है?" सैनिकों ने पूछा।
"उपयोगी? हाँ, अगली बार जब वे नाविक भारत आते हैं, तो वे उन वेश्याओं के बिल देखते हैं जिनसे उन्होंने पैसे उधार लिए हैं, शेष राशि का भुगतान करते हैं, और उसके बाद ही अगली बार उनका आनंद लेते हैं।"
"हे भगवान! क्या आप इस नाविक, शांति आईओयू जेम्स को जानते हैं?" "जेम्स को देखे बिना मैं यह नहीं बता सकता कि वह कौन है; लेकिन अगर कोई अमेरिकी जहाज गोदी में आता है, तो हम लिखावट देखकर जांच कर सकते हैं!"
"इसी आधार पर कामी फौजदारों ने पता लगाया कि जेम्स कौन था। उन्होंने उस वेश्या के बारे में काफी जानकारी जुटाई और अमेरिका में उसके पते पर एक विस्तृत पत्र भेजा। उस पत्र में उन्होंने मृत वेश्या और लड़की की एक तस्वीर भी शामिल की। उस पत्र में उन्होंने लिखा,
मुंबई की एक वेश्या, जेम्स, पिछले एक साल से आपकी जासूसी कर रही थी; लेकिन जब उसे पता चला कि आप ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड जा रहे हैं, तो वह चर्च गई और वहाँ के पादरी के माध्यम से आपको एक पत्र भेजा। वह अपनी बेटी को भी साथ ले गई और कोलाबा के चर्च में ही उसकी मृत्यु हो गई। उस पत्र में उसने यह भी लिखा था कि आपके जाने के बाद उसने वेश्यावृत्ति का धंधा बंद कर दिया था और मरने से पहले वह अपनी बेटी को आपको देना चाहती थी।
"तो आगे क्या हुआ?" उस खूबसूरत जोड़े ने अचानक पूछा।
"अरे, चिट्ठी मिलने के आठवें दिन जेम्स कोलाबा पुलिस स्टेशन आया। पुलिस बच्ची को लेकर आई। उसने बच्ची को गले लगाया और रोने

लगा। उसने कहा, 'यह मेरी बच्ची है' और आठ दिन बाद, वह बच्ची को हवाई जहाज से अमेरिका ले गया!"
"क्या, तुम्हारा क्या मतलब है?" सुंदरम ने मुझसे पूछा।
"यह बिल्कुल सच है। दाऊद के मामले में ऐसा क्या अलग हुआ है?" "बिल्कुल सही! दोनों घटनाएं 'एक जैसी' हैं!"
"इसलिए मानव जीवन ऐसी नाटकीय घटनाओं से भरा पड़ा है। अगर हम विशुद्ध रूप से व्यावहारिक दुनिया में लोगों को यह भी बता दें कि ये घटनाएँ सच हैं, तो भी वे वास्तविक नहीं लगेंगी!"
"अरे वाह!" सुंदरम ने अपनी बुझती सिगरेट को ऐशट्रे में बुझाते हुए कहा, "श्री ठाकुर, इन सभी मामलों में से, दाऊद साहब के साथ आपकी मुलाकात हमारे जीवन की सबसे अविस्मरणीय घटना है!" "धन्यवाद! तो क्या हमें पासपोर्ट कार्यालय चलना चाहिए?" मैं। "जी हां! अगर हम अभी से इस पर काम शुरू कर दें, तो चार से आठ दिनों में हमारे पास सभी दस्तावेज आ जाएंगे!"
"चिंता मत करो! हमारा काम उससे पहले ही पूरा हो जाएगा!" मैंने आत्मविश्वास से कहा।
मैं सुंदरमना को सचिवालय ले गया, सीधे शिदोजी राजे के केबिन में। मुझे देखते ही वो चौंक गए। "जी हाँ, समर, तुम यहाँ हो?" उन्हें लगा होगा कि मैं उन्हें किसी और मुसीबत में फंसा रहा हूँ।
"यह थोड़ा ज़रूरी काम है! हे श्रीमान सुंदरम! उनकी बेटी को इलाज के लिए जर्मनी ले जाना है। उनकी पत्नी भी उनके साथ जा रही हैं। हमें पासपोर्ट, वीज़ा आदि की ज़रूरत होगी - साथ ही कुछ विदेशी मुद्रा की भी!"

शिदोजी राजा ने तुरंत अपने निजी सहायक को बुलाया और उन्हें आदेश दिया कि वे हमारी ज़रूरत की चीज़ें तुरंत उपलब्ध कराएँ। जो काम आठ दिनों में नहीं हो सका, वह तीसरे दिन ही हो गया!
मैं खूबसूरत जोड़े गोल्डा और सुंदरम को विदाई देने सांता क्रूज़ हवाई अड्डे गया था। आधी रात हो चुकी थी और हल्की-हल्की बारिश हो रही थी। फिर भी, उड़ान सुचारू रूप से चल रही थी। "कृपया ध्यान दें, बर्लिन जाने वाले यात्रियों से अनुरोध है कि वे चेक-रूम में आएं!" यात्रियों को जांच के लिए चेक-रूम में बुलाया गया। इस समय मैंने उन सभी को अलविदा कहा।
अरब सागर के ऊपर से एयर इंडिया का विशाल विमान ओझल होने के बाद मैं बांद्रा स्थित अपने घर लौट आया। सुबह के 3:30 बज चुके थे। इस बार भी उल्कापिंड मेरे पास आया।
"समर, तुम आजकल हमेशा देर से आती हो! यह अच्छा संकेत नहीं है!" मैंने हंसते हुए कहा, "उल्का, मैं पिछले चार-पांच दिनों से एक महत्वपूर्ण काम में व्यस्त थी। मैं कल शाम 7:30 बजे घर वापस आ जाऊंगी!"
"वह किस तरह का महत्वपूर्ण काम था? क्या आप उसे मुझसे छिपाना चाहते थे?"
"बिल्कुल नहीं! मैं तुम्हें बता रहा हूँ!"
मैंने उल्का को सब कुछ बताने का फैसला किया। मैं उल्का को तब तक बताती रही जब तक बाहर की रोशनी कमरे में नहीं आ गई, और उल्का आँखें खोलकर मेरी बातें सुन रही थी।
उसकी आँखों में आँसू भर आए जब उसने मुझे बताया कि वह उन तीनों को विदाई देने आई है। उसने अपना हाथ मेरे शरीर पर रखा और कहा, "समर, भले ही तुम असली पिता न हो, तुमने उस बच्ची के प्यार के लिए जो किया वह अनमोल है! राजा, मुझसे कुछ गलतफहमी हो गई होगी!" उल्का

ने मुझे गले लगाते हुए कहा और चार दिन-रात की मेहनत पल भर में दूर हो गई।
उस दिन मैंने दोपहर 12:30 बजे तक सोने का रिकॉर्ड बनाया। रात को चाहे मैं कितनी भी देर से सोऊं, सुबह 8 बजे के बाद कभी बिस्तर पर नहीं जाती थी। लेकिन उस दिन मुझे इतनी गहरी नींद आई कि मुंबई के शोर का मुझ पर जरा भी असर नहीं हुआ। यहां तक कि उल्कापिंड की आवाज भी मुझे नहीं जगा पाई।
मैं 12:30 बजे उठी। मैं अभी भी बिस्तर पर लेटी हुई थी। गोल्डा और सुंदरम, उस खूबसूरत जोड़े को ले जाने वाला विमान अब कहाँ होगा? मैं सोच रही थी। 'यह अदन चला गया होगा! यह एक जेट विमान है। यह इटली भी पहुँच गया होगा... लेकिन अरे! बर्लिन जाने वाला विमान इटली क्यों जाएगा? इसका मार्ग तो अलग होगा! मुंबई, बसरा, इराक, साइप्रस, एथेंस, बेलग्रेड से बर्लिन! इस बार विदेश जाने का अवसर मुझे बहुत आसानी से मिल गया। लेकिन यह कैसे संभव हुआ? गोल्डा की भलाई के लिए मीनाक्षी का मेरे साथ जाना आवश्यक था। क्या मीनाक्षी और मैं साथ जा सकते थे? क्यों नहीं? अगर तुम मीनाक्षी के साथ जाती तो क्या होता? कुछ नहीं होता, लेकिन यह सच है कि जिन महिलाओं से मेरा संपर्क होता है, उनके बीच एक तूफान सा उमड़ रहा है!... सलीमा को क्या हुआ? कुमारी को क्या हुआ? ऐसा क्यों है, राजकुमारी को अब कैसे दिन देखने को मिलेंगे?... शायद ये घटनाएँ इन महिलाओं के जीवन में अपरिहार्य हैं; लेकिन मुझे लगता है कि अब से मैं और किसी महिला से जान-पहचान नहीं करना चाहता, और अगर जान-पहचान हो भी जाए तो मुझे उनकी संगति में ज्यादा देर नहीं रुकना चाहिए!...'
जब मैं बिस्तर पर लेटे-लेटे ये सब सोच रही थी, तभी अचानक डाकिया ने खिड़की से दो चिट्ठियाँ फेंकीं। वे सीधे बिस्तर के नीचे

गिरीं। गिरते ही मैं झुकी और उन्हें उठा लिया। मैंने तुरंत पहचान लिया कि उनमें से एक विलास की थी, क्योंकि लिफाफे पर घोड़े के सिर वाला मोनोग्राम विलास के अलावा और किसका हो सकता था? हालाँकि, मैं दूसरी चिट्ठी की लिखावट नहीं पहचान पाई। मैंने पहले विलास की चिट्ठी पढ़ना शुरू किया,—
‘‘प्रिय समर,
मैंने पहले मार्टिन के पते पर आपको एक पत्र भेजा था। आपने उसका भी जवाब नहीं दिया। मैंने सोचा कि अगर आप किसी बड़े व्यापारी न हों तो ऐसा नहीं होगा, इसलिए मैं चुप रहा। लेकिन अब मैं आपको फिर से पत्र लिख रहा हूँ, क्योंकि मैंने पुणे में एक खाली ज़मीन खरीदी है। मैं उस ज़मीन पर कमरे बनवाना चाहता हूँ ताकि उन्हें स्कूल और कॉलेज के छात्रों को किराए पर दे सकूँ। मैं ऐसी व्यवस्था करना चाहता हूँ जिससे मुझे हर महीने पाँच से सात सौ रुपये मिल सकें। आप शायद कहें कि वह जॉकी है, तीन से चार हज़ार रुपये महीने कमाता है; तो फिर वह इस पैसे को पत्थर में क्यों लगा रहा है? लेकिन सच बताऊँ, जॉकी का पेशा तो एक बंद गली है! हर दिन मौत के चक्कर में घूमना! आप यह नहीं कह सकते कि किसी दिन वह घोड़े से गिरकर अपनी जान नहीं बचा पाएगा या अपाहिज नहीं हो जाएगा। ऐसे समय में इंदु के लिए पाँच से सात सौ रुपये की नियमित आय का इंतज़ाम करना अच्छा होता!
उस जगह पर बनने वाली इमारत का प्लान और नक्शा, सब कुछ तैयार है। लेकिन कहा जाता है कि ठेकेदार देने के बजाय विभागीय तरीके से इमारत बनवाना ज़्यादा फ़ायदेमंद है। मैं अपने कारोबार से इस काम को नहीं देख पाऊँगा। फिर भी, मैं आपसे विनम्र निवेदन करता हूँ कि आप मेरे लिए यह काम कर दें। मुझे पता है कि उल्का को मुंबई में अकेला छोड़कर आपका यहाँ आना मुश्किल, बल्कि नामुमकिन

है; लेकिन फिर भी मुझे आपके सिवा कोई और भरोसेमंद और योग्य व्यक्ति नज़र नहीं आता जो मेरी इस इच्छा को पूरा कर सके। अगर आप चाहें, तो मैं डेक्कन क्वीन के लिए पास जारी करवा दूँगा, और अगर आप रोज़ाना या एक-दो दिन में आकर यह काम कर लें तो कोई दिक्कत नहीं है। मुझे आपके पत्र से ज़्यादा आपके आने का इंतज़ार है। आपका।
"विलासिता।"
विलास का पत्र पढ़ने के बाद मैंने सोचा, अगर विलास मना कर देता है, तो उसने मुझे कुछ समय के लिए आश्रय तो दे ही दिया है। उसे मुझ पर पूरा भरोसा है। इंदु और उल्का के मतभेद के कारण हम विलास का घर छोड़कर पुणे से भी चले गए। इसलिए हमने विलास से अपनी दोस्ती नहीं तोड़ी। यह सच था कि मेरे जाने से विलास को थोड़ा दुख हुआ था; शायद उसने सोचा होगा कि मैं एहसानफरामोश थी; लेकिन उसने मुझे यह कहकर समझाने की कोशिश की थी, 'दुनिया में दो औरतें कभी एक-दूसरे को मना नहीं सकतीं'...
चाहे कुछ भी हो जाए, विलास की इच्छा के अनुसार उस इमारत का निर्माण पूरा करने के लिए मुझे एक साल या छह महीने के लिए पुणे जाना ही पड़ेगा! और मुझे ठीक 10:30 बजे हाजिरी लगाने के लिए कहाँ जाना है?... ये सवाल तो उल्का का है! अगर मैं उसे बताऊँगी, तो वो कहेगी, 'तुम्हें ये सब झंझट किसने बताया? इमारत तो उसकी है, वो किराया लेगा! वो पुणे से मुंबई और फिर पुणे आते-आते ऊब जाएगा! उसे देखने दो!...'
लेकिन अब मुझे समझ आ गया था कि उल्का का स्वभाव थोड़ा बदल गया है। कल उसने गोल्डा को जर्मनी ले जाने में मदद करने के लिए मेरी तारीफ की थी। मैंने सोचा कि सही समय और उसके मूड का फायदा उठाकर उसे यह बात बता दूं, इसलिए मैंने एक और पत्र खोला। और यह कितना

बड़ा आश्चर्य था! पत्र भवानी नगर से आया था और मेरे भाई अमर ने भेजा था। क्या मुझे उसकी लिखावट पहचाननी भी नहीं चाहिए थी? ओह! मैंने पत्र पढ़ना शुरू किया।
‘‘प्रिय दादा,
आपके जाने के बाद से आपकी तरफ से कोई चिट्ठी नहीं आई; इसीलिए मैं चिंतित हूँ। पापा के जाने के बाद से मेरी माँ की सेहत बिगड़ती जा रही है। डॉक्टर घर आए, उन्होंने जाँच की और कहा कि उन्हें ज़्यादा चिंता नहीं करनी चाहिए। उनकी सेहत में कोई खराबी नहीं है। फिर भी, मेरी माँ का मन नहीं भर रहा। उन्हें आपकी चिंता सता रही है, उन्हें इस बात की चिंता है कि अलका की भाभी का भविष्य क्या होगा। वह बार-बार सुझाव दे रही हैं कि आप अलका की भाभी को मुंबई ले जाएँ।
मैं और मेरी पत्नी खेत में रहने चले गए थे। लेकिन मेरी माँ की सेहत इतनी बिगड़ गई है कि मैंने अपनी पत्नी से गाँव में ही रहने को कहा ताकि कोई उनकी देखभाल करने के लिए पास रहे। घर में फिर से बहुत गपशप चल रही है। मेरी पत्नी मेरी माँ की सेवा करती है, उनकी देखभाल करती है; इसीलिए मेरी भाभी उससे ईर्ष्या करती है। मुझे पता है कि ऐसा लगभग हर घर में होता है जब दो अलग-अलग परिवारों की औरतें एक साथ आती हैं; इसीलिए मैं गपशप पर ध्यान नहीं दे रहा हूँ। लेकिन मैं अपनी माँ की सेहत को लेकर चिंतित हूँ। वह बिस्तर पर पड़ी हैं, मानो उन्हें कोई लाइलाज बीमारी हो, जबकि उन्हें कोई बीमारी नहीं है। उन्होंने दो-तीन दिनों से चावल का भूसा भी नहीं खाया है। मुझे माँ के लक्षणों में कोई सुधार नहीं दिख रहा है। जब से पिताजी गए हैं, वह निर्वाण की बातें कर रही हैं। तो आप यहाँ आठ से पंद्रह दिन के लिए आकर रहिए। दादाजी, पिताजी चले गए।

हमारा सहारा छिन गया। अगर माँ भी चली गईं, तो हमारे पास कौन बचेगा?''
पत्र पढ़ते ही मेरी आँखों में आँसू भर आए। क्योंकि मुझे इस बात के सबूत मिले कि अमर ने भी पत्र लिखते समय आँसू बहाए थे। पत्र के कुछ अक्षर धुंधले हो गए थे, मानो उन पर पानी डाला गया हो।
मैंने दोनों पत्रों को मोड़कर अपने तकिए पर रख दिया। उत्का नहा चुकी थी, अपने गीले बालों को पीठ पर खुला छोड़ कर बाजार चली गई थी। वह वापस आई और मुझसे बोली,
"सो गया क्या?"
"जी हाँ! आप किस बाजार से आए हैं?"
"अरे, उठो। नहा लो!"
"मैं करूँगी। लेकिन उल्का, अमर का पत्र आ गया है, मेरी माँ की तबीयत बिगड़ गई है। उसने मुझे भवानी नगर बुलाया है।"
"तो जाओ और वापस आओ!"
"इसके अलावा, विलास का यह पत्र भी आ गया है।"
वे क्या कहते हैं?
"पढ़ो, तुम्हें समझ आ जाएगा।"
मैंने दोनों पत्र उल्का को सौंप दिए। उल्का ने उन्हें शुरू से अंत तक पढ़ा और मुझसे कहा, "तुम्हें जाना होगा।"
मैंने उल्कापिंड का अनुमान लगाने की कोशिश करते हुए पूछा, "कहाँ, पुणे या भवानी नगर?"
"दोनों के लिए!"
"दोनों के लिए? क्या आप चाहेंगे कि मैं विलास के पत्र के अनुसार पुणे जाकर उनकी इमारत की देखभाल करूं?"
उत्का ने आईने में अपने सूखे बालों को देखते हुए मुझसे कहा, "विलास के पत्र में व्यक्त भावनाओं को देखते हुए, मुझे लगता है

कि आपको उसका काम पूरा कर देना चाहिए। आखिर एक आदमी को अपने बच्चों की चिंता तो करनी ही पड़ती है। अगर दौड़ में जान को कोई खतरा हो तो आय का कोई निश्चित स्रोत चाहना स्वाभाविक ही है, है ना?"
मैंने सोचा-
मैं कहूंगी कि मैं नहीं जाना चाहती क्योंकि इंदु और मेरे बीच कुछ समस्या थी! ठीक है ना?
"बिल्कुल।"
"गर्मी के मौसम में, मुझे ऐसा लगने लगा है कि मैं सबके साथ प्यार से रहना चाहती हूँ! साथ ही, गर्भपात के बाद से, मुझे थोड़ा-बहुत समझ आने लगा है कि माता-पिता अपने बच्चों के बारे में कैसा महसूस करते हैं।"
"उल्कापिंड!" मैं खड़ा हो गया और उसके कंधे हिलाते हुए बोला, "मुझे तुममें कुछ समय से बदलाव महसूस हो रहा था; लेकिन मुझे लगा कि यह सिर्फ़ एक भ्रम है। अब यह सच साबित हो गया है! मेरी जान, तुम सच में मेरी जान हो। तुम पूरी तरह बदल गई हो!" जब मैं उसे चूमने के लिए उसके करीब गया, तो वह गुस्से से बोली, "पहले अपने दांत साफ़ करो! तुम्हारे मुंह से बदबू आ रही है! तुम गंदे हो! मैंने नहाया नहीं है, अपने गंदे शरीर से मुझे छूने की ज़हमत भी मत उठाओ!"
मुझे धक्का देकर दूर करते हुए वह खाना पकाने के लिए चूल्हा जलाने चली गई।
अपनी दाढ़ी पर साबुन लगाते हुए मैंने कहा, "तो आपके बच्चों का मंदिर कैसा चल रहा है?"

"बहुत बढ़िया! कल पैंतीस बच्चे आए थे। और भी आ सकते हैं। लेकिन जगह की कमी के कारण हम और बच्चों को नहीं ले सकते! लिलियन का कहना है कि हमें दो बैच चलाने चाहिए!"
"अच्छा हुआ कि आप दोनों इस कारोबार में फंस गए।"
"और स्वतंत्र! किसी के नियंत्रण में नहीं! लिलियन ने कई ईसाई बच्चों को जन्म दिया है।"
"अब चलिए हम दोनों मिलकर एक शैक्षणिक संस्थान शुरू करते हैं!" "क्यों? इस काम को निपटाते-निपटते मेरी नाक से खून बहने लगेगा। तुम कहाँ हो?"
यह मान लेना सुरक्षित था कि उल्का की नौकरी खत्म होने के बाद उसके साथ क्या होगा, इस बारे में मुझे जिस समस्या का सामना करना पड़ रहा था, वह अब हल हो गई थी, कम से कम कुछ समय के लिए।
-०-०-

३६
गर्मी का मौसम खत्म हो रहा था। पश्चिम से तेज़ हवा चल रही थी। सुबह-सुबह ट्रेन से सफर करते हुए मुझे बारिश के मौसम के शुरू होने के संकेत दिखने लगे। भवानीनगर स्टेशन पर उतरते ही हल्की बूंदा-बांदी हो चुकी थी, जिससे प्लेटफॉर्म गीला हो गया था। डिब्बे में घुसते ही मैंने किराएदार को किराया दिया। घर के सामने डिब्बा रुकते ही मैं सीधे अंदर जाकर अपनी माँ से मिलने चला गया। मैं बहुत खुश था!
माँ! माँ मेरे जीवन की सबसे कमज़ोर कड़ी हैं! मैंने मुंबई और पुणे में कई घोटाले किए। जुए में मैंने कई लोगों को धोखा दिया। स्त्रियों के साथ मेरा कोई वास्ता नहीं था। शिदोजी राजा जैसे महान व्यक्ति को भी मैंने चाबुक से नाक में मारे बैल की तरह झुका दिया, वे चुपचाप मुझे महीने में दो हज़ार रुपये देने लगे। इन सब बातों के बावजूद, माँ कहती थीं कि मुझमें एक अलग ही अस्तित्व है। मुझमें जो उत्साह है, विपरीत परिस्थितियों से पार पाने की जो शक्ति है, कभी-कभी जल्दी में झूठ बोलने की जो क्षमता है, सब कुछ पल भर में गायब हो जाता है। मैं गरीब और कमज़ोर हो गया। माँ को एहसास हुआ कि हमने बचपन में कितना कष्ट सहा था। जब पिताजी बहुत महत्वाकांक्षी थे, धन और प्रसिद्धि उनके कदमों में लुढ़क रही थी। वकील ठाकुर कहते थे कि कुछ लोग सम्मान में सिर झुका लेते हैं। जब वे भवानी नगर के महाराजा के कानूनी सलाहकार थे, तो पिताजी स्पष्ट रूप से यह कहकर चले जाते थे, 'महाराज, मैं यह नौकरी जारी नहीं रखूँगा,' और अगर न्यायाधीश किसी जटिल कानूनी मामले को नहीं समझते थे तो उन्हें डांट भी देते थे… घर पर, वे कभी भी अपनी माँ से अपने मन की बात नहीं कहते थे। कभी-कभी जब वह गाँव जाते थे, तो उनकी माँ बहुत रोती थीं। हमें समझ नहीं आता था

कि माँ क्यों रोती हैं? गाँव में काम के लिए जाने में क्या बुराई थी? यह सवाल हमेशा मेरे मन में रहता था। लेकिन जब मुझे थोड़ा-बहुत समझ आया, तो मुझे समझ आया कि पिताजी गाँव में क्या काम करते थे। उस समय गोवा महिलाओं के लिए प्रसिद्ध था। पुर्तगालियों द्वारा प्रशासित यह क्षेत्र, जो शराब और मदिरा के लिए प्रसिद्ध था, भारत के चंडीगढ़वासियों के लिए एक विशेष आकर्षण था।
माँ अपना सारा दिन अमर और मुझे देखते हुए बिताती थीं। पापा के ऐसे व्यवहार के बावजूद, माँ उन्हें भगवान के समान मानती थीं। अगर पापा की तबीयत खराब होती तो माँ बेचैन हो जाती थीं। कभी-कभी जब पापा कोर्ट से घर आने में देर कर देते थे, तो माँ बेचैन होकर ऊपर चली जातीं और खिड़की से कोर्ट रोड को देखती हुई बैठ जातीं! मुझे याद नहीं कि पापा और माँ ने कभी खुलकर बात की हो। इन सब के बावजूद, मुझे अजीब लगता था कि माँ पापा को भगवान मानती थीं!
जब मुझे समझ आने लगी, तो मैंने अपने पिता के घमंडी और मुखर रवैये के बारे में अपनी माँ से अपनी नाराज़गी ज़ाहिर करने की कोशिश की, लेकिन मेरी माँ मुझसे बहुत नाराज़ हो गईं! उन्होंने कहा, "समर, अगर तुमने मेरे सामने कभी उनके बारे में ऐसी बातें कहीं, तो मुझे याद रखना!" मेरी माँ, जो पहले शांत, स्नेही और कोमल थीं, मुझे एक राक्षसी रूप धारण किए हुए सी लगने लगीं।
मेरी मां की एक और याद! जब मैंने अलका की शरारत देखी, तो मैं उसे घसीटकर घर ले आई। जब वह लात-घूंसे मारती रही, तो मेरी मां ने बीच-बचाव किया।
"उसे जिंदा ही पकड़ लेना चाहिए! वह अपनी सहेली से मिलने गई थी और तालाब के पास बगीचे में बैठकर प्रोफेसर से बेमतलब की बातें कर

रही थी! मुझे मूर्ख, बदमिजाज पत्नी नहीं चाहिए। मैं उसे अभी घर से बाहर निकाल दूंगा!"
उस समय मां ने शांत भाव से कहा, "समर, शाही परिवार में शादी करने वाली लड़की कोई असाधारण नहीं होती!"
"तो मैं इसे इस तरह गिराऊँगी कि यह एक तरफ गिर जाए!" मैंने अल्का का गला घोंटने के लिए दौड़ते हुए कहा, लेकिन मेरी माँ ने उसे रोकते हुए कहा,—
"शाही वंश में जन्मे लोग स्त्रीहत्या नहीं करते! स्त्री की गलती को क्षमा किया जाना चाहिए। पापी के लिए क्षमा से बड़ा कोई दंड नहीं है!"
मेरी मां देखने में सरल और अशिक्षित लगती थीं, लेकिन कभी-कभी वह इस तरह से बात करती थीं कि मेरा मन करता था कि मैं उनके चरणों में हाथ जोड़कर बैठ जाऊं।
जब मैंने अपनी मां को देखा, जो लकवाग्रस्त पड़ी थीं, तो अतीत की ये सभी यादें मेरे दिमाग में उमड़ आईं।
मैंने रुमाल से अपनी आँखों को पोंछते हुए कहा -
"माँ! आपने ऐसा क्यों किया?"
"हाँ!" माँ ने धीमी सी आवाज़ में कहा। और उन्होंने कमरे की दीवार पर टंगी पापा की तस्वीर पर अपनी नज़रें टिका दीं। उनके माथे की झुर्रियाँ गायब हो गईं, उनके गालों और होठों पर हल्की सी मुस्कान आ गई, और उन्होंने धीरे से कहा-
"यह बात मेरे दिल के बहुत करीब रही है!"
मैंने कई ऐसी महिलाओं को देखा था जो अपने पतियों के प्रति वफादार थीं; लेकिन मेरी मां की अपने पति के प्रति वफादारी अटूट थी।

अमर आकर मेरे पीछे खड़ा हो गया। उसकी पत्नी आकर मेरे पैरों के पास खड़ी हो गई।
"अमर, मैं अपनी मां को मुंबई ले जा रहा हूँ," मैंने जल्दी से कहा। इस पर मां ने हाथ से इशारा करते हुए कहा, "मैं कहीं नहीं जाना चाहती। मैं वहीं जाऊंगी जहां मैं जाना चाहती हूं।"
मुझे चिंता हो रही थी कि अलका घर पर होने के बावजूद नीचे नहीं आई थी। जब मैं तीसरी मंजिल पर पहुंचा, तो अलका 'भारतीय दर्शन' नामक पुस्तक पढ़ रही थी। मैंने उसके हाथों से पुस्तक छीन ली और चिल्लाया,-
"क्या तुम्हारा पेट अभी तक भरा नहीं है?"
जब अल्का ने मेरे सवाल का जवाब नहीं दिया, तो मैं आगे बढ़ा, उसके कंधे हिलाए और कहा, "मैंने बहुत सी महिलाओं को देखा है, लेकिन तुम्हारे जितनी दुष्ट किसी को नहीं देखा।"
अल्का बिना कुछ कहे दर्पण के सामने खड़ी हो गई और अपने बिखरे हुए बालों में कंघी करने लगी।
"अल्का, बस बहुत हो गया। इसका अंत कहीं न कहीं तो होना ही चाहिए। बताओ, तुम्हारे मन में क्या चल रहा है?"
"तुमने अपना रास्ता चुन लिया है। मैंने अपना। किसी को किसी के रास्ते में नहीं आना चाहिए," अल्का ने बहुत शांत भाव से उत्तर दिया।
"लेकिन तुमने मेरे नाम वाला मंगलसूत्र क्यों पहना है?"
"अगर तुम चाहो तो ले लो!" उसने शांत भाव से जवाब दिया।
"हम्म! तुम इतने लंबे समय से अपनी माँ के साथ रहे हो; लेकिन तुमने उनके स्वभाव का एक अंश भी ग्रहण नहीं किया!"
"वह समय बीत गया जब पुरुष बिना किसी रोक-टोक के कार्य करते थे और महिलाएं दासों की तरह उनके चरणों में झुकती थीं!"

"यह सच है कि मैंने अनियंत्रित व्यवहार किया, लेकिन इसके लिए तुम ही ज़िम्मेदार हो! तुमने मुझसे यह बात छुपाई कि तुम्हें स्कूल और कॉलेज के दिनों से ही अनियंत्रित व्यवहार करने की आदत थी, लेकिन जब मैंने तुम्हें सच में हंसते और गुड़ियों से खेलते देखा, तो मुझे यकीन हो गया। मुझे लगता है कि किस्मत ने ही तुम्हें ज़िंदा रखा है!"
"जो स्वयं पवित्र है, उसे दूसरों से भी पवित्रता की अपेक्षा करनी चाहिए! पुणे और मुंबई में आपने जो प्रकाश प्रज्वलित किए हैं, मैं उन सभी बातों को समझता हूँ!"
समझ गए? ठीक है! लेकिन तुमने ही मुझे ऐसा करने पर मजबूर किया! तुमने मुझे धोखा दिया, और इसीलिए मैंने ऐसा किया!
"यह तो घटिया बहाना है! आपने इस आधार पर यह निष्कर्ष कैसे निकाल लिया कि मेरा उसके साथ अनैतिक संबंध था कि मैं उन गुंडों से बात कर रही थी?"
"तुम झूठे बहाने से घर से बाहर चली गई थीं। मैंने अपनी आँखों से देखा कि तुम दोनों चित्रकार की मूर्ति के नीचे बैठकर हँस रहे थे और रो रहे थे। अगर मुझे पहले से पता होता कि नासिक के कॉलेज में पढ़ते समय तुमने बिपिन सारदा, जयचंद राठौड़, चंदर और राम धुलेकर जैसे लड़कों से भी प्रेम-प्रसंग किया था, तो मैं तुमसे शादी करने के लिए क्यों राजी होती?"
"क्या आपको लगता है कि स्कूलों और कॉलेजों में लड़कों के बारे में कही जाने वाली हर बात सच है?"
"ऐसा नहीं है; लेकिन शादी के बाद आपके व्यवहार के आधार पर आपके बारे में फैली अफवाहों को सच मान लेना गलत नहीं था!"
"जब आप इसे अशुद्ध दृष्टि से देखते हैं, तो सब कुछ बुरा ही दिखाई देता है!"

मैंने तुम्हें वहाँ अपने दोस्तों के साथ हँसते-खिलखिलाते देखा! "हाँ, बिल्कुल सही। उन्होंने दर्शनशास्त्र में प्रथम श्रेणी प्राप्त की थी। मैं उनका बहुत सम्मान करता था। उस दिन मैं अपनी सहेली से मिलने गया था; लेकिन उसके रिश्तेदार अचानक बीमार पड़ गए, इसलिए कार्यक्रम रद्द हो गया। तो मैं वापस लौटने लगा। रास्ते में मेरी मुलाकात थोम्बर से हुई। उन्होंने कहा, 'अगर समय हो तो थोड़ी देर बात कर लेते हैं।' मैंने भी कहा था कि मैं समय पर घर आ जाऊँगा। मैंने सोचा, चलो आधे घंटे बात कर लेते हैं। अगर मेरे या थोम्बर के मन में कोई पाप होता, तो मैं बगीचे के बीचोंबीच मूर्ति के चबूतरे पर क्यों बैठता? तालाब के किनारे तो बहुत सी एकांत जगहें हैं!"
"अल्का, तुम मुझे ऐसा करने के लिए मजबूर करने की कोशिश कर रही हो।"
"बिल्कुल नहीं!"
"तुम्हें अपने डिब्बे में गर्भनिरोधक गोलियां कैसे मिलीं?" "हाँ! मैं स्नातक होने से पहले बच्चा नहीं चाहती थी! शादी के बाद महिलाओं के लिए शिक्षा पूरी करना मुश्किल होता है, और बीच में बच्चा होने का मतलब है कि उनकी पढ़ाई अधूरी रह जाएगी। ऐसा नहीं है कि मैं हमेशा से बच्चा नहीं चाहती थी, लेकिन कम से कम स्नातक होने तक तो नहीं!"
"तो फिर आपने मुझे यह बात भरोसे में क्यों नहीं बताई?"
"मुझे भरोसे में यह बात बताने में कोई बुराई नहीं थी; लेकिन मुझे संदेह था कि आप मेरी राय से सहमत होंगे या नहीं।"
"तो आप इन सब के बावजूद यह साबित करने की कोशिश कर रहे हैं कि आप पवित्र हैं?"

"घमंडी होने का कोई कारण नहीं है! मैंने बी.ए., बी.टी. किया है, अब मैं महीने में एक सौ से पाँच सौ रुपये कमाता हूँ; मुझे किसी की दया पर जीने की कोई ज़रूरत नहीं है। यह दिखाने के लिए घमंड करने का क्या कारण है कि मैं ऐसा हूँ या वैसा हूँ?"
आज पहली बार मेरी अल्का से इतनी लंबी बातचीत हुई। उसने निडर होकर अपना पक्ष मेरे सामने रखा। मैं उससे पूरी तरह सहमत नहीं थी; फिर भी उसने अपने पक्ष को प्रस्तुत करते समय जिस तार्किक संगति का प्रदर्शन किया, वह किसी भी व्यावहारिक व्यक्ति को आश्वस्त कर देने वाली थी। मैंने एक पल सोचा और कहा,—
"अगर आपका पक्ष इतना ही निष्पक्ष था, तो आपने मुझे समझाने की कोशिश क्यों नहीं की?"
"जब तुम उसे मनाने के मूड में थे, तब तुम कहाँ थे?"
"यह तो अविश्वसनीय है!"
"छोड़ो इसे! मुझे तुमसे सहमत होने की उम्मीद नहीं है!" "बदमाशों का मामला छोड़ो। तुमने लड़कों को नासिक के कॉलेज में आमंत्रित किया था, उस बारे में क्या?"
समर! सच कहूँ तो, मैं ये सब बताने के लिए बहुत बेताब हूँ। लेकिन तुम्हारी बुद्धि की सीमित क्षमता देखकर मेरा मन करता है कि तुम्हारा मज़ाक उड़ाऊँ। अरे, मैं शंकरलाल परदेशी जैसे करोड़पति की इकलौती बेटी हूँ। मैं अपने पिता की देखरेख में पली- बढ़ी। कॉलेज के पहले दिन मैंने खुद गाड़ी चलाई। कुछ लड़के मेरे पीछे पड़े थे, मुझसे जान-पहचान बनाना चाहते थे, मुझसे प्यार करना चाहते थे, ये सच है। लेकिन उनमें से कोई भी वैसा नहीं था जैसा मैं चाहती थी। बिपिन सारदा, जयचंद राठौड़, चंदर, राम धुलेकर जैसे लड़के मेरे लिए अपनी जान जोखिम में डाल रहे थे, और उस समय मैं ऐसी उम्र की थी कि उनके साथ होने पर खुद को भाग्यशाली

समझती थी। फिर भी, मैंने किसी को एक भी पत्र नहीं लिखा था और न ही किसी को मुझसे बात करने से आगे बढ़ने दिया था। लेकिन उन्होंने मुझे बहुत सारे पत्र भेजे थे। उन्होंने तुमसे शादी करने का फैसला किया और उस दिन उन्होंने उन पत्रों को जला दिया। क्या तुम्हारे पास कोई सबूत है कि उन लड़कों और मेरे बीच अनैतिक संबंध थे? तुम किस आधार पर ये आरोप लगा रहे हो? लेकिन अब तो ऐसा लगता है इसलिए?
"क्या?" मैंने उलझन में पूछा।
"तुमने मुझे इतनी बुरी तरह अपमानित करके छोड़ दिया है। तो—" "अल्का!"
"चिल्लाओ मत। नीचे माँ की तबीयत ठीक नहीं है!"
क्या तुम अपनी माँ से प्यार करने का नाटक कर रहे हो?
"प्यार? मुझे उससे प्यार है, लेकिन मैं उसका सम्मान भी करती हूँ। तुमने उल्का से दोबारा शादी कर ली, पुणे के सलीमा मामले में तुम्हारा नाम आया, तुम मुंबई में एक कुमारी के घर में रह रही थी, और अब तुम मुंबई में उस राजकुमारी की नौकरानी बनकर अपना दिन बिता रही हो, ये सब कारण मेरे लिए तुम्हें तलाक देने के लिए काफी थे! लेकिन मैं इस मौली की भावनाओं को ठेस नहीं पहुँचाना चाहती थी, इसलिए मैं चुप रही!"
"अल्का, मैं उलझन में हूँ! मुझे नहीं पता कि तुम मुझे मनगढ़ंत बातें बता रही हो या जो तुम मुझे बता रही हो वह सच है!" मैंने अपने हाथों से अपना सिर कसकर पकड़ते हुए कहा।
"यह भ्रम बहुत बुरा है! या तो मान लो कि मैं तुम्हारे प्रति वफादार हूँ या मान लो कि मैं गद्दार हूँ!"

अल्का ने मुझे सचमुच उलझन में डाल दिया था। अब तक मैं अल्का से नफरत करती थी और सिर्फ अपनी माँ के लिए शांत रहती थी; लेकिन अब मैं इस मामले में फैसला लेने में सक्षम थी।
जिस समय मेरी शादी तय हुई थी, उस समय की अलका और आज की अलका, दोनों बिल्कुल अलग-अलग शख्सियत लग रही थीं। जब मैं नासिक गया, तो मधुबन में घूम-घूमकर मुझे अंगूर की अलग-अलग किस्में दिखाती और मेरे साथ हंसती हुई अलका पूरी तरह बदल चुकी थी। शिक्षा ने उसके व्यवहार में आमूलचूल परिवर्तन ला दिया था। उसने अपने तीखे खुलासों से मेरे मन में उसके बारे में जो भी गलत धारणा थी, उसे मिटा दिया था, लेकिन फिर भी मेरे भीतर का पुरुष अपनी गलती मानने को तैयार नहीं था। शक के जाल के धागे भले ही टूट गए थे या बिखरे हुए थे; लेकिन वे मेरे मन से पूरी तरह मिटने को तैयार नहीं थे। "अल्का! क्या तुम मुझसे तलाक चाहती हो? यह सिर्फ मम्मी-पापा की इच्छा नहीं थी, इसलिए मैंने यह विचार छोड़ दिया था। अब पापा तो चले गए, मम्मी भी उसी राह पर हैं। मैंने उनकी मृत्यु तक उनका साथ दिया। लेकिन अब हम दोनों को साथ बैठकर फैसला लेना चाहिए! मैं अल्का से शादीशुदा हूँ, और मैंने उन महिलाओं से भी संबंध बनाए हैं जिनका तुमने जिक्र किया। मैं यह नहीं कह रहा कि मैं पवित्र हूँ। इसलिए मुझे लगने लगा है कि मुझे तुम्हें अपने बंधन से मुक्त करना चाहिए!"
"मेरी गुलामी अब बहुत ही दमनकारी लगने लगी है!"
"ऐसा कुछ नहीं है; लेकिन बेहतर होगा अगर हम दोनों मिलकर इस समस्या का समाधान करें!"
किसी कारणवश, लंबे समय बाद अल्का से हुई बातचीत ने मेरे मन पर से बोझ हल्का कर दिया।

अल्का ने इस बार मुझसे हुई बातचीत में अपनी बेगुनाही का संकेत दिया था। उसने जो तर्क दिए थे, वे बहुत तर्कसंगत थे। मुझे इस बारे में थोड़ा सोचना चाहिए था... लेकिन अगर मैं सोचता, तो आखिर करता क्या? यह जानते हुए कि अल्का मेरे प्रति वफादार नहीं है, मैंने जीवन में एक बिल्कुल अलग और गतिशील रास्ता चुन लिया था। मैं उस रास्ते पर इतना आगे बढ़ चुका था कि अब मेरे लिए पीछे मुड़ना नामुमकिन था। मेरे इस नए रास्ते में कई उतार-चढ़ाव थे। अगर अल्का मेरा साथ देना भी चाहती, तो वह ऐसा नहीं कर सकती थी, और अगर वह ऐसा करती भी, तो उसने मुझे साफ-साफ कह दिया था कि मैं उसके रास्ते में न आऊं...
अल्का जवान थी। वह बेहद खूबसूरत थी; उसे देखते ही मुझे उससे प्यार क्यों हो गया? और अब वह पढ़ी-लिखी और कामयाब भी थी! इतनी जवान, खूबसूरत, पढ़ी-लिखी और धनी महिला जब समाज में अकेली रहने लगी तो उसके बारे में हर दिन नई-नई अफवाहें उड़ने लगीं! अल्का के मामले में भी ऐसी अफवाहें उड़ने की प्रबल संभावना थी; क्योंकि उसे त्याग दिया गया था!... अल्का के बारे में मेरे मन में ऐसे विचार आना स्वाभाविक था। वह अपने माथे पर कुमकुम लगा रही थी जिस पर मेरा नाम लिखा था और उसके गले में मंगलसूत्र भी मेरे नाम का था!
मैं अपने दिमाग में विचारों का अंबार लिए अटारी से नीचे उतरा! जैसे ही मैंने अपनी माँ का कंकालनुमा शरीर दोबारा देखा, मेरे दिमाग में विचारों का सिलसिला एक पल के लिए रुक गया! जब जीवन इतना क्षणभंगुर है, तो गहराई से सोचने और खुद के और दूसरों के बारे में चिंता करने का क्या फायदा?
"माँ, क्या आप कुछ खाना चाहेंगी?" माँ ने मेरी तरफ़ सिर घुमाया और हाथ से 'ना' का इशारा किया, फिर पापा की तस्वीर पर अपनी नज़रें

गड़ा दीं। मानो कुछ कहना चाह रही हों, तुम्हारे पापा ज़िंदा रहते जो चाहते थे, खाते थे। अब तो उन्हें कुछ खाने की इच्छा ही नहीं होती!
वे मेरी माँ के अंतिम दिन थे। ऐसे समय में, ताकि किसी भी मानवीय इच्छा की पूर्ति हो, उसे वह सब कुछ देना चाहिए जो वह चाहता है! मेरी माँ कुछ भी खाना-पीना नहीं चाहती थीं; तो फिर उनका जीवन किस बात में व्यतीत हो रहा था? यह मेरी समझ से परे था।
इसी बीच, अल्का नीचे आई। मेरे पीछे खड़ी होकर उसने अपनी माँ से कहा, "मेरे लिए थोड़ा कोको लाओ।" कोको उसकी माँ का पसंदीदा पेय है! माँ ने मना नहीं किया!
अल्का कोको लेकर आई। उसने कप साइड टेबल पर रखा, तभी मेरी माँ ने उसे पास बुलाया। वह आगे आई। मेरी माँ ने अपना हाथ मेरी ओर बढ़ाया। मेरी माँ के चेहरे पर संतोष भरी मुस्कान आ गई। मैंने उन्हें तश्तरी से कोको पिलाया। वह बहुत खुश लग रही थीं। लेकिन अल्का और मैं गंभीर हो गए। हम दोनों ने आपसी सहमति से अलग-अलग रास्ते चुनने का फैसला किया था। रेलवे ट्रैक समानांतर हैं, लेकिन वे मिल नहीं सकते! लेकिन मेरी माँ ने अल्का का हाथ मेरे हाथ में देकर अपनी अंतिम इच्छा व्यक्त कर दी थी। क्या वह इसके लिए अपनी जान जोखिम में नहीं डालतीं?...
उस दिन वह बहुत संतुष्ट लग रही थी। मैंने अमर से कहा, "अपनी पत्नी से कहो कि आज सबसे बढ़िया चिकन करी बनाए, मैं आज अपनी माँ को दो वक्त का खाना खिलाऊँगा!"
जब भी मैं उस खाने का नाम लेती, मेरी माँ हठपूर्वक मना कर देती; लेकिन जब मैंने अमर को इसके बारे में बताया, तो उसने मना नहीं किया।

अमर और मैंने माँ को चिकन करी और चावल खिलाए। उन्होंने हम दोनों से ज़्यादा बात नहीं की; लेकिन आज उनके चेहरे पर बेहद संतोष झलक रहा था। खाना खाने के बाद उन्होंने हाथ धोए, पापा की तस्वीर के सामने हाथ जोड़े और बिस्तर पर लेट गईं।
खाना खाने के बाद जब मैं तीसरी मंज़िल पर गई, तो रात के 10:30 बज रहे थे। सड़क पर यातायात रुक चुका था। बाहर बारिश हो रही थी। बारिश की बूँदें तीसरी मंज़िल की छत पर गिर रही थीं, जिससे चटकने की आवाज़ आ रही थी। मैंने चादर झाड़ी और लेट गई। आधे घंटे बाद, अलका ऊपर आई। उसे रात के खाने के बाद सुपारी और इलायची खाने की आदत थी। उसने मेज़ पर रखी चांदी की डिब्बी खोली और सुपारी मुँह में डालकर इलायची छीलने लगी, तभी मैंने कहा, "आज मुझे अच्छा लग रहा है। माँ ने दो निवाले खाए!"
"क्या इससे आपको सिर्फ एक वजह से अच्छा लगा?" अल्का ने छिले हुए इलायची के दानों को मुंह में डालते हुए मुझसे पूछा।
"आपका क्या मतलब है?"
"अरीना को संतुष्टि महसूस होने का कारण अलग है!"
"हाँ, याद आ गया।"
जब मेरी माँ ने मेरा हाथ अपनी ओर बढ़ाया, तो अल्का ने अपने बिस्तर की चादरें झटकना शुरू कर दिया, जिससे पता चलता था कि वह सचमुच संतुष्ट थी। मैंने कहा, "मुझे कुछ पान दो, आज हमने बहुत खा लिया!"
अल्का ने चादर बिस्तर पर डाली और पान की डिब्बी लेकर मेरे पास आई। पान की डिब्बी लेते समय मैंने अचानक उसका हाथ पकड़ लिया। मुझे लगा कि वह हाथ छुड़ा लेगी, विरोध करेगी, कुछ कहेगी; लेकिन उसने ऐसा कुछ नहीं किया। इसके बजाय, वह मेरे बगल में बिस्तर पर लेट गई। भले ही मैंने यह न कहा हो, लेकिन उस दोपहर उससे हुई

बातचीत ने उसके प्रति मेरे मन में पनप रही नाराजगी को दूर कर दिया था। उस बातचीत में, मेरी माँ ने अपना हाथ मेरे हाथ में देकर मुझे शांत कर दिया था। इन दो घटनाओं के संदर्भ में, अल्का के मेरे पास आने के बाद तटस्थ रहना मेरे स्वभाव और प्रवृत्ति के विपरीत था। मैंने अल्का को गले लगा लिया। लगभग डेढ़ से दो साल बाद, मैं एक बार फिर अल्का के साथ एक हो रहा था। जो कुछ भी हुआ था, उसे भूलकर, उसने अपने होंठ मेरे होंठों से सटा दिए और मेरी भावनाओं को व्यक्त किया।
आधी रात को जब मेरी नींद खुली, तो तकिए पर रखे नीले दीपक की हल्की रोशनी में, मुझे गहरी नींद में सो रही अल्का के चेहरे पर संतोष साफ दिखाई दिया। मैंने उसके माथे पर गिरे बालों को धीरे से हटाया। मैं उसके गाल चूमने के लालच को रोक नहीं पाई।
जब मैं सुबह करीब 5:30 बजे उठा, तो अलका पहले ही उठकर नीचे जा चुकी थी। जब मैं नीचे आया, तो वह मंदिर में पूजा कर रही थी। उसने अभी-अभी स्नान किया था और गीले बालों को पीठ पर फैलाकर बैठी थी, उसकी आँखें बंद थीं। वह सफेद वस्त्रधारी तपस्वी जैसी लग रही थी। स्नान करने के बाद, मैं अपनी माँ के कमरे में गया। मेरी माँ शांति से सो रही थी। मैं थोड़ा और पास गया और जोर से चिल्लाया, "माँ, माँ!" मेरी माँ का देहांत आधी रात के आसपास हो गया था। अमर, अलका और अमर की पत्नी दौड़ते हुए आए। मैं माथे पर हाथ रखकर रो रही थी। अलका मुझे समझा रही थी। अमर फ्रेम पर हाथ रखकर और सिर खंभे पर टिकाकर रो रहा था। माँ मानो मरणासन्न अवस्था में चली गई थीं।
-०-०-

३७
ट्रेन लोनावला से रवाना हुई। बाहर मूसलाधार बारिश हो रही थी। शीशे से कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था। घने कोहरे और भारी बारिश के बावजूद, जनता एक्सप्रेस एक के बाद एक सुरंगों से गुज़रती हुई घाटों की ओर उतर रही थी। मैं हमेशा खंडाला घाटों की प्राकृतिक सुंदरता देखने के लिए खिड़की के पास सीट पाने की कोशिश करता था। लेकिन आज बाहर कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था। अगर खिड़की का शीशा थोड़ा सा भी खुला होता, तो बारिश अंदर आ जाती।
सभी यात्री तनावग्रस्त मुद्रा में बैठे हुए प्रतीत हो रहे थे। कार मुझे मुंबई की ओर ले जा रही थी; लेकिन मेरे विचार बिल्कुल विपरीत दिशा में दौड़ रहे थे। माँ जा चुकी थीं, वो जाने वाली थीं। पिताजी की मृत्यु के बाद, उन्होंने लगभग मरने का निश्चय कर लिया था। अपनी माँ की हालत देखकर, मुझे नहीं लगता था कि वो ज़्यादा दिन जी पाएंगी। हालाँकि ये सच था कि वो मेरी जन्मदाता माँ थीं, कि उन्होंने मुझे बहुत प्यार किया था, लेकिन जिस परंपरा में वो पली-बढ़ी थीं, उसमें सवाशनी की मृत्यु को नियति का संकेत माना जाता था। उन्हें इस बात का भी उतना ही अफ़सोस था कि पिताजी के पहले चले जाने के कारण वो इस नियति से वंचित रह गईं। मुझे नहीं लगता था कि मेरी माँ इस हालत में ज़्यादा दिन जी पाएंगी! माँ चली गईं, लेकिन जाने से पहले उन्होंने मेरी उलझन को थोड़ा और बढ़ा दिया। जब तक हम भवानीनगर नहीं पहुँचे, मुझे लगा कि अलका और मेरा रिश्ता खत्म हो गया है। लेकिन माँ ने कुछ अलग ही किया। खैर, सिर्फ इसलिए कि माँ ने ऐसी इच्छा ज़ाहिर की, अलका को अपना स्थान क्यों छोड़ देना चाहिए? उस रात तो वो बिल्कुल बदल गई थीं। ये चौंकाने वाला था। दरअसल, मुझे तो सलीमा, कुमारी और उल्का के साथ अपने संबंधों के दौरान थोड़ा चौंक जाना चाहिए था।

अल्का मेरी पत्नी थी। उसके साथ सोने के दौरान और बाद में मुझे चौंकने का कोई कारण नहीं था! लेकिन जो हुआ वो बिलकुल इसके विपरीत था!...
करजत स्टेशन पहुँचते ही बच्चे चिल्लाने लगे, "'दिवादकर चिवड़ा, लोनावला चिक्की'!" मैंने सिगरेट जलाई। ट्रेन के करजत से निकलने के बाद, मैंने मूसलाधार बारिश में माथेरान जा रही ट्रेन देखी। बीते दिनों की यादें ताज़ा हो गईं। सलीमा के 'यहाँ से तुरंत निकल जाओ' कहने पर मैं माथेरान पहुँचा था। मैं उस दिन यहाँ नहीं आया था। कुमारी बार-बार कहती थी, चलो एक-दो दिन के लिए कहीं ठंडी जगह चलते हैं। लेकिन ऐसा कभी नहीं हुआ।
करजत से निकलने के बाद, घाट पर धीरे-धीरे चल रही कार ने रफ्तार पकड़ ली। अचानक कल्याण नज़र आया। फिर, ठाणे, कुर्ला, माटुंगा - मुंबई के इन उपनगरों से गुज़रते हुए, सारे पुराने विचार गायब हो गए। मुंबई की यही खासियत है - यह अच्छे लोगों को चिंता करने, बीते जीवन के बारे में सोचने का समय ही नहीं देता! यह इंसान को उसी राह पर दौड़ाता रहता है। एक तरह से, यह बहुत अच्छा है। यह जादू जो इंसान को खुद को भुला देता है, सिर्फ मुंबई जाकर ही हो सकता है! जो लोग यहां घंटों सिर झुकाकर एक ही जगह घूरते रहते हैं, उन्हें कोई दवा नहीं मिलेगी। कौन जल्दी में है? सुबह ऑफिस जाने की जल्दी में, शाम को घर लौटते हैं! इतनी सारी लोकल ट्रेनें, बसें, टैक्सियाँ लोगों को बिना थके खींचती रहती हैं, लेकिन ज़मीन से साँप की तरह उगती यह आबादी रुकती नहीं।
जब मैं बांद्रा में अपने घर पहुंची, तो उल्का खड़ी हुई और आगे आई। उसने मेरी मां की मृत्यु पर मुझे सांत्वना देने की कोशिश की, लेकिन किसी कारणवश मुझे ऐसा लग रहा था कि मैंने उल्का के साथ कुछ गलत किया है।

"समर, मुझे बहुत अफ़सोस है!" उसने मेरा हाथ पकड़कर मुझे अंदर खींचते हुए कहा। "यह सब कैसे हुआ?"
"घटित हुआ!"
मैंने सोचा कि मुझे बस उठकर चले जाना चाहिए।
"आप?"
"हाँ, क्यों? क्या आपको मेरा आना पसंद नहीं आया?"
"यह पसंद करने का सवाल नहीं है, मेटियोर, बल्कि—"
"अल्का को अच्छा नहीं लगा होगा, है ना?"
"उम-नहीं नहीं! ऐसा कुछ नहीं है!" मैं महिलाओं को थप्पड़ मारने में माहिर हूँ; लेकिन जीवन में पहली बार, मैंने इस तरह जवाब देने में हिचकिचाहट महसूस की। शायद अगर उल्का ने मुझसे और सवाल पूछे होते, तो मेरी पिटाई हो जाती, लेकिन लिलियन आकर मुझे बचा लिया। "समर, तुम कब आई?"
"बस, अब यही सही है!"
‘‘व्हेरी सॉरी टु लर्न अबाऊट द डिमाइस ऑफ युवर मदर!’’
मैंने बस सिर हिलाया।
"बहुत ही दयालु महिला!" लिलियन ने अपनी मां की कुछ यादें साझा करते हुए कहा। जब पिताजी का निधन हुआ, तो लिलियन और रॉबर्ट दोनों मुझसे मिलने भवानी नगर आए थे। उस समय लिलियन अपनी मां के साथ रह रही थी।
रुमाल से अपनी आँखों को पोंछते हुए उसने कहा,—
"अच्छा, कम से कम आप उनके आखिरी पलों में तो मौजूद थे!"
"मैं अपनी मां के आखिरी पलों में उनके साथ नहीं था! मेरी मां रात को सोते समय चल बसीं!"
"और तब आप कहाँ थे?"
मैं ऊपर हूँ!

ज़मीन पर यह शब्द सुनकर उल्का ने शक भरी नज़र से मेरी तरफ देखा।
लेकिन मैंने उसे अनदेखा करने का नाटक किया।
“उल्का, क्या तुम आ रही हो? बच्चे आ गए होंगे?” लिलियन ने पूछा। उल्का जाने के लिए तैयार थी; लेकिन मेरे आने की वजह से वह थोड़ी देर रुक गई थी। उल्का ने देखा था कि मेरे बोलने और व्यवहार में कुछ बदलाव आया है; लेकिन उसने शायद यही सोचा होगा कि यह उसकी माँ की मृत्यु के कारण हुआ होगा। पर उस बदलाव का असली कारण तो सिर्फ़ मुझे ही पता था! एक अजीब सी स्थिति पैदा हो गई थी, जहाँ अपनी ही पत्नी के साथ शारीरिक संबंध बनाने के बाद मुझे अपराधी जैसा महसूस हो रहा था। महिलाओं के मामले में मैं बहुत दृढ़ था; लेकिन उल्का के लिए मेरे मन में एक अलग ही जगह थी! उसकी वफ़ादारी पर कोई शक नहीं था। वह नशे की आदी हो गई थी, और तब भी अगर मैं उसे एक-दो दिन न देखूँ तो वह बेचैन हो जाती थी। अब वह नशे से मुक्त हो चुकी थी। नौकरी छोड़ने के बाद, लिलियन और उसने चर्च के पीछे वाले हॉल में एक मोंटेसरी स्कूल शुरू किया था, जिसे अच्छा प्रतिसाद मिला था। घर बैठे-बैठे वे दोनों एक हज़ार रुपये कमा रही थीं।
दाढ़ी बनाने और नहाने के बाद मैं दादर पहुँचा। रुक-रुक कर बारिश हो रही थी। छाते से मेरा सिर तो सूखा था, लेकिन कमर से नीचे का पूरा शरीर भीग चुका था। राजकुमारी के दरवाजे पर ताला देखकर मुझे गुस्सा आया। मैंने अगले ब्लॉक में जाकर पूछताछ की, और तभी मैंने राजकुमारी को टैक्सी से उतरते देखा!
"हेलो समर! तुम कब आई? और ये क्या, तुमने मुझे बताया ही नहीं कि तुम्हारी माँ मर गई? मैं तुम्हारी तो नहीं हूँ ना?"
"यह कैसे?" मैंने कुछ कहना चाहकर कहा।

मुझे तब पता चला जब मैं रॉबर्ट से मिलने गया था। क्या आप बीमार थे?
"पापा के जाने के बाद से मैं बिस्तर पर ही पड़ी हूँ!" "बदकिस्मती! खैर, मेरे पास आपको बताने के लिए कुछ अच्छी खबर है।" "क्या!"
"मेरे वकीलों ने रावेरकर को संपत्ति के बंटवारे के लिए नोटिस भेजा था। उन्होंने धमकी दी थी कि अगर मुझे संपत्ति में मेरा हिस्सा नहीं दिया गया तो वे दीवानी मुकदमा दायर करेंगे!"
"तो ठीक है?"
तो क्या हुआ? उनका जवाब यह है कि आपको आगे आकर गहने, सोना, चांदी आदि में अपना हिस्सा लेना चाहिए!
‘‘समक्ष? माय गॉड!’’
"क्या तुम डरे हुए हो?" राजकुमारी ने कमरे का ताला खोलते हुए मेरी ओर देखते हुए कहा, "ओह, वे लोग तो दरबार में आने से डरते हैं!"
"लेकिन क्या आप जानते हैं कि राज्य के पास कुल मिलाकर कितने गहने और सोना है?"
"चिंता मत करो! अरे, शादी के बाद, निजी प्रबंधकों ने महल में शिकारगाहों आदि का उल्लेख करते हुए एक सूची बनाई थी। उस सूची की एक प्रति पंजीकृत है। इसके अलावा, सरकार के पास भी उसकी एक प्रति है! वे लोग इस तरह धोखा नहीं दे पाएंगे।"
"लेकिन किंग, वे आपको वहां नहीं बुलाएंगे और आपकी जान को खतरे में नहीं डालेंगे, है ना?"
"इसीलिए तो मैं तुम्हारा इंतज़ार कर रहा हूँ! हम सात-आठ लोग साथ चलेंगे, हम सबको मार तो नहीं सकते। वैसे भी, हम अपने-अपने कैंप में जाएँगे!"

‘‘मैं समझ गया! चलिए व्यवस्था की ओर चलते हैं!’’
"समर, लेकिन इस काम में देरी करने का कोई फायदा नहीं! लक्ष्मी खुद आगे आई है, अगर हम उसकी अनदेखी करेंगे तो वह नाराज हो जाएगी!"
"बिल्कुल सही!"
यह निश्चित था कि राजकुमारी के लिए रावर जाने में जोखिम था; लेकिन उस डर के कारण वितरण में शामिल गहनों, सोने और चांदी को खोने का कोई मतलब नहीं था।
मैंने रेसकोर्स में कई पुलिस अधिकारियों से मुलाकात की थी। सुरक्षा प्रदान करने आए कुछ बड़े पुलिस अधिकारी खुद भी रेस देखने आते थे। मैं उन्हें अच्छी तरह जानता था। मुंबई के सहायक आयुक्त, इजेकील, जातीय रूप से यहूदी थे; लेकिन मुंबई में दो पीढ़ियों से रहने के कारण, इजेकील बहुत अच्छी मराठी बोलते थे! सहायक आयुक्त और विलास एक-दूसरे को अच्छी तरह जानते थे।
मैं इजेकल साहब के पास पहुँचा। उन्हें राजकुमारी के साथ मेरे रिश्ते के बारे में पता था। उन्होंने मज़ाक में मुझसे कहा, "समर, कृपया हमारे लिए सोने के अंडे देने वाली मुर्गी ढूँढ़ दो!" मैंने हंसते हुए कहा, "तुम्हें इतनी सारी मुर्गियों की क्या जरूरत है? तुम्हारे पास तो पहले से ही मुर्गियां हैं!"
"अच्छा, बताओ, मैं क्या सेवा कर सकता हूँ?" उसने सोने का सिगरेट का डिब्बा खोलते हुए और मेरे सामने रखते हुए पूछा। मैंने उसे सारी बातें समझाईं और अंत में कहा,—
"राजकुमारी के लिए अपने हिस्से के लिए रावर जाना न केवल आवश्यक है, बल्कि उनकी सुरक्षा के लिए भी व्यवस्था की जानी चाहिए!" "क्या आपके साथ कोई पुलिस अधिकारी हो सकता है?"
"बहुत अच्छा!"

और अगर मैं खुद आऊं तो?
"आप मजाक कर रहे हो!"
"नहीं! कोई मज़ाक नहीं! मुझे मैसूर में एक ज़रूरी काम है। मुझे वहाँ जाना ही होगा, मैं रास्ते में रेवर के लिए आपका काम कर दूँगा और फिर आगे बढ़ जाऊँगा, इस योजना के बारे में आपका क्या ख्याल है?"
"आपकी बहुत सराहना की जाएगी!"
"अगर आपको धन्यवाद कहना ही है, तो रद्द कर दीजिए!"
हम रावेर के गेस्ट हाउस में उतरे। कन्नड़ क्षेत्र में स्थित मराठी भाषी राजा का यह छोटा सा राज्य एक सुंदर स्थान पर बसा हुआ था। गाँव के चारों ओर एक प्राकृतिक पर्वतीय दीवार थी। महल के सामने एक भव्य झील थी। हल्के लाल रंग की राजस्थानी बलुआ पत्थर की इमारत का प्रतिबिंब नीले जलाशय में दिखाई दे रहा था। हर जगह कमल खिले हुए थे। भारत में दुर्लभ काले हंस पानी में स्वतंत्र रूप से तैर रहे थे। बारिश के कारण जलाशय पानी से लबालब भरा हुआ था। लेकिन जब हम गए थे तब बारिश नहीं हो रही थी, इसलिए हमें इस प्राकृतिक सौंदर्य को निहारने का अवसर मिला।
दोपहर में हमें महल बुलाया गया। मैं और इजेकील गए। राजकुमारी के ससुर बहुत धार्मिक थे। उन्होंने हमारा स्वागत किया। सच कहूँ तो, यह मेरे अंतरात्मा को झकझोर देने वाला था। मैं एक प्रतिनिधि के रूप में उस बहू के मामलों में हिस्सा लेने आया था जिसने इतनी शान-शौकत त्याग दी थी और फिल्म इंडस्ट्री में कदम रखने की महत्वाकांक्षा पाल रखी थी। लेकिन परिस्थितियों के चलते, मेरे अंदर का समझदार और भावुक समर हाल ही में असंवेदनशील और भावनाहीन हो गया था। मुझे अविवेकीपन और भावनाहीनता का समर्थन

करने की आदत पड़ गई थी। शिदोजी राजा को फंसाने और उनसे हर महीने दो हजार रुपये की फिरौती वसूलने के बारे में मैं क्या कहूँ? मैंने महाराज से अपना और इज़कल साहब का परिचय कराया। महाराज, जिनका चेहरा मोम जैसा था, ने सिर हिलाया और कहा...
"हमारे परिवार में पहले कभी ऐसी घटना नहीं हुई; लेकिन हमने उसे हिस्सा देने का फैसला किया है ताकि उसे कल अदालत में पेश न होना पड़े!"
"यही तो आपके हृदय की महानता है, महोदय!" मैंने विनम्रतापूर्वक कहा।
"मुझे लगा कि आप उनकी निजी सचिव हैं!"
"हाँ यह सही है!"
"तुम पहले फुटबॉल खिलाड़ी हुआ करते थे!"
"जी हाँ, बिल्कुल! आपको कैसे पता चला?"
"रत्नापुर के महाराजा कभी-कभार आते हैं, है ना?"
"तो भले ही राजकुमारी यहाँ से चली गई, लेकिन उसने हमसे अपना रिश्ता नहीं तोड़ा?"
नहीं! इन्हें क्यों तोड़ा जाना चाहिए? इनमें क्या खराबी है? खैर, ये गहनों की सूची है! ये पंजीकृत है। इसे चार बराबर भागों में बांटा गया है। एक मेरे लिए, एक मेरी पत्नी के लिए, एक मेरे बेटे के लिए और चौथा मेरी बहू के लिए! आप तय कर लीजिए कि आपको कौन सा चाहिए! चुनाव आपका है!
मैं राजकुमारियों से पूछूंगी। आपको मुझे वह सूची देनी होगी! "उन्हें यहां आने में कोई आपत्ति नहीं थी! जब आप और इतना बड़ा पुलिस अधिकारी यहां मौजूद हैं तो हमारे हंगामा करने का क्या मतलब है?"

"ऐसा मत सोचो, महाराज! वह मैसूर जाना चाहता था, इसलिए हमने कहा, चलो साथ चलते हैं!"
"श्री ठाकुर, मैंने आपसे दस-बीस अधिक मानसून देखे हैं। खैर, आप उसे यहाँ बुला सकते हैं!"
मैं राजकुमारी को लेकर आया था। उनके आने पर दरबारियों ने रीति- रिवाज के अनुसार अभिवादन किया। मैंने शाही महिलाओं का यह गुण बहुत समय बाद देखा था। वे एक-दूसरे को रिझाने के लिए जान तक दे देती थीं; लेकिन जब वे एक-दूसरे के सामने खड़ी होतीं, तो झुककर एक-दूसरे का अभिवादन करती थीं!
"जांचें कि क्या सभी गुणों की यह मूल सूची आपकी सूची से मेल खाती है, और इन चार भागों में से कोई एक ले लें!"
राजकुमारी ने सभी वस्तुओं का ध्यानपूर्वक निरीक्षण किया और उनमें से दूसरी वस्तु स्वीकार कर ली - इनमें चार हीरे के हार, मोतियों की चूड़ियाँ, सोने की बालियाँ, बाजूबंद, रत्नजड़ित बेल्ट, एक दर्जन हीरे जड़े झुमके, सोने की पायल, एक हार और विभिन्न आकारों के चार हीरे के लॉकेट, एक छोटे बच्चे के लिए नौ पत्थरों वाला एक छोटा पर्स, ऐसे ही आभूषण और चांदी की थालियाँ, कटोरे, घड़े, जग, खाने के बर्तन, फूलदान, इत्र और गुलाब की पंखुड़ियाँ शामिल थीं। जब हम इन सभी वस्तुओं को अपने अधिकार में ले रहे थे, तभी एक बहुत ही सुंदर और प्यारा पाँच साल का बच्चा दौड़ता हुआ आया और महाराजा को प्रणाम करते हुए बोला,— "पिताजी, उस बेवकूफ को बता दीजिए। वो मुझे मार डालेगी!" मुस्कुराते हुए महाराज ने उसे गले लगाया और उसकी पीठ पर हाथ फेरते हुए कहा, "शीला! ओह शीला! तुम बलराज को क्यों मार रही हो!"

राजकुमारी ने उस छोटे बच्चे को महल में पहले कभी नहीं देखा था। वह आश्चर्य और प्रशंसा से उसे निहारने लगी। उसी क्षण, लगभग बाईस वर्ष की एक ईसाई लड़की आगे आई और बोली,
"सर, आपने पाठ नहीं किया और जब मैंने आपसे पूछा तो आप भाग गए!" "ऐसा करने की ज़रूरत नहीं है, बेटा, जाओ! पहले अपनी पढ़ाई करो। क्या तुम्हें दोपहर में हरे कबूतरों के शिकार के लिए नहीं जाना चाहिए?"
"यह बच्चा किसका है?" राजकुमारी ने पूछा।
तब महाराज ने हल्की सी मुस्कान के साथ कहा, "ये रावेर के राजकुमार हैं! रत्नप्रभा, अच्छा हुआ कि तुम यहाँ से चली गईं! बाद में तो मामला और भी पेचीदा हो जाता! हमारे बलराज को एक दासी की पुत्री से प्रेम हो गया था। उससे उनका यह पुत्र हुआ। लेकिन दासी का पुत्र राजकुमार नहीं बन सकता; इसलिए हमने राजकुमार का विवाह तुमसे करवा दिया। लेकिन भाग्य को तुम्हारा यहाँ रुकना मंजूर नहीं था! तुम यहाँ से चली गईं और इसी कारण हमारी पुरानी सोच भी बदल गई। यह स्पष्ट हो गया कि कुलीनता जन्म से नहीं मिलती। फिर हम उस दासी की पुत्री को महल में ले आए! कुमार उसे शुरू से ही प्यार करते थे, इसलिए वे कभी तुम्हारी ओर आकर्षित नहीं हुए। यह दासी की पुत्री ज्यादा पढ़ी-लिखी नहीं है, लेकिन उसके तौर-तरीके और व्यवहार एक कुलीन राजपरिवार के बच्चों के लिए उपयुक्त नहीं हैं! तो ये इतिहास है! अच्छा, क्या तुम्हें कुछ और चाहिए?" महाराज ने बड़ी सहजता से पूछा।
राजकुमारी मानो सपने में कुछ देख या सुन चुकी हो, बच्चे को देखती रही।
राजकुमारी को बांटने के लिए जो सामान आया, उसमें नौ रत्नों से भरा एक थैला भी था, जिसे एक छोटे बच्चे के हाथ में बांधना था।

उसने वह थैला उठाया और आगे बढ़कर बच्चे के हाथ में बांधने लगी। तभी महाराज ने कहा, "रत्नप्रभा, तुम यह क्या कर रही हो? अरे, यह थैला तो बहुत कीमती है! बीच में लगा हीरा साढ़े तीन लाख का है!" "रहने दो! यह मेरी याद के रूप में यहीं रहेगा!"
मैं और इजेकील दोनों ही यह दृश्य देखकर दंग रह गए। राजकुमारी का स्वभाव तो वाकई बेकाबू था!
महल से निकलने तक हमें राजकुमारी के पति या नौकरानी नहीं दिखीं।
हम इजेकल साहब के साथ मैसूर गए थे। वहाँ राजकुमारी ने अपने हिस्से में आई सारी वस्तुएँ, जैसे गहने और बर्तन, बेच दीं। उन्होंने मुझे या इजेकल को यह नहीं बताया कि उन्हें कितना पैसा मिला। हमने सारा पैसा बैंक में जमा कर दिया और उसी होटल में लौट आए जहाँ हम ठहरे थे। हम दोनों शराब पी रहे थे। हमारी बातचीत बहुत सुखद थी, लेकिन उनके आते ही हमने बात करना बंद कर दिया। क्योंकि हमारी चर्चा उस बच्चे के बारे में थी जिसे रेवर ने महल में देखा था।
"अरे, मैं आप लोगों को परेशान तो नहीं कर रहा हूँ ना?" राजकुमारी के आते ही इजेकैल और मैं खड़े हो गए। उनके बैठते ही हम दोनों भी बैठ गए।
अब तुम पहली बार आज़ाद हो!
"क्या आप हमारे साथ आना चाहेंगी?" यहेजकेल ने राजकुमारी से पूछा।
‘‘ऑफ कोर्स! आय वॉण्ट टु सेलेब्रेट टुडे!’’
"खुशी मनाएं? किसलिए?"

"रोवर के खजाने में उसके हिस्से के लिए!" मैंने कहा। इसी बीच, वेटर एक खाली गिलास ले आया। इजेकील ने उसके गिलास में व्हाइट हॉर्स का एक पेग डाला, और वह खुश हुई और एक घूंट लेकर बोली,— "समर, तुम्हें क्या लगता है कि जब मुझे मेरे हिस्से के गहने मिले तो मुझे कैसा महसूस हुआ होगा?"
"कहना मुश्किल है! कभी-कभी तो मैं आपके स्वभाव का अंदाज़ा भी नहीं लगा पाता!"
"मुझे तो इसकी ज़रूरत ही नहीं, तो तुम्हें कैसे हो सकती है? सच कहूँ तो, गहने लेने से पहले मैंने सोचा था कि मैं उनसे बदला लूँगी; लेकिन उस लड़के के इतिहास के बारे में जानने के बाद, मुझे लगता है कि मैं हार गई! उन्होंने मुझे ये इस तरह दिया कि तुम्हें अपना हक लेकर चुप रहना चाहिए! क्या तुम्हें नहीं लगता कि नौकरानी को रानी का दर्जा देकर उन लोगों ने एक तरह से मुझसे बदला लिया है?"
"महामहिम, यह मामला इतना नाजुक और जटिल है कि मैं ठीक से सोच भी नहीं पा रहा हूँ!"
"ठीक है। भूल जाओ! तो क्या हुआ, श्रीमान इजेकील, श्रीमती इजेकील तो काफी समय से दिखाई ही नहीं दी हैं!"
"वे मुंबई में रहते हैं, है ना? वे कभी-कभी अपने बेटे से मिलने पालघर जाते हैं। वह वहाँ मुर्गी पालन का व्यवसाय करता है, है ना?"
"अरे! लेकिन ये क्या, तुम और समर इतने करीब कैसे हो सकते हो? लोग अब भी कहते हैं कि तुम्हारे गडकरी इंस्पेक्टर की हत्या में उसका हाथ था!"
"लोगों के बात करने का क्या फायदा? लोग तो वैसे भी बात करते हैं! लेकिन हमें यकीन था कि समर उस समय बांद्रा में ही था!"

"समर, उस लड़की का बाद में क्या हुआ? जर्मनी जाने के बाद उसके साथ क्या हुआ, यह मुझे समझ नहीं आ रहा है?"
मुझे भी कुछ समझ नहीं आ रहा!
"जब वह वापस आए तो मुझसे मिलना!"
‘‘ओ ऽ के!’’
"श्री इजेकील, क्या फिल्म उद्योग में कोई ऐसा निर्देशक है जिस पर आप भरोसा करते हैं?"
‘‘का?’’
"मैं एक फिल्म को फाइनेंस करना चाहती हूं। और मैं उसमें नायिका की भूमिका निभाना चाहती हूं।"
"राजा!" मैंने अपनी आवाज थोड़ी ऊंची करते हुए कहा, "लगता है सिनेमा का जुनून अभी भी आपके दिमाग से नहीं निकला है!"
"जब तक मैं खुद को स्क्रीन पर नायिका के रूप में नहीं देख लेती, तब तक मैं नहीं जाऊंगी। अब तक मैंने दूसरों को मना लिया है; अब मैं फिल्म का वित्तपोषण खुद कर रही हूँ!"
मैं और इजेकील एक-दूसरे को देखते रहे। क्योंकि यह बात बिल्कुल स्पष्ट थी कि अगर राजकन्या फिल्म इंडस्ट्री में कदम रखती है, तो उसे वही संपत्ति विरासत में मिलेगी जो रावर को विरासत में मिली थी।
"क्या मैं आपको एक सुझाव दे सकता हूँ, राजकुमारी?" इजेकील ने सिगरेट का एक कश लेते हुए कहा।
"आपका क्या सुझाव है?"
"आपको आवंटित आभूषणों को बेचकर जो पैसा मिला है, उसे किसी सुरक्षित और अच्छे स्थान पर निवेश करें - मुंबई में एक इमारत खरीदें, या इसे लंबे समय के लिए बैंक में जमा करा दें। आपको हर

महीने अच्छा ब्याज मिलेगा! और इस तरह की व्यवस्था के बाद, बचे हुए पैसे का क्या करना है, यह तय करें!"
राजकुमारी ने व्हिस्की का एक घूंट लिया और जोर से हंसते हुए बोली, "मैं किसके लिए ऐसा इंतज़ाम करूंगी! मेरा अपना कौन है? कोई बच्चा या शिशु नहीं! मैं यह पैसा नहीं रखूंगी!"
‘‘बुढ़ापे की अंतिम सीमा क्या है?’’
क्या इस बात की कोई गारंटी है कि मैं बुढ़ापे तक जीवित रहूंगा? परसों जब रावेर के महाराजा ने राजकुमारी को अपने पुत्र के प्रेम प्रसंग के बारे में बताया, तो उनके व्यवहार में एक अलग ही बदलाव आ गया। मुझे ठीक से नहीं पता कि उनका व्यवहार कैसा था, लेकिन उस क्षण से ही वे कुछ अजीब तरह से व्यवहार करने लगी थीं, इसमें कोई संदेह नहीं है!
रात के खाने के बाद, मैं और राजकुमारी कमरे में आए। इजेकील दूसरे कमरे में चला गया। राजकुमारी पलंग पर लेटी सिगरेट पी रही थी। मैं दूसरी तरफ अखबार के पन्ने पलट रहा था। लेकिन स्कॉच के नशे में चूर धुएं के कारण अखबार पर लिखे अक्षर दिखना नामुमकिन था!
"गर्मी! कृपया यहाँ आओ!"
मुझे पहले से ही आशंका थी कि आज यहाँ कुछ ऐसा ही होगा। मैं उठी और बिस्तर पर चली गई। राजकुमारी ने मेरा हाथ पकड़कर मुझे अपनी ओर खींचते हुए कहा, —
"क्या यह सब सच हो सकता है?"
"तुम किस बारे में बात कर रहे हो!"
"रेवर के राजकुमार का एक दासी से एक बच्चा था?"
मुझे लगता है यह सच है! वे इस तरह का झूठ क्यों बोल रहे हैं?

"और उस लड़के की शक्ल-सूरत बिल्कुल रावर नरेश जैसी थी। एक तरह से यह अच्छा ही था, है ना?"
मुझे ऐसा नहीं लगता! उन्हें नौकरानी को रानी का दर्जा देना ही था!
लेकिन क्या तुम रावेर के महान महाराजा की कही बात भूल गए हो! "क्या कहा आपने?"
"कुलीनता जन्मजात नहीं होती! क्या इसका मतलब यह है कि नौकरानी कुलीन महिला है और मैं? इसलिए मुझे अब भी लगता है कि मुझे उनसे बदला लेना चाहिए!"
"महाराज, रात काफी हो चुकी है, और हमें कल सुबह फिर से निकलना होगा। इजेकील को परसों ड्यूटी पर हाजिर होना है।"
"उसे जाने दो! उसे जाने दो। हम दो दिन बाद जाएंगे!"
"लेकिन हम उनकी कार को आसानी से मुंबई ले जा सकते हैं!"
मैं नहीं आऊंगा! अगर तुम जाना चाहते हो, तो जाओ!
"लेकिन क्यों? उनके साथ क्यों नहीं?"
"मुझे भी ऐसा ही लगता है!"
राजकुमारी बोलते समय मेरा हाथ दबा रही थी। मैं समझ गई थी कि वह क्या चाहती है। लेकिन आज मेरा मूड नहीं था।
"समर, अगर मैं तुम्हें पचास हजार दूं, तो तुम उस पैसे का क्या करोगे?"
मुझे तुम्हारा पैसा नहीं चाहिए!
‘‘तो फिर तुमने शिदोजी के दो हजार में से एक हजार क्यों ले लिए?’’ मुझे उस समय इसकी जरूरत थी!
"अब इसकी क्या आवश्यकता है?"
"उत्का ने मोंटेसरी क्लास शुरू की है। वह पाँच सौ रुपये कमाती है!"

"क्या आप जैसे राजा-क्षत्रिय के लिए अपनी पत्नियों के धन पर जीवन यापन करना उचित है?"
"पत्नी के पैसों पर जीवन यापन करना निषिद्ध नहीं होना चाहिए!" "विवाह की पत्नी कौन है? उल्का या अल्का? अरे, आप उल्का को अपनी पत्नी मानते हैं, लेकिन वह आपकी पत्नी नहीं हो सकती, और मैं आपको एक बात बता दूं, आपको अपने नैतिक विचारों को हवा में उड़ा देना चाहिए! कभी-कभी आप उन्हें यूं ही खो देते हैं!"
मुझे राजकुमारी की बात समझ नहीं आई। मैंने उसका हाथ छुड़ाया और अपने बिस्तर पर चली गई। एक मन कह रहा था कि राजकुमारी से ज़्यादा संपर्क न रखूँ, जबकि दूसरा मन कह रहा था कि अगर तुम उससे दूर रहोगी, तो लोग कौवों की तरह उसके चारों ओर जमा हो जाएँगे और उसे बिगाड़ देंगे। भले ही वह खुद को बहुत चालाक और रणनीतिज्ञ समझती हो, लेकिन उसे असल दुनिया की कोई समझ नहीं है।
इज़ेकील ने कहा था कि वह सुबह छह बजे निकलेगा, लेकिन राजकुमारी ने कहा कि वह बाद में आएगी, इसलिए मैंने इज़ेकील से कहा, "तुम जाओ," और वापस सो गया। हमारे जाने के समय इज़ेकील की ज़रूरत नहीं थी!
उस रात मैं आधी रात तक सो नहीं पाया। मेरे दिमाग में वही अशुभ विचार घूम रहे थे।
हमें पता भी नहीं चला कि एज़ेकल सुबह कब निकला था। नहाने के बाद हम नाश्ता करने बैठे ही थे कि हमें बुरी खबर मिली। एज़ेकल की गाड़ी को सड़क पर गुंडों ने रोक लिया था और उसकी बुरी तरह पिटाई की थी। हमें यह भी पता चला कि उसका ड्राइवर गंभीर हालत में है। जैसे ही हमें पता चला कि घायलों को अस्पताल में भर्ती कराया गया है, राजकुमारी और मैं उनसे मिलने गए।

इज़ेकील के माथे पर चोट लगी। ड्राइवर की कॉलरबोन टूट गई। सड़क पर एक ट्रक खड़ा था, और उसके ड्राइवर ने इज़ेकील को हाथ हिलाकर इशारा किया, तो इज़ेकील के ड्राइवर ने ट्रक रोक दिया। ट्रक रुकते ही, पाँच-छह लोग ट्रक के पीछे से अंदर आए और इज़ेकील और उसके ड्राइवर को पीट-पीटकर मार डाला। इस राजमार्ग पर कई सालों से ऐसी लड़ाई नहीं हुई थी। ठीक उसी दिन, ठीक वही घटना घटी, और वो भी इज़ेकील की कार के साथ!
"हमें बेहद खेद है, श्रीमान इजेकील!" राजकुमारी ने कहा।
"लेकिन ऐसा होना ही क्यों चाहिए?" मैंने पूछा।
"गर्मी!" इजेकील एक पल रुका और बोला, "ज़रूर कोई मेरी गाड़ी पर नज़र रख रहा होगा। राजकुमारी पिछले दो दिनों से मैसूर में अपने गहने बेच रही थी, है ना? उन्होंने सोचा होगा कि अगर वे गाड़ी रोककर लूट लेंगे तो उन्हें अच्छा सौदा मिल जाएगा। लेकिन जब उन्हें गाड़ी में कुछ नहीं मिला, तो उन्होंने हमें पीटा और चले गए!"
"क्या आपने वह संख्या नहीं देखी?"
मैंने नंबर देखा; लेकिन बहुत संभावना है कि यह नकली है! तुम दोनों मेरे साथ नहीं आए, अच्छा हुआ! मेरी किस्मत अच्छी थी कि मैं राजकुमारी नहीं थी!
"लेकिन मेरी वजह से आपको मार खानी पड़ी, श्रीमान इजेकील!" राजकुमारी ने कहा।
"बिल्कुल सही! हमने अब तक अपराधियों को मारने में कोई कमी नहीं की है। इस बार तो ऐसा लगा जैसे उन्होंने हमें थोड़ा सा बदला चुका दिया हो! ऐसे समय में भी, इजेकील अपना हास्यबोध नहीं भूलने को तैयार था।"

जब मैसूर पुलिस को पता चला कि घायल इजेकील मुंबई के सहायक पुलिस आयुक्त हैं, तो वे भागने लगे। लेकिन क्या वाकई कुछ बेईमान गुरु के शिष्य सड़क पर खड़े होकर गाड़ियों का रास्ता रोकते हैं? छठे दिन हम मुंबई पहुँच गए। हम बैंगलोर से मुंबई के लिए हवाई जहाज़ से गए थे। जब मैं राजकुमारी को दादर छोड़ने गया, तो उसने कहा, "अब समझ में आया? आपने उस दिन मुझे ईज़ेकिएल के साथ जाने से मना क्यों किया था?"
"बेवकूफी भरी बातें मत करो! क्या तुम्हें पता था कि तुम उस कार को रोकोगे और लूटे जाओगे?"
"यह सच नहीं है, कभी-कभी लोग सहज रूप से अशुभ घटनाओं को वैसा ही मान लेते हैं!"
लेकिन कुल मिलाकर, सब ठीक है! मैं जल्द ही आपके पास नहीं आऊंगा, और मुझे नहीं लगता कि अब आपको मेरी मदद की ज्यादा जरूरत पड़ेगी! "ऐसा लगता है कि आप मैसूर में कही गई बातों को लेकर मन में द्वेष रखे हुए हैं?"
"यह गुस्सा नहीं है, लेकिन ऐसी जगह पर बार-बार लौटना अच्छा नहीं है जहाँ आपकी बात का कोई महत्व नहीं है!"
"समर, इस तरह बात मत करो! मैं अधिकारपूर्वक बोल रही हूँ क्योंकि मुझे तुम्हारे बारे में कुछ महसूस हो रहा है! अगर तुम्हें पसंद नहीं है तो मैं नहीं बोलूँगी। ठीक है, क्या तुम परसों पुणे आओगे?"
पुणे में क्या खराबी है?
"रेस शुरू हो गई हैं, है ना? बहुत समय हो गया है!"
मैंने एक पल सोचा। विलास के दो-तीन पत्र आए। उनके लिखे पत्रों पर ध्यान देना मेरे लिए संभव नहीं था; फिर भी, मुझे उन्हें पत्र

लिखकर सूचित करना था कि मैं नहीं आ पाऊँगा। लेकिन मैंने वह भी नहीं किया था। फिर मैंने झट से कहा, "चलो चलें!"
मुंबई से पुणे तक टैक्सी या निजी कार से यात्रा बेहद सुखद है! पुणे साढ़े तीन घंटे में पहुँच जाते हैं, पता भी नहीं चलता कि कब कार इतने सुंदर घाट से गुजरते हुए खंडाला को पार कर जाती है। बारिश के बाद पुणे का पूरा इलाका हरा-भरा हो गया है। पुणे का इलाका हमेशा से ही आँखों को सुकून देता है, लेकिन बारिश के मौसम के बाद इसकी सुंदरता और भी निखर जाती है। पुणे में जनसंख्या का भयानक 'प्रभाव' भी दिखने लगा है, पुणे में स्वास्थ्य, सब्जियां और दूध की कमी होने लगी है।
होटल हेवर्ड्स जाने के बाद, मेरी पुरानी यादें एक बार फिर ताजा हो गईं। होटल का मालिक, वेटर और सफाईकर्मी, सभी मुझे जाने- पहचाने लगे।
"क्या तीसरी मंजिल का कमरा खाली है?"
"जी सर, मुझे कल रात रिहा कर दिया गया!"
"जाओ और इसे साफ करो!" मैंने वेटर को आदेश दिया।
हेवर्ड्स होटल की तीसरी मंजिल पर सिर्फ एक कमरा था। वहाँ से पुणे का पूरा पूर्वी इलाका दिखाई देता था। पुणे का अंत और वानावाड़ी गाँव का आरंभ, वह क्षेत्र वहाँ से स्पष्ट रूप से दिखाई देता था। पीछे मुड़कर देखने पर मुझे गिरजाघर, शराबखाना और सिंहगढ़ दिखाई दिए, जो दूर क्षितिज पर एक रेखा की तरह लग रहे थे!
राजकुमारी मेरे बगल में छत पर खड़ी थी, बेहद खूबसूरत लग रही थी। "समर, कभी-कभी मेरा मन करता है कि मैं पुणे आकर यहीं बस जाऊं!" "राजे, पुणे रहने के लिए मुंबई से कहीं बेहतर जगह है!"

लेकिन मुंबई में, कौन किसी दूसरे की आलोचना नहीं करता? जब गांव छोटा होता जाता है, तो चंभरचौक्ष की संख्या बढ़ती जाती है! "लेकिन पुणे आकर आपको परेशान करने वाला कौन है?"
"ऐसा मत कहो! अब जब मैं रेवर में जाकर अपने हिस्से के रत्न ले आया हूँ, तो यह स्वाभाविक है कि कई महान लोग भूतों की तरह इकट्ठा होकर मुझसे मुंह मोड़ लेंगे और मुझसे मुंह फेर लेंगे! लेकिन मैं अब किसी का चेहरा नहीं देखना चाहता!"
"ऐसा कैसे हो सकता है? अगर आपके करीबी लोग आपके पास आएं, तो क्या आप उन्हें भी भूत कहेंगे?"
"मेरे पास बिना किसी कारण के लोग शायद ही कभी आते हैं! हर किसी में अपना स्वार्थ होता है! आज तक, मुझे केवल एक ही व्यक्ति निस्वार्थ मिला है।"
मैंने बड़ी उत्सुकता से पूछा, "कौन?"
"तुम या कौन? और कौन?" राजकुमारी मुस्कुराते हुए बोली, "चलो एक छोटा सा बंगला लेकर उसे कैंप क्षेत्र या वानावाड़ी क्षेत्र में लगा देते हैं! मैं मुंबई से तंग आ चुकी हूँ! सर्दियों में कम से कम मुंबई की हवा थोड़ी बेहतर होती है; लेकिन गर्मियों में तो कितनी भयानक होती है! हे भगवान! बरसात के मौसम में तो यही हाल होता है! सड़कों पर कमर तक पानी भरा रहता है, सारी गाड़ियाँ बंद रहती हैं, जबकि गर्मियों में नलों में पानी नहीं आता, पसीने की धाराएँ शरीर से बहती रहती हैं! मैं ऐसी उमस भरी हवा में नहीं रहना चाहती! लेकिन क्या करें, वहाँ कोई किसी को परेशान नहीं करता, तो मुझे वहीं रहना पड़ेगा, कोई बात नहीं!"
"राजा, मैं थोड़ी देर के लिए विलास से मिलने जा रहा हूँ। वह मुझसे थोड़ा नाराज़ है!"
"आओ और मुझसे मिलो, तब तक मैं अपना सारा काम खत्म कर लूंगा!"

मैं नीचे आया और विलास को घर पर फोन किया।
‘‘हेलो? यह कौन सा चैनल है?’’
"हां तुम कौन हो?"
मैं समर की बात कर रहा हूँ। विलास कहाँ है?
"वे निर्माण कार्य के लिए जा रहे हैं! वे बारह या साढ़े बारह बजे तक वापस आ जाएँगे और सीधे दौड़ के मैदान में चले जाएँगे! आज दौड़ है ना?"
"जी हां, जी हां! मेरे पास एक विचार है!"
"तुम यहाँ क्यों नहीं आए? बच्चे हमेशा याद रखते हैं!"
मैं आऊंगा, मैं आऊंगा!
"तुम्हारे साथ कोई न कोई तो होगा जो तुम्हें यहाँ अकेला नहीं छोड़ेगा!" इंदु की बहन ने व्यंग्य भरे लहजे में सवाल पूछा। "'चे: चे:! भाभी, ऐसा मत सोचो! लेकिन बात क्या है—रहने दो—मैं तुम्हें आमने-सामने मिलने पर ही बताऊंगी। विलास का निर्माण कार्य चल रहा है, है ना?"
‘‘हां, हां, नौ बज गए हैं!’’
मैं निर्माण स्थल पर गया और विलास से मिला। मुझे देखकर वह आश्चर्यचकित रह गया और बोला, "अरे बाप रे! यहाँ तुमसे क्या गलती हो गई?"
"मैं तुम्हें देखने के लिए आया हूँ!"
"हमारी किस्मत ही खराब है!" विलास ने हवा में हाथ लहराते हुए कहा, "मैंने दो-तीन पत्र भेजे, लेकिन किसी का भी जवाब नहीं आया। अगर हमसे कोई गलती हुई है, तो कृपया मुझे बताइए, महोदय!"
"मैं, महोदय?" मैंने मुस्कुराते हुए कहा और विलास के कंधे पर हाथ रख दिया।

"तो फिर कौन? क्या राजकुमारी से प्यार करने वाला पुरुष तुच्छ होता है?"
"बोलो बाबा, बोलो! तुम्हारे बोलने का अच्छा कारण है! लेकिन क्या आज कोई संभावना है?"
विलास ने मेरा हाथ कसकर पकड़ लिया और कहा, "क्या तुम्हें अभी तक पैसों की भूख नहीं लगी? चलो, दूसरों को अपनी किस्मत आजमाने दो!" "विला, तुमने कुछ गलत समझा है! मैं बेरोजगार हूँ। उल्का एक मोंटेसरी क्लास चलाती है, इसलिए मैं दिन में दो बार खाना खाती हूँ। अगर तुम मेरी आमदनी को शून्य कहोगे तो!"
"देखो, अगर कोई राजकुमारी मेरे बिल चुकाने लगे तो मुझे पैसे कमाने की क्या ज़रूरत है? पैसे तो खर्चों के लिए चाहिए होते हैं। अगर खर्चे हम आपस में बाँट लें तो हमें पैसे लेने की क्या ज़रूरत है? चलो छोड़ो! मुझे पता चला है कि तुम्हारी माँ का देहांत हो गया है। क्या तुम सच में वहाँ थे, जैसा तुमने कहा था?" "हाँ! लेकिन मेरी गतिविधियों को लेकर आपको इतनी चिंता क्यों होती है?"
"कैसे? समर, अब तो तुम बिल्कुल सीधे-सादे असमिया बन गए हो! पुणे में लोग तुम्हें सलीमा कांड से जानते हैं, मुंबई में गडकरी इंस्पेक्टर हत्याकांड से, और अब जब तुम कहते हो कि राजकुमारी रत्नप्रभा परछाई की तरह तुम्हारा पीछा करती हैं, तो महाराष्ट्र में तुम्हें कौन नहीं पहचानेगा? लेकिन ये शाही परिवार के सदस्य तो बड़े ही चंचल होते हैं, है ना? मुझे और कुछ कहने की ज़रूरत नहीं है!"
"भूल जाओ! विलास, मैं पहले तुमसे माफी मांगना चाहता हूँ!"
"किस बारे मेँ?"

"क्योंकि मैं आपके निर्देशानुसार इस निर्माण कार्य की निगरानी नहीं कर सका!"
"छोड़ो! अब तुम्हारा समय कीमती हो गया है। दरअसल, मुझे यह निर्माण कार्य तब शुरू करना चाहिए था जब तुम पुणे में रहते थे। उस समय निर्माण के लिए आवश्यक सीमेंट और लोहा भी सस्ता था। तुम आसानी से देखरेख कर सकते थे!"
"सच कहूँ तो, विलास, मानो या न मानो, मैं एक अजीब भंवर में फँस गया हूँ! मैं इससे बाहर भी नहीं निकल पा रहा हूँ, मैं ऐसी स्थिति में हूँ जहाँ से निकलना नामुमकिन है! एक चीज़ खत्म होते ही दूसरी शुरू हो जाती है!"
"इसे ही तो जीवन कहते हैं!"
"लेकिन मुझे नहीं लगता कि किसी ने कभी इतना गतिशील जीवन जिया होगा! इतनी सारी परेशानियाँ, अंतहीन पीड़ा!"
"जैसे-जैसे उम्र बढ़ती है, दर्द सहना उतना ही मुश्किल होता जाता है!" विलास ने मुस्कुराते हुए कहा और अपनी घड़ी देखते हुए बोला, "चलो घर चलते हैं! बच्चे आज घर पर हैं!"
‘‘चल!’’
विलास ने मुझे ड्राइवर की सीट पर बिठाया और पूछा, "उल्कापिंड क्या कहता है? क्या सब ठीक चल रहा है?"
"ठीक है! इस बीच उसने मुझे ज्यादा परेशान नहीं किया!"
"मुझे पता चला कि उसे शराब की लत थी?"
"शराब? ओह, शराब और नशीले पदार्थ भी! आखिरकार, मुझे एक बेचारा डॉक्टर मिला, जिसने दिन-रात मेरी लत छुड़वाने की कोशिश की!" "अद्भुत! एक बार लत लग जाए तो मरने तक इससे छुटकारा नहीं मिल पाता!"

लेकिन हमारी चोक्सीबाई ने तो चमत्कार कर दिखाया, भाई! उन्हें सलाम!
"समर, तुम्हारी पहली पत्नी के साथ क्या चल रहा है?"
"वह एक हाई स्कूल शिक्षिका हैं!"
"वाह! एक मोंटेसरी स्कूल चलाता है, दूसरा हाई स्कूल, लेकिन आपको पढ़ाने के लिए कोई नहीं मिल रहा है?"
"ऐसा क्यों? वह तो राजकुमारी है!" मैंने मुस्कुराते हुए जवाब दिया।
विलास के बच्चे मेरे पास आए और रोने लगे। "चाचा जी! हम आपको अभी छोड़कर नहीं जाएंगे! आपको शौचालय में ही रहना चाहिए।"
विलास ने अपनी टाई ढीली करते हुए कहा,
"अरे अजय, अब वो अपने छोटे से कमरे में कैसे रहेगा? वो तो महल ही ले लेगा! जी हाँ, समर, बुवासाहेब महाराज का बंगला, जो बंड गार्डन के सामने है, बिक रहा है। बहुत ही बढ़िया बना हुआ है। आगे-पीछे काफी खुली जगह है। अगर रत्ना प्रभाराजे इसे लेने जा रहे हैं, तो सोचो ज़रा!"
"विलास, मेरी भी यही इच्छा है! मुझे लगता है कि उसे अपनी कमाई को इसी तरह के किसी काम में निवेश करना चाहिए। लेकिन वह सुनती ही नहीं। सिनेमा के प्रति उसका जुनून अभी खत्म होने को तैयार नहीं है।"
"बिना किसी की मदद के पैसे हासिल करने में हमेशा कोई न कोई कमी रह जाती है, इसमें उसकी कोई गलती नहीं है, समर।"
मैंने राजकुमारी से कहा था कि मैं दोपहर के भोजन के लिए हेवर्ड्स होटल आऊँगी, लेकिन अब विलास और बच्चे मुझे बिना भोजन के नहीं जाने दे रहे थे; इसलिए मैंने राजकुमारी को फोन किया। उन्होंने कहा, 'मैं दोपहर के भोजन के लिए नहीं आ रही हूँ।'

विलास रेस वाले दिन कुछ नहीं खाता था। वह सुबह डेढ़ कप चाय पीता था, बस इतना ही। लेकिन मैंने बहुत दिनों बाद बच्चों के साथ बैठकर खाना खाया।
"चाचा जी, आप यहाँ रहने कब आएंगे?"
"यह आएगा! यह जल्द ही आएगा!" मैं कुछ कहना चाहता था, तभी इंदु की पत्नी ने चावल पकाते हुए मुझसे पूछा, "क्या उल्कापिंड का स्वरूप बदल गया है या नहीं?"
"मैं क्या कहूँ, भाभी? बस एक बार उसे यहाँ ले आइए और देखिए! वह बहुत शांत और विचारशील हो गई है। जीवन के अनुभव के बिना व्यक्ति नहीं बदलता।"
विलास अंदर से कपड़े पहनकर बाहर आया। उसने मेरी बात ज़रूर सुनी होगी। उसने मुस्कुराते हुए कहा, "तुम्हारे जैसे किसी से मिलने के बाद, उस बेचारी के पास अपना स्वभाव बदलने के अलावा कोई चारा नहीं बचा होगा।"
"मजाक छोड़ो विलास। भगवान कसम, वो पूरी तरह बदल गई है!"
"आओ और इसे ले आओ," विलास ने कहा।
मैं उसे लाऊंगी, ज़रूर लाऊंगी! मैं उसे दो दिन के लिए यहाँ ठहराने लाऊंगी। अब, क्या हुआ, उसे छुट्टी के लिए पूछना या मनाना नहीं पड़ेगा। उसका अपना मोंटेसरी स्कूल है। अगर वह दो दिन के लिए बंद भी कर दे, तो कोई पूछेगा नहीं। लेकिन एक बार हमारे यहाँ आ जाइए, भाभी जी!
"उन्हें बताओ! वैसे भी, मुझे समझ नहीं आता कि पुरुष महिलाओं को अपने साथ ले जाना क्यों पसंद नहीं करते।"
"वजह सीधी-सी है, भाभी!" मैंने मुस्कुराते हुए कहा, "इसका एकमात्र उद्देश्य आप महिलाओं को हमारी गपशप समझने से रोकना है।"

"तुम मुझसे कह रही हो, समर? ओह, इसमें तुम्हारी गलती ज्यादा है या मेरी?"
"मेरे लोग चौक पर आते हैं, तुम्हारे लोग नहीं, बस यही फर्क है!" "तुम सूअर!" विलास ने मेरी पीठ पर घूंसा मारते हुए कहा।
जीवन में ढेर सारे दोस्तों से बेहतर है कुछ करीबी दोस्त होना। विलास और मेरा रिश्ता इसी तरह की बनावटी आत्मीयता पर आधारित था। वह थोड़ा नाराज़ था क्योंकि मैं उसकी रचना में शामिल नहीं हुआ था, यह सच है कि उसने व्यंग्य किया था; लेकिन वह जल्दी ही इसे भूल गया।
रात के खाने के बाद, मैं विलास की कार में निकल गया। विलास ने मुझे होटल हेवर्ड्स के पास छोड़ दिया और कहा, "समर, इस होटल के इतिहास के बारे में इतना कुछ जानने के बावजूद, तुम यहाँ उतर रहे हो?"
"ऐसा हर बार नहीं होता!"
मुस्कुराते हुए विलास रेसकोर्स के लिए रवाना हो गया।
मैं कमरे में आई, ये क्या था? राजकुमारी वहाँ बैठी थी, राजकुमारी की तरह सजी-धजी। उसके बाल संवारे हुए थे, चेहरा मेकअप से सजा था, होंठों पर लिपस्टिक लगी थी! गले में डीप नेक वाला स्लीवलेस ब्लाउज और उसके नीचे साड़ी! पता नहीं क्यों, मुझे उसका ये रूप देखकर गुस्सा आ गया! मैंने हाल ही में विलास के घर में इंदु का सरल, मासूम रूप देखा था, और इस राजकुमारी को बिल्कुल अलग रूप में देखकर मेरा सिर दर्द करने लगा।
‘‘राजा, आप कौन सा अवतार ले रहे हैं?’’
"क्यों? क्या हुआ?"
"पुणे में बहुत से लोग हमें जानते हैं।"
"क्या आपको पता है? उनके पिता का क्या हुआ?"

"वे यहाँ के लायक नहीं हैं; लेकिन अगर आप इस तरह के कपड़े पहनकर रेसकोर्स जा रहे हैं, तो मैं नहीं आऊंगा।"
"मत आओ! तुम हमेशा कुछ न कुछ ऐसा ही सोचकर आते हो! मैं आशीष के रेसकोर्स जाऊँगा!"
"बिल्कुल कर सकते हो! तुम्हें कौन रोकेगा?"
"मेरे पति मुझे रोक नहीं सके, मेरे जैविक पिता ने मुझे कभी कुछ सिखाने की कोशिश नहीं की, तो क्या आपको लगता है कि अगर आप मुझे कुछ कहेंगे तो मैं सुनूंगी?"
"मैं आपको नहीं बताऊंगी! लेकिन फैशन के क्षेत्र में काम करते समय, किसी को समाज में अपनी जगह को नहीं भूलना चाहिए।"
"ओह, बस! मुझे याद आ गया! मैंने सुना था कि वह लड़की किस तरह के कपड़े पहने हुए थी! लेकिन आपको लगता था कि वह आदर्श थी।" "महाराज, वह कन्या मर चुकी है। मरे हुए लोग देवता बन जाते हैं, और उनका अपमान करना बुद्धिमानी नहीं मानी जाती, क्या आपने ध्यान दिया है?"
"चलो, चलो! मैं कोर्स पर हूँ! अगर तुम चाहो तो आ जाओ!"
राजकुमारी साड़ी पहने सीढ़ियों से नीचे उतरीं, जिससे उनकी पीठ और पेट खुले हुए थे। मैंने अपने जूते दरवाजे के पास उतार दिए और पलंग पर लेट गया।
राजकुमारी का स्वभाव अप्रत्याशित था।
-०-०-

३८
साढ़े छह बजे राजकुमारी रेसकोर्स से लौटीं। उन्होंने अपना पर्स मेज पर फेंक दिया। उन्होंने दूरबीन बिस्तर पर रखी और बाथरूम चली गईं। बाथरूम से बाहर आकर उन्होंने अपनी साड़ी बदली और मेरी तरफ देखकर बोलीं, —
"तुम नहीं आए, बहुत बुरा हुआ! सबसे खराब दिन! सारी मशहूर घोड़ियां हार गईं - घोड़ों ने रेस जीत ली! मैंने सोचा था कि मैं अब कभी रेस देखने नहीं आऊंगा!"
मैं बिस्तर पर लेटा हुआ था, तकिए पर हाथ टिकाए सुन रहा था।
"समर, मुझे आज सच में व्हिस्की चाहिए। मेरा सिर घूमने लगा है। व्हिस्की के बिना मैं शांत नहीं हो पाऊँगी!"
फिर भी, मैं अब भी वही हूँ!
"अरे, तुम्हें क्या हुआ है? तुम बात क्यों नहीं कर रही हो?" राजकुमारी ने तौलिए से अपना चेहरा पोंछते हुए, पाउडर लगाते हुए, बालों में कंघी करते हुए कहा और मेरे पास आकर बोली, "मैं समझ गई कि तुम्हें मेरा फैशन पसंद नहीं है! अब से मैं सफेद वॉयल और सफेद ब्लाउज पहनूंगी, तो क्या हुआ?"
ड्रेसिंग टेबल पर रखे सौंदर्य प्रसाधनों की ओर इशारा करते हुए मैंने कहा, "और यह?"
मैं उसका भी इस्तेमाल नहीं करूंगा। वादा करता हूँ!
"यह अचानक बदलाव क्यों?"
"ऐसा लगता है कि आपको अपने प्रियजन के लिए कुछ न कुछ त्याग करना ही पड़ेगा!"
"आप किसको पसंद करते हैं?"
‘‘तूच की!’’

राजकुमारी बातें करते हुए मेरे पास आई और मेरी गोद में बैठ गई। कोई भी समझदार व्यक्ति राजकुमारी की हरकतों को पागल समझ लेता। मैंने उसे धक्का देकर दूर किया और कहा, "तुम मेरी एक भी बात नहीं सुन रही हो। मैं तुमसे अब और बात नहीं करना चाहता!"
राजकुमारी जोर से हंसी और मेरे माथे पर चुंबन करते हुए बोली, "समर, तुम गुस्से में बहुत सुंदर लगते हो! गुस्सा करते रहो, मुझे तुम्हारे चेहरे पर गुस्से वाला भाव बहुत पसंद है!"
राजकुमारी के बचकाने बयान और हावभाव में मेरी नाराजगी को पल भर में शांत करने की शक्ति थी।
मैं उठा। मैंने अपने सिकुड़े हुए कपड़े झाड़े और कहा, "अगर मुझे अब से रेस देखने जाना है, तो मेरे पास दो या चार सौ से ज़्यादा पैसे नहीं होंगे!"
"कबूलनामा! मुझे रेसकोर्स जाते समय सजने-संवरने की भी जरूरत नहीं पड़ती। मैं सफेद ब्लाउज और कोहनी तक आने वाली सफेद साड़ी पहनती हूँ! न लिपस्टिक, न मेकअप, न ही कोई हेयरस्टाइल!"
"राजा, आप मज़ाक कर रहे हैं; लेकिन घुड़दौड़खाना आपको एक ऐसी राजकुमारी के रूप में पहचानता है जिसने अपने पति को छोड़ दिया है, और ऐसे समय में आपका संयमित व्यवहार करना आवश्यक है! उसे भी घुड़दौड़ में भाग लेने के लिए कुछ सीमाएँ चाहिए! आज आपने कितना पैसा खर्च किया?"
साढ़े नौ हजार!
"अगर तुम इसी रफ्तार से पैसे खर्च करते रहे, तो मैं सोच भी नहीं सकता कि कल तुम्हारा क्या होगा!"
"अरे, तुम अचानक कल की बात क्यों कर रहे हो? तुम जितना चाहो उतना जल्दबाजी में काम कर सकते हो, है ना?"

मैं एक मर्द हूँ! मैं कल बोरीबंदर में कुली का काम करने के लिए तैयार हूँ। अगर तुम्हारे पास पैसे खत्म हो जाएँ तो तुम क्या करोगे? याद है तुमने कब लिखा था कि तुम भविष्य में गुजारा भत्ता नहीं माँगोगे?
"भले ही सारा पैसा खत्म हो जाए, शिदोजी के दो हजार रुपये प्रति माह कम से कम पांच साल तक कहीं नहीं जाएंगे!"
शिदोजी को अपनी प्रतिष्ठा का डर है क्योंकि वह मंत्री हैं। यह मत सोचिए कि कल उनसे मंत्री पद छीन लिया जाए तो उन्हें डर लगेगा! वह तो एक बड़े ही शातिर आदमी हैं!
"लेकिन राजा होना प्रतिष्ठा की बात है, है ना?"
"राजा और रानी! अगर मैं बोलूंगा तो आप नाराज़ हो जाएंगे, राजा! आजकल ताश के खेल के अलावा कोई इन दो शब्दों को जानता भी नहीं है!"
"हाँ, आप सही कह रहे हैं! ठीक है, लेकिन आप बहुत नशे में हैं, इसलिए आप व्हिस्की मांग रहे हैं, है ना?"
"अगर मुझे चक्कर आते हैं, तो मैं एस्प्रो मंगवाता हूं, मुझे व्हिस्की की क्या जरूरत है?"
"समर, जब मैंने कहा कि मैं तुम्हारी बात सुन रहा हूँ, तब से तुम ऐसा बहुत करने लगे हो! देखते हैं!"
राजकुमारी ने मेरा हाथ पकड़ा और मुझे ऊपर खींच लिया। मुझे पता था कि अब उसे और चिढ़ाने का कोई फायदा नहीं था!
वो सख्त पाबंदी का दौर था, लेकिन हर तरह की शराब हर जगह और भरपूर मात्रा में मिलती थी, पर उसे चुराकर पीना पड़ता था। बड़े होटलों के मैनेजर, वेटर और सफाईकर्मी ऐसी शराब की दुकानों को जानते थे, लेकिन जब वे लड़कियों को बोतलें लाने भेजते थे, तो अपना कमीशन ले लेते थे। इसलिए मैं खुद हेवर्ड्स होटल के पीछे एंटनी के घर

गई। एंटनी मुझे जानता था। विलास के घर पर रहते हुए मैंने एंटनी से कई बार 'सफेद घोड़ा' लिया था। वो मुझसे वाजिब दाम लेता था; क्योंकि उसे मुझसे समय-समय पर घोड़ों के बदले टिप मिलती थी। इस दुनिया में कोई किसी का कुछ भी मुफ्त में नहीं करता। जब किसी को किसी से कुछ चाहिए होता है, तो वो उसे कुछ न कुछ देने को तैयार रहता है!
एंथनी से थोड़ी देर बातचीत करने के बाद, मैं हेवर्ड्स होटल पहुंचा। राजकुमारी ने बहुत अच्छा काम किया। उन्होंने डिब्बे से निकाली हुई सफेद साड़ी और सफेद ब्लाउज पहनकर दरवाजा खोला! "इस वेश में आप कैसे दिख रहे हैं?"
"बहुत बढ़िया!" मैंने कागज में लिपटी बोतल को अपनी जेब में रखकर मेज पर रख दिया और सोडा ऑर्डर करने के लिए घंटी बजा दी। "महाराज! मेरी हर बात को मजाक मत समझिए। आज आपके पास लाखों रुपये हैं, मुझे उसमें से एक पैसा भी नहीं चाहिए। मैं बस इतना चाहता हूं कि आप उस धन को जीवन भर बुद्धिमानी से खर्च करें!" "सलाह के लिए धन्यवाद! गिलास जल्दी भर लो।"
"सोडा को आने दो, ठीक है?"
मैंने दरवाजे पर आए वेटर से सोडा लाने को कहा और व्हाइट हॉर्स की बोतल का ढक्कन खोलना शुरू कर दिया।
"समर, मैं तुम्हारा इतना अपमान करता हूँ, मुझे गुस्सा आता है, मैं तुम्हारी बात नहीं सुनता, तो तुम मुझसे दूर क्यों नहीं चली जाती?"
"क्या आप जाना चाहते हैं?"
मैं ऐसा नहीं करना चाहता, लेकिन मेरा मन कर रहा है, इसलिए पूछ रहा हूँ, इसे ज़्यादा गंभीरता से मत लेना!

मैं कुछ दिनों के लिए तुमसे दूर रहना चाहता हूँ, लेकिन मुझे डर भी लग रहा है!
"कैसे?"
"कोई तुम्हें पैसों के लिए मार डालेगा!"
"करीना? तुम्हें भी एक दिन मरना ही है, है ना?"
"मृत्यु किसी के लिए गलती नहीं है, महाराज, लेकिन मेरा हृदय उस व्यक्ति की मृत्यु देखने को तैयार नहीं है जिसने कभी मुझे जीवन दिया था, यही समस्या है!"
वेटर सोडा की एक पेटी लेकर आया। मैंने बोतल तोड़ी और सोडा गिलास में डाला। मैंने गिलास राजकुमारी को दिया और 'चीयर्स' कहते हुए एक घूंट पिया।
"समर, लेकिन सिनेमा में काम करने की मेरी इच्छा पूरी क्यों नहीं हो रही है?"
"तुम्हें पता नहीं यह कितना आकर्षक है। यह एक नीरस जीवन है! बाहर स्क्रीन पर तीन घंटे तक फिल्म देखना अच्छा लगता है, लेकिन

— "

"ओह पापा, मैंने भी वो शूटिंग देखी है, लेकिन मैं फिर भी एक बार स्क्रीन पर आना चाहती हूँ। मेरे पास चार पैसे हैं। आप निर्माता क्यों नहीं बन जाते? अगर आप निर्माता बन जाएँगे, तो मुझे किसी के धोखा देने की चिंता भी नहीं करनी पड़ेगी!"
"फिल्म बनाना कोई बच्चों का खेल नहीं है, राजे! इसके लिए तीन से चार लाख रुपये की पूंजी चाहिए होती है। और अगर फिल्म अच्छा प्रदर्शन करती है, तो ठीक है, वरना फिर सड़क से कंकड़ उठाने का समय आ जाता है।"
"जो होना है सो हो! मैं नायिका बनना चाहती हूँ! यही मेरा सपना है!"

"यह सच है कि आपका एक सपना है; लेकिन मुझे डर है कि वह सपना आपके पैसे बर्बाद कर देगा!"
"चिंता मत करो! हम एक खूबसूरत कहानी चुनेंगे। हम अच्छे कलाकारों का चयन करेंगे। हम एक जानकार निर्देशक भी ढूंढ लेंगे! हम सब कुछ करेंगे, लेकिन मैं एक बार स्क्रीन पर दिखना चाहती हूँ! यही मेरा सपना है!"
तीसरा खूंटा भी लग गया। छत से लटका झूमर पंखे की हवा में धीरे- धीरे झूल रहा था।
"क्या आप खाना चाहेंगे?"
"बिल्कुल! लेकिन भोजन कक्ष में नहीं, इसे यहीं कमरे में मंगवाइए!"
मैंने घंटी बजाई।
शुरू में, मैं राजकुमारी के साथ शारीरिक संबंध नहीं बनाना चाहता था; लेकिन मैं ऐसा नहीं कर सका। मैं संयमी साधु नहीं था। इसके अलावा, मुंबई आने के बाद से मेरे नैतिक विचार कमजोर होते जा रहे थे। अगर मैं दूसरों को चोट पहुँचाए बिना अपने दिल की इच्छा पूरी कर सकता था, तो मेरा मानना था कि मुझे उन्हें खुश करना चाहिए। उस दिन, राजकुमारी ने कोलाबा के होटल में मेरे साथ सोने की ज़िद की, लेकिन मैं नहीं गया। उसने कहा, एक बार कोई वर्जित काम हो जाए, तो वह खत्म हो जाता है! लेकिन धीरे-धीरे मेरा मन दृढ़ हो गया! मुझे एक नई स्त्री के साथ अच्छा लगा। इसके अलावा, पूरा मामला खुशी से भरा था। कोई अत्याचार या अन्याय नहीं था। जब मैंने पहली बार हेवर्ड्स होटल में सलीमा को छुआ, तो मुझे थोड़ी झिझक हुई; लेकिन कई दिनों तक मुझे उससे मिली खुशी याद आती रही। फिर कुमारी! मेटियोर! और उसके अगले दिन अलका!

मेरे जीवन में ऐसे कई मौके आए जब मुझे यह याद नहीं रखना चाहिए था कि किसी दूसरी स्त्री के साथ संबंध बनाना पाप है। मुझे इसमें आनंद भी आया। मुझे ज़रा भी एहसास नहीं हुआ कि मैं कुछ गलत कर रहा हूँ। मैंने तो कानूनी रोक-टोक के बिना राजकुमारी को अपनी बाहों में भी उठा लिया!
मुंबई पहुँचने के बाद, मैं घर आया और उल्का से जो सच सुना वह भयावह था। पुलिस ने चोरी के आरोप में मेरे घर की तलाशी ली थी और शिदोजी राजा द्वारा राजकुमारी को लिखे गए पत्र, तस्वीरें और नेगेटिव पुलिस ले गई थी। यह देखकर कि मैं मुंबई में नहीं था, शिदोजी राजा ने अपने मंत्री पद का दुरुपयोग करते हुए पुलिस व्यवस्था लागू कर दी और उस सारी पूंजी पर कब्जा कर लिया जिसके आधार पर मैं उन्हें ब्लैकमेल कर रहा था।
मैं बहुत क्रोधित थी। पर मैं क्या कर सकती थी? सैनिकों ने उल्का के सामने मेरे घर की तलाशी ली थी। उल्का को ज़रा भी अंदाज़ा नहीं था कि वे पत्र और तस्वीरें मेरे घर में रखे बक्से में थीं। सैनिकों ने ठीक उतने ही पत्र और तस्वीरें ले ली थीं। दस्तावेज़ में लिखा था कि मेरे घर की तलाशी एक जौहरी के घर में हुई चोरी के सिलसिले में ली गई थी। मेरे पास चुप रहने के अलावा कोई चारा नहीं था। मुझे इस बात में कोई शक नहीं था कि शिदोजी राजे इस तरह की साज़िश रचकर उन पत्रों, तस्वीरों और फोटो नेगेटिव को चुरा सकता है, लेकिन पहली बार मुझे एहसास हुआ कि सत्ता में बैठे लोगों के हाथ कितने लंबे होते हैं।
"तुमने मुझे घर की तलाशी क्यों लेने दी?" मैंने उल्कापिंड पर तीखे स्वर में कहा।
"तुम्हारा क्या मतलब है? उन्होंने मुझे घर की तलाशी का वारंट दिखाया था! और उसमें क्या गड़बड़ हुई? क्या तुमने चोरी की या

किसी के घर में जबरदस्ती घुसे? मैंने उनसे कहा था कि अंदर जाओ और खुशाल के घर में सारा सामान तलाशो! उन्हें कुछ नहीं मिला!" "तुम बेवकूफ हो! तुम्हारे पास कहने को कुछ नहीं है!"
"अरे सच में! मैंने तो वो रिपोर्ट भी पढ़ ली थी जो उन्होंने कुछ न मिलने के बारे में तैयार की थी! मैंने तो उस रिपोर्ट पर हस्ताक्षर भी कर दिए थे क्योंकि घर की तलाशी के दौरान कुछ भी अप्रिय नहीं हुआ था!"
मैंने अपने हाथों को मलते हुए कहा, "आप एक बालवाड़ी में पढ़ाने के योग्य हैं!"
"लेकिन क्या आप मुझे बताएंगे कि क्या हुआ था या नहीं?"
"मेरा महत्वपूर्ण दस्तावेज़ गायब हो गया!"
"कौन?"
मैं उल्का को यह नहीं बता पाई कि पुलिस मेरे कौन से दस्तावेज ले गई थी!
"रॉबर्ट कहाँ था? घर की तलाशी के दौरान आपको उसे फोन करना था?" "वह दुकान में है! मैं उसे कैसे फोन करूँ!"
"बहुत अच्छा!"
"लेकिन मुझे यह बताओ कि मैंने क्या गलती की है, ठीक है?"
"तुमने कुछ भी गलत नहीं किया, उल्कापिंड! अब चुप रहो!"
मैं वहां काफी देर तक निराशा में बैठा रहा। मैंने सिगरेट का आधा पैकेट खत्म किया और दादर पहुंच गया! मैंने राजकुमारी से कहा था कि मैं चार दिन में आऊंगा; लेकिन मुझे उसी दिन पहुंचते देखकर वह थोड़ी हैरान रह गईं!
"क्या हाल है, समर! तुम इतनी घबराई हुई क्यों हो?"

"शिदोजी ने तो पासा पलट दिया है। पुलिस ने चोरी की तलाशी का बहाना बनाकर वे चिट्ठियाँ, तस्वीरें और फोटो नेगेटिव ज़ब्त कर लिए! अब शिदोजी हम दोनों को तड़पाए बिना नहीं रहेगा!"
"लेकिन आप चीजों को व्यवस्थित क्यों नहीं करते?"
"उन्हें घर पर एक डिब्बे में रखा गया था। उल्का को इस बारे में बिल्कुल भी पता नहीं था!"
"बिल्कुल सही। उसे मुझे इसके बारे में नहीं बताना चाहिए था!" उन्होंने हमें मूर्ख बना दिया!
"छोड़ो! क्या हमें अब उनके पैसे की जरूरत है?"
"पैसे की बात छोड़ो, महाराज, मैं उनके सामने खड़ा था, जब वे सत्ता में थे तब मैं कई छोटे-मोटे काम कर सकता था! काम को छोड़ दो, लेकिन इसमें कोई शक नहीं कि वे हम दोनों को यहाँ से भागने पर मजबूर कर देंगे!"
"समर, उनकी हिम्मत नहीं होगी! साजिशों की बात आती है तो लोग डरपोक बन जाते हैं!"
"राजे, तुम मुझे कायर कैसे कह सकते हो? उन्होंने दिन दहाड़े पुलिस की नज़रों से बचते हुए चिट्ठियाँ और तस्वीरें चुराईं!" "चलो मैं तुम्हें ले चलता हूँ!"
राजकुमारी ने इस घटना को गंभीरता से नहीं लिया; लेकिन मैं मन ही मन बहुत डर गई थी। राजकुमारी ने माघा से जो कहा था, 'षड्यंत्र रचने में लोग कायर होते हैं', वह बात मुझ पर भी लागू होती थी! उसके बाद कई दिनों तक मुझे यही शक बना रहा कि कोई मुझे देख रहा है। ये तो बस मेरे दिमाग का भ्रम था!
राजकुमारी का सिनेमा के प्रति जुनून कम नहीं हो रहा था। अंततः, मुझे निर्माता बनने के लिए विवश होना पड़ा।

"क्यों? इसमें ऐसा क्या खास है?" मैंने विलास की कार की ओर चलते हुए कहा।
"पहले गाड़ी में बैठो!"
मैंने रॉबर्ट से कहा, "जब सही समय आए तो घर पर उलेका को बता देना!"
मुझे यह अनुभव था कि विलास के साथ जाने का मतलब था गाड़ी से जल्दी न उतरना। गाड़ी में विलास के बगल में बैठने के बाद, उसने गाड़ी को मालाबार हिल की ओर मोड़ दिया। हमने गाड़ी को हैंगिंग गार्डन के पास पार्क किया और विलास और मैं एक बेंच पर बैठ गए। विलास, जो हमेशा मेरा मज़ाक उड़ाता था, आज थोड़ा गंभीर लग रहा था। बेंच पर बैठने के बाद, उसने मुझे एक सिगरेट दी। मैंने एक जला ली।
समर, क्या तुम्हें कुछ समझ आया या नहीं?
"किस बारे मेँ?"
"क्या आपने राजकुमारी के बारे में कुछ सुना?"
''क्या ख़बर है?''
"राजकुमारी ने अपनी लय पूरी तरह खो दी है। वह आजकल घुड़दौड़ के मैदान में आकर खूब सट्टेबाजी कर रही हैं!"
"मुझे उसके बारे में कुछ मत बताओ! मैंने पिछले चार महीनों से उसका चेहरा तक नहीं देखा है।"
"मैं समझता हूँ। उस फिल्म वाली घटना के बाद से आप दोनों के बीच दरार आ गई है!"
"अब से मैं उसके मामलों पर बिल्कुल ध्यान नहीं दूंगा।"
"समर, हम एक रियासत के नागरिक हैं, भले ही रियासतें आपस में मिल गई हों, हमने कुछ समय तक उस रियासत का भोजन किया है। तुम खुद

रत्नपुर में रहते थे! राजकुमारी ने तुम्हारी जान बचाई थी। अब जब वह पूरी तरह से विनाश कर रही है, तो तुम चुपचाप देखते रहोगे!" "देखो, विलास, यह मत सोचो कि मैंने इन सब बातों के बारे में नहीं सोचा है! लेकिन फिर भी मैं इस राजकुमारी को बचाने की कोशिश नहीं करूँगी! मुझे पहले से ही पता था कि वह कंगाल हो जाएगी!"
"अरे बाप रे, तुम्हारा ये बर्ताव ठीक नहीं है! मैं मानता हूँ कि वो बेवकूफ है, लेकिन फिर भी उसे बचाना तुम्हारा फर्ज है। उसने तो सारा पैसा उड़ा दिया! परसों उसने अखाड़े में 'ब्लू स्टार' घोड़े पर एक लाख का दांव लगाया और वो घोड़ा हार गया! बताइए, ऐसे बड़े दांव लगाने वालों का क्या होता है? और तो और, वो डायरेक्टर, जो इस पूरे खेल का मास्टरमाइंड है, चौबीसों घंटे उसके पीछे पड़ा रहता है! तुम्हें पता है ना कि वो कितना कमाएगी और कितना खर्च करने को तैयार है?"
"ओह, पापा, मुझे सब पता है। क्या आपको पता है कि जब मैंने उसे उस आदमी से दूर रहने की सलाह दी तो उसने क्या कहा?"
"क्या?"
उसने कहा, 'मुझे अवांछित सलाह पसंद नहीं है!'
"यह सच है, लेकिन गुजारा भत्ता खत्म हो गया है, मेरे पास जो पैसा था वह भी खत्म हो गया है, आप इसके बारे में क्या करने वाले हैं?" "तुम कुछ क्यों नहीं करते? मैं अब उसका चेहरा नहीं देखना चाहता।"
"तो फिर ये आपकी मर्ज़ी है! लेकिन मुझे आपके सिवा कोई और नज़र नहीं आता जो उसे बचा सके। परसों वो रेसकोर्स नशे में धुत होकर आई थी। उसकी साड़ी एक तरफ थी, पर्स दूसरी तरफ, बाल बिखरे हुए, आँखें बेजान! उसकी हालत दयनीय थी। उस दिन किसी ने उसका पर्स भी चुरा लिया! वो आठ-दस हज़ार का होगा!"

"वह राजमिस्त्री कहाँ था?"
"वह रेसकोर्स में था, है ना? उसने जाकर पुलिस को इसकी सूचना दी! लेकिन क्या किसी को कभी वह पैसा वापस मिला है जो रेसकोर्स को गया था?"
"उसे जाने दो! उसे मरने दो! मुझे कुछ मत बताओ!"
मुझे लगा था कि तुम कुछ बचाने की कोशिश करोगे!
"ओह, मैं इससे कैसे उबर पाऊंगा? उसने बस इतना ही कहा था, 'घर से निकल जाओ'! क्या मुझमें कोई आत्मसम्मान बचा है? सिर्फ इसलिए कि उसने एक बार मेरी जान बचाई, मैं जीवन भर उसके पैर क्यों चाटता रहूं?"
"आपकी बात सही है। लेकिन हम राजसी युग में जी रहे हैं, हमें यह दिखाई नहीं देता कि एक राजकुमारी खाई की ओर बढ़ रही है, इसीलिए हम आपके पास आए हैं!"
"छोड़ो यार! अच्छा, तुम्हारा निर्माण कार्य कितना आगे बढ़ा है?" मैंने विषय बदलने की कोशिश करते हुए कहा।
"निर्माण कार्य पूरा हो चुका है। कॉलेज के छात्र भी रहने के लिए आ चुके हैं।"
"क्या आपने वास्तुशिल्पीय नवीनीकरण नहीं किया?"
"सत्यनारायण की पूजा की गई है!"
"ठीक है।"
"बच्चों को निश्चित अवधि के लिए रखा जाता था। किराया अधिनियम से संबंधित कोई परेशानी नहीं थी।"
"विला, तुम्हारा हर व्यवहार सोची-समझी रणनीति है।"
"यदि मेरे आने का उद्देश्य पूरा नहीं हुआ, तो आप जानबूझकर विषय बदल रहे हैं!"

"मैंने तुमसे कहा था, विलास, मैं राजकुमारी का चेहरा फिर कभी नहीं देखूंगी। मेरे सामने उसका नाम तक मत लेना। अच्छा, अजय क्या कहता है?"
मेरी तरफ देखे बिना, विलास ने एक और सिगरेट जलाई और बेचैनी से कश लगाने लगा। सिगरेट खत्म होने तक उसने मुझसे बात नहीं की। सिगरेट को चिमटे से पकड़कर फेंकते हुए उसने कहा, "चलो, मुझे अभी एक-दो जगह और जाना है।"
"क्या मैं आपके साथ आ सकता हूँ?"
मुझे कोई आपत्ति नहीं है, चलो चलें!
मैंने विलास के साथ कई जगहों की सैर की है। समाज में उनके अच्छे संपर्क थे। व्यापारी, वकील, डॉक्टर और रेसिंग के शौकीन लोग विलास से मिलने की हर संभव कोशिश करते थे। वे विलास से जान-पहचान रखना अपने लिए एक 'विशेषाधिकार' समझते थे!
मैं विलास के साथ जाना चाहती थी, लेकिन फिर मैंने सोचा कि मैंने उसकी सारी उम्मीदें तोड़ दी हैं। भले ही वह बाहर से ऐसा न दिखाए, लेकिन अंदर से वह बहुत दुखी है, इसलिए आज उसके साथ जाना ठीक नहीं होगा!
"चलो ना, क्या तुम नहीं हो?" विलास ने कार की ओर चलते हुए कहा। मैं आना चाहता था, लेकिन आप जाइए। मुझे भी कुछ काम है!
विलास ने इसे पहचान लिया। वह हल्का सा मुस्कुराया और बोला, "ठीक है, मैं आपको कहाँ छोड़ूँ?"
"महा लक्ष्मी को छोड़ो, मैं लोकल ट्रेन से बांद्रा जाऊँगा!" "लेकिन आपने उल्कापिंड को संदेश भेजा था, है ना? ताकि समय मिल सके?"
"क्या वो मुझसे नाराज़ होगी क्योंकि मैंने उसे मैसेज भेजा और चला गया?" मैं कार में बैठ गया और दरवाज़ा बंद कर लिया। विलास

गंभीर चेहरे के साथ गाड़ी चला रहा था। उसने महालक्ष्मी स्टेशन के पास गाड़ी रोकी और बोला, "समर, मैं तुम्हारी स्थिति समझ सकता हूँ; लेकिन तुम्हें इस बारे में थोड़ी देर सोचना चाहिए! ठीक है, बाय!"
जब मैं घर पहुँचा, तो उल्का वर्षा हो रही थी। मैंने खिड़की से झाँका और आवाज़ लगाई। दरवाज़ा खोलते हुए उसने कहा, "तुमने अलविदा कह दिया क्योंकि अब समय आ गया था, है ना?"
"हां, लेकिन मैं आ गया। मैंने ठीक समय पर अपना इरादा बदल लिया!" मैंने खाना नहीं खाया! क्या आप चावल रख लेंगे?
नहीं! मुझे इतनी भूख नहीं है!
मैंने अपने कपड़े हैंगर पर टांगे, नाइटसूट की पैंट मोड़ी और बिस्तर पर लेट गई। विलास ने मुझे राजकुमारी के बारे में जो कहानी सुनाई थी, उससे मुझे बेचैनी हो रही थी। फिर भी, मुझे उसके पास जाने का मन नहीं था। उस दिन, मैं जानबूझकर भूखी सोई। कभी-कभी खुद से बदला लेने का नाटक करना मजेदार होता है। वैसे तो आज दो निवाले खाने में मुझे कोई आपत्ति नहीं थी; लेकिन नहीं, आज मुझे भूखी ही सोना था!
जब मैं सुबह उठी तो उल्का नहाने और कपड़े बदलने के बाद बाहर जाने की तैयारी कर रही थी।
"आज रविवार है ना? तो फिर तुम इतनी जल्दी क्यों उठ गए?" उल्कापिंड ने मेरी तरफ देखा तक नहीं, बल्कि तिरस्कारपूर्ण मुस्कान के साथ मुझे घूरा।
‘‘मीटियोर, इधर आओ!’’
‘‘यू डर्टी बगर, गेट अप!’’

वह कभी-कभी मुझे ऐसी अंग्रेजी में गालियां देती थी कि मुझे हंसी आती थी; लेकिन आज मुझे उसकी आवाज में एक अजीब सी कड़वाहट महसूस हुई।
निकम्मे! अज्ञानी व्यक्ति, तुमने मेरी जिंदगी बर्बाद कर दी! कृतघ्न, धोखेबाज! समर, आज ही इस घर से निकल जाओ। वरना मुझे पुलिस को बुलाकर तुम्हें घर से बाहर निकलवाना पड़ेगा!
मैं अचानक बिस्तर पर उठ बैठा। मुझे लगा जैसे मेरा सिर घूम रहा हो!
"मीटियर, तुम्हें क्या हुआ है? तुम मुझ पर इस तरह क्यों चिल्ला रहे हो?"
"अरे बदमाश! मैं तुमसे बात भी नहीं करना चाहती। सुबह दस बजे तक यहाँ से निकल जाओ!" उल्का अपना पर्स कंधे पर लटकाए जाने ही वाली थी कि मैं खड़ी हो गई, दरवाजे की तरफ पीठ करके खड़ी हुई और दोनों हाथों से उसे रोकते हुए बोली, "ओह, क्या तुम मुझे बताओगी कि क्या हुआ? मैंने राजकुमारी के यहाँ जाना छोड़ दिया है क्योंकि तुम मुझे पसंद नहीं करती!"
"समर, तुमने सचमुच मुझे मार डाला! तुम नीच आदमी हो, मैंने कभी नहीं सोचा था कि तुम इतने खतरनाक होगे!"
"लेकिन क्या आप मुझे बताएंगे कि क्या हुआ?"
ड्रेसिंग टेबल पर अलाका का पत्र पड़ा था। उसने उस पत्र की ओर इशारा करते हुए कहा,—
"इस पत्र का क्या अर्थ है?"
लेकिन फिर मुझे पूरी बात समझ आ गई। अल्का ने लिखा था कि उसे जल्द ही प्रसूति गृह में भर्ती कराया जाएगा और वह चाहती थी कि प्रसव के दौरान मैं मौजूद रहूँ। वह पत्र पढ़कर अल्का बहुत क्रोधित हुई।

"तुमने मुझे बताया था कि उसने तुम्हें धोखा दिया, वह बेवफा थी; इसीलिए तुमने घर छोड़ दिया, क्या होगा अगर यह सरासर झूठ हो?" "वो झूठ नहीं था, मेटियोर, हालात ही ऐसे थे कि मुझे ऐसा लगा!" "वाह! समर, मुझे नहीं लगा था कि तुम मुझे धोखा दोगी!"
"उल्का, अगर तुम मुझे थोड़ी देर बात करने का मौका दे सको तो बहुत अच्छा होगा!"
"अब तुम मुझे लाखों बातें भी बता दो, मैं फिर भी विश्वास नहीं करूँगी। तुम्हारा काम बच्चों और औरतों को बहला-फुसलाकर उनसे लिफ्ट लेना है! उन्हें लगा कि तुम इसके लायक नहीं हो, इसलिए तुमने उन्हें छोड़ दिया और कहीं और चले गए! लेकिन याद रखना, यह चाल मुझ पर नहीं चलेगी! यह घर मेरा है, मैंने यह दुनिया खुद बनाई है! यहाँ तुम्हारा कोई हक नहीं है! अगर तुम दस बजे से पहले एक मिनट भी यहाँ रुके, तो मैं तुम्हें बाहर निकाल दूँगी!"
मुझे निराशा हुई। यह सच है कि मैंने उल्का को यह नहीं बताया था कि मैंने अल्का से सौदा किया है! लेकिन फिर भी, मुझे नहीं लगा था कि पता चलने पर वह इतना उग्र रूप धारण कर लेगी! उल्का मुझसे कभी इतनी नाराज़ नहीं हुई थी, जबकि मुझे पता था कि मैं कुमारी जा रहा हूँ और एक राजकुमारी के साथ हूँ। लेकिन मेरी पत्नी गर्भवती है और उसने प्रसव के समय मेरी उपस्थिति की इच्छा व्यक्त की है, तो उसे इतना हंगामा क्यों करना चाहिए?
लेकिन यह एक स्त्री की स्वाभाविक प्रतिक्रिया थी। उल्का मुझसे वफ़ादार थी। मैं उसे भली-भांति जानती थी। जब वह इस बीच शराब की आदी हो गई, तो मैंने उसकी देखभाल में कोई कसर नहीं छोड़ी। उल्का से सुलह करके मैंने उसकी वफ़ादारी का घोर अपमान किया था! इस लिहाज़ से देखा जाए तो उल्का को दोष देने का कोई मतलब नहीं था। गर्भपात के बाद से वह कुछ उदासीन और चिंतनशील सी लग रही थी... उसे

हमेशा यही लगता था कि मैं ही उसकी एकमात्र जीवनसाथी हूँ, और फिर जब उसे एहसास हुआ कि उसे वो नहीं मिल रहा जो उसे नहीं मिला, तो उसने अपना गुस्सा मुझ पर निकाला।
मुझे तो पता भी नहीं चला कि रात में कब मेरी जेब से चिट्ठी गिर गई; लेकिन जब वह सुबह उठी, तो उसने उसे पढ़ा, और यह उसके लिए एक भूकंप जैसा था।
मैं बाहर जा रहा हूँ, मेरे रास्ते से हट जाओ! तुम्हें मेरा रास्ता रोकने का ज़रा भी अधिकार नहीं है!
"उल्का, मेरी बात सुनो! मैं तो बस... अपनी माँ की इच्छाओं के लिए ऐसा कर रही हूँ।"
"झूठ! माँ एक मृत्यु-पंथ की अनुयायी थी। उसकी दुष्टता के कारण तुम्हें अपना घर छोड़कर जाना पड़ा। मुझसे मिलने के बाद तुमने मुझे सब कुछ बताया था। तुम्हारे परिवार के विरोध के बावजूद, मैंने तुमसे शादी करने का फैसला किया। हालाँकि मुझे पता था कि यह दूसरी शादी गैरकानूनी हो सकती है, फिर भी मैंने तुमसे शादी करने के लिए हाँ कर दी! तुम सुंदर और नेक हो, और मैंने यह भी देखा कि नए आए बियापोरी तुम्हारे साथ रहना पसंद करते हैं; लेकिन मैंने कहा, इसमें तुम्हारी कोई गलती नहीं है कि तुम सुंदर हो और मीठी बातें करने की आदत रखते हो। इसके अलावा, मुझे अपने दिल में विश्वास था कि तुम कभी किसी स्त्री से विवाह नहीं करोगे। लेकिन आज तुमने उस विश्वास को तोड़ दिया है। समर, तुम यहाँ से अच्छे शब्दों के साथ जाओ, वरना मैं गली के उस पार के ईसाइयों को बुलाकर तुम्हारी पिटाई करवा दूँगी।"
उल्का ने जब से मोंटेसरी क्लास शुरू की थी, तब से वो इलाके में बहुत लोकप्रिय हो गई थी। खासकर कुछ अमीर ईसाई परिवार उससे बहुत खुश थे। उन्हें दिख रहा था कि लिलियन की ये दोस्त उनके बच्चों

□□□ □□ □□□ □□□ □□□□□ □□□□□□□ □□□ □□□ □□□ □□ □□□, □□□□□□□ □□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□□ □□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□ □□□ □□□□□ □□□ □□□ □□□ □□□ □□ □□□, □□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□ □□ □□, □□ □□□□□ □□□□ □□□□□□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□ □□ □□□□ □□□□□□□□□□ □□ □□□ □□ □□ □□□□ □□□ □□□ □□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□ □□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□□□ □□□□ □□! □□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□... □□□□□ □□ □□□ □□□ □□□□□ □□□□? □□□□ □□□□ □□□ □□, "□□□ □□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□, □□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□?..."
□□ □□□□ □□□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□ □□□□□□□ □□ □□□ □□□ □□□ □□□□ □□ □□□□ □ □□□ □□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□ □□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□□□, "□□□□□□ □□ □□□□ □□ □□ □□ □□□! □□□!" □□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□ □□□ □□□□ □□; □□□□□ □□ □□ □□□□□□□ □□ □□□ □□, □□ □□□□ □□□□ □□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□

-□-□-

३९
मुझे जरा भी अंदाजा नहीं था कि मेरे साथ ऐसी घटना घटेगी। मैं उलेका के स्वभाव से भली-भांति परिचित थी। चाहे मैं उसे कितना भी समझाने की कोशिश करती, सब व्यर्थ होता। उस समय घर छोड़ने के अलावा कोई और विकल्प नहीं था।
‘आलिया भोगसी’ के सिद्धांत का पालन करते हुए, मैं घर से निकल गई। मैंने लिलियन को चाबी दे दी। उसके चेहरे के भाव से मैं समझ गई कि उल्का ने उसे सारी बात बता दी थी। क्योंकि आज मुझे लिलियन के बाएं गाल पर चोट का निशान नहीं दिखा।
लिलियन और रॉबर्ट चर्च जाने की तैयारी कर रहे थे। रॉबर्ट के चेहरे पर भी स्नेह का सामान्य भाव नहीं था। पापा की मृत्यु के बाद मुझे सांत्वना देने के लिए विशेष रूप से भवानी नगर आए इस दंपति का उल्का से गहरा लगाव था।
मुझे वहाँ रुककर उसे सब कुछ बताने का मन नहीं हुआ। मैंने उसे चाबी दी और बांद्रा टॉकीज़ के पैसे जेब में लेकर चल पड़ा। चलते- चलते मैंने अपनी कमर की जेब में हाथ डालकर देखा कि मेरे पास कितने पैसे हैं, और वो ठीक साढ़े सोलह रुपये थे! कितना अजीब संयोग! जब मैं भवानी नगर से निकला था, तब भी मेरी जेब में साढ़े सोलह रुपये थे। उस समय मैं अल्का के लिए घर से निकला था। आज अल्का ने मुझे घर से निकाल दिया था। मुंबई में रहने के लिए कोई जगह नहीं बची थी। ये साढ़े सोलह रुपये तो धुएँ की तरह गायब हो जाएँगे। थोड़े से पैसे, लेकिन आज रात के बाद सोने के लिए कोई जगह?
मेरा सिर चकरा रहा था और मेरे पैर मुझे आगे धकेल रहे थे। बसें, टैक्सियाँ, ट्रक सब एक ही रफ़्तार से चल रहे थे। वह अपने काम में मग्न था। मैं बहुत चिंतित थी, लेकिन मेरे आस-पास की दुनिया को

उसकी ज़रा भी परवाह नहीं थी। इस मुंबई के पास किसी के सुख-दुख के बारे में सोचने का समय ही नहीं है। लोकल ट्रेन के नीचे मिले किसी व्यक्ति को वे कुत्ते की तरह उठा लेंगे और उसे उसके काम पर छोड़ देंगे! अगर मैं बांद्रा टॉकीज़ के पास भी मर जाऊँ, तो मेरा भी यही हाल होगा! लेकिन मुझे मरने की इच्छा नहीं है! कभी-कभी मैं जीने से थक जाती हूँ; लेकिन मुझे मरने की इच्छा नहीं है, क्योंकि मृत्यु तो जीवन में कभी न कभी अवश्य आती है। हमें उससे आगे क्यों जाना चाहिए? क्या वह अपने नियत समय पर ही आएगी? अगर हम उससे बच भी जाएँ, तो भी उस समय हम उससे बच नहीं पाएँगे! जीवन से कोई लगाव नहीं है और मरने की कोई जल्दी नहीं है!
मेरी जेब में एक छोटा सिक्का था और वह टूट गया। मैंने दो पनामा जूते लिए और जेब में हाथ डाले, मुँह में सिगरेट लिए फुटपाथ पर चलने लगा, एक सुखद धुआँ उड़ाते हुए। मुझे चोक्सीबाई का क्लिनिक सामने दिखाई दिया। मैंने सोचा, मुझे उनसे मिलना चाहिए, लेकिन फिर मैंने सोचा, यह महिला मेरी तरह आलसी नहीं है। वह सुबह सात बजे से रात दस बजे तक लगातार काम करती है। उनके पति रूसी हैं, वकील हैं। वह भी कमाते हैं और वह भी। इस महिला के कई परिचित हैं, मुझे देखना चाहिए कि क्या मैं इस बीच ड्राइवर की नौकरी पा सकता हूँ, इसलिए मैं क्लिनिक की ओर वापस मुड़ गया। बेंच पर मरीजों की ज्यादा भीड़ नहीं थी। दस-पंद्रह मिनट में मेरा नंबर आ जाता। लेकिन अचानक चोक्सीबाई ने दरवाजा खोला और बाहर आईं। मुझे देखकर उन्होंने कहा...
"श्री ठाकुर, मैं अभी आने ही वाला था, मुझे बताने के लिए वापस आने की क्या जरूरत थी?"
मुझे कुछ समझ नहीं आया। मैं बस डॉक्टर के चेहरे को घूरता रहा, "ओह!"

"चलो, एक बार परामर्श शुरू हो गया तो फिर जाने का कोई रास्ता नहीं है। चलो अभी चलते हैं!"
"मैडम, क्या बात है? आप कहाँ जा रही हैं?" महिला कार के पास आई, दरवाजा खोलते हुए वह हिचकिचाई और प्रश्नवाचक भाव से मेरी ओर देखते हुए बोली,—
"तो तुम्हें कुछ नहीं पता?" मैं अविश्वास से अपना सिर हिलाता रहा।
"तुम राजकुमारी के पास कब गए थे?"
"तीन या चार महीने तो लगे ही होंगे!"
"बिल्कुल सही! बैठ जाओ!"
मैं कार में डॉक्टर के बगल में बैठा था। डॉक्टर ने कार स्टार्ट की। उन्होंने सामने वाले गोल चक्कर का चक्कर लगाया, कार को पूरब की ओर मोड़ा और मुझसे कहा, "श्री ठाकुर, राजकुमारी को नानावती अस्पताल में भर्ती कराया गया है! उन्हें फूड पॉइज़निंग हो गई है! डॉक्टर कोशिश कर रहे हैं, लेकिन हालत गंभीर है!"
"हे भगवान! तुम क्या कह रहे हो?"
"मुझे कल रात नानावती से फोन आया था। मैं वहां मानद सलाहकार के रूप में काम करता हूं, है ना?"
"हां, मुझे पता है। लेकिन उनके साथ ऐसा क्यों हुआ?"
"भगवान जाने! यह बताना असंभव है कि उन्होंने खुद ऐसा किया या किसी और ने। और हाँ, उनकी देखभाल करने वाला भी कोई नहीं है।" मैंने अपना माथा पीटते हुए कहा,—
"अरे, मुझे तो पता ही नहीं था! मैंने तो राजकुमारी से बात करना ही बंद कर दिया था!"

डॉक्टरिनबाई हंसते हुए बोलीं, "श्री ठाकुर, ऐसे समय में तो सब कुछ भूल जाना चाहिए। जीवन इतना छोटा है कि इसे गंभीरता से लेने का कोई मतलब नहीं! है ना?"
मैंने चोक्सीबाई को कोई जवाब नहीं दिया। लेकिन राजकुमारी को देखने की मेरी उत्सुकता पल-पल बढ़ती जा रही थी। बराई ने अस्पताल परिसर में कार खड़ी की और कंधे पर स्टेथोस्कोप लिए अस्पताल के मुख्य द्वार से अंदर चला गया। मैं उसके पीछे-पीछे गया। राजकुमारी के पास एक डॉक्टर और एक नर्स मौजूद थे। चोक्सीबाई को आते देख डॉक्टर तुरंत एक तरफ हट गए।
"मरीज कैसा है?" बैरी ने पूछा।
‘‘इंप्रुव्हिंग, बट बी. पी. अॅबनॉर्मल!’’
राजकुमारी को ऑक्सीजन ट्यूब लगाई जा रही थी और उनकी कलाई में सलाइन के इंजेक्शन लगाए जा रहे थे; उन्हें उस हालत में देखकर मुझे सचमुच चक्कर आने लगा। एक पल के लिए मैं उनके प्रति अपना सारा गुस्सा भूल गई।
आँखों के चारों ओर कुछ काले घेरे थे। गालों की हड्डियाँ उभरी हुई थीं। आँखें बंद थीं।
जैसे ही बराई ने मुझे पास बुलाया, मैंने अपनी आंखें पोंछीं और चारपाई की ओर चली गई।
"श्री ठाकुर, आपको उन्हें फोन करना चाहिए! अगर आपको कोई जानी- पहचानी आवाज सुनाई दे, तो देखें कि क्या वे आपको पहचानते हैं।" मेरी घनी घास साफ करते हुए, माँ ने कहा,—
"काज! आह, राजा! मैं आ गया हूँ - समर!" मैंने उनका बायाँ हाथ अपने हाथ में लेते हुए कहा।

और उसी क्षण, वे बेजान और कमजोर आँखें झपकीं। एक पल के लिए, वे निर्जीव आँखें मुझ पर टिकीं, और मुरझाए होंठों से अस्पष्ट शब्द निकले, "गर्मी! तुम आ गई हो!"
"जी हां, महाराज, मैं आ गया हूँ!"
चोक्सीबाई ने राजकुमारी की देखभाल कर रहे डॉक्टर से कहा, "यह तो अच्छी बात है! डॉक्टर साहब, श्री ठाकुर मरीज के साथ ही रहेंगे! हमें उनकी देखभाल के लिए एक योग्य व्यक्ति मिल गया है!"
"मैं जा रहा हूँ, श्री ठाकुर, क्या आप मेरे साथ रुकेंगे?" मैंने बिना एक पल भी संकोच किए कहा, "ज़रूर!"
"अगर आप घर जाना चाहते हैं तो मैं आपको संदेश भेज दूंगा!"
मैं झट से उठा और बोला, "अलविदा कहने की कोई ज़रूरत नहीं है, मैडम! मैं घर से निकल चुका हूँ!"
डॉक्टर ने मेरी तरफ मुस्कुराते हुए कहा, "तुम्हें वाकई चुटकुलों का बहुत शौक है।"
"मज़ाक नहीं, महोदया! मुझे ऐसा समझो जैसे मैं घर छोड़कर चला गया हूँ या किसी उल्कापिंड ने मुझे घर से बाहर फेंक दिया हो!"
वह महिला जो प्रतिदिन अनगिनत मरीजों को देखती थी, अपने प्रयासों से मृत्यु को मात देती थी, उसे लोगों के तुच्छ विचारों और दुर्गुणों से ईर्ष्या महसूस होती होगी।
मैंने राजकुमारी की देखभाल करने की ज़िम्मेदारी तुरंत ले ली थी, लेकिन अब मेरे पास सिर्फ़ सोलह रुपये बचे थे। ये पैसे खत्म होने के बाद क्या करना है, ये एक बड़ी समस्या थी। राजकुमारी की देखभाल करने की ज़िम्मेदारी लेने से कम से कम बस्ती में रहने की समस्या तो हल हो गई। कम से कम उतने दिनों के लिए तो, जितने दिन राजकुमारी अस्पताल में रहेंगी!

राजकुमारी की तबीयत धीरे-धीरे सुधरने लगी और फिर उसने मुझे अपनी दिल दहला देने वाली कहानी सुनाई। निर्देशक मेस्त्री ने उसे पूरी तरह लूट लिया था। उसने गहने और पैसे समेत सब कुछ छीन लिया था। अंत में राजकुमारी के पास कुछ भी नहीं बचा था। मेस्त्री, जिसने उसे फिल्म में नायिका का रोल दिलाने का झूठा वादा किया था, मुंबई छोड़कर गायब हो गया था। लेकिन जाने से एक रात पहले, वह राजकुमारी को अपने एक दोस्त के घर खाना खिलाने ले गया था। उसने खाने से पहले उसे चने में भिगो दिया था। उस समय उसे इस बात का जरा भी अंदाजा नहीं था कि खाने में कोई जहरीला पदार्थ मिला हुआ है; लेकिन जहर तुरंत नहीं मारता, बल्कि धीरे-धीरे असर करके मौत का कारण बनता है। जैसे ही राजकुमारी को शक हुआ कि उसे जहर दिया गया है, उसने चोक्सीबाई को संदेश भेजा और चोक्सीबाई ने अगली रात उसे नानावती अस्पताल में भर्ती करा दिया।
उसके ठीक चार दिन बाद!
राजकुमारी पलंग पर बैठी थी। आज उसने रोटी, टोस्ट और कॉफी खाई थी। जब चोक्सिबैन को एक पुकार आई, तो वह धीरे-धीरे अगले कमरे में गई और बारिन से बात की। मैंने उसका हाथ पकड़ा और उसे वापस पलंग पर ले आई और उसे बिठा दिया। फिर उसने कहा,—
"समर, मैं तुम्हारी वजह से ही जागा। वरना तो मुझमें जीने की इच्छा ही नहीं रहती!"
"राजा, कोई किसी पर मृत्यु थोप नहीं सकता। जन्म देने वाली को ही इसे सहना पड़ता है।"
"लेकिन अब मुझे पछतावा हो रहा है! तुम मुझसे दया भाव से कह रहे थे कि इस फिल्म के किरदारों से दूर रहो, लेकिन मुझे तुम पर गुस्सा आ रहा था! मुझे लगा कि तुम मेरे अहंकार को बर्दाश्त नहीं

कर सकते; लेकिन सच कहूँ तो, मुझे बिल्कुल भी अंदाजा नहीं था कि लोग इतने क्रूर हो सकते हैं!"
"राजा, क्या आपको याद है? जब महाराज मुझे जंगल में एक बंगले में ले जाकर मार डालने की योजना बना रहे थे, तब आपने उन्हें पहचान लिया था और रत्नपुर से भागने में मेरी मदद की थी! आप कितने चतुर हैं; लेकिन अब आपकी चतुराई क्यों गायब हो जानी चाहिए?"
"मैं फिल्म स्टार बनना चाहती थी!" उसने हल्की सी मुस्कान के साथ कहा, "समर, इस डॉक्टर ने मेरे साथ बहुत अच्छा व्यवहार किया है! मेरे जैसे उसके अनगिनत परिचित होंगे, लेकिन भला कौन अपना समय और पैसा हर परिचित पर खर्च करता है?"
तो? यहाँ के सारे खर्चे उन बारह लोगों ने ही उठाए थे?
"वह है!"
"मेरे पास तो एक जोड़ी जूते भी नहीं बचे। राजमिस्त्री मेरा सब कुछ ले गया!"
मैंने दांत पीसते हुए कहा, "उस कमीने को अभी भी नहीं पता कि समर ठाकुर कौन है।"
"कृपया, उसकी आवाज़ मत सुनो! उसके हाथ दूर-दूर तक फैले हुए हैं।" "मुझे इस बात पर गुस्सा नहीं है कि उसने तुम्हारा पैसा ले लिया, किंग, लेकिन उसे तुम्हारी जान नहीं लेनी चाहिए थी।"
"छोड़ो भी! समर, इस डॉक्टर ने पिछले चार दिनों में मुझ पर सात-आठ सौ रुपये खर्च कर दिए हैं, मैं उसे धन्यवाद नहीं देना चाहती! क्या तुम मुझे कुछ पैसे दोगे?"
एक बार फिर, मेरे जीवन में परीक्षा का समय आ गया था। मेरी जेब में सोलह रुपये थे, और मैंने राजकुमारी को आठ सौ रुपये देने का वादा किया।

"मेरा कहना है कि हमें उसे पैसे देने चाहिए और उसकी ज़रूरत की दवाइयाँ लानी चाहिए! लेकिन उसे भी पैसों की ज़रूरत है! क्या आप इसके लिए कुछ इंतज़ाम कर सकते हैं?"
"महाराज, आज पहली बार आप मुझसे पैसे की अपेक्षा कर रहे हैं। अगर आप ऐसा कहते हैं, तो मैं एक गरीब आदमी हूँ। मेरी हालत ऐसी है कि मेरे पास रहने के लिए जगह तक नहीं है, लेकिन मैं आपको साहसपूर्वक कहता हूँ कि मैं आपको किसी भी प्रकार की असुविधा नहीं होने दूँगा।"
अब तक इन हाथों ने चार-दो लाख का हिसाब-किताब किया था; लेकिन आज एक हजार जुटाना भी पहाड़ जैसा लग रहा था। अस्पताल से निकलते ही मुझे पैसों की ज़रूरत थी। तुरंत तो आठ सौ से एक हजार रुपये की ज़रूरत थी और उसके बाद भी पैसों की ज़रूरत पड़ेगी। पर ये पैसे आते कहां से? क्या पैसों का कोई ऐसा पेड़ था जिसे मुझे जाकर काटना पड़ता? पैसा-पैसा-पैसा! इस पैसे की प्रकृति को मैं कैसे बयान करूं? जब ये आता है, तो सचमुच 'टुकड़े-टुकड़े' हो जाता है, इसकी कोई कीमत नहीं! चाहे कितना भी हो या कितना भी बर्बाद हो जाए। बिना किसी मदद के मिलने वाला ये पैसा मुझे चैन से बैठने नहीं देता। ये शरीर में एक नई ऊर्जा भर देता है। ऐसा लगता है जैसे मैं हवा में तैर रहा हूं। लेकिन अगर मैं इस पैसे से मुंह मोड़ लूं, तो ये चला जाता है। अगर मैं इसके पीछे भागूं, तो ये बहुत दूर चला जाता है। जब पैसा पास नहीं होता, तभी मुझे इसकी असली कीमत समझ आती है! कभी-कभी, उस पैसे को थामे रखने की कोशिश में, मुझे अपनी बेबसी माननी पड़ती है।
वो समय अब तक मेरे लिए नहीं आया था, और न ही आएगा। मुंबई में रहते हुए, मुझे पैसे कमाने की तकनीक पता थी, भले ही मैंने उसे अभी तक सीखा न हो। और एक बार पता चल जाए, तो उसे सीखना बहुत मुश्किल

नहीं होता। लेकिन एक तकनीक थी जिसे मैं बहुत अच्छी तरह जानता था, जुआ! फ्लशिंग! लेकिन मेरे ‘चश्मे’ खो गए थे और मैंने ‘फ्लशिंग’ छोड़ दी। ठीक वैसे ही जैसे लोग अपने प्रियजन के जाने पर कुछ छोड़ देते हैं! जब से मेरे ‘जादू-ए-चिराग’ के चश्मे खो गए हैं, मैंने जुआ खेलना छोड़ दिया है। सभी प्रकार के जुए नहीं। सिर्फ ताश का जुआ! सरकार द्वारा स्वीकृत रेस जुआ अभी भी चल रहा था। लेकिन कभी-कभी वो धोखा देता था। चाहे कितने भी घोड़ों पर दांव लगाया जाए, वो सही समय पर खाना खा लेता था!
मैं इन विचारों में इतना मग्न था कि मुझे पता ही नहीं चला कि मेरी बस संग्रहालय कब पहुंच गई।
आज मैं थोड़ा खुश था। राजकुमारी का जीवन समाप्त हो गया था। जिसने मेरी जान बचाई थी, उसकी जान बचाने में मैंने एक छोटी सी भूमिका निभाई थी। मैं अपनी इस खुशी को एक-दो पेग लगाकर व्यक्त करना चाहता था!
मैं दुकान के सामने गया... दुकानदार काउंटर पर बैठा था। मुझे देखते ही वह मुस्कुराया, मुझसे हाथ मिलाया और बोला, "क्या हालचाल है, भाई समर? आजकल कहाँ हैं?"
"अस्पताल के लिए!"
"अस्पताल में? क्या आप बीमार थे?"
"हाँ, हम इस बारे में बाद में बात करेंगे। मुझे एक अच्छा गिलास व्हिस्की दो!"
‘‘सॉरी! देखो भाई, पुलीसवालोंने बहोत तंग कर दिया है! एक्साईज डिपाटमेंटने भी जादा चेकिंग शुरू किया है!’’
"ओह, मुझे स्कॉच नहीं चाहिए, मुझे सादी भारतीय व्हिस्की दे दो।" ‘‘वो भी नहीं!’’
"आप क्या कह रहे हैं?"

‘‘तेरी कसम!’’
"वाह! क्या न्याय है! आप मेरी शपथ क्यों लेते हैं? अगर मैं मर जाऊं तो आपको क्या नुकसान होगा?"
उन्होंने मुझे जो बताने के लिए फोन किया था, वह केवल उनके व्यवसाय में आ रही कठिनाइयों के बारे में ही नहीं था, बल्कि अपने शब्दों के माध्यम से उन्होंने अनजाने में मुझे मेरी वित्तीय समस्याओं को हल करने का एक नया तरीका भी दिखाया था। महाराष्ट्र में शराबबंदी थी, लेकिन आंध्र प्रदेश में नहीं थी। अगर मैं आंध्र प्रदेश से व्हिस्की, रम, ब्रांडी जैसी शराब आयात करता, तो खूब मुनाफा कमाता। मुंबई में एक परिवार था जो उस शराब को सोने के भाव खरीदता था। लेकिन यह धंधा दिमाग से करना पड़ता था; अगर ज़रा सी भी लापरवाही होती, तो मुझे खदान में काम करना पड़ता।
"यह देश खूबसूरत है, क्या मैं इसे आपको दे सकता हूँ?"
"क्या! कितना समय हो गया है? छोड़ दो!"
उस दिन, हम ग्रामीण सड़क पर निकले और हैदराबाद से शराब आयात करने की योजना बनाकर चल पड़े। इस विचित्र, सर्वव्यापी तरल पदार्थ में कल्पना को उड़ान देने की कितनी अद्भुत शक्ति है! मैं चलते-चलते हैदराबाद जाने की योजना बना रहा था, किसलिए और कब जाना है, कितना सामान खरीदना है और उसे कैसे ले जाना है। तभी फोर्ट में एक कपड़े की दुकान में उन दोनों को हंसते-हंसते और मजाक करते देखकर मैं चौंक गया। मैंने पलकें झपकाईं और बार-बार उन्हें देखा। मैंने सोचा, चार पेग देसी कपड़ा खरीदने के बाद तो मुझे भी ऐसा ही महसूस होता है। लेकिन अरे! ऐसा महसूस नहीं हुआ। शिदोजी राजे और डायरेक्टर मेस्त्री दुकान में हाथ पकड़े खुशी से हंस रहे थे। इन दोनों बदमाशों को साथ देखकर मेरा सिर चकरा

गया। शिदोजी राजे ने पुलिस को मेरे घर में घुसाकर वे चिट्ठियां और तस्वीरें ले ली थीं। मेस्त्री ने न सिर्फ राजकुमारी को लूटा था, बल्कि उसकी हत्या करने की कोशिश भी की थी। इससे पहले कि मैं कुछ समझ पाता, मैं दुकान की सीढ़ियां चढ़ गया और मेस्त्री के चेहरे पर इतनी ज़ोर से घूंसा मारा कि वह गिर पड़ा।
वहाँ असहाय चेहरे के साथ हाथ मलते खड़े दुकानदार को डर लग गया। दुकानदार आए और मुझे पकड़ लिया। सबको लगा कि अब पुलिस आएगी, मुझे पकड़ेगी और नीली गाड़ी में बिठाकर ले जाएगी, लेकिन शिदोजी राजे चुपचाप नीचे गिरे राजमिस्त्री को बाहर ले गया। वह सड़क पर खड़ी एक गाड़ी में बैठा और चला गया।
दुकानदार मुझे "आओ" के इशारे से देखता रहा। मुझे पकड़े हुए नौकरों की पकड़ ढीली पड़ गई। मैंने अपने बिखरे बालों में हाथ फेरा और दुकान से बाहर निकल गई। किसी को समझ नहीं आया कि मैंने उस सज्जन को किसने, कहाँ और क्यों मारा था, और उपमंत्री जैसा आदमी अपने दोस्त को चुपचाप चोर की तरह क्यों ले गया, जबकि पिटे हुए आदमी को पकड़कर रखा गया था!
जब मैं नीचे उतरा तो मेरी मुट्ठी में दर्द होने लगा। राजमिस्त्री की पकड़ ढीली हो गई होगी!
-०-०-

४०
मद्रास मेल दक्षिण दिशा की ओर तेज़ी से बढ़ रही थी। मैं ट्रेन के डिब्बे में खिड़की के पास बैठा बाहर देख रहा था। स्टेशन से निकलने के बाद, समतल भूभाग से गुज़रते ही ट्रेन ने रफ़्तार पकड़ ली।
हैदराबाद में यह मेरी पहली यात्रा थी, मैं वहाँ किसी को नहीं जानता था! लेकिन जिस कारण से मैं वहाँ जा रहा था, उसके लिए मुझे किसी परिचय की आवश्यकता नहीं थी। संग्रहालय के पास पटेल लेन में परशा ने सौ बोतलों का ऑर्डर बुक किया था। मुझे प्रति बोतल तीस रुपये मिलने थे। इसका मतलब है कि अगर मैं सौ बोतलों की एक ट्रिप करता, तो मुझे तीन हजार रुपये मिलते! भले ही मैं कार का खर्च, परिवहन और किश्तों जैसे खर्चों को बहुत उदारता से खर्च करता, फिर भी प्रति ट्रिप कम से कम दो हजार रुपये का नुकसान नहीं होता। शुरू में पूंजी की समस्या थी; लेकिन परशा ने इसे हल कर दिया। उसने एक बार हैदराबाद के व्यापारी को मुझे उधार देने के लिए पत्र दिया था, और उसके अपने स्वार्थ थे। अगर मैं दो हजार रुपये कमा रहा था, तो वह उसी सामान पर चार हजार रुपये कमाना बंद नहीं कर सकता था, और वह भी बिना हिले-डुले, सड़क पर बैठे-बैठे! और उसने मुझे आने-जाने के खर्च के लिए कुछ पैसे अग्रिम भी दिए थे। मैंने बरकतपुरा इलाके के एक होटल में चेक-इन किया। मैंने नहाया और नाश्ता किया। अचानक मुझे सलीमा की याद आ गई! सलीमा का शव उसकी मां हैदराबाद लाई थी, इसलिए वह यहीं कब्रिस्तान में कहीं शांति से सो रही होगी! मुझे उसे श्रद्धांजलि देने का मन हुआ। मैंने कोने पर स्थित फूलों की दुकान से गेंदे के फूलों का गुलदस्ता खरीदा और रिक्शावाले को बुलाया।

"आप कहाँ जा रहे हैं, जी?" साइकिल रिक्शा चालक ने अपने माथे से पसीना पोंछते हुए मुझसे पूछा।
‘‘कबरस्तान!’’
‘‘कबरस्तान?’’
‘‘हाँ, भाई, जब इधरके नबाब लोक गुजर जाते है तो उनको कहाँ दफन किया जाता है?’’
‘‘उनका कबरस्तान अलग होता है । वहाँ पर जाना है?’’
‘‘हां, चलो!’’
मुस्लिम धर्म में लोग अपने मृत रिश्तेदारों की कब्रों पर केवल कुछ निश्चित दिनों में ही जाते हैं; लेकिन उस बेचारे आदमी को कभी यह बात समझ में नहीं आई कि मुझ जैसा संत यूं ही कब्रिस्तान जाने की इच्छा क्यों करेगा।
बिना सीट पर बैठे ही, वह छोटा लड़का साइकिल रिक्शा खींच रहा था। इंसानी श्रम पर सफर करने का यह तरीका मुझे थोड़ा क्रूर लगा। लेकिन हैदराबाद में मैं अकेला था। मेरे पास रिक्शा खींचने के अलावा कोई चारा नहीं था!
कब्रिस्तान का वातावरण अत्यंत शांत था। ऊंचे-ऊंचे यूकेलिप्टस के पेड़ कतारों में लगे हुए थे। उनके बीच सफेद रंग की कब्रें थीं। एक-दो! सैकड़ों! मेरे लिए यह पता लगाना असंभव था कि उस कब्र में सलीमा की कब्र कौन सी थी।
कोने में पीरज़ादे रहते थे। ये पीरज़ादे कब्रिस्तान के प्रबंधक रहे होंगे। इसलिए मैं उनके घर गया। उनके सिर पर भूसे के रंग की सफेद टोपी थी, दाढ़ी सफेद हो चुकी थी, और वे हाथ में माला घुमाते हुए कुछ बुदबुदा रहे थे। मैं पास गया और उन्हें प्रणाम किया। मैंने उन्हें बताया कि मैं पुणे से आया हूँ। माला के मोती स्थिर हो गए।

‘‘क्या होना बेटा?’’
हात जोडून मी म्हणालो, ‘‘देखो चाचाजी, दो अढाई साल पहले पुना में एक लडकीका खून हुआ था! उसकी लाश इधर दफन करने के लिए ला गई थी!’’ ‘‘अच्छा अच्छा! वो मुजफरखान के लडके के साथ गई थी! ख्याल में आया! क्या नाम था उस लडके का?’’ स्वत:लाच पीरजाद्याने प्रश्न विचारला आणि आठवल्यानंतर म्हणाला, ‘‘हां! दौलतखान! वो भी मर गया बाद में! उसकी भी कबर है इधर!’’
मैंने कहा, "उसे सजा मिली!"
‘‘हां, वो जेल में मर गया! अमीर का लडका जेलमें जिंदा नहीं रहा!’’ ‘‘मुझे वह लडकी की कबर दिखाएंगे तो बडी मेहरबानी होगी, चाचाजी!’’ पीरज़ादा उठे। उन्होंने कोने में रखी अलमारी से उर्दू में लिखी एक मोटी पुस्तिका निकाली और पाँच मिनट में मुझे सलीमा और दौलत खान की कब्रें बता दीं। मैं कब्र पर गया। मैं घुटनों के बल बैठ गया। मैंने कब्र पर गुलाबों का गुलदस्ता रखा और हाथ जोड़ लिए। सलीमा, तुम्हारे साथ मुझे सिर्फ एक रात मिली! अगले ही दिन तुम इस दुनिया से चली गईं! मैं तुम्हें इस जीवन में फिर कभी नहीं देख पाऊंगा; लेकिन अगर लोग पुनर्जन्म लेते हैं, तो मैं तुम्हें अगले जन्म में भी नहीं ढूंढ पाऊंगा।
मैंने उस गुच्छे से एक फूल तोड़ा और उसे दौलत खान की कब्र पर अर्पित किया। मैंने हाथ जोड़कर कहा, "मुझे क्षमा कर दीजिए! मैंने आपको धोखा दिया! मैं आपके पैसे लेकर भाग गया। और जाने से पहले, सलीमा..."
"शायद अगर मैं तुम दोनों से न मिला होता, तो तुम्हारे जीवन में घटी यह त्रासदी टल जाती! मुझे माफ कर दो, दौलत खान!"
कब्रिस्तान के बाहर इंतजार कर रहा रिक्शा चालक पिछली सीट पर गहरी नींद में सो रहा था। मुझे उसे जगाने में बहुत डर लग रहा था;

लेकिन मेरी आवाज सुनकर वह जाग गया और बोला, "क्या बहुत देर हो गई है, बाबूजी?"
‘‘नहीं नहीं! मैं अभी आया!’’
‘‘चलो बैठो!’’
उसने पहले जैसी ही फुर्ती से साइकिल चलाना शुरू कर दिया। यहाँ तक कि उसने अपना सिर सीट पर टिकाया भी नहीं!
सड़क के दोनों ओर संकेश्वर के गेंदे के पेड़ थे। सामने हैदराबाद शहर की ऊंची-ऊंची इमारतें दिखाई दे रही थीं। एक तरफ, नीले आसमान की पृष्ठभूमि में हैदराबाद के प्रसिद्ध चारमीनार के चार गुंबद बेहद आकर्षक लग रहे थे।
हैदराबाद एक बहुत बड़ा शहर है, लेकिन पता नहीं क्यों, मुझे यह वीरान और खाली लगा! कुछ शहरों के चेहरे होते हैं, और वे चेहरे इंसानों जैसे लगते हैं। हमारा मुंबई एक ऐसे कर्मठ व्यक्ति जैसा लगता है जो हमेशा काम में व्यस्त रहता है, पुणे एक गुणी, ज्ञानी और प्रगतिशील सोच वाले व्यक्ति जैसा लगता है, सतारा मुझे एक क्षत्रिय की याद दिलाता है, और सांगली एक शर्मीली युवती जैसी लगती है। लेकिन यह हैदराबाद एक ऐसे दुखी व्यक्ति जैसा लगा जिसने अभी-अभी किसी बच्चे को जन्म दिया हो और पारा के सामने बैठा हो।
व्यापारी के साथ सौदा तय हो गया। परिचित परशा का नोट देखकर उसने ज़रा भी संकोच नहीं किया। सारा सामान बक्सों में पैक कर दिया गया और उस पर 'कांच को सावधानी से संभालें' का लेबल लगा दिया गया।
ऐसा नहीं था कि पुलिस को इस बात की जानकारी नहीं थी कि मुंबई में हर दिन सैकड़ों शराब की बोतलें आयात की जा रही थीं; लेकिन पुलिस भी शराब के इस बेलगाम आयात को रोकने में असमर्थ थी! फिर भी, अगर

मुझ जैसा कोई अनुभवहीन और नौसिखिया उस इलाके में घुसने की कोशिश करता, तो पुलिस उसे ज़रूर पकड़ लेती। यह सोचना गलत था कि मुंबई में ट्रेन से उतरने के बाद मेरा सामान स्टेशन से सुरक्षित निकल जाएगा। सामान को सुरक्षित बाहर निकालने के लिए कुछ उपाय करना ज़रूरी था। इसके अलावा, गडकरी मामले से पुलिस मुझे अच्छी तरह जानती थी। कमिश्नर इजेकल और मैं एक-दूसरे को अच्छी तरह जानते थे; फिर भी, पुलिस ने कभी किसी को नहीं बताया! यह मानते हुए कि स्टेशन पर मेरे सामान को रोका और जांचा जाएगा, मेरे लिए कुछ उपाय करना ज़रूरी था। दरअसल, ऐसे जोखिम भरे काम के लिए मुझे दो-तीन साझेदारों की ज़रूरत है; लेकिन इस समय मुझे ऐसे साझेदार कहाँ से मिलेंगे?
मैंने डिब्बे को बड़े करीने से इस तरह रखा कि वह प्रथम श्रेणी के डिब्बे में बर्थ के नीचे आ जाए। मैंने व्हिस्की की एक बोतल अपने अटैची में रख ली। मैं दादर स्टेशन पर प्रथम श्रेणी से उतरकर तृतीय श्रेणी में चढ़ गया। जैसे ही ट्रेन बोरीबंदर पहुँची, रेलवे कर्मचारी होने का नाटक करते सादे कपड़ों में पुलिसकर्मी प्लेटफार्म पर खड़े हो गए, यह अंदाज़ा लगाते हुए कि अपराधी कौन है। एक तरफ रेलवे पुलिस बल की वर्दी पहने लोग बैठे थे। जैसे ही उनके वरिष्ठ अधिकारियों ने इशारा किया, वे उनकी मदद के लिए दौड़ने को तैयार थे।
मैंने प्लेटफ़ॉर्म पर भीड़ में अपने पास रखी व्हिस्की की बोतल फेंक दी। वह ज़ोरदार धमाके के साथ फट गई। बोतल टूटते ही पुलिस की नज़र उस पर पड़ गई। जब उन्हें शराब की बोतल टूटने की खबर मिली, तो प्लेटफ़ॉर्म पर मौजूद पूरी पुलिस तुरंत मौके पर पहुँच गई। पुलिस ने शक के आधार पर पास से गुज़र रहे दो मारवाड़ी परिवारों को रोका। उनके पास बड़े-बड़े बक्से और थैले थे। पुलिस

बहुत खुश थी क्योंकि उन्हें लगा कि उन्होंने शराब ले जा रहे आरोपी को पकड़ लिया है, और उसी समय, पुलिस का ध्यान भटकते देख, 'ग्लास विद केयर' लेबल वाला डिब्बा हमलावरों के सिर के ऊपर से निकल गया। पुलिस को बस दस से पाँच मिनट के लिए गुमराह करना ज़रूरी था और मैंने वह कर दिखाया। परशा ने मेरे इस प्रयास की सराहना की। चार दिनों में दो से ढाई हज़ार कमाने के बाद, मुझे लगा कि मुझे इस मुनाफ़े वाले धंधे को नहीं छोड़ना चाहिए; लेकिन यह तरकीब हर बार काम नहीं करेगी। मुंबई पुलिस एक दिन ज़रूर एक हो जाएगी; लेकिन अगर आप हर दिन उठकर उनसे कहें, "ओह, हाँ!" ये लड़के बेहद बुद्धिमान हैं, और मुंबई पुलिस विभाग को भारतीय स्कॉटलैंड यार्ड कहना कोई आश्चर्य की बात नहीं है!
राजकुमारी का स्वास्थ्य काफी सुधर गया था। मैंने दूसरी यात्रा में उन्हें हैदराबाद ले जाने का फैसला किया। एक साथी की ज़रूरत थी। इतनी सुंदर युवती साथी, वह दस पुरुष साथियों के बराबर थी! उसके बाद, मैंने हैदराबाद के दस से बीस चक्कर लगाए, और वो भी राजकुमारी के साथ। लेकिन हर बार सामान ले जाने के लिए मैंने अलग-अलग तरीके अपनाए। कभी मैं सारा सामान कल्याण में उतार देता था, कभी पुणे में। कभी बोरी बंदर पर। सामान उतारे बिना ही ट्रेन यार्ड में रुक जाती थी और सामान उतारा जाता था। इसके लिए मुझे यार्ड में काम करने वाले लोगों की मदद लेनी पड़ती थी।
मुझे मिले पैसों से मेरी हालत में कुछ स्थिरता आई। राजकुमारी की सेहत में इतना सुधार हुआ कि किसी को विश्वास ही नहीं होता कि वह कुछ समय से बीमार थीं और उनकी बीमारी ने उनकी जान को खतरा पैदा कर दिया था!
जब मैं बाहर आया तो राजकुमारी सफेद साड़ी और सफेद ब्लाउज पहने, खुले बालों के साथ अखबार पढ़ रही थी।

"समर, क्या तुमने यह खबर पढ़ी?"
"कौन सा?"
"दिल्ली में धोखाधड़ी के आरोप में राजमिस्त्री गिरफ्तार!" "ठीक है।"
"इसके अलावा, इस समाचार रिपोर्ट में कहा गया है कि दिल्ली पुलिस विभाग ने संदेह व्यक्त किया है कि इस आरोपी के पीछे कोई शक्तिशाली व्यक्ति हो सकता है।"
"शिदोजी राजेन के अलावा और कौन हो सकता है? मैंने खुद उन दोनों को एक साथ काम करते देखा था। लेकिन सच कहूं तो राजेन, राजमिस्त्री और शिदोजी राजेन में कोई फर्क नहीं बता सकता। जब सत्ता और पैसा एक साथ आते हैं, तो सबसे निर्भीक अपराधी भी निर्भीक होकर काम कर सकते हैं। उन्हें अपने कर्मों का फल भुगतना ही होगा।"
"गर्मी का मौसम रहने दो, लेकिन मुझे बताओ, क्या तुम फिर कभी उल्कापिंड देखने नहीं जाओगे?"
जब राजकुमारी ने अचानक मुझसे वह सवाल पूछा, तो मैंने कहा, "ऐसा कुछ नहीं है, लेकिन मैं जानबूझकर उसके पास नहीं जाना चाहता। सच तो यह है कि जब उल्का ने मुझे घर छोड़ने के लिए कहा, महाराज, तो उसने कुछ भी गलत नहीं किया! उसे पत्र मिल गया और सारा बवाल उसी की वजह से हुआ!"
"लेकिन समर, तुम कब तक ऐसे ही नाचती रहोगी?"
"मैं क्या करूँ? मुझे समझ नहीं आ रहा कि इस मुसीबत से कैसे निकलूँ। दरअसल, मुझे भवानी नगर जाना था। अलका का ज़रूरी पत्र आ गया था, लेकिन उसी समय मुझे पता चला कि आपको अस्पताल में भर्ती कराया गया है और मैं भूल ही गई कि मुझे भवानी नगर जाना है!"

"वाह! जब तुम्हारी अपनी पत्नी अस्पताल जाती है, तो तुम्हारी देखभाल एक दूसरी महिला करती है! कैसा लगेगा तुम्हें, समर?"
"अब करने को क्या बचा है, राजा? यह तो पहले ही जीवन का तीन-तेरहवां हिस्सा बीत चुका है।"
"लेकिन मुझे लगता है कि यह ठीक है, समर, तुम्हें मेरी वजह से अपमानित नहीं होना चाहिए!"
"आपकी दयालुता के लिए धन्यवाद!" मैंने व्यंग्यपूर्वक कहा और हंस पड़ा।
इसी दौरान मुझे पैसे कमाने का एक और तरीका सूझा। इस तरह मुझे पैसे कमाने के लिए मुंबई से बाहर नहीं जाना पड़ेगा।
कुछ निजी सट्टेबाज मुंबई के घुड़दौड़ मैदानों पर अवैध रूप से सट्टेबाजी कर रहे थे। मैं उन्हें जानता था। उन्हें धमकाकर या डराकर उनसे पैसे वसूलना मुश्किल नहीं था। टर्फ क्लब को न केवल इस तरह के निजी सट्टेबाजी पर प्रतिबंध था, बल्कि यह कानून के तहत एक आपराधिक कृत्य भी था।
मुंबई के रेसकोर्स को महालक्ष्मी का रेसकोर्स कहा जाता है। लेकिन कौन जानता है कि वहाँ जुआ खेलने आने वाले कितने लोग इस महालक्ष्मी से प्रसन्न हुए होंगे! लेकिन मैं अब उससे बहुत प्रसन्न हूँ। मुंबई के अमीर भाटिया और पारसी लोग निजी बुकिंग लेते थे और क्योंकि मैं डरा हुआ था, इसलिए वे मुझे चुपके से किश्तें देने लगे।
हर इंसान की ज़िंदगी में एक ऐसा समय आता है जब वह अपने हर काम में कामयाब हो जाता है। मेरी ज़िंदगी में भी ऐसा ही समय आ गया था। अगर मैं हैदराबाद जाता, तो मुझे चार-पाँच हज़ार रुपये मिलते। महालक्ष्मी के दिन होने वाली दौड़ में इनाम तीन-चार हज़ार रुपये था; लेकिन पैसों की इतनी हड़बड़ी में मैं चैन से

नहीं बैठ सकता था। अच्छे कपड़े पहनने और ऐशो-आराम की चीज़ों का भरपूर लुत्फ़ उठाने के सिवा मेरे दिमाग में कुछ नहीं था। लेकिन अब राजकुमारियाँ मुझे दिलासा देने लगीं। जब वे पैसे लुटा रही थीं, तब मैं उन्हें दिलासा देता था और अब वे मुझे दिलासा दे रही थीं, पर मेरी सुनने की ज़हमत नहीं थी।
पहले पत्र के दो महीने बाद मुझे अल्का का दूसरा पत्र मिला। उसने मुझे बताया था कि उसकी एक बच्ची का जन्म सुरक्षित रूप से हो गया है। लेकिन उसने मेरी अनुपस्थिति पर नाराज़गी जताई थी। उसने सुझाव दिया था कि मुझे कम से कम बच्ची के नामकरण समारोह में तो आना चाहिए; लेकिन फिर से दुर्भाग्यवश! उस दिन महालक्ष्मी पर बहुत बड़ी दौड़ थी। चूंकि निजी बुकिंग ज़ोरों पर होने की उम्मीद थी, इसलिए मेरी कमाई भी उसी हिसाब से बढ़ जाती। मेरे पास अल्का को पत्र लिखकर माफी मांगने के अलावा कोई विकल्प नहीं था। गवर्नर कप रेस चल रही थी। मैंने प्राइवेट बुकिंग से अपनी फिरौती वसूल कर ली थी। क्रीम रंग का रेशमी सूट, टाई और आंखों पर तिरछी डर्बी स्टाइल की टोपी पहने, मैं दूरबीन से घोड़ों को छँटाई केंद्र से निकलते हुए देख रहा था। आज मुझे उम्मीद से ज़्यादा कामयाबी मिली थी। गवर्नर कप रेस पर खूब सट्टेबाजी हुई थी, और मैंने प्राइवेट बुकिंग से मोटी रकम भी वसूल कर ली थी। मेरे बर्ताव से उन लोगों को लगा कि मैं कोई पुलिस एजेंट हूँ। अगर मैंने उसे नुकसान पहुँचाया, तो हमारा यह मुनाफ़े वाला धंधा ठप हो जाएगा!
मैं स्टॉल पर दूरबीन से देखते हुए खड़ा था, तभी किसी ने मेरे कंधे पर हाथ रखा। मैंने दूरबीन नीचे की और उस व्यक्ति की ओर देखा जिसने मेरे कंधे पर हाथ रखा था। मेरे पीछे दो हट्टे-कट्टे पुलिस अधिकारी खड़े थे। उनमें से एक ने रुमाल में हथकड़ी छुपा

रखी थी। उसने मुझसे कहा, “श्री ठाकुर, आप गिरफ्तार हैं! बेहतर होगा कि आप सीधे आ जाएं, वरना आपको हथकड़ी लगाकर ले जाना पड़ेगा!”
"ठीक है मैं आ रहा हूं!"
रेसकोर्स पर इसका तमाशा बनाने का कोई मतलब नहीं था। पुलिस अधिकारी मुझे टर्फ क्लब में स्टुअर्ट के कार्यालय में ले गए और मेरे सामने एक कागज का टुकड़ा रखा।
"श्री ठाकुर, आपकी जेब में ये नोट हैं जिन पर नंबर लिखे हुए हैं। इन्हें बाहर निकालिए! हमें शिकायतें मिली थीं कि आप निजी बुकिंग के नाम पर पैसे वसूल रहे थे, जिसके बाद आज आप रंगे हाथों पकड़े गए!"
एक अन्य पुलिस अधिकारी ने कहा, "आप पर हैदराबाद से तस्करी की शराब आयात करने का भी आरोप है। लेकिन हम आपको पकड़ नहीं पाए हैं क्योंकि आपने हर बार शराब आयात करने के लिए अलग-अलग तरीके अपनाए हैं।"
पुलिस ने रेसकोर्स में मौजूद दोनों जजों को बुलाया। बाहर, जैसे ही घोड़ी जीत की रेखा के पास पहुंची, रेस के घोड़े ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगे, जबकि अंदर, पुलिस अधिकारी शांति से मेरी तलाशी की रिपोर्ट लिख रहे थे।
मैंने पूछा, "वहाँ प्रथम श्रेणी के विंग में राजकुमारियाँ हैं, क्या आप कृपया उन्हें बुला सकते हैं?"
"इस पंचनामा के बाद!"
"ठीक है! लेकिन वे मुझे ढूंढते रहेंगे!"
एक पुलिस अधिकारी को मुझ पर दया आ गई। उसने कांस्टेबल को राजकुमारी का हुलिया बताया। राजकुमारी को मेरी हालत का ज़रा भी अंदाज़ा नहीं था। जैसे ही मैं स्टुअर्ट के दफ्तर पहुँचा, मुझे

गिरफ़्तार देखकर वो चौंक गया। मेरे हाथों में हथकड़ियाँ थीं! “महाराज, डरने की कोई बात नहीं! बस चंदोरकर के वकील से मिलिए और मेरी ज़मानत की अर्ज़ी का इंतज़ाम कीजिए! ये कोई गंभीर मामला नहीं है। इन लोगों को मेरे खिलाफ़ अपना केस साबित करने में बहुत मुश्किल होगी!”
मैंने एक शातिर अपराधी की तरह बात की। राजकुमारी एक हाथ सीने पर रखे ज़ोर-ज़ोर से सांस ले रही थी!
अगले दिन, मुंबई के एक प्रमुख अखबार में खबर छपी। मुंबई पुलिस जिस 'सज्जन' अपराधी की तलाश कर रही थी, वह आखिरकार लकवाग्रस्त निकला! जब यह खबर फोटो के साथ छपी तो मुझे थोड़ा बुरा लगा! लेकिन बुरा लगने की क्या बात थी? मैं जानबूझकर आग से खेल रहा था। किसी न किसी मोड़ पर तो जलना ही था।
मेरी जमानत याचिका खारिज कर दी गई। पुलिस ने मेरे खिलाफ आरोपों की एक लंबी सूची तैयार कर रखी थी। मुझे पता चला कि गडकरी हत्याकांड के बाद से ही पुलिस मेरी गतिविधियों पर नजर रख रही थी!
तीसरे दिन राजकुमारी मुझसे पुलिस कोठरी में मिलने आई, उसकी आँखों में आँसू भरे हुए थे। पहले तो वह कुछ बोल ही नहीं पाई! "समर, मैं इजेकल साहब से मिलने गया था। वे सेवानिवृत्त हो गए हैं!"
मुझे यह पता है, लेकिन क्या वकीलों ने मुझे जमानत पर रिहा करने के लिए तर्क दिए थे?
"केली, लेकिन अदालत ने वह आवेदन खारिज कर दिया! सरकारी अभियोजकों ने कहा कि वे आपके खिलाफ निर्वासन की कार्यवाही शुरू करेंगे। उनका कहना है कि लगभग दो सौ गवाह आपके खिलाफ गवाही देने के लिए तैयार हैं!"

तो क्या हुआ? लेकिन तुम एक काम करो। आज ही मुंबई छोड़ दो!
और हमें कहाँ जाना चाहिए?
"कहीं भी जाओ। अगर चाहो तो रेवर जाओ; महाराज से माफी मांगो; लेकिन यहां मत रुको! मुझे डर है कि पुलिस तुम्हें भी मेरे साथी के रूप में पकड़ लेगी!"
"लेकिन क्या तुम्हें लगता है कि मैं तुम्हें ऐसे ही छोड़ दूंगा?"
"राजा, सुनिए, इतने जिद्दी मत बनिए! यह बहुत गंभीर मामला है!" "लेकिन अगर वे सच में मुझे फंसाना चाहते हैं, तो क्या वे रेवर को यहाँ नहीं ला सकते? आपका मामला कौन संभालेगा?"
"मैं सक्षम हूँ। चंदोरकर के पास पाँच हज़ार रुपये छोड़कर मुंबई से चले जाओ!"
"मैं नहीं जा सकता! बाहर रहने की बजाय मैं तुम्हारे साथ पुलिस हिरासत में रहना ज़्यादा पसंद करूँगा!"
मैंने कहा, "तो फिर मर जाओ!"
राजकुमारी ने मेरी रिहाई के प्रयासों को विफल कर दिया। चंदोरकर ने वकीलों को एक बैरिस्टर भी मुहैया कराया। मेरा मामला लंबे समय तक चलता रहा। अंततः, मुझे मामले में बरी कर दिया गया। वे निजी सट्टेबाज बन गए। पुलिस मेरे खिलाफ अपना मामला साबित नहीं कर सकी; लेकिन उस दिन से पुलिस ने मुझ पर कड़ी नजर रखी। कुछ दिनों बाद, मुझे देश निकाला का नोटिस मिला, लेकिन तब मुझे एहसास हुआ कि अब मेरे लिए मुंबई में रहना असंभव है।
फिर भी, मैं उस निर्वासन अभियान में अपनी बात रखने के लिए दृढ़ संकल्पित था।
मुंबई अब मुझे पहचानने लगी थी। मैं भी पहले जैसा नहीं रहा था।
मेरा मन व्याकुल था। मुझे सज्जन कहलाने की कोई इच्छा भी नहीं

थी। जो भी मेरे साथ होता, मैं उसका सामना करने को तैयार था, मुझे बस राजकुमारी की चिंता थी! मेरे बिना वह असहाय हो जाती। अलका और उल्का अपने पैरों पर खड़ी हो गई थीं, लेकिन राजकुमारी? राजपरिवार में जन्म लेने मात्र से ही गुजारा नहीं हो रहा था! गुजारा भत्ता बंद हो गया था, जो धन बांटा जाना था वह बिखर गया था, उसका सहारा देने वाला कोई नहीं था! राजकुमारी की दयनीय स्थिति मुझे दिन-रात परेशान कर रही थी। आखिरकार, मैंने एक फैसला लिया और रावेर के पास पहुँच गया!
राजकुमारी के ससुर, रावेर के सबसे बड़े बेटे ने महाराज के पैर पकड़कर कहा, —
महाराज! रत्नप्रभाराज के हाथों जो होना चाहिए था, वो हो गया है, लेकिन अब अंत में आपके सिवा उसका सहारा देने वाला कोई नहीं बचा! आपने उसे गर्व दिलाया और धन-दौलत दी; लेकिन सिनेमा के प्रति उसके जुनून ने सब कुछ बर्बाद कर दिया। उसने मेरी जान बचाई थी; इसीलिए मैंने अब तक उसकी देखभाल करने की कोशिश की है। इसीलिए वो आज दिखाई दे रहा है! लेकिन अब से मेरे लिए कुछ भी सच नहीं है। पुलिस ने मुझसे पल्ला झाड़ लिया है और मेरे पीछे पड़ी है। मेरा जो भी हो, मेरी बस यही इच्छा है कि आप उसे यहाँ रहने दें। अगर आप उसे दिन में दो वक्त का खाना ही दें, तो भी ठीक रहेगा!
रावेर के महाराजा ने मेरी ओर मुस्कुराते हुए कहा, "ठाकुर, तुम सचमुच बुद्धिमान हो!"
"मैं कितना बुद्धिमान हूँ, महाराज? मुझसे मूर्ख तो कोई हो ही नहीं सकता! मैंने दो पत्नियों को त्याग दिया। मुंबई में मैंने अय्याशी भरी जिंदगी जी। जुआ, शराब, घुड़दौड़ और स्त्रियों के सिवा मुझे कुछ और पता ही नहीं था! लेकिन अब ये सब ज्यादा दिन नहीं चलेगा! नियति ने मुझसे बदला लेने का निश्चय कर लिया है! अब

मेरे लिए कोई रास्ता नहीं! एकमात्र रास्ता मृत्यु है। लेकिन मैं इतना पुण्यशील नहीं हूँ कि जब चाहूँ मर जाऊँ! एक ऐसे समाज में रहने वाला दुष्ट जो नैतिकता और सदाचार का सम्मान नहीं करता, लोग मुझे इसी नजरिए से देखेंगे! कृपया मेरी अंतिम विनती स्वीकार कीजिए, महाराज! मैं आपके हाथों को जोड़ता हूँ!"
"ठीक है! लेकिन वह महल में नहीं रह सकती!"
"बिल्कुल नहीं! बस मुझे एक छोटी सी जगह दे दो, कपड़े, आश्रय और भोजन ही काफी होगा!"
"लेकिन एक बार वह यहाँ आ गई, तो वह वापस नहीं जा पाएगी! अगर वह जाती भी है, तो वह रेवर गेट से वापस नहीं आ पाएगी!"
"मान लीजिए महाराज, मैं सहमत हूँ! मैं आपकी सभी शर्तें बिना शर्त स्वीकार करता हूँ!"
-०-०-

४१
राजकुमारियाँ कुछ भी सुनने को तैयार नहीं थीं। वे मेरे जीवन में आने वाली हर कठिनाई में मेरा साथ देना चाहती थीं; लेकिन मुझे अपना भाग्य स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा था। मुझे मुंबई से निष्कासित किया जाना था। चाहे मैं निर्वासन के मामले में कितनी भी दृढ़ता से लड़ूँ, फैसला मेरे ही खिलाफ जाएगा; लेकिन मेरे भीतर राजसी क्षत्र की भावना प्रबल थी। मैं इतनी आसानी से मुंबई छोड़ने को तैयार नहीं थी! यह मेरी हार होती!
हमने बड़ी मुश्किल से राजकुमारी को रावेर पहुँचाया। महाराजा ने अपना वादा निभाया। महल के पास ही एक छोटा सा बंगला था, जो राजकुमारी को दे दिया गया। साथ ही, एक दासी भी स्थायी रूप से उनके साथ रहने के लिए दी गई। सच तो यह है कि ऐसी अभागी बहू को कोई आश्रय नहीं देता; लेकिन महाराजा ने सोचा कि चाहे कुछ भी हो जाए, उनकी शादी उनके बेटे से हुई है, इसलिए जब तक कानूनी तलाक नहीं हो जाता, वे उनकी बहू ही रहेंगी। चूंकि कुलीन वर्ग में तलाक की कोई प्रथा और परंपरा नहीं है, इसलिए तलाक नहीं दिया जा सकता। पुणे और मुंबई की सड़कों पर लोगों द्वारा उन्हें देखकर यह कहने से बेहतर यही होगा कि 'देखो, यह रावेर की रानी है!' इसके अलावा, आसपास जो भी 'माया' थी, उसका भाग्य तो अवश्य ही नष्ट हो जाता! राजकुमारी को वहाँ छोड़ते समय मैं बहुत रोई। मैंने अपने जीवन में कभी इतना नहीं रोया था। राजकुमारी को खोने का दुख उतना ही गहरा था जितना मेरे माता-पिता के चले जाने के बाद हुआ था।
जब मैं मुंबई आई, तो यह हमेशा चहल-पहल से भरा मुंबई शहर मुझे एक बोझ लगने लगा। मैं राजकुमारी के उन दो कमरों में रहने लगी, और जब मेरे निर्वासन की प्रक्रिया शुरू हुई, तो मैंने सोचा, इस झंझट

में क्यों पड़ूँ? अगर मैं स्वेच्छा से मुंबई छोड़ दूँ तो क्या होगा?... लेकिन मैं जाऊँगी कहाँ?
भवानी नगर!
जाने से पहले, मैं उल्का को अलविदा कहने बांद्रा गया। मछली बाजार के पास मेरी मुलाकात लिलियन मार्टिन से हुई।
‘‘हेलो, समर! तुम आजकल कहां हो?’’
"दादर!"
"क्या आपको राजकुमारी जैसा महसूस होता है?"
"नहीं, वह मुंबई छोड़कर चली गई, मैं भी चला गया!"
"कहाँ?"
"भवानी नगर!"
"स्थायी?"
"अगला, अगला! मैंने अभी जाने का फैसला कर लिया है! जाने से पहले मैं उल्कापिंड से मिलना चाहता हूँ!"
जैसे ही उल्कापिंड का नाम लिया गया, लिलियन चौंक गई और कुछ गंभीरता से बोली,—
‘‘प्लीज, डोंट सी हर!’’
तो फिर? आप लोग मिलते क्यों नहीं?
"तुम्हें क्या पता? उसकी शादी पिछले रविवार को हुई थी!"
"आप क्या कह रहे हैं?"
"हां, चर्च के सामने वाली वह चार मंजिला इमारत, ठीक वहीं जहां विलियम है!"
"हे भगवान! क्या उल्कापिंड को वह पसंद आया?"
"जी हां, हमने उसे अपने मोंटेसरी स्कूल में शारीरिक प्रशिक्षण के लिए रखा है, वह स्वभाव से बहुत अच्छा है! उत्का ने काफी समय तक

फैसला नहीं किया था; लेकिन आखिरकार उसने फैसला कर लिया! क्या आपको कोई आपत्ति है?"
"हूँ! लिलियन, मुझे आपत्ति क्यों होनी चाहिए? वह अब तक मेरे प्रति वफादार रही है; लेकिन मैंने कभी उसकी इच्छा के अनुसार काम नहीं किया! अगर यह मेरे स्वभाव में नहीं है, तो मैं इसे कहाँ से लाऊँगा? शाबाश! भगवान उसका भला करे!"
मेरे कदम आगे बढ़ने के लिए तैयार नहीं हैं। चलते-चलते मुझे गिरजाघर का शिखर दिखाई दिया और मैंने लिलियन से कहा,—
"मेरी ओर से बधाई दे दीजिए!"
"बताओ! समर, विलियम ने उसके अतीत के बारे में सब कुछ जानने के बावजूद उससे शादी करने का फैसला कर लिया है। लेकिन तुम इस बारे में उसे परेशान नहीं करोगी, है ना?"
"लिलियन, तुम मुझे जानती तक नहीं! मैं गलती से भी उसके रास्ते नहीं जाऊंगी! इतना ही नहीं, मैं उससे दोबारा मिलूंगी भी नहीं! एक और समस्या हल हो गई!"
"एक और से क्या फर्क पड़ता है?"
"राजकुमारी रावरे गई! उसकी हालत खराब थी! चलो, चलते हैं! वह उल्कापिंड के रास्ते में आ रहा था; लेकिन उसने बहुत अच्छा फैसला लिया। मैं विलियम को जानता हूँ। वह एक अच्छा, समझदार नौजवान है! लेकिन अगर वह शादी से पहले ईसाई बन जाए तो क्या होगा?" ‘‘अर्थात!’’
"यह ठीक है क्या?"
लेकिन उसे अब भी लगता है कि तुम मुसीबत खड़ी करोगे!
"उसे ऐसा महसूस करने का कोई कारण नहीं है! मुझे बताओ, तुमने सही किया! मेरा जीवन इतना सुरक्षित कभी नहीं रहा, और मुझे भविष्य में इसके सुरक्षित होने की कोई उम्मीद नहीं है।"

"आपसे मिलकर बहुत अच्छा लगा! क्या आप रात के खाने पर आ रहे हैं?" "आज नहीं! मैं किसी और दिन आऊंगा! लेकिन लिलियन, मेरा एक काम करो! मैं तुम्हें कुछ दूंगा, इसे उल्कापिंड तक ले जाओ!"
मैंने बगल वाली दुकान से गुलाबों का एक गुच्छा खरीदा और उसे लिलियन को देते हुए कहा, "इसे उत्का को दे देना और उससे कहना कि मैं उसके लंबे और सुखी वैवाहिक जीवन की कामना करती हूँ!"
इतना कहकर मैं झट से मुँह फेर लिया। मेरा गला सूख गया था और पलकें नम थीं, इसलिए मैं और कुछ बोल नहीं सका।
उल्कापिंड! वो मेरे जीवन में ठीक उसी तरह आई जैसे घने बादलों वाली अंधेरी रात में आसमान का एक कोना साफ हो जाए और उसमें से एक चमकता हुआ उल्कापिंड दिखाई दे। मुझे ये सोचकर घर छोड़ना पड़ा कि अलका ने मुझे धोखा दिया है, उसी समय उल्कापिंड मेरे जीवन में आई; लेकिन मुंबई आने के बाद वो निराश हो गई क्योंकि उसे नौकरी नहीं मिली। ये हताशा उसकी निराशा से ही पैदा हुई थी! और इसी से उसे लत लग गई! दरअसल, ये उसका अंत होना ही था; लेकिन सिकंदर की किस्मत अच्छी थी! वो लत से मुक्त हो गई और फिर से अपने पैरों पर खड़ी हो गई।
अल्का का पत्र पढ़ते ही उसने अपना फैसला कर लिया। मुझे घर से निकालकर उसने मुझे अपने मन से भी निकाल दिया! कितना बड़ा नुकसान किया उसने! आज उसकी शादी की खबर सुनकर मुझे दुखी क्यों होना चाहिए?... अल्का, तुमने बहुत अच्छा किया! तुमने सही फैसला लिया!... ऐसे विचार मन में आ रहे थे। लेकिन मेरी आँखों में पानी आ रहा था, मेरे जीवन का एक और अध्याय समाप्त हो गया था!
मुझे लगा था कि भवानी नगर में मुझे देखकर अल्का बहुत खुश होगी। लेकिन अल्का ने मेरा बहुत ठंडा स्वागत किया। मैं अपनी बेटी से

मिलने के लिए बेताब थी; लेकिन अल्का उसे दिखाने के लिए उत्सुक नहीं थी।
मैं पालने के पास गई और देखने लगी। बड़ी-बड़ी गोल आँखें, गोरा रंग और नाक की बनावट बिल्कुल मेरी जैसी थी! उस बच्ची को देखते ही मुझे अपनी माँ की याद आ गई। ऐसा लगा जैसे मेरी माँ अपना थका हुआ शरीर छोड़कर इस बच्ची के रूप में घर लौट आई हो!
अल्का इस बात से नाराज़ है कि मैं प्रसव के समय नहीं आई। मुझे लगा था कि उसका गुस्सा धीरे-धीरे शांत हो जाएगा। लेकिन अल्का अबो को छोड़ने को तैयार नहीं थी! कहते हैं कि बच्चे के जन्म के बाद पति-पत्नी के बीच मतभेद और मनमुटाव खत्म हो जाते हैं; लेकिन मुझे कुछ अलग ही अनुभव होने लगा।
मुंबई में भागदौड़ भरी जिंदगी जीने के बाद, यहाँ आने पर मुझे अकेलापन महसूस होने लगा, इसलिए मैंने फार्म पर जाने का फैसला किया! अमर फार्म पर रहने के लिए तैयार था; लेकिन उसकी पत्नी तैयार नहीं थी; आखिरकार मैंने अकेले ही फार्म पर रहने का फैसला किया। वहाँ आने के बाद, मुझे और भी अकेलापन महसूस होने लगा। मैंने अब तक अपनी ज़िंदगी में क्या कमाया है? कुछ नहीं! जुआ, रेसिंग, शराब और औरतें! सलीमा, कुमारी, उल्का, अलका और राजकन्या! पाँच औरतें। इनमें से सलीमा तो सिर्फ़ एक रात के लिए मेरे साथ रही! बाकी सब मेरे साथ कुछ ज़्यादा समय तक रहीं! लेकिन वो सचमुच सितारों का नाच था! अब सब खत्म हो गया! अगर तुम एकतरफ़ा ज़िंदगी जीना चाहते हो, तो अलका अबो को थामे बैठी है!
मुझे जाने दो! मुझे मरने दो! मैं फिर कभी किसी का चेहरा नहीं देखना चाहती! मैं अब तक जो कुछ भी हुआ है, सब कुछ भूल जाना चाहती हूँ! मैं अपने जीवन से इस गंदगी को मिटाना चाहती हूँ! लेकिन यह कैसे संभव है?...

हाँ! यह भी संभव है! अगर आप खुद को शराबी बना लें, तो आप सब कुछ भूल सकते हैं!
अरे बाप रे! लेकिन अगर आप इतने ज्यादा शराबी बन जाते हैं, तो आपका लिवर खराब हो जाता है। उसे सिरोसिस हो जाता है, जिससे मौत हो जाती है! तो इसमें नुकसान क्या है? चाहे आप इस हालत में जिएं या मरें, दोनों एक ही बात है!
मैंने खेत की देखभाल करके अपना मनोरंजन करने की बहुत कोशिश की; लेकिन इसी बीच, मुझे रेसकोर्स पर एक घोड़ी दौड़ती हुई दिखाई देती। मुझे इंस्पेक्टर गडकरी का शव आठवीं मंजिल से गिरता हुआ दिखाई देता, और कभी-कभी मुझे दाऊद मोहम्मद अरब द्वारा मेरे चश्मे तोड़ने की घटना याद आ जाती! ओह! मुझे ये यादें नहीं चाहिए! मैं अपना अतीत भूलना चाहता हूँ!...
इस बार मेरे साथ भी वही हाल हुआ जो उटेका के साथ हुआ था! मैं दिन-रात हाथ में एक बोतल लिए घूमता रहा, वो भी एक देसी, हाथ से बनी शराब की भट्टी में। मेरे पैर का पुराना दर्द फिर से उभर आया। घुटने में चोट लगी थी, जो गुमान सिंह की हॉकी स्टिक से लगी थी, और अब तो खड़े होना भी मुश्किल हो रहा था। मैंने पट्टियों से बंधे पैरों के साथ फार्महाउस में घूमने की कोशिश की, लेकिन शराब का नशा चढ़ते ही मेरा संतुलन बिगड़ गया और मैं गिर पड़ा।
अल्का और अमर दोनों को पता था कि मैं दिन-रात शराब पीता हूँ; लेकिन उनमें से कोई भी मुझे रोकने के लिए आगे नहीं आया। किसी को मेरी ज़रूरत ही नहीं थी!
लेकिन कुशाबा हाथ जोड़कर कहता, "गुरुजी, यह सच नहीं है! यह तो खतरनाक बात है!" मैं हंसता और कहता, "कुशाबा, मुझे स्त्रियों का बहुत अनुभव है! पांच साल हो गए, अब छह साल हो गए हैं।" मैं यह कहकर हाथ से बनी बोतल को घुमाता!

लेकिन शराब मुझे मारने के लिए तैयार नहीं थी। कौन जाने मेरा जिगर लोहे का बना है या नहीं! मैं पिछले पाँच सालों से ये हाथ से बनी शराब पी रहा हूँ, लेकिन मर नहीं रहा। ये बदमाश साली, रसायनों में सल्फेट और नवसागर मिलाता है, शराब में क्यों नहीं मिलाते? फिर लकवे का दौरा पड़ा! मेरा बायां हिस्सा लकवाग्रस्त हो गया। मैं अपने हाथ नहीं उठा सकती, मेरा मुंह टेढ़ा हो गया है! मैं किसी के सहारे के बिना पांच कदम भी नहीं चल सकती। मेरे कान ठीक से सुनते हैं; लेकिन सच कहूं तो, अगर मेरे कान बहरे होते तो कहीं बेहतर होता। जो बातें नहीं सुननी चाहिए, वो भी मेरे कानों तक पहुंचती हैं! थोंब्रे उसी हाई स्कूल में प्रधानाध्यापक बनकर लौट आया है जहां अल्का काम करती है! वो एक प्रोफेसर का प्रधानाध्यापक बन गया! क्यों? किसलिए? किसके लिए? क्या तुम्हें गणित मुश्किल लगता है? लेकिन इसका जवाब बहुत आसान है!...
उल्का की शादी हो गई, लेकिन अल्का ने इसका क्या किया? उसकी पाँच साल की बेटी है? लेकिन इसकी क्या गारंटी है कि बेटी तुम्हारी ही है? पाँच साल पहले, तुमने तो बस एक बार ही ऐसा किया था...! जाने दो। इसके बारे में बात मत करो! बोतल कहाँ है?...
अब बोतल खाली हो गई है। छठा बाया भी चला गया है। मैं शराब पीने की इच्छा ज़ाहिर करने के लिए अपना मुँह नहीं खोल पा रही हूँ। कुशाबा आधी रोटी और छाछ को मसलकर मेरे सामने रख देती है। किस्मत ने 'लूलू' नहीं कहा। यही है मेरे कर्मों की कहानी! मेरे सामने खड़ा बूमरैंग! ऑस्ट्रेलिया की एक जनजाति इस हथियार से शिकार करती थी! मुझे वह हथियार याद है, जो फेंकने पर जानवर को पकड़ लेता था और शिकारी के हाथ में लौट आता था! मैं भी ऐसे ही बूमरैंग से शिकार करने गई थी... लेकिन मेरे हाथ में आने के बजाय, वह मुझे

□□ □□□□□□ □□□□ □□□□ □ □□□! □□□ □□□□ □□□ □□! □□□□□□□□ □□□ □□ □□ □□□ □□□ □□!

******* □□□ 2 □□□□□□ *******

0-0-0

sjeet